COACH UP IAS

YOUR SELECTION IS OUR BUSINESS

WHITE BOOK

भारतीय कला एवं संस्कृति

सिविल सेवा परीक्षा के लिए

IAS COACH ASHUTOSH SRIVASTAVA

IAS COACH MANISH SHUKLA

8009803231 / 9236569979

भारतीय संस्कृति

- समाज और जीवन के विकास के मूल्यों की सम्यक् संरचना **संस्कृति** है। यह समाज के सोचने विचारने, कार्य करने, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है।
- 'संस्कृति' का शाब्दिक अर्थ उत्तम स्थिति से है। यह समाज में पाए जाने वाले, उच्चतम मूल्यों और आदर्शों की चेतना है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिये Culture शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है, इसका अर्थ हैं - विकसित करना या परिष्कृत करना। सरल शब्दों में संस्कृति उस विधि का प्रतीक है, जिसमें हम सकारात्मक दिशा में सोचते और कार्य करते हैं।

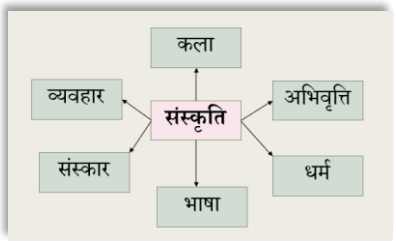

- **संस्कृति के भेद -** भौतिक, अभौतिक

❑ **भौतिक संस्कृति**

- इसमें प्रौद्योगिकी, कला , वास्तुकला, भौतिक वस्तुएँ, कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य एवं अन्य सामाजिक कार्यकलाप आदि शामिल हैं।

❑ **अभौतिक संस्कृति**

- इसमें साहित्यिक, दार्शनिक एवं बौद्धिक परंपराओं, दंत कथाओं तथा आदर्शों का बोध होता है।

संस्कृति

❑ **संस्कृति और विरासत में सम्बन्ध**

- भारतीय परंपरा का अन्य परंपराओं से समन्वय होता रहा है, इससे साझी संस्कृति का निर्माण हुआ है। जैसे - उर्दू व खड़ी बोली का समन्वय।
- सांस्कृतिक विकास 'विविधता में एकता' का प्रतीक है। यह एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जिसमे हमारे पूर्वज अपने अनुभवों में वृद्धि कर जो आवश्यक था हमारे लिए छोड़ते गए, इस प्रकार संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। यही सांस्कृतिक विरासत कहलाती है।
- मानवद्वारा अपनायी गयी विरासत को 'मानवता की विरासत' कहते हैं।
- **संस्कृति परिवर्तनशील है, किंतु विरासत परिवर्तनशील नहीं -**
  - "संस्कृति परिवर्तनशील है, किंतु विरासत परिवर्तनशील नहीं है" का अर्थ है कि संस्कृति समय के साथ बदलती रहती है, क्योंकि यह समाज, विचारधारा, भाषा, आदतें और रिवाजों के साथ विकसित होती रहती है। सांस्कृतिक बदलाव नए अनुभवों, विचारों, और तकनीकी उन्नति से प्रेरित होते हैं, जो समय के साथ समाज के विकास को दर्शाते हैं।
  - वहीं, विरासत (या परंपरा) अधिक स्थिर होती है। विरासत में उन मूल्यों, विश्वासों, कृतियों, और परंपराओं का समावेश होता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित होते हैं और जो समाज की पहचान और इतिहास को बनाए रखते हैं। यह स्थिरता और निरंतरता का प्रतीक होती है, जो ऐतिहासिक संदर्भ में समाज को जोड़ने का कार्य करती है।
  - इस प्रकार, संस्कृति और विरासत के बीच यह अंतर है कि संस्कृति लचीली और समयानुकूल होती है, जबकि विरासत वह स्थिर धरोहर है जिसे समाज ने सहेजा है और जो उसकी पहचान का हिस्सा बन गई है।

❑ **संस्कृति और धर्म में सम्बन्ध**

- 'संस्कृति' और 'धर्म' दोनों की अवधारणा व्यापक है।
- 'धर्म' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के मूल शब्द "धृ" से हुई है, जिसका अर्थ है "धारण करना", "रखना" या "स्थिर रखना"। इस प्रकार, 'धर्म' का मूल अर्थ है, वह जो किसी व्यक्ति, समाज, या ब्रह्मांड को स्थिर और व्यवस्थित बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है।
- धर्म" शब्द का अंग्रेजी में कोई पूर्ण और सटीक समकक्ष नहीं है, क्योंकि यह एक जटिल और बहुपरामी अवधारणा है। हालांकि, इसे विभिन्न संदर्भों में विभिन्न अंग्रेजी शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है।
- भारत एक ऐसा देश है, जहाँ अनेक धर्मावलंबी स्वतंत्रतापूर्वक अपने धर्म का पालन करते हैं।
- वैष्णव, सनातन, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई और मुसलमान आदि अपने-अपने धर्म के अनुसार अपने आराध्यों की स्तुति करते हैं। अतः इन्होंने भारतीय संस्कृति के साथ एकाकार होकर भी अपने अस्तित्व को बनाए रखा है।
- धर्म और दर्शन दोनों भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं, लेकिन इनके उद्देश्य और विषय में अंतर है।
- **धर्म और दर्शन के बीच अंतर:**

धर्म और दर्शन के बीच अंतर		
पहलू	धर्म (Dharma)	दर्शन (Darshan)
उद्देश्य	जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना।	अस्तित्व, ब्रह्मांड और आत्मा के सत्य को जानना।
विधि	आस्थाएँ, नियम, अनुष्ठान, कर्तव्यों का पालन।	तर्क, विचार, और दार्शनिक ज्ञान।
प्रभाव	जीवन को व्यवस्थित करने, समाज में शांति और न्याय सुनिश्चित करने में सहायक।	बौद्धिक रूप से आत्मा और ब्रह्मांड के सत्य को समझने की दिशा में सहायक।
उदाहरण	हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम, सिख धर्म।	वेदांत दर्शन, योग दर्शन, सांख्य दर्शन, न्याय दर्शन।
परिणाम	व्यक्ति और समाज में संतुलन और सद्गति।	आत्मज्ञान, तात्त्विक समझ और ब्रह्मांड के साक्षात्कार की ओर अग्रसर।

❑ **विश्व के विभिन्न धर्म**

- **धर्म** और **संस्कृति** दोनों ही समाज और मानव जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं, और इनका आपस में गहरा संबंध है। हालांकि इन दोनों शब्दों का अर्थ अलग-अलग होता है, लेकिन वे एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं और समाज के जीवन को आकार देने में सहयोग करते हैं।

- **निम्नलिखित तालिका में धर्म और संस्कृति के बीच के संबंध को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है:**

निम्नलिखित तालिका में धर्म और संस्कृति के बीच के संबंध को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है		
विवरण	**धर्म**	**संस्कृति**
परिभाषा	जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक कर्तव्यों का पालन।	समाज के जीवन, आचार-विचार, परंपराओं, कला, और साहित्य का समग्र रूप।
संबंध	संस्कृति का आधार और मार्गदर्शक सिद्धांत।	धर्म के सिद्धांतो और मान्यताओं का व्यवहारिक रूप।
प्रभाव	समाज के मूल्य और आदर्शों का निर्धारण करता है।	धर्म द्वारा निर्धारित आदर्शों को समाज में कार्यान्वित करता है।
संरक्षण और निरंतरता	धर्म परंपराओं, अनुष्ठानों और संस्कारों के माध्यम से संस्कृति को स्थिर रखता है।	संस्कृति धर्म के सिद्धांतों और कृत्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी बनाए रखती है।
सांस्कृतिक पहचान	धर्म समाज की सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित करता है।	धर्म के सिद्धांत समाज के सांस्कृतिक व्यवहार में रूपांतरित होते हैं।
समाज पर प्रभाव	समाज में नैतिकता, न्याय और सद्गति को सुनिश्चित करता है।	समाज के आचार-व्यवहार, आदतों, और परंपराओं को आकार देता है।
बदलाव	धर्म समाज में समय के साथ बदलाव स्वीकार करता है।	संस्कृति धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप बदलती है।

❑ भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

- भारतीय संस्कृति एक विशाल और विविधतापूर्ण परंपरा है, जो हजारों वर्षों से विकसित हुई है। यह न केवल धार्मिक, दार्शनिक, और सामाजिक दृष्टिकोण से समृद्ध है, बल्कि यह व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों, मानवता, और जीवन के उद्देश्य को भी महत्व देती है। भारतीय संस्कृति की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

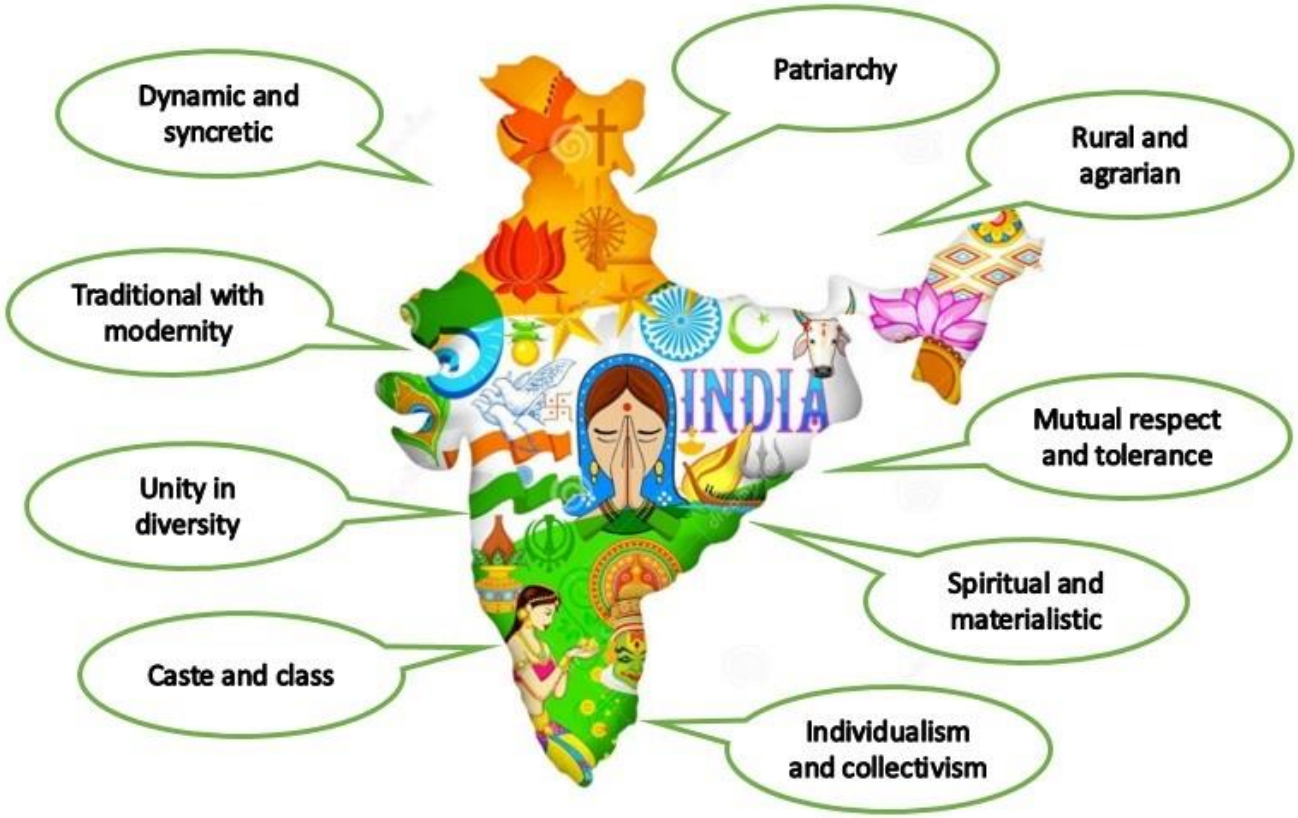

- **विविधता में एकता**
  - भारतीय संस्कृति में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों, क्षेत्रीय भिन्नताओं और रीति-रिवाजों का समावेश है।
  - यह विभिन्नता के बावजूद एकता को बनाए रखती है, जिससे समाज में सामंजस्यपूर्ण और समृद्ध जीवन का निर्माण होता है।
  - **उदा.** हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि धर्मों का सह-अस्तित्व।
- **धार्मिक सहिष्णुता**
  - भारत में विभिन्न धार्मिक विश्वासों का सम्मान किया जाता है और प्रत्येक धर्म को समान स्वतंत्रता दी जाती है।
  - भारत में विभिन्न धर्मों का संगम देखने को मिलता है, जैसे हिन्दू धर्म, इस्लाम, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, ईसाई धर्म आदि।
  - **उदा.** 'सर्वधर्म सम्भाव' (सभी धर्मों का सम्मान) का सिद्धांत।
- **आध्यात्मिकता और नैतिकता**
  - भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है। वस्तुतः इन पुरुषाथों ने ही भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता के साथ भौतिकता का एक अद्भुत समन्वय स्थापित किया।
  - जीवन का उद्देश्य मोक्ष, आत्मज्ञान और संसार के सत्य को जानना माना जाता है।
  - **उदा.** योग, वेदांत, उपनिषद, भगवद गीता का प्रभाव।
- **प्राकृतिक संतुलन**
  - भारतीय संस्कृति में प्रकृति और पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया जाता है।
  - 'प्रकृति पूजा' और 'वृक्षारोपण' की परंपराएँ भारत में प्राचीन काल से रही हैं।
  - **उदा.** गंगा नदी, तुलसी वृक्ष, गोवर्धन पूजा।
- **कुटुंब और परिवार**
  - भारतीय संस्कृति में परिवार को सामाजिक इकाई के रूप में अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

- परिवार की संरचना प्रायः संयुक्त परिवार होती है, जिसमें बुजुर्गों, माता-पिता, और बच्चों के बीच सामूहिक संबंध होते हैं।
- परिवार के सदस्य आपस में एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और सहयोग प्रदान करते हैं।

- **नैतिकता और कर्तव्य**
- भारतीय संस्कृति में "धर्म" का अर्थ केवल धार्मिक कृत्य नहीं, बल्कि समाज में नैतिकता, कर्तव्य और जिम्मेदारी से है।
- "स्वधर्म" और "समाजधर्म" की अवधारणाएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कर्तव्यनिष्ठा को बढ़ावा देती हैं।
- **उदा.** महाभारत और भगवद गीता में कर्तव्य और नैतिकता का पालन करने की शिक्षा दी गई है।

- **साहित्य और कला**
- भारतीय संस्कृति में साहित्य और कला का अद्वितीय स्थान है। कविता, संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला और शिल्पकला के अद्वितीय रूप विकसित हुए हैं।
- **उदा.** संस्कृत साहित्य (महाकाव्य जैसे रामायण, महाभारत), शास्त्रीय संगीत, भरतनाट्यम, राजस्थानी चित्रकला।

- **आधुनिकता और परंपरा का संतुलन**
- भारतीय संस्कृति ने परंपरा को बनाए रखते हुए आधुनिकता को भी अपनाया है।
- विज्ञान, तकनीकी उन्नति और शिक्षा के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति ने योगदान दिया है, जबकि पारंपरिक मान्यताएँ और संस्कार भी जीवित हैं।
- उदाहरण: भारतीय समाज में पश्चिमी और पारंपरिक मूल्यों का संतुलन।

- **अतिथि देवो भव**
- भारतीय संस्कृति में अतिथि का विशेष सम्मान किया जाता है। "अतिथि देवो भव" का सिद्धांत प्राचीन काल से ही भारतीय जीवन का हिस्सा रहा है।
- अतिथि को भगवान का रूप मानकर उसका स्वागत किया जाता है, चाहे वह परिवार का सदस्य हो या बाहरी व्यक्ति।

- **संस्कारों और रीति-रिवाजों की महत्ता**
- भारतीय संस्कृति में विभिन्न संस्कारों और रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है, जो जीवन के विभिन्न चरणों (जन्म, विवाह, मृत्यु आदि) में होते हैं।
- ये संस्कार व्यक्ति के जीवन में नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियाँ उत्पन्न करते हैं।
- **उदा.** हिन्दू विवाह संस्कार, कंठाभिषेक, यज्ञ आदि।

- **साहित्य, दर्शन और शिक्षा**
- भारतीय संस्कृति ने ज्ञान की खोज और शिक्षा को प्राथमिकता दी है। वेद, उपनिषद, गीता और अन्य धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों के माध्यम से ज्ञान का प्रसार हुआ।
- प्राचीन भारत में नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय स्थापित हुए थे जो दुनिया भर के छात्रों को आकर्षित करते थे।

- **संविधान और कानून**
- भारतीय संस्कृति में न्याय और संविधान का सम्मान किया जाता है। यह विचारशीलता और कानूनी प्रक्रियाओं के लिए एक गहरी परंपरा से जुड़ा है।
- भारतीय संविधान में सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए गए हैं, जो भारतीय संस्कृति की समानता और न्याय के सिद्धांत को दर्शाता है।

❑ **भारतीय संस्कृति की निरंतरता के कारण**

- **प्राचीनता**
- भारत की संस्कृति हज़ारों सालों से अपने मूल स्वरूप में बनी हुई है।पुरापाषाण काल से बने चित्र और वेदों की रचना भारत की प्राचीनता को दर्शाती है।

- **परंपराओं और रीति-रिवाज़ों का संरक्षण**
- परिवार और समुदाय पर ज़ोर देने की वजह से परंपराएं और रीति-रिवाज़ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचती हैं।

- **आध्यात्मिकता और धर्म**
- भारतीय दर्शन और धर्म परंपराओं ने लोगों के जीवन में आध्यात्मिकता को जगह दी है।

- **लचीलापन**
- भारतीय समाज ने समय के साथ खुद को ढाल लिया है।

- **सरकारी सहायता**
- भारत सरकार ने सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

- **भाषाओं की विविधता**
- भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैं, जिनकी वजह से संस्कृति और पारंपरिक विविधता बनी है।

- **सिंधु घाटी सभ्यता**
- सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों से पता चलता है कि इसका विकास द्वितीय और पहली शतकीय ईसा पूर्व के बाद भी जारी रहा।
- भारतीय संस्कृति को दुनिया की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक माना जाता है।

❑ **सांस्कृतिक चुनौतियाँ**

- **सांप्रदायिकता:** भारत में सांप्रदायिकता एक हिंसक राजनीतिक दर्शन है. यह धर्म के नाम पर वोट बैंक बनाने और धर्म के लिए सीटें देने से जुड़ी है. सांप्रदायिकता के कारण दंगे होते हैं, जिनमें हिंसा, मौत, लूटपाट, और बलात्कार जैसी घटनाएं होती हैं.
- **धर्मनिरपेक्षता की गलत व्याख्या:** कुछ लोग धर्मनिरपेक्षता को पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं और धार्मिक विश्वासों की अस्वीकृति के रूप में समझते हैं. इससे कुछ सांस्कृतिक प्रथाओं को "पिछड़ा" या "आदिम" कहकर कलंकित किया जाता है.
- **धार्मिक प्रथाओं पर प्रतिबंध:** धर्मनिरपेक्षता के नाम पर कुछ धार्मिक प्रथाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया है. जैसे कि, पटाखे फोड़ने पर प्रतिबंध, जल्लीकट्टू पर प्रतिबंध, कुछ मांस के उपभोग पर रोक लगाना.
- **क्षेत्रवाद:** भारत में क्षेत्रवाद की वजह से पृथक् राज्य की मांग, विशेष राज्य या पूर्ण राज्य की मांग, और भारत संघ से अलग होने की मांग उठती रहती है

❑ **संस्कृति और सभ्यता**

- संस्कृति और सभ्यता परस्पर एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।
- संस्कृति किसी समाज के विचारों, रीति-रिवाजों, और सामाजिक दृष्टिकोण को दर्शाती है, जबकि सभ्यता उन मूर्त उपलब्धियों और संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें हमने बनाया है।
- संस्कृति और सभ्यता के बीच एक परस्पर क्रिया है। संस्कृति नींव के रूप में काम करती है, जबकि सभ्यता मानव प्रगति की बाहरी अभिव्यक्ति है।

- संस्कृति और सभ्यता पर्याय के रूप में प्रयोग किये जाने के बाद भी दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं।
- **संस्कृति और सभ्यता के बीच अंतर**

विषय	संस्कृति (Culture)	सभ्यता (Civilization)
परिभाषा	संस्कृति वह जीवनशैली, आस्थाएँ, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, और सामाजिक प्रथाएँ होती हैं, जो किसी समाज के भीतर होती हैं।	सभ्यता समाज के भौतिक, सामाजिक, और राजनीतिक विकास को दर्शाती है, जो एक विशेष समय और स्थान में मौजूद होते हैं।
केंद्र	संस्कृति मुख्य रूप से विचारों, विश्वासों, आस्थाओं, और मूल्यों पर आधारित होती है।	सभ्यता भौतिक संरचनाओं, तकनीकी प्रगति, और संस्थागत विकास पर केंद्रित होती है।
केंद्रित तत्व	रीति-रिवाज, विश्वास, परंपराएँ, कला, साहित्य, धर्म, और भाषा।	शहरों का विकास, प्रशासन, कानून, विज्ञान, और उद्योग।
भौतिकता	संस्कृति में भौतिक तत्वों की कम भूमिका होती है। यह अधिकतर मानसिक, भावनात्मक, और सामाजिक है।	सभ्यता भौतिक तत्वों, जैसे भवन, सड़कें, तकनीकी अविष्कारों, और औद्योगिकीकरण पर आधारित होती है।
समाज का प्रभाव	संस्कृति समाज के मूल्यों, विश्वासों और सामाजिक संबंधों का प्रतिबिंब होती है।	सभ्यता समाज के भौतिक और राजनीतिक संस्थाओं का प्रतिबिंब होती है।
उदाहरण	भारतीय संस्कृति (धर्म, कला, परिवार संरचना, रीति-रिवाज)	प्राचीन मेसोपोटामिया, मिश्र, रोमन साम्राज्य की सभ्यता
संरचना	संस्कृति का स्वरूप अमूर्त (अदृश्य) होता है, जैसे विचार और दृष्टिकोण।	सभ्यता का स्वरूप ठोस (संपत्ति आधारित) होता है, जैसे वास्तुकला, विज्ञान, और शासन।
सामाजिक बदलाव	संस्कृति में बदलाव धीरे-धीरे होते हैं और यह लंबे समय में समाज की सोच में बदलाव लाते हैं।	सभ्यता के बदलाव अधिक तेज होते हैं और ये समाज की भौतिक और राजनीतिक संरचना में दिखते हैं।

उपर्युक्त अंतर से स्पष्ट है कि दोनों क्रियाकलाप अलग-अलग भी हैं और दोनों परस्पर जुड़े हुए भी। 'सभ्यता' में मनुष्य के राजनैतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय व दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन होता है जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतर उपलब्धियाँ सम्मिलित हैं। अतः कहा जाता है कि सभ्यता वह है जो हम बनाते हैं तथा संस्कृति वह है, जो हम हैं। संस्कृति मानव के अंतर्मन का उच्चतम स्तर है।

भारतीय संस्कृति का विस्तार

भारतीय संस्कृति की अनेकता में एकता और प्राकृतिक विविधता जैसी विशेषताएं अन्य देशों से संबंध बनाने में कभी बाधक नहीं बनी। भारतीय जहाँ भी गए, वहाँ उन्होंने भारतीय संस्कृति की अमिट छाप छोड़ी। भारतीय संस्कृति के प्रसार का उद्देश्य समाज या व्यक्ति को जीतना या डरना नहीं था , बल्कि भारतीय आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तार करना था।

भारतीय संस्कृति का विस्तार के कारण

भारतीय संस्कृति का विस्तार विभिन्न कारणों से हुआ है, जो कई ऐतिहासिक, सामाजिक, और भौगोलिक तत्वों से प्रभावित है। निम्नलिखित कारण भारतीय संस्कृति के विस्तार में योगदान करते हैं:

❑ **व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान**

- भारतीय उपमहाद्वीप प्राचीन समय से व्यापार और वाणिज्य के लिए महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। भारत ने सिल्क रूट और अन्य व्यापारिक मार्गों के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के साथ संपर्क किया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति ने विदेशी संस्कृतियों से भी प्रभाव लिया और इसे अपने में समाहित किया, जैसे कि ग्रीक, फारसी, और अरबी प्रभाव।

❑ **धार्मिक विस्तार**

- हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, और सिख धर्म ने न केवल भारत में बल्कि अन्य देशों में भी विस्तार किया। बौद्ध धर्म ने विशेष रूप से एशिया के विभिन्न हिस्सों में जैसे कि श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, और चीन में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। हिन्दू धर्म ने भी दक्षिण-पूर्व एशिया में अपनी छाप छोड़ी।

❑ **कलात्मक और साहित्यिक योगदान**

- भारतीय कला और साहित्य का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला, संगीत, और नृत्य ने विश्वभर में पहचान बनाई। विशेष रूप से ताज महल और कांची विश्वनाथ मंदिर जैसी विश्व प्रसिद्ध संरचनाओं ने भारतीय कला की भव्यता को प्रदर्शित किया।

❑ **सामाजिक व्यवस्था और विज्ञान**

- भारतीय समाज ने प्राचीन काल में विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, और खगोलशास्त्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान का प्रभाव पूरे विश्व में फैल गया। उदाहरण के तौर पर, अंकगणित और शून्य की अवधारणा, आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति, और योग ने वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति को लोकप्रिय बनाया। जैसे - भारत के कारण ही 21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस वर्तमान समय में मनाया जा रहा हैं।

❑ **औपनिवेशिक काल का प्रभाव**

- ब्रिटिश उपनिवेशी शासन के दौरान, भारतीय संस्कृति का विभिन्न हिस्सों में परिचय हुआ, और बाद में भारतीय संस्कृति के अनेक पहलुओं का प्रचार-प्रसार हुआ। इससे भारतीय परंपराओं और संस्कृति को पश्चिमी दुनिया में पहचान मिली।

❑ **स्थानीय और वैश्विक आप्रवास**

- भारतीय प्रवासी समुदायों का संपूर्ण विश्व में वास भारतीय संस्कृति के प्रसार का एक और महत्वपूर्ण कारण है। भारतीय आप्रवासियों ने अपने साथ भारतीय भाषा, धर्म, संस्कृति, और रिवाजों को नए देशों में फैलाया, जिससे भारत का सांस्कृतिक प्रभाव बढ़ा।

❑ **सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्वीकरण**

- 20वीं शताबदी के अंत और 21वीं शताबदी की शुरुआत में, वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ भारतीय संस्कृति ने विश्व मंच पर और अधिक स्थान प्राप्त किया। बॉलीवुड, भारतीय भोजन, योग, और भारतीय फैशन जैसे तत्व विश्वभर में लोकप्रिय हो गए हैं।

भारतीय संस्कृति का दक्षिण-पूर्व एशिया व श्रीलंका में विस्तार

❑ **धार्मिक प्रभाव:**

- **बौद्ध धर्म**: बौद्ध धर्म भारतीय उपमहाद्वीप, विशेष रूप से भारत से ही उत्पन्न हुआ और यह दक्षिण-पूर्व एशिया और श्रीलंका में तेजी से फैल गया। सम्राट अशोक के समय में बौद्ध धर्म का प्रचार एशिया के विभिन्न हिस्सों में हुआ। उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को श्रीलंका, बर्मा (म्यांमार), थाईलैंड, कम्बोडिया, और अन्य देशों में भेजा।
- **श्रीलंका**: भारतीय बौद्ध धर्म का श्रीलंका में प्रवेश 3वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ, जब सम्राट अशोक के बेटे महेंद्र और उनकी बहन संघमित्रा बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए श्रीलंका गए। आज भी श्रीलंका में बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव है।
- **दक्षिण-पूर्व एशिया**: बौद्ध धर्म ने थाईलैंड, मलेशिया, लाओस, कंबोडिया, और बर्मा (म्यांमार) जैसे देशों में अपनी जड़ें फैलाई। यहां के लोग बौद्ध धर्म को पूरी तरह से अपनाए हुए हैं।
- **हिन्दू धर्म**: हिन्दू धर्म भी भारतीय उपमहाद्वीप से इन देशों में फैला। विशेष रूप से **हिन्दू देवता** जैसे विष्णु, शिव और गणेश की पूजा इन देशों में की जाती है।
- **इंडोनेशिया** और **मलेशिया** जैसे देशों में प्राचीन हिन्दू मंदिरों का निर्माण हुआ। उदाहरण के लिए, **बोरबुदुर** (इंडोनेशिया) और **आंगकोर वाट** (कम्बोडिया) में हिन्दू धर्म के प्रभाव को देखा जा सकता है।

- **Note:-**

❑ **अंकोरवाट मन्दिर**

- कम्बोडिया में एक मन्दिर परिसर और दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है, 162.6 हेक्टेयर को मापने वाले एक साइट पर।
- यह कम्बोडिया के अंकोर में है जिसका पुराना नाम 'यशोधरपुर' था।
- इसका निर्माण सम्राट सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल में हुआ था।
- वर्तमान में यह एक बौद्ध मन्दिर है, जो कभी भगवान विष्णु को समर्पित था।

- श्रीलंका के उत्तरी हिस्सों में भी हिन्दू धर्म का प्रभाव है, खासकर तमिल समुदाय के बीच। **तमिल संस्कृति** और हिन्दू धर्म का प्रचलन इन क्षेत्रों में अब भी मजबूत है।

❑ **सांस्कृतिक और कला प्रभाव:**

- **भारतीय साहित्य**: भारतीय महाकाव्य **रामायण** और **महाभारत** ने दक्षिण-पूर्व एशिया में बहुत प्रभाव डाला। रामायण के विभिन्न संस्करणों को थाईलैंड, कंबोडिया, इंडोनेशिया, और मलेशिया में अनुवादित किया गया और स्थानीय रूपों में प्रदर्शित किया गया।
- **रामायण**: थाईलैंड में इसे "रामकियेन" के नाम से जाना जाता है, जबकि कंबोडिया और इंडोनेशिया में इसके स्थानीय संस्करण हैं।
- **कला और वास्तुकला**: भारतीय स्थापत्य कला का प्रभाव दक्षिण-पूर्व एशिया में देखा जा सकता है, खासकर मंदिरों और मूर्तियों के निर्माण में।

- **आंगकोर वाट** (कंबोडिया) और **बोरबुदुर** (इंडोनेशिया) जैसे मंदिरों में भारतीय वास्तुकला के तत्वों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन मंदिरों की दीवारों पर भारतीय देवताओं और मिथकीय कथाओं की मूर्तियों और चित्रों का चित्रण किया गया है।

- **Note:-**

❑ **बोरबुदुर स्तूप**

- इसका मूल आधार वर्गाकार है जिसकी प्रत्येक भुजा 118 मीटर (387 फीट) है।
- इसमें नौ मंजिलें हैं जिनमें से नीचली छः वर्गाकार हैं तथा उपरी तीन वृत्ताकार हैं। उपरी मंजिल पर मध्य में एक बड़े स्तूप के चारों ओर बहत्तर छोटे स्तूप हैं। प्रत्येक स्तूप घण्टी के आकार का है जो कई सजावटी छिद्रों से सहित है।

- भारतीय नृत्य, संगीत और नाटक ने भी इन क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई।

❑ **व्यापारिक संबंध:**

- भारतीय व्यापारी प्राचीन समय से समुद्र मार्गों द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से जुड़े हुए थे। इन व्यापारिक संबंधों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, कला और धर्म इन क्षेत्रों में फैला। भारतीय वस्त्र, मसाले, रत्न, और अन्य व्यापारिक सामग्रियों के साथ भारतीय विचारधाराओं का आदान-प्रदान भी हुआ।
- भारतीय व्यापारी, विशेष रूप से **गुजरात** और **महाराष्ट्र** के व्यापारी, दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापार करने आते थे और साथ ही भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलू फैलाते थे।

❑ **राजनीतिक प्रभाव:**

- प्राचीन भारतीय साम्राज्य, विशेष रूप से **चोल** और **पलव** साम्राज्य, ने दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।
- **चोल साम्राज्य** (9वीं से 13वीं शताब्दी) ने दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रसार किया। चोल सम्राटों ने इंडोनेशिया और मलेशिया के कुछ हिस्सों में अपने शासन का विस्तार किया और वहां के लोगों में भारतीय संस्कृति को फैलाया।
- भारतीय राजवंशों ने राजनीतिक और सांस्कृतिक संपर्क बनाए रखे, जिससे इन क्षेत्रों में भारतीय प्रभाव बढ़ा।

❑ **श्रीलंका में भारतीय संस्कृति का विस्तार:**

- **हिन्दू धर्म और संस्कृति**: श्रीलंका में भारतीय संस्कृति का प्रभाव हिन्दू धर्म के माध्यम से आया। श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों में हिन्दू संस्कृति और पूजा पद्धतियाँ प्रचलित हैं, खासकर **तमिल समुदाय** के बीच।
- **बौद्ध धर्म का प्रवेश**: श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रवेश भारतीय भिक्षुओं के माध्यम से हुआ। भारतीय संस्कृति और शिक्षा के प्रभाव से श्रीलंका में बौद्ध धर्म का सशक्त विकास हुआ।
- **भारतीय साहित्य और कला**: श्रीलंका में भारतीय साहित्य, जैसे रामायण, और कला का प्रभाव देखा जा सकता है। श्रीलंका के मंदिरों में भारतीय वास्तुकला के तत्व पाए जाते हैं।

भारतीय संस्कृति का दक्षिण-पूर्व एशिया और श्रीलंका में प्रसार भारतीय व्यापारिक मार्गों, धार्मिक मिशनरी कार्यों, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से हुआ। बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म, भारतीय साहित्य, कला और वास्तुकला के प्रभाव ने इन देशों की सांस्कृतिक धारा को बदल दिया। आज भी इन देशों में भारतीय संस्कृति की गहरी छाप देखी जा सकती है, जो उनके धार्मिक विश्वासों, कला, साहित्य, और सामाजिक संरचनाओं में प्रकट होती है।

मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति का मध्य एशिया में विस्तार एक जटिल और ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है, जिसमें व्यापार, धर्म, कला और सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मध्य एशिया, जो प्राचीन समय में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र था, भारतीय संस्कृति से गहरे प्रभावित हुआ। इस क्षेत्र में भारतीय धर्मों, विचारधाराओं, कला, साहित्य और सांस्कृतिक तत्वों का प्रवेश मुख्य रूप से विभिन्न व्यापारिक और धार्मिक संपर्कों के माध्यम से हुआ।

❑ **व्यापारिक संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान:**

- मध्य एशिया भारत के साथ व्यापारिक संपर्क में था, खासकर **सिल्क रूट** के माध्यम से। यह व्यापारिक मार्ग भारत, मध्य एशिया, चीन, और यूरोप को जोड़ता था और इसके माध्यम से न केवल माल का आदान-प्रदान होता था, बल्कि भारतीय संस्कृति, धर्म, कला और विचारधाराओं का भी फैलाव हुआ।
- **सिल्क रूट**: यह व्यापारिक मार्ग भारत और मध्य एशिया के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक आदान-प्रदान का एक प्रमुख जरिया था। भारत से चांदी, रत्न, मसाले और कपड़े मध्य एशिया और अन्य क्षेत्रों में जाते थे, जबकि मध्य एशिया से आभूषण, मखमल और अन्य वस्त्र भारत आते थे। इसके साथ ही भारतीय विचारधाराएं, जैसे बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म, इस मार्ग के माध्यम से फैलें।
- **खगोलशास्त्र और गणित**: भारतीय गणितज्ञों और खगोलज्ञों के ज्ञान का भी मध्य एशिया में प्रभाव पड़ा। विशेष रूप से भारतीय अंकगणित और शून्य की अवधारणा ने मध्य एशिया में गहरा प्रभाव छोड़ा, जो बाद में पश्चिमी दुनिया में भी फैल गया।

❑ **धार्मिक प्रभाव:**

- **बौद्ध धर्म**: बौद्ध धर्म का मध्य एशिया में प्रसार भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान था। बौद्ध धर्म ने मध्य एशिया के कई हिस्सों को प्रभावित किया, विशेष रूप से **सक्य साम्राज्य**, **कुषाण साम्राज्य** और **गांधार** में।
- **गांधार कला**: भारतीय बौद्ध धर्म और कला का प्रभाव विशेष रूप से **गांधार** क्षेत्र (जो वर्तमान में पाकिस्तान और अफगानिस्तान का हिस्सा है) में देखा गया। यहाँ पर बौद्ध मूर्तियों और मंदिरों के निर्माण में भारतीय शैलियों का प्रयोग किया गया। गांधार कला में ग्रीको-रोमन और भारतीय शैलियों का मिश्रण था, और इसने पूरे मध्य एशिया में प्रभाव डाला।
- **मध्य एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में बौद्ध धर्म का प्रसार**: बौद्ध धर्म ने कश्मीर, काबुल, और समरकंद जैसे क्षेत्रों में प्रचलन प्राप्त किया। इस धर्म के प्रचारक भारतीय भिक्षु थे, जिन्होंने इन क्षेत्रों में बौद्ध शिक्षा और विचारधारा को फैलाया।
- **हिन्दू धर्म**: हिन्दू धर्म के प्रभाव का सबसे स्पष्ट उदाहरण मध्य एशिया के कुछ क्षेत्रों में देखा जा सकता है, खासकर **कुषाण साम्राज्य** में। यहाँ के शासक **कनिष्क** ने भारतीय धर्म और संस्कृति को प्रोत्साहित किया।
- **सम्राट कनिष्क** ने भारतीय धर्मों, विशेष रूप से बौद्ध धर्म, को अपनाया और उन्हें मध्य एशिया के विभिन्न हिस्सों में फैलाया। इसके साथ ही हिन्दू धर्म के सिद्धांतों का भी प्रसार हुआ।

❑ **कला और स्थापत्य:**

- भारतीय कला और स्थापत्य का प्रभाव मध्य एशिया में भी देखा गया। भारतीय शैली में मूर्तिकला और वास्तुकला ने मध्य एशिया की कला को प्रभावित किया।
- **गांधार कला**: जैसा कि पहले उल्लेख किया गया, **गांधार कला** का प्रभाव मध्य एशिया में गहरा था। इस कला में ग्रीक और भारतीय स्थापत्य का मिश्रण था, जिसमें बौद्ध धर्म की मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- **बौद्ध मंदिर और स्तूप**: भारतीय स्थापत्य शैली का प्रभाव मध्य एशिया में बौद्ध मंदिरों और स्तूपों के निर्माण में देखा जा सकता है। विशेष रूप से **नांदी** (स्तूप के आकार का मंदिर) और **चैत्य** (धार्मिक स्थल) भारतीय वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ थीं जो मध्य एशिया में अपनाई गईं।

- **Note:-**

❑ **बामियान बुद्ध प्रतिमा**

- बामियान बुद्ध दो खड़ी बुद्ध प्रतिमाएँ हैं जो अफ़गानिस्तान के बामियान में चौथी और पाँचवीं शताब्दी में बनाई गई थीं। वे काबुल से 230 किलोमीटर (140 मील) उत्तर-पश्चिम में, 2500 मीटर (8200 फ़ीट) की ऊँचाई पर हैं। इनमें से छोटी प्रतिमा 507 में और बड़ी प्रतिमा 554 में बनाई गई थी।

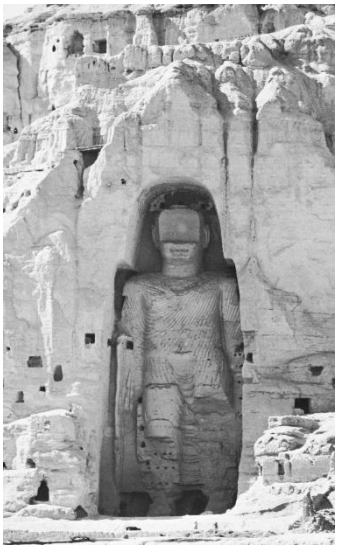

❑ **साहित्य और भाषा:**

- भारतीय साहित्य, खासकर संस्कृत, का प्रभाव मध्य एशिया में हुआ। संस्कृत साहित्य का प्रभाव बौद्ध धर्म के ग्रंथों के माध्यम से विशेष रूप से हुआ। इसके साथ ही भारतीय कथा साहित्य और पौराणिक कथाओं ने भी मध्य एशिया में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।
- **पद्य और गद्य साहित्य**: मध्य एशिया में भारतीय काव्यशास्त्र और नाट्यशास्त्र का प्रभाव पड़ा। भारत से मध्य एशिया में भारतीय काव्यशास्त्र, संस्कृत नाटक और पौराणिक कथाएँ गईं, जो वहाँ की साहित्यिक परंपरा का हिस्सा बन गईं।

❑ **प्रौद्योगिकी और विज्ञान:**

- भारतीय विज्ञान, खासकर गणित और खगोलशास्त्र का भी मध्य एशिया में गहरा प्रभाव था। भारतीय विद्वानों द्वारा विकसित शून्य और दशमलव प्रणाली ने मध्य एशिया में वैज्ञानिक विचारों को नया मोड़ दिया।
- **गणित और खगोलशास्त्र**: भारतीय गणितज्ञों द्वारा विकसित अंकगणित, खगोलशास्त्र और चिकित्सा के सिद्धांत मध्य एशिया के विद्वानों द्वारा अपनाए गए। विशेष रूप से भारतीय खगोलशास्त्र का प्रभाव मध्य एशिया के महान खगोलज्ञों पर पड़ा।

भारतीय संस्कृति का मध्य एशिया में विस्तार कई पहलुओं में हुआ, जिसमें धर्म (विशेष रूप से बौद्ध धर्म), कला, साहित्य, गणित और खगोलशास्त्र शामिल हैं। व्यापार, धार्मिक मिशन, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से भारतीय संस्कृति ने मध्य एशिया के विभिन्न हिस्सों को प्रभावित किया। विशेष रूप से गांधार कला, बौद्ध धर्म और भारतीय साहित्य ने इस क्षेत्र में स्थायी छाप छोड़ी, जो आज भी इन क्षेत्रों के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन में देखी जा सकती है।

❑ **सिल्क रूट**

- इसकी शुरुआत ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में हुई थी।
- यह एशिया से भूमध्य सागर तक फैला हुआ था।
- इस मार्ग से चीन, भारत, फ़ारस, ग्रीस, इटली, और अरब जैसे देश गुज़रते थे।
- इस मार्ग को रेशम मार्ग इसलिए कहा जाता था क्योंकि इस दौरान रेशम का व्यापक व्यापार होता था।
- रेशम के अलावा, इस मार्ग से कई तरह के सामानों का व्यापार होता था, जैसे कि मसाले, अनाज, फल, सब्ज़ियां, लकड़ी, जानवरों की खाल, धातु, और कीमती पत्थर।
- इस मार्ग से व्यापार के अलावा, ज्ञान, धर्म, संस्कृति, भाषाएं, विचारधाराएं भी फैलीं।
- इस मार्ग से जुड़े कुछ प्रमुख बंदरगाहों के नाम हैं- ज़ांज़ीबार, अलेक्जेंड्रिया, मस्कट, और गोवा।
- इस मार्ग से जुड़े कुछ प्रमुख शहरों का विकास हुआ, जैसे कि ज़ांज़ीबार, अलेक्जेंड्रिया, मस्कट, और गोवा।
- साल 2013 में चीन ने सिल्क रूट को फिर से शुरू करने की योजना बनाई थी।

भारतीय संस्कृति का पूर्वी एशियाई देशों में विस्तार

भारतीय संस्कृति का पूर्वी एशियाई देशों में विस्तार ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय संस्कृति, विशेष रूप से **हिंदू धर्म**, **बौद्ध धर्म**, **संगीत**, **कला** और **विज्ञान** ने **पूर्वी एशिया** के देशों में गहरा प्रभाव डाला। यह विस्तार प्राचीन व्यापारिक मार्गों, धार्मिक मिशनरी कार्यों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से हुआ। पूर्वी एशिया में शामिल देशों में **चीन**, **कोरिया**, **जापान**, **वियतनाम** और **मंगोलिया** जैसे देशों का नाम लिया जा सकता है, जहाँ भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का प्रभाव पड़ा।

❑ **धार्मिक प्रभाव:**

- **बौद्ध धर्म**: भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान **बौद्ध धर्म** के रूप में पूर्वी एशिया में हुआ। बौद्ध धर्म का उदय भारत में हुआ और इसके बाद यह मध्य एशिया, चीन, कोरिया, जापान और वियतनाम जैसे देशों में फैल गया।

- **चीन**: बौद्ध धर्म का चीन में प्रवेश 1वीं शताब्दी के आसपास हुआ। भारतीय भिक्षु और व्यापारी इस धर्म को चीन तक लेकर पहुंचे। **महायान बौद्ध धर्म** ने चीन में अपनी जड़ें मजबूत की। बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के अन्य पहलुओं, जैसे कला, साहित्य और वास्तुकला, का भी प्रसार हुआ।
- **कोरिया और जापान**: बौद्ध धर्म को **कोरिया** (3वीं शताब्दी) और **जापान** (6वीं शताब्दी) में भारतीय भिक्षुओं द्वारा फैलाया गया। बौद्ध धर्म ने इन देशों में न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक बदलाव भी लाए।
- **वियतनाम**: बौद्ध धर्म ने वियतनाम में भी भारतीय प्रभाव को प्रकट किया, खासकर उसके **महायान बौद्ध धर्म** के रूप में।
- **हिंदू धर्म**: हालांकि हिंदू धर्म का प्रभाव पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म के मुकाबले कम था, लेकिन इसके कुछ तत्व विशेष रूप से **हिंदू देवताओं** और **कला** के रूप में पूर्वी एशिया में पहुंचे।
- **जापान** और **वियतनाम** में हिंदू संस्कृति के संकेत मिलते हैं, खासकर धार्मिक त्योहारों और चित्रकला के रूप में।

❑ **कला और वास्तुकला:**

- भारतीय कला और स्थापत्य का प्रभाव पूर्वी एशिया में देखा जा सकता है, विशेष रूप से बौद्ध मंदिरों, मूर्तियों और चित्रकला में।
- **गांधार कला**: बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ **गांधार कला** का भी प्रभाव चीन, कोरिया, और जापान में हुआ। **गांधार शैली** में भारतीय और ग्रीक शैलियों का मिश्रण था, जो बौद्ध मूर्तियों और चित्रों में दिखाई देता था।
- **चीन और जापान में भारतीय वास्तुकला**: भारतीय स्थापत्य शैली का प्रभाव चीन में बौद्ध मंदिरों के निर्माण में दिखाई देता है। जापान में भी भारतीय स्थापत्य के कुछ तत्व पाए गए हैं, खासकर बौद्ध मंदिरों में।

❑ **भारतीय साहित्य और भाषा:**

- भारतीय साहित्य, विशेष रूप से **संस्कृत साहित्य**, ने पूर्वी एशिया के देशों को प्रभावित किया। बौद्ध धर्म के साथ **संस्कृत** और **पाली** भाषाओं के ग्रंथ, जैसे **त्रिपिटक** और **महाभारत** के संस्करण, इन देशों में पहुंचे।
- **चीन** में **संस्कृत** और **पारसी ग्रंथ** का अध्ययन किया गया, और इन ग्रंथों के चीनी अनुवाद किए गए।
- **कोरिया** और **जापान** में भी भारतीय काव्य और साहित्य का प्रभाव पड़ा, खासकर बौद्ध धर्म के साहित्यिक ग्रंथों के रूप में।

❑ **विज्ञान और गणित:**

- भारतीय गणित और विज्ञान का प्रभाव भी पूर्वी एशिया में देखा गया। विशेष रूप से **शून्य** और **दशमलव प्रणाली** का उपयोग भारत से अन्य देशों में फैलने लगा।
- **चीन** में भारतीय गणित और खगोलशास्त्र के सिद्धांतों को अपनाया गया। **चंद्रगुप्त और आर्यभट्ट** जैसे भारतीय गणितज्ञों के विचारों ने चीन के विद्वानों को प्रभावित किया।
- **कोरिया** और **जापान** में भी भारतीय गणित के प्रभाव से कुछ वैज्ञानिक बदलाव आए।

❑ **संगीत और नृत्य:**

- भारतीय संगीत और नृत्य का प्रभाव पूर्वी एशिया के देशों में दिखाई देता है, विशेष रूप से बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ।
- **चीन** में भारतीय संगीत की शैली को अपनाया गया और इसके साथ **तांत्रिक संगीत** और **नृत्य** की परंपरा भी आई।
- **जापान** में भारतीय नृत्य और संगीत की कुछ विशेषताएँ पाई जाती हैं, विशेष रूप से शास्त्रीय संगीत और नृत्य में।

❑ **भारत-चीन सांस्कृतिक संबंध:**

- **हर्षवर्धन** और **सम्राट अशोक** के समय से चीन और भारत के बीच सांस्कृतिक संबंध मजबूत रहे। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चीन में भिक्षुओं को भेजा।
- **कुमारजिवा**, एक भारतीय बौद्ध भिक्षु, ने 5वीं शताब्दी में चीन में बौद्ध धर्म के ग्रंथों का चीनी में अनुवाद किया, जिससे भारतीय बौद्ध विचार चीन में फैल गए।

❑ **चीनी यात्री कालानुक्रम**

- **फाहियान** – 399-412
- **ह्वेनसांग** – 630-645
- **इत्सिंग** – 675-695

भारतीय संस्कृति का पूर्वी एशियाई देशों में विस्तार कई दशकों, शताब्दियों और हजारों वर्षों में हुआ। भारतीय धर्मों, विशेष रूप से बौद्ध धर्म, के प्रचार के साथ-साथ भारतीय कला, साहित्य, गणित और विज्ञान ने इन देशों की संस्कृति को आकार दिया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति ने पूर्वी एशिया में न केवल धार्मिक प्रभाव छोड़ा, बल्कि सांस्कृतिक और बौद्धिक आदान-प्रदान के द्वारा एक समृद्ध सांस्कृतिक धारा भी बनाई।

भारतीय संस्कृति का रोम (रोमन साम्राज्य) में विस्तार

भारतीय संस्कृति का रोम (रोमन साम्राज्य) में विस्तार एक दिलचस्प और ऐतिहासिक परिघटना थी, जिसमें भारतीय धर्म, कला, व्यापार, और विज्ञान ने रोम और अन्य भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में प्रभाव डाला। रोम और भारत के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक आदान-प्रदान प्राचीन काल में हुआ, जो मुख्य रूप से **सिल्क रूट** और समुद्री मार्गों के माध्यम से हुआ था।

❑ **व्यापारिक संपर्क:**

- भारतीय संस्कृति का रोम में विस्तार मुख्य रूप से व्यापारिक मार्गों से हुआ। प्राचीन रोम और भारत के बीच व्यापारिक संबंध बहुत पुराने थे। भारतीय वस्त्र, रत्न, मसाले, और चांदी जैसे सामान रोम तक पहुंचते थे, और इसके बदले रोम से भारतीयों को शराब, शीशे और अन्य वस्तु मिलते थे।
- **सिल्क रूट**: यह व्यापारिक मार्ग रोम को भारत से जोड़ता था और भारत से रेशम, मसाले, और कीमती रत्न रोम तक पहुंचते थे। इसके माध्यम से भारतीय वस्त्र, खासकर **सिल्क** और **चांदी** जैसे सामान यूरोप और रोम में लोकप्रिय हुए।
- **समुद्री मार्ग**: रोम और भारत के बीच समुद्री मार्ग के माध्यम से भी व्यापार होता था, जिसमें भारतीय मसाले, चाय, रत्न, और हाथ से बने वस्त्र शामिल थे। समुद्री मार्गों के माध्यम से भारतीय समुद्री व्यापारियों का रोम तक पहुंचना संभव हुआ।
- भारतीय शासकों, यथा-मिनांडर, अगाथोक्लीज (इंडो-ग्रीक), कनिष्क-1, हुविष्क, कनिष्क-II (कुषाण वंश), रुद्रदमन, नहपान , गौतमीपुत्र सातकर्णी, वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी, यज्ञश्री सातकर्णी (सातवाहन वंश), करिकल (चोल), नेदुन चेलियन (पांड्य), नेदुनजेरल , शेनगुट्टवन (चेर वंश) आदि का पर्याप्त संरक्षण मिला। केवल भारतीय शासक ही नहीं, बल्कि रोमन शासकों, जैसे- अगस्टस, क्लॉडियस, टेरियस, टिवेरियस तथा नीरो ने भी इंडो-रोमन ट्रेड को समर्थन दिया। अगस्टस के दरबार में पांड्य देश से भेजे गए दो शिष्टमंडलों का भव्य स्वागत, यूनानी रोमन देवता अगस्तस के सम्मान में 'मुज़िरिस' में प्रतिमा को स्थापित किया जाना, वेरूनीश, काक्टश, अलेक्जेंड्रिया में भारतीय व्यापारियों को बसने की सुविधा दिया जाना यह प्रमाणित करता है कि भारत और रोमन जगत के बीच जोरदार व्यापारिक संपर्क था।

- **धार्मिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान:**

- भारतीय संस्कृति का रोम में प्रभाव धर्म और संस्कृति के रूप में भी था। खासकर **बौद्ध धर्म** और **हिंदू धर्म** के प्रभाव ने रोम में कुछ परिवर्तन किए।
- **बौद्ध धर्म**: बौद्ध धर्म का प्रभाव रोम में सीमित था, लेकिन बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का प्रभाव विशेष रूप से **ग्रेट हान साम्राज्य** और मध्य एशिया के माध्यम से रोम तक पहुंचा। रोम में बौद्ध धर्म के कुछ तत्व पाए गए, खासकर भारतीय धर्मशास्त्रों और भिक्षुओं के योगदान से। इसके अलावा, भारतीय कला और स्थापत्य का प्रभाव भी रोम में दिखा, जैसे बौद्ध मूर्तियों और मंदिरों का निर्माण।
- **हिंदू धर्म**: हिंदू धर्म के तत्व, जैसे देवताओं की पूजा और भारतीय धार्मिक विचारधारा, रोम में कुछ हद तक पहुंचे। विशेष रूप से **शिव** और **विष्णु** के देवता रोम के धार्मिक साहित्य में कुछ संदर्भों में पाए गए हैं। हालांकि, यह प्रभाव सीमित था, फिर भी भारतीय देवताओं की पूजा और धार्मिक विचार कुछ हद तक रोम में प्रचलित थे।

- **कला और वास्तुकला:**

- भारतीय कला और वास्तुकला का प्रभाव रोम में भी देखा जा सकता था। रोम में भारतीय कला के कुछ तत्व पाए गए, खासकर भारतीय कला शैली में बने चित्रकला और मूर्तियों के रूप में।
- **गांधार कला**: **गांधार कला** की शैली, जिसमें भारतीय और ग्रीक कला का मिश्रण था, ने रोम की कला पर प्रभाव डाला। बौद्ध मूर्तियों की शैली और भारतीय चित्रकला का प्रभाव रोम में देखा गया।
- **भारतीय स्थापत्य शैली**: भारतीय स्थापत्य के तत्व, जैसे स्तूप, मंदिरों की संरचना, और मूर्तियों का निर्माण, रोम के कुछ भवनों और संरचनाओं में दिखाई देते हैं।

- **विज्ञान और गणित:**

- भारतीय गणित, खगोलशास्त्र और विज्ञान का प्रभाव रोम में दिखाई दिया। भारतीय गणितज्ञों द्वारा विकसित **दशमलव प्रणाली** और **शून्य** का सिद्धांत, जो बाद में रोम में भी फैल गया, ने यूरोपीय गणित को प्रभावित किया।
- **गणित**: भारतीय गणित का प्रभाव रोम के गणितज्ञों पर पड़ा। भारतीय गणितज्ञों ने **दशमलव प्रणाली**, **शून्य** और **गणना के नए तरीके** विकसित किए, जिन्हें रोम और अन्य यूरोपीय देशों में अपनाया गया।
- **खगोलशास्त्र**: भारतीय खगोलशास्त्र का भी रोम के विद्वानों पर प्रभाव पड़ा। भारतीय खगोलज्ञों द्वारा दी गई जानकारी ने रोम के खगोलशास्त्रियों को अपने शोध में मदद दी।

- **साहित्य और भाषाएं:**

- भारतीय साहित्य, खासकर **संस्कृत साहित्य**, का रोम में कुछ प्रभाव था। भारतीय साहित्य के अनुवादों और विचारों ने रोम में ज्ञान और विचारधाराओं का आदान-प्रदान किया।
- **संस्कृत साहित्य**: भारतीय साहित्य के ग्रंथों, जैसे महाभारत और रामायण, का रोम में कुछ प्रभाव था। इन ग्रंथों के काव्यशास्त्र और नैतिक विचारों का यूरोपीय साहित्य पर भी असर पड़ा।
- **भाषाई संपर्क**: रोम में संस्कृत और पाली भाषा के कुछ तत्व पाए गए, खासकर बौद्ध धर्म और भारतीय साहित्य के अनुवाद के माध्यम से।
- इस संपर्क का एक दीर्घकालिक परिणाम यह हुआ कि भूमध्यसागरीय विश्व के विभिन्न ग्रंथों, जैसे स्ट्रैबो के 'भौगोलिक विश्वकोश', मेगस्थनीज की 'इंडिका', प्लिनी की 'नेचुरल हिस्ट्री' तथा टॉलेमी की 'ज्योग्राफी' में भारत की विस्तृत चर्चा हुई और भारत को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ।

- **रोम में भारतीय प्रभाव का परोक्ष रूप:**

- रोम में भारतीय संस्कृति का प्रभाव सीधे तौर पर अधिक प्रकट नहीं हुआ, लेकिन कुछ संकेत मिलते हैं कि भारतीय विचार और संस्कृति रोम में धीरे-धीरे फैलने लगे थे। खासकर धार्मिक, कला और साहित्य के क्षेत्र में भारतीय प्रभाव महसूस किया गया था। इसके अलावा, रोम के विद्वान भारतीय विचारों को जानने के लिए भारतीय भिक्षुओं से संपर्क करते थे।

भारतीय संस्कृति का रोम में विस्तार मुख्य रूप से व्यापार, कला, धर्म, और विज्ञान के माध्यम से हुआ। बौद्ध धर्म, भारतीय गणित, कला और साहित्य ने रोम और अन्य भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के तत्वों को प्रवेश कराया। यद्यपि यह प्रभाव सीमित था, फिर भी यह बताता है कि भारतीय संस्कृति ने प्राचीन रोम में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया था, विशेष रूप से सांस्कृतिक और ज्ञान के क्षेत्र में।

भारतीय संस्कृति का अरब में विस्तार

भारतीय संस्कृति का अरब में विस्तार ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय सभ्यता के प्रभावों को अरब देशों, मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में फैलाने का एक महत्वपूर्ण चरण था। भारतीय संस्कृति का अरब देशों में विस्तार **व्यापार**, **धार्मिक आदान-प्रदान**, **विज्ञान**, और **कला** के माध्यम से हुआ। भारतीय और अरबों के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक संबंध प्राचीन काल से ही रहे हैं। यह विस्तार विशेष रूप से **उत्तरी भारत** और **अरब प्रायद्वीप** के बीच संपर्क के दौरान हुआ।

- **व्यापारिक संपर्क:**

- भारतीय और अरब देशों के बीच प्राचीन काल में व्यापारिक संबंध बहुत मजबूत थे। भारतीय व्यापारी अरब के बंदरगाहों से होते हुए अरब साम्राज्य और अन्य मध्य पूर्व देशों तक व्यापार करते थे।
- **समुद्री मार्ग**: अरब व्यापारियों और भारतीय व्यापारियों के बीच समुद्री मार्गों के माध्यम से मसाले, रेशम, रत्न, कपड़े, और अन्य वस्त्रों का आदान-प्रदान हुआ। भारत के पश्चिमी तट, जैसे **मालाबार** और **कच्छ** से अरब के बंदरगाहों, जैसे **ओमान**, **बसीरा** और **दमिश्क** तक व्यापारिक मार्ग जुड़े थे।
- **सिंध और अरब व्यापार**: भारत का पश्चिमी हिस्सा, खासकर **सिंध** (जो वर्तमान पाकिस्तान का हिस्सा है), और अरब का संपर्क बहुत महत्वपूर्ण था। सिंध के माध्यम से भारतीय वस्त्र, मसाले और रत्न अरब देशों तक पहुंचते थे।

- **धार्मिक प्रभाव:**

- भारतीय धर्म, विशेष रूप से **हिंदू धर्म** और **बौद्ध धर्म**, का अरब में प्रभाव था, हालांकि इस प्रभाव का स्तर अन्य क्षेत्रों की तुलना में सीमित था। इसके बावजूद, **सांस्कृतिक और धार्मिक विचारों का आदान-प्रदान** हुआ।
- **बौद्ध धर्म**: बौद्ध धर्म का प्रसार मध्य एशिया और अरब के कुछ हिस्सों में हुआ था। बौद्ध भिक्षु और भारतीय व्यापारी अपने धर्म और विचारों के साथ अरब तक पहुंचे थे, और बौद्ध धर्म के सिद्धांत अरब के कुछ हिस्सों में पहुंच गए थे।

- **हिंदू धर्म**: हिंदू धर्म के कुछ तत्व अरब देशों में पहुंचे, विशेष रूप से **हिंदू देवताओं** और उनके पूजन से संबंधित धार्मिक विचार। हालांकि हिंदू धर्म का प्रमुख प्रभाव अरब में सीमित था, लेकिन हिंदू व्यापारियों और सभ्यता के कुछ प्रभाव अरब में देखे गए।

❑ **विज्ञान और गणित:**

- भारतीय गणित और खगोलशास्त्र का अरब में गहरा प्रभाव पड़ा। **अरब सोने की अवधि** (Golden Age of Islam) में भारतीय गणितज्ञों और खगोलज्ञों के ज्ञान ने अरब विद्वानों को प्रभावित किया।
- **दशमलव प्रणाली और शून्य**: भारतीय गणितज्ञों द्वारा विकसित **दशमलव प्रणाली** और **शून्य** का सिद्धांत अरब के खगोलशास्त्रियों और गणितज्ञों द्वारा अपनाया गया। अरब गणितज्ञों, जैसे **अल-ख्वारिज्मी**, ने भारतीय गणित के विचारों को अपनाया और उसे इस्लामिक गणित के रूप में विकसित किया।
- **खगोलशास्त्र**: भारतीय खगोलशास्त्र के सिद्धांतों का भी अरब में गहरा प्रभाव था। भारतीय खगोलज्ञों ने जो पद्धतियां विकसित की थीं, जैसे **पारंपरिक खगोलशास्त्र** और **सूर्य और चंद्रमा के चक्र** की समझ, उन्होंने अरब में खगोलशास्त्र के अध्ययन को प्रभावित किया।

❑ **भौतिकी और चिकित्सा:**

- भारतीय चिकित्सा विज्ञान, विशेष रूप से **आयुर्वेद** और **योग**, का भी अरब देशों में प्रभाव था।
- **आयुर्वेद**: भारतीय चिकित्सा पद्धति **आयुर्वेद** का ज्ञान अरब में प्रसारित हुआ, विशेष रूप से **सिंध** और **कश्मीर** के माध्यम से। अरब चिकित्सकों ने आयुर्वेद के सिद्धांतों और उपचार पद्धतियों को अपनाया और उसे अपनी चिकित्सा पद्धतियों में शामिल किया।
- **योग और ध्यान**: भारतीय योग और ध्यान के सिद्धांत भी अरब तक पहुंचे, विशेष रूप से सूफी साधना और ध्यान पद्धतियों में। सूफी साधकों ने भारतीय ध्यान पद्धतियों से कुछ प्रेरणा ली थी।

❑ **साहित्य और कला:**

- भारतीय साहित्य और कला का भी अरब में प्रभाव था। भारतीय काव्य, चित्रकला, और शिल्पकला का आदान-प्रदान अरब में हुआ, खासकर बौद्ध धर्म के प्रभाव के माध्यम से।
- **काव्य और संस्कृत साहित्य**: भारतीय काव्य और संस्कृत साहित्य के कुछ तत्व अरब के साहित्य में दिखाई दिए। संस्कृत ग्रंथों का अरबी में अनुवाद हुआ और भारतीय विचारों को अरब के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में शामिल किया।
- **चित्रकला और स्थापत्य**: भारतीय कला और वास्तुकला के कुछ तत्व अरब में देखने को मिले। भारतीय वास्तुकला के प्रभाव से अरब की मस्जिदों और अन्य धार्मिक संरचनाओं में कुछ बदलाव आए।

❑ **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:**

- भारतीय संस्कृति का अरब में विस्तार केवल व्यापार, धर्म, और विज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका गहरा सांस्कृतिक प्रभाव भी था।
- **कला और शिल्प**: भारतीय शिल्पकला और चित्रकला का प्रभाव अरब की कलात्मक शैलियों में देखा गया। खासकर भारतीय **संगीत** और **नृत्य** की शैलियां भी अरब में प्रभावी हुईं।
- **संगीत**: भारतीय संगीत और संगीत सिद्धांत का अरब में प्रभाव था। अरब के संगीतज्ञों ने भारतीय संगीत से कुछ तत्व अपनाए और उसे अपनी शास्त्रीय संगीत की धारा में जोड़ा।

भारतीय संस्कृति का अरब में विस्तार व्यापार, धर्म, विज्ञान, कला, और साहित्य के माध्यम से हुआ। भारतीय गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, और साहित्य का प्रभाव अरब में गहरे तक फैला। बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म, और आयुर्वेद जैसी भारतीय परंपराएं अरब देशों में पड़ीं और अरब सभ्यता में कुछ बदलाव भी आए। यह विस्तार न केवल भारतीय संस्कृति के प्रभाव को बढ़ाता है, बल्कि भारतीय और अरब सभ्यताओं के बीच आदान-प्रदान का भी प्रतीक है।

भारतीय स्थापत्य कला

कला

मानव मस्तिष्क की एक मानसिक अभिव्यक्ति है, जो विभिन्न रूपों में होती है और इसका उद्देश्य सौंदर्य, भावनाओं, विचारों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करना होता है। कला एक व्यक्ति या समाज की रचनात्मकता, भावना और विचारों को दर्शाने का एक तरीका है, जो भाषा, रूप, रंग, ध्वनि या गति के माध्यम से प्रकट होती है।
कला' शब्द संस्कृत के "कृ" धातु से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ होता है 'बनाना', 'निर्माण करना' या 'सृजन'। "कृ" धातु से जुड़ा हुआ 'कला' शब्द रचनात्मकता, कौशल, या किसी प्रकार के उत्कृष्ट कार्य की अभिव्यक्ति को दर्शाता है।
इस प्रकार, 'कला' का अर्थ रचनात्मक क्रिया, कौशल, या किसी विशेष प्रकार की सृजनात्मक अभिव्यक्ति होता है

❑ कला की विशेषताएँ

- **सौंदर्य और अभिव्यक्ति:** कला का मुख्य उद्देश्य सौंदर्य और भावनाओं की अभिव्यक्ति है। यह रचनात्मक रूप से दर्शक या श्रोता पर प्रभाव डालने की कोशिश करती है।
- **रचनात्मकता:** कला में व्यक्तिगत रचनात्मकता का योगदान प्रमुख होता है। कलाकार अपनी सोच, अनुभव और कल्पना को एक नए रूप में प्रस्तुत करता है।
- **भाषा और माध्यम:** कला का एक रूप या माध्यम अलग-अलग हो सकता है। यह चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य, कविता, नाटक, फिल्म, आदि हो सकते हैं।
- **संवेदनाएँ और विचार:** कला व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं, विचारों और संवेदनाओं को बाहरी दुनिया में व्यक्त करने का एक रूप है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक या व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हो सकती है।
- **दृष्टिकोण और विषय:** कला की अलग-अलग शाखाएँ हैं जो अलग-अलग दृष्टिकोणों और विषयों से जुड़ी होती हैं, जैसे- धार्मिक, ऐतिहासिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, या राजनीतिक।

❑ कला के विभिन्न रूप:

- **चित्रकला:** रंगों, ब्रश और अन्य माध्यमों का उपयोग करके चित्र बनाना। यह एक सबसे प्राचीन कला रूप है, जिसका उद्देश्य दृश्य सौंदर्य या भावनाओं को चित्रित करना होता है।
- **मूर्तिकला :** पत्थर, लकड़ी, धातु या अन्य सामग्रियों से आकार देना, जो तीन आयामी होती है। मूर्तियों के माध्यम से कलाकार अपनी अभिव्यक्ति करता है।
- **संगीत :** ध्वनियों का अनुशासन और रचना, जिसमें सुर, लय और ताल का महत्वपूर्ण योगदान होता है। संगीत एक प्रभावी माध्यम है, जो भावनाओं को व्यक्त करता है।
- **नृत्य :** शरीर की गति और ताल से भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति। यह एक शारीरिक कला है, जो दृश्य और श्रवण दोनों रूपों में अनुभव की जाती है।
- **साहित्य :** शब्दों का उपयोग करके विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति। साहित्य कविता, नाटक, उपन्यास, और कहानी के रूपों में हो सकता है।
- **नाटक :** अभिनय के माध्यम से एक कहानी या विचार को प्रस्तुत करना। यह दर्शकों के साथ एक संवादात्मक अनुभव प्रदान करता है।
- **फिल्म** : सिनेमा के माध्यम से कहानी या विचारों को दृश्य और ध्वनि के माध्यम से प्रस्तुत करना।

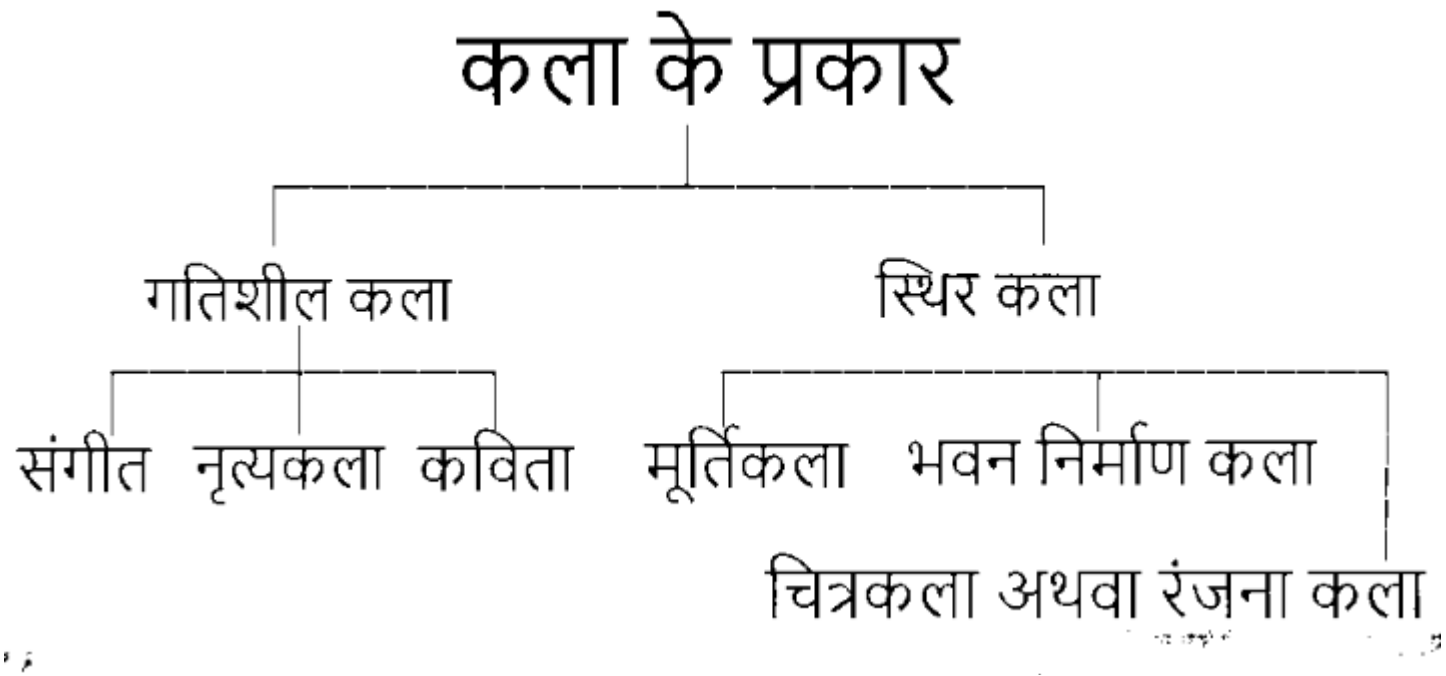

❑ कला का उद्देश्य

- **भावनाओं की अभिव्यक्ति:** कला का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्तिगत या सामाजिक भावनाओं को व्यक्त करना होता है। यह रचनात्मकता के माध्यम से दर्शक या श्रोता तक पहुँचता है।
- **सौंदर्य की अनुभूति:** कला एक सौंदर्य की भावना उत्पन्न करती है। यह मानव जीवन में सौंदर्य के महत्व को पहचानने और उसका अनुभव करने का एक तरीका है।
- **सामाजिक बदलाव:** कला सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने का एक माध्यम हो सकती है। यह जन जागरूकता और सामाजिक बदलाव को प्रेरित करती है।
- **मानव जीवन की गहरी समझ:** कला हमें मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को गहरे तरीके से समझने में मदद करती है। यह मानव अनुभव, संघर्ष, प्रेम, और अस्तित्व के सवालों से संबंधित हो सकती है।

कला एक अद्वितीय और सशक्त माध्यम है, जो व्यक्ति और समाज की अभिव्यक्ति को दर्शाता है। यह मानव अनुभव की गहरी समझ, भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली तरीका है, जो समाज की सांस्कृतिक धरोहर और रचनात्मकता का प्रतिनिधित्व करता है।

स्थापत्य कला

भारतीय संस्कृति और इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो भारत के विभिन्न ऐतिहासिक कालों और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रतिफल है। यह कला भारत की विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाती है। भारतीय स्थापत्य कला ने समय के साथ विभिन्न शैलियों और तत्वों का समावेश किया है, जो विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों, और शासकों के प्रभाव से विकसित हुई। **प्राचीन स्थापत्य कला** (Ancient Architecture) का अभिप्राय उन निर्माण कार्यों से है जो प्राचीन काल में विभिन्न सभ्यताओं द्वारा किए गए थे। यह कला न केवल शिल्प और वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह उन संस्कृतियों, धर्मों, और समाजों के विचारों और विश्वासों का भी परिचायक है। भारत में प्राचीन स्थापत्य कला ने **धार्मिक**, **सांस्कृतिक**, और **सामाजिक** जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया। प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला में **मंदिर निर्माण**, **स्तूप**, **विहार**, **बुद्धगृह** और **महल** जैसे विभिन्न प्रकार के संरचनाओं का निर्माण किया गया।

❑ **प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला के प्रमुख उदाहरण और विशेषताएँ:**

- **मंदिर स्थापत्य कला:**
  - भारत में प्राचीन काल से मंदिर निर्माण की परंपरा रही है। सबसे प्रारंभिक मंदिरों का निर्माण **गुप्त काल** में हुआ, हालांकि मौर्य और कुषाण काल में भी कुछ मंदिर बनाए गए थे।
  - प्राचीन मंदिरों में **गर्भगृह**, **मंडप**, **शिखर**, और **प्राकरण** जैसे तत्व होते थे। इन मंदिरों का उद्देश्य देवी-देवताओं की पूजा और धार्मिक अनुष्ठान करना था।
  - **विशाल शिखर** (वास्तुशास्त्र के अनुसार), **गर्भगृह** में देवता की मूर्ति, और **मंडप** में पूजा स्थल के रूप में काम आता था।
  - **प्रसिद्ध उदाहरण**:
    - काशी विश्वनाथ मंदिर (वाराणसी),
    - सोमनाथ मंदिर (गुजरात),
    - बदामी और एलीफैंटा गुफाएँ (महाराष्ट्र)।

- **स्तूप:**
  - भारत के महत्त्वपूर्ण **स्तूप** प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं और विशेष रूप से बौद्ध धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल माने जाते हैं। ये स्तूप भगवान बुद्ध के अवशेषों, उनकी मूर्तियों या अन्य धार्मिक वस्तुओं को रखने के लिए बनाए गए थे। इनका निर्माण बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।
  - भारत में प्रमुख स्तूपों का निर्माण विशेष रूप से **मौर्य काल** में सम्राट अशोक के द्वारा हुआ, लेकिन इसके बाद भी कई अन्य कालों में स्तूपों का निर्माण होता रहा।
  - **स्तूप** बौद्ध धर्म से संबंधित प्रमुख संरचनाएँ थीं, जिन्हें भगवान बुद्ध के अवशेषों को संरक्षित करने के लिए बनवाया गया था।
  - **स्तूप** एक गोलाकार, ढ़की हुई संरचना होती थी, जिसमें भगवान बुद्ध या उनके अनुयायियों के अवशेष रखे जाते थे।
  - **सांची स्तूप** (मध्य प्रदेश) और **धम्मेक स्तूप** (सारनाथ) जैसे स्तूपों को बौद्ध स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।
  - **सांची स्तूप :**
    - **स्थान**: मध्य प्रदेश
    - **इतिहास**: यह स्तूप बौद्ध धर्म के सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध स्तूपों में से एक है। इसे सम्राट अशोक ने तीसरी शती ईसा पूर्व में बनवाया था।
    - **विशेषताएँ**: इस स्तूप का आकार गोलाकार होता है और इसके चारों ओर चार द्वार हैं, जिन पर बौद्ध धर्म से संबंधित चित्रकला उकेरी गई है। यह स्तूप भारतीय स्थापत्य कला और बौद्ध धर्म का अद्भुत उदाहरण है।
    - **महत्त्व**: यह स्तूप बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

  - **धम्मेक स्तूप** :
    - **स्थान**: सारनाथ, उत्तर प्रदेश
    - **इतिहास**: यह स्तूप भगवान बुद्ध द्वारा **धम्म चक्क पवत्तन सुत्त** (धर्म चक्र प्रवर्तन) के उपदेश देने के स्थान पर स्थित है। इसे बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने बनवाया था।
    - **विशेषताएँ**: यह स्तूप 43 मीटर ऊँचा और 28 मीटर व्यास में है। इसे गुप्तकाल में पुनर्निर्मित किया गया था।
    - **महत्त्व**: यह स्थान उन पहली जगहों में से एक था जहाँ भगवान बुद्ध ने अपने पहले उपदेश दिए थे। यह बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में प्रसिद्ध है।

- **कुशीनगर स्तूप** :
  - **स्थान**: कुशीनगर, उत्तर प्रदेश
  - **इतिहास**: यह स्तूप उस स्थान पर स्थित है जहाँ भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण (मृत्यु) प्राप्त की थी। इसे भगवान बुद्ध के पार्थिव शरीर के अवशेषों को संरक्षित करने के लिए बनाया गया।
  - **विशेषताएँ**: यह स्तूप गोलाकार होता है और इसके भीतर बुद्ध की मूर्ति और अवशेष रखे गए हैं।
  - **महत्त्व**: यह स्तूप बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक अत्यंत पवित्र स्थल है, और यहाँ बौद्ध तीर्थयात्रियों का आगमन निरंतर होता रहता है।
- **राजगीर स्तूप** :
  - **स्थान**: बिहार
  - **इतिहास**: यह स्तूप उस स्थान पर स्थित है जहाँ भगवान बुद्ध ने कई वर्षों तक ध्यान और उपदेश दिए थे।
  - **विशेषताएँ**: राजगीर में कई बौद्ध स्थलों के साथ यह स्तूप भी धार्मिक महत्त्व रखता है। यहाँ बुद्ध के कुछ शिष्यों के अवशेष भी रखे गए थे।
  - **महत्त्व**: यह स्थल बौद्ध धर्म के प्रारंभिक विकास के लिए महत्वपूर्ण था, जहाँ बुद्ध ने बहुत सी उपदेशों को दिया था।
- **बोधगया स्तूप** :
  - **स्थान**: बोधगया, बिहार
  - **इतिहास**: यह स्तूप उस स्थल पर स्थित है जहाँ भगवान बुद्ध ने **बोधि वृक्ष** के नीचे ज्ञान प्राप्त किया था। यहाँ पर बोधगया मंदिर और अन्य बौद्ध संरचनाएँ भी स्थित हैं।
  - **विशेषताएँ**: इस स्तूप का आकार गोल और ऊँचा होता है और इसके आसपास बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियाँ और चित्र उकेरे गए हैं।
  - **महत्त्व**: यह बौद्ध धर्म का एक प्रमुख तीर्थ स्थल है और हर साल लाखों बौद्ध अनुयायी यहाँ आते हैं।
- **नालंदा स्तूप** :
  - **स्थान**: नालंदा, बिहार
  - **इतिहास**: नालंदा विश्वविद्यालय का प्राचीन स्तूप, बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक प्रमुख धार्मिक स्थल था।
  - **विशेषताएँ**: यह स्तूप विश्वविख्यात नालंदा विश्वविद्यालय के निकट स्थित था और यहाँ बुद्ध की शिक्षाएँ पढ़ाई जाती थीं।
  - **महत्त्व**: नालंदा स्तूप बौद्ध धर्म के एक महत्वपूर्ण अध्ययन केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था।
- **स्तूप के स्थापत्य और संरचना की विशेषताएँ:**
  - **गोलाकार आकार**: स्तूप का रूप गोलाकार होता है, जो संसार के चक्र का प्रतीक है।
  - **छत** : स्तूप की छत गोल होती है, जो अचलता और शाश्वतता को दर्शाती है।
  - **चक्र**: चक्र (धर्म चक्र) या अन्य प्रतीक इन स्तूपों पर उकेरे जाते थे।
  - **चरणों का ढाँचा**: स्तूप के चारों ओर एक घेरेदार परिधि होती है जिसमें **द्वार** होते हैं, जो बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण घटनाओं और जीवन के दृश्यों को दर्शाते हैं।
- भारत के स्तूप न केवल स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, बल्कि ये बौद्ध धर्म के इतिहास और दर्शन के भी महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। इन स्तूपों ने भारतीय स्थापत्य कला की समृद्धि और धार्मिक महत्व को दर्शाया है, साथ ही बौद्ध धर्म के प्रसार में भी इनका विशेष योगदान रहा है। इन स्तूपों में न केवल धार्मिकता, बल्कि भारतीय वास्तुकला का अद्वितीय सौंदर्य भी दिखाई देता है।

- **गुफाएँ और विहार :**
- प्राचीन भारत में बौद्ध मठों को **विहार** कहा जाता था, जो साधुओं और भिक्षुओं के रहने और ध्यान साधना के लिए बनाए जाते थे।
- ये संरचनाएँ आमतौर पर पत्थर या लकड़ी से बनाई जाती थीं और इनका प्रमुख उद्देश्य धार्मिक शिक्षा और साधना होता था।
- **अजन्ता और एलोरा गुफाएँ** (महाराष्ट्र) प्राचीन **विहार** के प्रमुख उदाहरण हैं।
- **नालंदा विश्वविद्यालय और विहार :**
  - **स्थान**: बिहार
  - **इतिहास**: नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का एक महान शिक्षण केंद्र था, और यहाँ पर बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक विहार स्थित थे। यह बौद्ध धर्म के अध्ययन और शिक्षा का प्रमुख स्थल था।
  - **विशेषताएँ**: नालंदा विश्वविद्यालय में 2,000 से अधिक शिक्षक और 10,000 से अधिक विद्यार्थी पढ़ाई करते थे। यहाँ पर भिक्षु रहते थे और बौद्ध धर्म के दर्शन, तंत्र, और शास्त्रों का अध्ययन करते थे। इसके परिसर में विशाल विहारों का निर्माण हुआ था।
  - **महत्त्व**: नालंदा का विहार पूरी दुनिया में शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था और यहाँ बौद्ध धर्म का समृद्धि से प्रसार हुआ।
- **अजन्ता गुफाएँ और विहार :**
  - **स्थान**: महाराष्ट्र
  - **इतिहास**: अजन्ता गुफाएँ 2nd शताब्दी BCE से लेकर 6th शताब्दी CE तक बनीं, जिनमें कई विहार स्थित थे। ये गुफाएँ बौद्ध भिक्षुओं के लिए ध्यान और उपासना स्थल थीं।
  - **विशेषताएँ**: अजन्ता गुफाओं में प्राचीन भित्तिचित्रों और मूर्तियों का अनूठा संग्रह है, जो बौद्ध धर्म के विकास और भिक्षु जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है।
  - **महत्त्व**: अजन्ता विहार बौद्ध धर्म के प्रचार और विकास का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

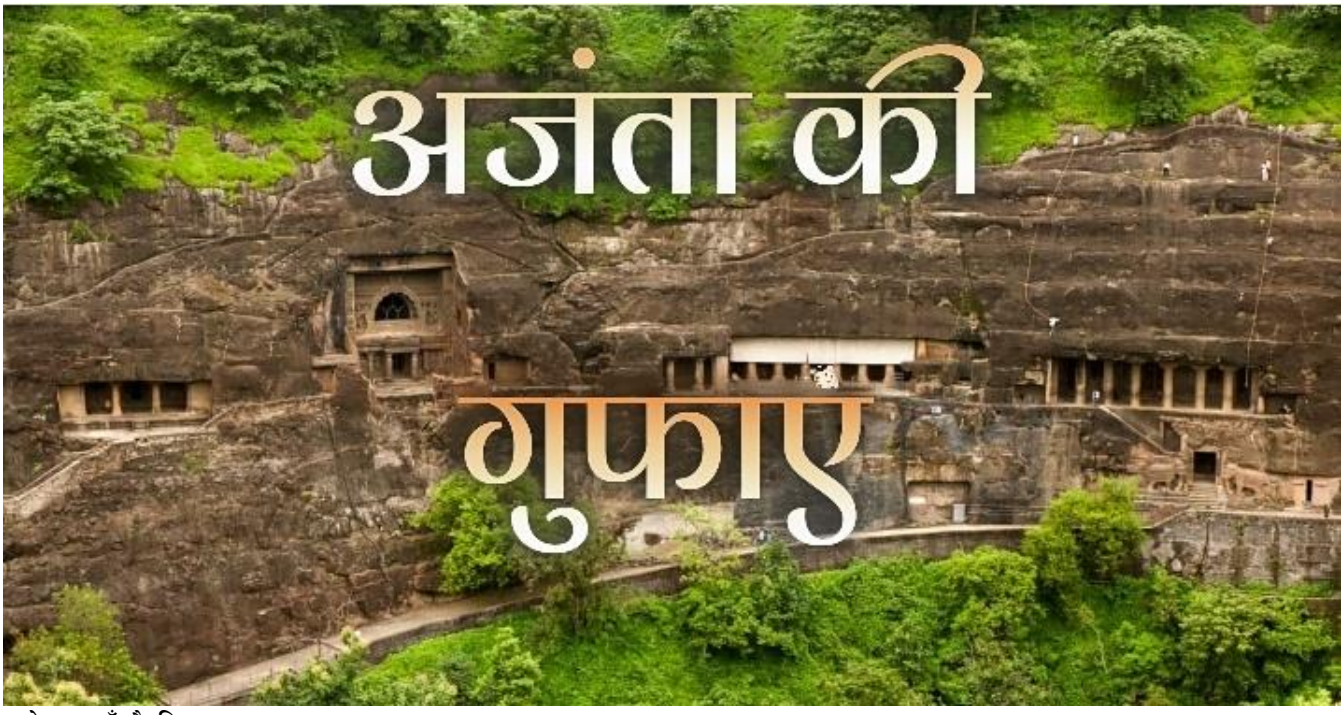

- **एलोरा गुफाएँ और विहार**:
  - **स्थान**: महाराष्ट्र
  - **इतिहास**: एलोरा गुफाएँ 6वीं से 9वीं शताब्दी तक बनीं, जहाँ कई बौद्ध विहार स्थित थे। यह गुफाएँ महायान बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के प्रचार स्थल थीं।
  - **विशेषताएँ**: यहाँ कई गुफाएँ हैं, जो बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म के प्रति समर्पित हैं। एलोरा में प्रमुख विहार गुफाएँ भी हैं, जो ध्यान और साधना के लिए उपयोग की जाती थीं।
  - **महत्त्व**: एलोरा गुफाएँ बौद्ध धर्म के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख करती हैं और यहाँ के विहारों में ध्यान साधना की प्रक्रिया को दिखाया गया है।
- **कांची गुफाएँ और विहार**:
  - **स्थान**: तमिलनाडु
  - **इतिहास**: कांची की गुफाएँ प्रमुख बौद्ध विहारों का स्थल थीं और यहाँ का विहार विशेष रूप से बौद्ध भिक्षुओं के ध्यान और उपासना के लिए था।
  - **विशेषताएँ**: इन गुफाओं में बौद्ध धर्म से संबंधित चित्रकला और मूर्तियाँ मिलती हैं। यहाँ के विहारों में भिक्षु रहते थे और ध्यान करते थे।
  - **महत्त्व**: कांची में स्थित विहार दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म के विकास के संकेतक थे।
- **भारहूत गुफाएँ और विहार** :
  - **स्थान**: मध्य प्रदेश
  - **इतिहास**: भारहूत गुफाएँ 2nd शताब्दी BCE में बनीं, जो बौद्ध विहारों और धार्मिक कार्यों का स्थान थीं।
  - **विशेषताएँ**: इन गुफाओं में बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण चित्रकला और मूर्तियाँ पाई जाती हैं, जो बौद्ध भिक्षुओं की साधना और उनके धार्मिक जीवन के संकेतक हैं।
  - **महत्त्व**: भारहूत गुफाएँ बौद्ध धर्म के शुरुआत के समय की वास्तुकला और धर्म की परंपरा को दर्शाती हैं।
- **सांची गुफाएँ और विहार**:
  - **स्थान**: मध्य प्रदेश
  - **इतिहास**: सांची गुफाएँ बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध स्थल हैं, जहाँ बौद्ध भिक्षु ध्यान और साधना करते थे।
  - **विशेषताएँ**: यहाँ के विहार में बौद्ध धर्म से संबंधित चित्रकला और मूर्तियाँ होती थीं। सांची की गुफाएँ उन समयों की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्वता को व्यक्त करती हैं।
  - **महत्त्व**: यह विहार सांची स्तूप के पास स्थित हैं और बौद्ध धर्म के विकास के संकेतक हैं।
- **कुमारग्राम विहार**:
  - **स्थान**: पश्चिम बंगाल
  - **इतिहास**: कुमारग्राम एक प्रमुख बौद्ध स्थल था जहाँ एक बड़ा विहार स्थित था।
  - **विशेषताएँ**: इस विहार में बौद्ध धर्म के अनुयायी रहते थे और ध्यान करते थे।
  - **महत्त्व**: यह बौद्ध धर्म के समृद्धि और प्रसार का प्रतीक स्थल था।
- **विहार की स्थापत्य विशेषताएँ:**
  - **गुफा स्थापत्य**: प्राचीन विहारों का निर्माण मुख्य रूप से गुफाओं के रूप में किया जाता था। ये गुफाएँ पत्थर को खोखला करके बनाई जाती थीं और उनके अंदर ध्यान और उपासना के लिए जगह बनाई जाती थी।
  - **मुक्त स्थान**: अधिकांश विहारों में एक बड़ा हॉल या खुला आंगन होता था, जहां भिक्षु अपने धार्मिक अनुष्ठान करते थे।
  - **ध्यान कक्ष**: विहारों में विशेष रूप से ध्यान और साधना के लिए कक्ष बनाए जाते थे।
  - **चित्रकला और मूर्तियाँ**: प्राचीन विहारों में बौद्ध धर्म से संबंधित चित्रकला और मूर्तियाँ उकेरी जाती थीं, जो धार्मिक जीवन को दर्शाती थीं।
- भारत के प्राचीन **विहार** बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण केंद्र थे, जहां भिक्षु रहते थे और ध्यान साधना करते थे। ये धार्मिक स्थल न केवल बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण थे, बल्कि भारत की प्राचीन स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा भी थे।

- **बुद्धगृह:**
  - **बुद्धगृह** बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा ध्यान और पूजा के लिए बनाए गए थे। इन्हें पत्थर से खोदकर गुफाओं में या खुले मैदानों में स्थापित किया जाता था।
  - ये स्थान विशेष रूप से ध्यान और उपासना के लिए बनाए जाते थे।
  - **कांची और नालंदा विश्वविद्यालय** के अवशेष इस प्रकार के निर्माण कार्यों के उदाहरण हैं।

- **महल और किलों का निर्माण:**
  - प्राचीन भारतीय महल और किले शाही परिवारों के लिए बनाए जाते थे। इनमें प्राचीन शाही जीवन और सैन्य संरचनाओं का विशिष्ट प्रभाव था।
  - **लाल किला** और **सालबात किला** जैसे किलों का निर्माण ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है।

❑ **वास्तुकला का धार्मिक रूप:**

- भारतीय स्थापत्य कला में **मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, और गुरुद्वारों** का विशेष स्थान है।
- इन धार्मिक संरचनाओं में आस्थाएँ, धार्मिक विचार और कार्यप्रणाली विशेष रूप से ध्यान में रखी जाती हैं।
- भारतीय मंदिर स्थापत्य को दो प्रमुख श्रेणियों में बांटा जा सकता है:
- विधि आधारित स्थापत्य: यह विशेष रूप से वैदिक परंपराओं और शास्त्रों (जैसे वास्तु शास्त्र) पर आधारित होता है।
- प्राकृतिक प्रभाव: यह डिजाइन और संरचना के चुनाव में प्राकृतिक तत्वों और स्थान की विशेषताओं का ध्यान रखता है।

❑ **मंदिर स्थापत्य कला:**

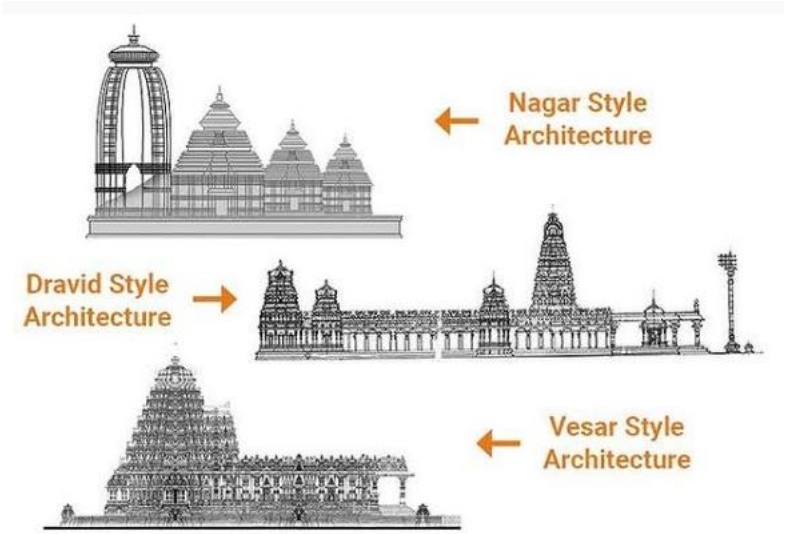

- भारत में मंदिर स्थापत्य की शुरुआत गुप्त काल से मानी जाती है, हालांकि मौर्य काल में भी कुछ मंदिर निर्माण हुए थे।
- मंदिरों के स्थापत्य में गर्भगृह, मंडप, शिखर और घंटा की प्रमुख भूमिका होती है।
- प्रसिद्ध उदाहरण: सोमनाथ **मंदिर**, **कांची कंबेश्वर मंदिर**, **दिलवाड़ा जैन मंदिर** और **काजीरंगा मंदिर** आदि।
- **भारतीय मंदिर स्थापत्य कला और शैली** भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। प्राचीन मंदिर न केवल धार्मिक स्थल होते थे, बल्कि ये भारतीय वास्तुकला, कला, और धर्म के अद्वितीय उदाहरण भी प्रस्तुत करते थे। इन मंदिरों की वास्तुकला में विविधता, भव्यता और धार्मिक महत्व के साथ-साथ भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर भी समाहित होती थी।
- भारतीय मंदिरों की स्थापत्य कला में प्रमुख रूप से विभिन्न शैलियाँ और स्थापत्य तत्व शामिल थे, जो क्षेत्रीय और कालीन भिन्नताओं के आधार पर विकसित हुई। भारतीय मंदिर स्थापत्य कला की शैलियाँ एक साथ धार्मिक, सांस्कृतिक और कला से संबंधित अनेक पहलुओं को प्रकट करती हैं।

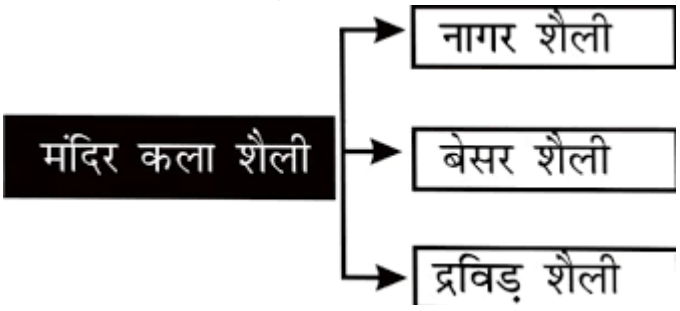

- **नागरा शैली :**
  - **काल**: 6वीं - 13वीं शताबदी
  - **विशेषताएँ:**
  - नागरा शैली का विकास उत्तर भारत में हुआ था और यह शैली शिखर के रूप में विभिन्न आकारों में जटिल और ऊँचे मीनार के रूप में प्रकट होती थी।
  - इस शैली में मुख्य रूप से गर्भगृह, आँगन और मुख्य मंदिर होते थे।
  - शिखर की ऊँचाई और उसका आकार मंदिर की भव्यता को बढ़ाता था।
  - **प्रसिद्ध उदाहरण**: कांची **कंबेश्वर मंदिर**, **केशव देव मंदिर** (हथिन) और **खजुराहो के मंदिर** (छत्तीसगढ़), **दिलवाड़ा जैन मंदिर** (राजस्थान), **सिद्धचक्र कूप मंदिर** (गुजरात), **देवगढ़ का मंदिर**।

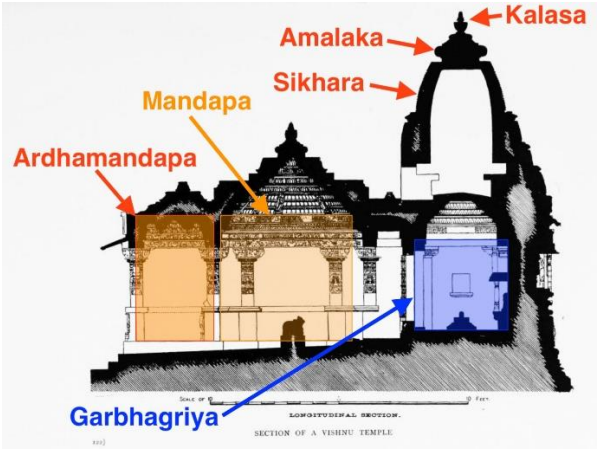

- **द्रविड़ शैली :**
  - **काल**: 7वीं - 17वीं शताबदी
  - **विशेषताएँ**:
  - द्रविड़ शैली मुख्य रूप से दक्षिण भारत, विशेष रूप से तमिलनाडु, केरल, कर्नाटका और आंध्र प्रदेश में प्रचलित थी।
  - इसमें **गोपुरम** (प्रमुख प्रवेश द्वार), **शिखर**, और **नंदी मंडप** की प्रमुखता थी।
  - इस शैली में मंदिरों का शिखर कई मंजिलों वाला और किले जैसे संरचनाओं के रूप में था। शिखर का आकार और डिज़ाइन जटिल होते थे, और अंदर भव्य नक्काशी और चित्रकला की व्यवस्था होती थी।
  - **प्रसिद्ध उदाहरण**: बृहतेश्वर मंदिर (Brihadeeswarar Temple) (तंजावुर), राजराजेश्वर मंदिर (तमिलनाडु), मीनाक्षी मंदिर (मदुरै), वृंदावन के मंदिर, आदिलाबाद के जैन मंदिर (तेलंगाना)।

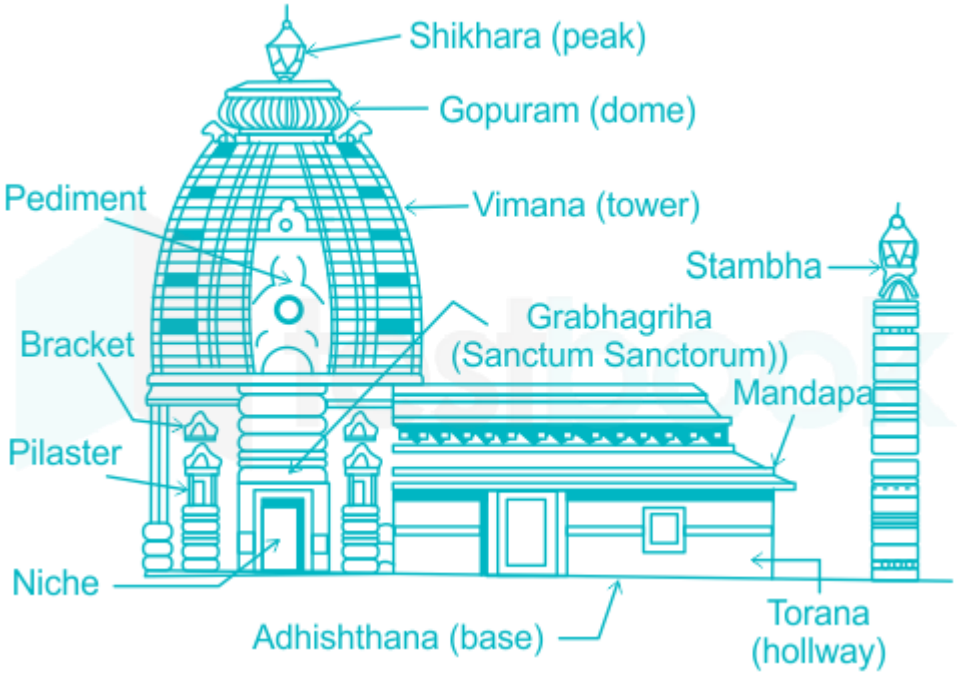

- **बेसर नगर शैली :**
  - **काल**: 7वीं - 10वीं शताबदी
  - **स्थान**: कर्नाटका, आंध्र प्रदेश
  - **विशेषताएँ**:
  - बेसर नगर शैली में **नागरा** और **द्रविड़** दोनों शैलियों का मिश्रण होता था।
  - इस शैली में मंदिरों के शिखर का डिजाइन दोनों शैलियों का सम्मिलन होता था, और वे अक्सर अधिक विस्तृत और संरचनात्मक रूप से जटिल होते थे।
  - **गर्भगृह** और **मंडप** का निर्माण समान रूप से किया जाता था।
  - **प्रसिद्ध उदाहरण**: **विजयनगर मंदिर** (हंपी), **बदामी गुफाएँ** (कर्नाटका), वृंदावन का वैष्णव मंदिर।
- **भारतीय मंदिरों की विशेषताएँ:**
  - **गर्भगृह** : यह मंदिर का सबसे पवित्र और केंद्रीय हिस्सा होता है, जहाँ मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है। यह स्थान अत्यधिक शांत और दिव्य माना जाता है।
  - **मंडप** : मंदिर के प्रवेश द्वार से लेकर गर्भगृह तक एक मंडप होता है, जहाँ भक्त पूजा अर्चना करते हैं। यह प्रायः स्तंभों से घिरा होता है।
  - **शिखर या वर्धमान** : मंदिर का ऊँचा शिखर या गुंबद देवी-देवता की शक्ति का प्रतीक होता है। यह आमतौर पर प्रक्षिप्त रूप में होता है और इसके ऊपर अक्सर देवी-देवताओं के प्रतीक चिन्ह या मूर्तियाँ होती हैं।
  - **गोपुरम** : यह मंदिर का प्रवेश द्वार होता है, जो मुख्य शिखर से बहुत ऊँचा और भव्य होता है। यह प्रायः द्रविड़ शैली के मंदिरों में पाया जाता है।
  - **नक्काशी और चित्रकला**: मंदिरों में दीवारों और स्तंभों पर जटिल नक्काशी और चित्रकला की जाती थी। यह चित्रकला मुख्य रूप से धार्मिक कथाओं, देवताओं और भगवान की मूर्तियों पर आधारित होती थी।
  - **कक्ष और आंगन** : मंदिरों में एक आंगन या आंतरिक प्रांगण होता था, जहाँ भक्त इकट्ठा होते थे। मंदिर के आसपास छोटे-छोटे कक्ष होते थे जिनमें पुजारी पूजा करते थे या श्रद्धालु ध्यान करते थे।
- **नगर शैली, बेसेरा शैली और द्रविड़ शैली के बीच मुख्य अंतर**

विवरण	नगर शैली	बेसेरा शैली	द्रविड़ शैली
स्थल	उत्तर भारत (मुख्य रूप से)	कर्नाटका और आंध्र प्रदेश (मुख्य रूप से)	दक्षिण भारत (मुख्य रूप से)
विस्तार	हिमालय से विंध्य क्षेत्र	विंध्य क्षेत्र से कृष्णा नदी	कृष्णा नदी से लेकर कन्या कुमारी
शिखर का प्रकार	शंकु के आकार में (तेज, उत्तल शिखर)	नागरा और द्रविड़ शैली का मिश्रण (संकर शैली)	कक्षों और अधिक मंजिलों वाला गोपुरम शिखर
प्रमुख मंदिर संरचना	गर्भगृह, मंडप, शिखर (गर्भगृह ऊपर शिखर)	गर्भगृह, मंडप, और शिखर (संकर रूप)	गर्भगृह, मंडप, गोपुरम (प्रवेश द्वार) और शिखर
प्रवेश द्वार (गोपुरम)	साधारण रूप से छोटा या कम उँचा	मिश्रित (गोपुरम और शिखर दोनों का प्रभाव)	बहुत ऊँचा और भव्य, जो मुख्य आकर्षण होता है
शिखर की सजावट	शिखर पर सामान्य रूप से कम नक्काशी	शिखर का डिज़ाइन मिश्रित, दोनों शैलियों का मिलाजुला रूप	शिखर पर विस्तृत नक्काशी, बहुस्तरीय और सजावटी
कक्ष और स्तंभ	स्टाइलिश और सुसंगत स्तंभ, आंतरिक सजावट सिम्पल होती है	स्तंभ और सजावट में विविधता, जो दोनों शैलियों को मिलाकर बनाई जाती है	मंदिरों में गहनों और मूर्तियों से सुसज्जित स्तंभ और आंतरिक सजावट
स्थापत्य कला का दृष्टिकोण	संतुलन और आधिकारिक संरचना का ध्यान	उत्तरी और दक्षिणी शैली का समन्वय	धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों को दर्शाने के लिए जटिल और भव्य
प्रसिद्ध उदाहरण	खजुराहो मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर	हंपी के मंदिर, बदामी गुफाएँ	तंजावुर का बृहतेश्वर मंदिर, मीनाक्षी मंदिर (मदुरै)

Note:-

- **नगर शैली** में शिखर अधिक तेज और शंकु आकार का होता है, जो उत्तर भारत में प्रचलित था।
- **बेसेरा शैली** में नागरा और द्रविड़ शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है, और यह दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में विकसित हुई।
- **द्रविड़ शैली** में मंदिरों की संरचना अधिक भव्य होती है, जिसमें ऊँचा गोपुरम और शिखर होता है, जो दक्षिण भारतीय मंदिरों का मुख्य रूप है।

❑ **जगन्नाथ पुरी का मंदिर-**

- जगन्नाथ मन्दिर ओडिशा (उड़ीसा) राज्य में स्थित है।
- इस मन्दिर का निर्माण 12 वीं शताब्दी में पूर्वी गंग राजा अनन्तवर्मन चोडगंग देव द्वारा करवाया गया था।
- यह मन्दिर भगवान जगन्नाथ (श्री कृष्ण) को समर्पित है।
- इस मन्दिर को हिन्दुओं के चार धाम में से एक माना जाता है।
- यह स्थान रथयात्रा के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें मन्दिर के तीनों मुख्य देवता भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा अलग-अलग भव्य और सुसज्जित रथों में विराजमान होकर नगर की यात्रा को निकलते हैं।
- इस मन्दिर के गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा एवं बलभद्र की मूर्तियाँ लकड़ी से निर्मित हैं।

❑ **विरुपाक्ष मंदिर-**

- प्रसिद्ध विरुपाक्ष मन्दिर हम्पी (कर्नाटक) में अवस्थित है।
- शिव के अवतार भगवान विरुपाक्ष को समर्पित, इस मन्दिर का निर्माण विजयनगर साम्राज्य के **देवराय द्वितीय** के समय करवाया गया था।
- इस मन्दिर का निर्माण द्रविड़ शैली में किया गया है।
- भगवान शिव के अतिरिक्त इस मन्दिर में भुवनेश्वरी और पम्पा की मूर्तियाँ भी बनी हुई हैं।
- इस मन्दिर के पास छोटे-छोटे और भी मन्दिर बने हुए हैं, जो अन्य देवी-देवताओं को समर्पित हैं।

❑ **देवगढ़ का दशावतार मंदिर**

- भारत के सांस्कृतिक इतिहास के सन्दर्भ में 'पंचायतन' शब्द मन्दिर की रचना शैली को निर्दिष्ट करता है।
- ललितपुर, उत्तर प्रदेश में गुप्तकालीन दशावतार मन्दिर है।
- इसका निर्माण गुप्त काल में हुआ।
- देवगढ़ का दशावतार मन्दिर वास्तु पद्धति की दृष्टि से 9 वर्गों में बाँटा गया है, जिसमें केन्द्र वर्ग के अन्तर्गत गर्भगृह का निर्माण किया गया है।
- इसके उत्खनन के दौरान चबूतरे के धरातल पर चारों ओर एक-एक छोटे देवालय की संरचना प्राप्त हुई थी, जिससे इस मन्दिर को पंचायतन मन्दिर कहते हैं।
- चबूतरे के मध्य में मूर्ति शिल्प की श्रृंखला चारों ओर बनाई गई थी, जिसमें कृष्ण लीला तथा रामलीला सम्बन्धी दृश्य हैं।
- कनिंघम के अनुसार, इस मन्दिर का निर्माण 600 ई. पू. में किया गया था।

❑ **भीतर गांव का मंदिर**

- कानपुर, उत्तर प्रदेश में स्थित हैं।
- भीतरगाँव मन्दिर का निर्माण गुप्त काल के दौरान 5वीं सदी ई. से 6वीं सदी ई. के मध्य हुआ।
- ईंटों से निर्मित यह भारत के प्राचीनतम मन्दिरों में से एक है।
- इस मन्दिर की ऊँची छत और शिखर ने उत्तर भारत की मन्दिर वास्तुकला की नागर शैली का मार्ग प्रशस्त किया।

❑ **ग्वालियर का तेली मंदिर**

- ग्वालियर के तेली मन्दिर का शिखर द्रविड़ शैली में बना हुआ है, जबकि इसकी स्थापत्य नक्काशी और मूर्ति उत्तर भारतीय शैली में बनी हुई है।

❑ **भूमरा का शिव मंदिर**

- इस मन्दिर का सम्बन्ध भूमरा स्थान से है। यह मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित है, इसका निर्माण पाँचवीं सदी के मध्य में किया गया था।

❑ **एरण का विष्णु मंदिर**

- मध्य प्रदेश के सागर जिले में भगवान विष्णु को समर्पित गुप्तकालीन मन्दिर एरण नामक स्थान पर है, जिसका निर्माण राजा ध्यान विष्णु ने करवाया था।

❑ **सोनगिरि के 108 जैन मंदिर**

- सोनगिरी जहाँ 108 जैन मन्दिर बने हुए हैं, मध्य प्रदेश के दतिया जिले के सन्निकट स्थित हैं।
- सोनगिरी, दतिया से 15 किमी की दूरी पर अवस्थित है।
- सोनगिरी जैन धर्म के दिगम्बर सम्प्रदाय का प्रमुख तीर्थस्थल है।
- इसका प्राचीन नाम श्रमणांचल, श्रमणगिरी और स्वर्णगिरी है।
- सोनगिरी पहाड़ी पर 77 जैन मन्दिर हैं।
- इस पहाड़ी पर बना 57 नम्बर का मन्दिर सर्वप्रमुख है।
- इसमें जैन तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की 11 फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित है।
- प्रतिवर्ष होली के अवसर पर यहाँ जनपदीय मेला लगता है।
- यह पहाड़ी क्षेत्र जैन सन्तों के निर्वाण प्राप्ति का प्रमुख केन्द्र रहा है।

❑ **भोजशाला मंदिर**

- भोजशाला मन्दिर की अधिष्ठात्री देवी भगवती सरस्वती हैं।
- यह मध्य प्रदेश के धार में स्थित है।
- इसका निर्माण मालवा के परमार वंश के पराक्रमी शासक राजाभोज के द्वारा 11 वीं शताब्दी में किया गया था।
- राजाभोज ने सुप्रसिद्ध मूर्तिकार मनथल द्वारा संगमरमर पत्थर से देवी की शान्तमुद्रा में मनमोहक मूर्ति बनवाई तथा मन्दिर का निर्माण करवाया था।

❑ **भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर**

- लिंगराज मन्दिर भुवनेश्वर (ओडिशा) में अवस्थित है।
- इस मन्दिर का निर्माण सोमवंशी राजा ययाति प्रथम ने 11वीं शताब्दी में करवाया था।
- यह मन्दिर भगवान त्रिभुवनेश्वर को समर्पित है। इस मन्दिर का निर्माण नागर शैली में हुआ है।
- इस मन्दिर का सबसे आकर्षक भाग इसका शिखर है, जो 180 फीट ऊँचा है।
- मन्दिर के शिखर पर आमलक तथा कलश है।

❑ **दिलवाड़ा का जैन मंदिर**

- माउण्ट आबू का दिलवाड़ा जैन मन्दिर संगमरमर से बना है।
- इस मन्दिर का निर्माण 1231 ई. में गुजरात के चालुक्य शासक भीमदेव प्रथम के मन्त्री विमलशाह द्वारा करवाया गया था।
- दिलवाड़ा जैन मन्दिर पाँच मन्दिरों का समूह है। यहाँ निर्मित मन्दिरों में श्री महावीर स्वामी मन्दिर, पार्श्वनाथ मन्दिर, पित्तलहार मन्दिर, लूना वसाही मन्दिर तथा विमाल वसाही मन्दिर शामिल हैं।

❑ **खजुराहो के मतंगेश्वर मंदिर**

- खजुराहो का मातंगेश्वर मन्दिर शिव को समर्पित है।
- लक्ष्मण मन्दिर के पास निर्मित यह मन्दिर वर्गाकार है।
- यह मन्दिर अधिक अलंकृत नहीं है।
- इस मन्दिर का शिखर बहुमंजिला है।
- खजुराहों के मन्दिर समूहों का निर्माण 950-1050 ई. के मध्य चन्देल शासकों ने कराया था।
- ये मन्दिर वास्तुकला की नागर शैली का अद्भुत उदाहरण है।

❑ **मिनाक्षी मंदिर**

- मीनाक्षी मन्दिर तमिलनाडु के मदुरै में अवस्थित है।
- इस मन्दिर का निर्माण पाण्ड्य शासक कुलशेखर पाण्ड्य ने संगमकाल में करवाया था।
- यह मन्दिर भगवान शिव एवं देवी पार्वती (जिनकी आँख मछली के समान है) को समर्पित है।
- इस मन्दिर का गर्भगृह 3500 वर्ष पुराना है तथा बाहरी दीवारों का निर्माण कार्य 1500-2000 वर्ष पुराना है।

❑ **महाबलीपुरम के रथ मंदिर**

- यह मन्दिर पल्लव वास्तुकला का नमूना है।
- पल्लव वास्तुकला को महेन्द्रवर्मन शैली, मामल्ल शैली, राजसिंह शैली तथा नन्दिवर्मन शैली में विभाजित किया गया है।
- एकाश्म रथ मन्दिर बनाने की परम्परा मामल्ल शैली से शुरू हुई।
- रथ मन्दिरों में धर्मराज रथ सबसे अधिक प्रसिद्ध तथा सबसे बड़ा है, जबकि द्रौपदी रथ सबसे छोटा है।
- इसमें किसी प्रकार का अलंकरण भी नहीं है।
- इन मन्दिरों को **'सप्त पैगोडा'** कहा जाता है।
- द्रौपदी रथ मन्दिर पर नरसिंह वर्मन की मूर्ति अंकित है।

❑ **एलोरा का कैलाश मंदिर**

- गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य में अवस्थित हैं।
- इस मन्दिर का निर्माण राष्ट्रकूटवंशी शासक कृष्ण प्रथम द्वारा कराया गया था।
- यहाँ कुल 34 गुफाएँ हैं, जिनमें 12 बौद्ध, 18 हिन्दू तथा 4 जैन गुफा मन्दिर हैं।
- ये यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल हैं।
- एलोरा का कैलाश मन्दिर भारत में सर्वाधिक सुविस्तृत तथा वैभवशाली शैलकृत वेदिकाएँ तथा सर्वाधिक अद्भुत स्थापत्य कलात्मक की विलक्षणता को प्रदर्शित करता है।
- सम्पूर्ण मन्दिर एक ही पाषाण को काटकर निर्मित हुआ है।
- इसका निर्माण कार्य ऊपर से नीचे की ओर किया गया तथा स्थापत्य कार्य के साथ-साथ मूर्तिकारी एवं अलंकरण का भी प्रयोग किया गया था।

❑ **वृहदेश्वर मंदिर**

- वृहदेश्वर (राजराजेश्वर) मन्दिर का निर्माण चोल शासक राजराजा प्रथम द्वारा करवाया गया था।
- यह भारत के मन्दिरों में सबसे ऊँचा मन्दिर है, जिसे द्रविड़ शैली का आकर्षक नमूना माना जाता है।
- मन्दिर में प्रवेश द्वार पर दोनों ओर दो द्वारपालों की मूर्तियाँ निर्मित हैं।
- वृहदेश्वर मन्दिर परिसर में एक भारी-भरकम नन्दी की मूर्ति है, जिसे भारत की विशालतम नन्दी मूर्ति माना जाता है।
- यह मूर्ति मन्दिर के बहिर्भाग में बनी है।

❑ **चित्रगुप्तस्वामी मंदिर**

- चित्रगुप्त स्वामी मन्दिर, जिसे चित्रगुप्त का एकमात्र मन्दिर माना जाता है, काँची (तमिलनाडु) में स्थित है। इन्हें यम का सहायक देवता माना जाता है।
- यह मन्दिर द्रविड़ शैली में निर्मित है।
- काँचीपुरम के चित्रगुप्त मन्दिर का निर्माण 9वीं सदी में चोल शासकों के समय किया गया था।
- इस मन्दिर में चैत्र पूर्णिमा नामक त्योहार मनाया जाता है।
- ऐसी मान्यता है कि इसी दिन भगवान चित्रगुप्त का विवाह हुआ था।

❑ **अंकोटवार का विष्णु मंदिर**

- अंकोरवाट मन्दिर की प्रारम्भिक अभिकल्पना तथा निर्माण सम्राट सूर्यवर्मन द्वितीय के राज्यकाल के दौरान हुई।
- अंकोरवाट का मन्दिर कम्बोडिया में स्थित एक विष्णु मन्दिर है।
- मूल रूप से यह भगवान विष्णु को समर्पित था, किन्तु 12वीं शताब्दी के अन्त में यह बौद्ध मन्दिर में परिवर्तित हो गया।
- वर्तमान में यह विश्व का सबसे बड़ा हिन्दू मन्दिर है।
- इस मन्दिर की दीवारों पर भारतीय धर्म ग्रन्थ के प्रसंगों का चित्रण किया गया है।
- इस मन्दिर को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थलों की सूची में रखा गया है।

❑ **रंगनाथ का मंदिर**

- दक्षिण भारत में भगवान रंगनाथा (जिन्हें भगवान वेंकटेश भी कहते हैं) का मन्दिर तिरुमल्ला पहाड़ी पर स्थित है। इसे तिरुपति मन्दिर भी कहते हैं।
- यह मन्दिर आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित एक हिन्दू मन्दिर है।
- यहाँ पर स्थापित देवता वेंकटेश को भगवान विष्णु का स्वरूप माना जाता है।
- इस मन्दिर का इतिहास 9वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ है, किन्तु इसकी ख्याति 15वीं शताब्दी के पश्चात् दूर-दूर तक विस्तृत है।

❑ **सूर्य मंदिर**

- भारत में 12 अर्क स्थलों पर 12 सूर्य मन्दिर स्थापित हैं। इसमें तीन सूर्य मन्दिर बिहार में स्थित हैं। ये हैं-उलार्क (पटना), दक्षिणार्क (गया) तथा देवार्क (औरंगाबाद)। अन्य सूर्य मन्दिरों में मोढ़ेरा (गुजरात), कोणार्क (ओडिशा), रनकपुर (राजस्थान), सूर्य प्रहर मन्दिर (असम), सूर्य मन्दिर (प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश), मार्तण्ड (कश्मीर), कटारमल (उत्तराखण्ड), सूर्य मन्दिर (ग्वालियर), बाजाली सूर्य मन्दिर (उन्नाव, उत्तर प्रदेश) प्रमुख हैं।

❑ **प्रमुख सूर्य मंदिर** –

- **कोणार्क का सूर्य मंदिर**
  - सूर्य मन्दिर कोणार्क (ओडिशा) में स्थापित है।
  - इस मन्दिर का निर्माण तेरहवीं शताब्दी में गंग वंश के राजा नरसिंह देव प्रथम ने करवाया था।
  - यह मन्दिर पत्थरों से बनाया गया है।
  - इस मन्दिर को रथ का स्वरूप देने के लिए मन्दिर के आधार पर दोनों ओर एक जैसे पत्थर के 24 पहिये बनाए गए हैं।
  - पहियों को खींचने के लिए 7 घोड़े बनाए गए हैं।
  - इन पहियों का व्यास तीन मीटर है। आधार की बाहरी दीवारों पर लगे पत्थरों पर विभिन्न आकृतियों को सजीवता के साथ उकेरा गया है।
  - इस मन्दिर का महामण्डप चबूतरे सहित कुल 39 मी. का है।
  - महामण्डप के विभिन्न स्तरों पर सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि आदि नक्षत्रों की प्रतिमाएँ हैं।
  - इस मन्दिर को वर्ष 1984 में विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था।
- **मोढेरा का सूर्य मंदिर**
  - मोढेरा का सूर्य मन्दिर गुजरात राज्य में स्थित है।
  - इसका निर्माण सोलंकी वंश के राजा भीमदेव प्रथम द्वारा करवाया गया था।
  - इस मन्दिर का निर्माण चमकीले पीले बलुआ पत्थरों से हुआ है और इस मन्दिर परिसर में गर्भगृह, गढ़मण्डप, सभाकक्ष तथा एक पवित्र जलाशय जिसे सूर्य कुण्ड या राम कुण्ड कहा जाता है, शामिल हैं।
  - विषुव के समय सूर्य की किरणें इस मन्दिर के गर्भगृह पर पड़ती हैं।
- **अरसवल्ली का सूर्य मंदिर**
  - सूर्य मन्दिरों के लिए विख्यात है।
  - यह मन्दिर भारत के आंध्र प्रदेश में अरसवल्ली गाँव में अवस्थित है।
  - यह 7वीं शताब्दी प्रदेश एक प्रमुख सूर्य मन्दिर है।
  - इस मन्दिर का निर्माण सम्भवतः कलिंग राजवंश के शासक देवेन्द्र शर्मा द्वारा कराया गया था।

❑ **कंदरिया महादेव मंदिर**

- कन्दरिया महादेव मन्दिर मध्य युग में खजुराहो चन्देल शासकों की राजधानी थी।

- मध्य प्रदेश के छतरपुर में स्थित खजुराहो का कन्दरिया महादेव मन्दिर नागर वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण है।

❑ **चौसठ योगिनी मंदिर**

- यह कच्छपघात राजवंश के शासनकाल में निर्मित एक वृत्ताकार मन्दिर है।
- इसके डिजाइन से यह लोकप्रिय धारणा बनी कि यह भारतीय संसद भवन के लिए प्रेरणा स्रोत रहा था।
- यह मन्दिर 9वीं से 11वीं शताब्दी के दौरान निर्मित वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली है।
- इन मन्दिरों का गोलाकार आकार समय की चक्रीय प्रकृति और लौकिक व्यवस्था का प्रतीक है।
- चौंसठ योगिनी मन्दिर में 64 कमरें हैं तथा सभी कमरों में भव्य शिवलिंग स्थापित हैं।
- इस अद्भुत मन्दिर का निर्माण 100 फीट की ऊँचाई पर किया गया है।
- मन्दिर के बीच में एक खुले मण्डप का निर्माण किया गया है, जिसमें एक विशाल शिवलिंग स्थापित है।
- इस मन्दिर में विद्यालय स्थापित था, जहाँ ज्योतिष और गणित की शिक्षा दी जाती थी।

❑ **साम्राज्य स्थापत्य:**

- भारतीय स्थापत्य कला में साम्राज्य काल में शाही महल, किले और कचहरी का निर्माण महत्वपूर्ण था।
- मुगल काल में ताज महल जैसी भव्य इमारतों का निर्माण हुआ।
- मुगल स्थापत्य का प्रभाव विशेष रूप से किलों, महलों और उद्यानों में देखा जाता है, जिसमें प्रमुख तत्वों में कमल के फूल, गुंबद, मीनारें, और बड़े बगीचे शामिल थे।
- प्रसिद्ध उदाहरण: ताज महल (आगरा), कुतुब मीनार (दिल्ली), लाल किला (दिल्ली) और **दिल्ली का जामा मस्जिद** आदि।

❑ **इस्लामी स्थापत्य कला:**

- इस्लामी स्थापत्य कला में गुंबद, मीनार, आर्क, और शाही उद्यान प्रमुख तत्व थे।
- इस स्थापत्य शैली में सादा, लेकिन भव्यता और स्मार्ट डिजाइन का ध्यान रखा गया।
- प्रसिद्ध उदाहरण: कुतुब मीनार, ताज **महल**, **बडा इमामबाड़ा (लखनऊ)**, और **कुतुब मिनार**।

❑ **मुगल वास्तुकला:**

- मुगलों ने भारतीय स्थापत्य कला में अपनी विशिष्ट शैली जोड़ी, जिसमें समीपस्थ बगीचे, गुंबद और मीनार प्रमुख तत्व थे।
- इन भवनों में प्राचीन भारतीय और इस्लामी शैली का एक मिश्रण देखा जाता है।
- प्रमुख उदाहरण: ताज महल, लाल **किला**, **आगरा किला**, और **जामा मस्जिद**।

❑ **भारतीय स्थापत्य कला के प्रमुख तत्व**

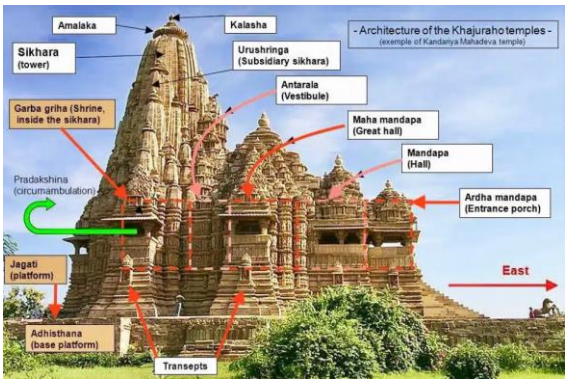

- भारतीय स्थापत्य कला एक समृद्ध और विविध परंपरा है जो न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसमें गहरी वैज्ञानिक और भौतिक समझ भी समाहित है। भारतीय स्थापत्य कला में कुछ प्रमुख तत्व होते हैं जो इसके विशिष्ट रूप और सौंदर्य को परिभाषित करते हैं।
- यहाँ भारतीय स्थापत्य कला के प्रमुख तत्वों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है:
- **गर्भगृह :**
  - यह मंदिर का सबसे पवित्र स्थान होता है जहाँ मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है। गर्भगृह को मंदिर के केंद्र में रखा जाता है और इसे अत्यधिक पवित्र माना जाता है।
  - यह छोटा, साधारण और ध्यान केंद्रित करने के लिए उपयुक्त स्थान होता है।
  - इसके ऊपर शिखर या विमान होता है।

- **शिखर / गोपुरम**
  - **शिखर:** यह मंदिर का ऊपरी हिस्सा होता है, जो आमतौर पर ऊपर की ओर शंकु आकार में विस्तारित होता है। यह मंदिर के पवित्रता और दिव्यता का प्रतीक होता है।
  - **गोपुरम:** यह दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रवेश द्वार होता है, जो बहुत ऊँचा और भव्य होता है। गोपुरम की दीवारों पर देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और चित्रकला होती है।
- **मंडप :**
  - यह एक खुला या छत वाला स्थान होता है जहाँ भक्त पूजा करते हैं। यह गर्भगृह के सामने स्थित होता है और आमतौर पर स्तंभों से घिरा होता है।
  - मंडप का आकार और सजावट मंदिर की शैली और महत्व के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।
- **आंगन :**
  - मंदिर का एक खुला क्षेत्र जहाँ भक्त इकट्ठा होते हैं और धार्मिक क्रियाएँ होती हैं।
  - आंगन आमतौर पर मंदिर के बाहरी हिस्से में स्थित होता है और इसमें बगीचे या पानी की टंकी भी हो सकती है।
- **स्तंभ :**
  - भारतीय मंदिर स्थापत्य में स्तंभों का विशेष महत्व है। ये न केवल संरचनात्मक रूप से मंदिर को मजबूती प्रदान करते हैं, बल्कि सजावटी रूप से भी इन पर जटिल नक्काशी और चित्रकला की जाती है।
  - स्तंभों का उपयोग मंडप, दरवाजों और अन्य संरचनाओं में किया जाता है।
- **जलाशय और तालाब :**
  - प्राचीन मंदिरों में जलाशयों और तालाबों का निर्माण धार्मिक उद्देश्य से किया जाता था। इनका उपयोग स्नान, पूजा और अन्य धार्मिक क्रियाओं के लिए होता था।
  - यह प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण होते थे।
- **नक्काशी और चित्रकला:**
  - भारतीय स्थापत्य कला में दीवारों, स्तंभों, और छतों पर जटिल और सुंदर नक्काशी और चित्रकला की जाती थी।
  - नक्काशी में धार्मिक कथाओं, देवताओं, चित्र और लोक जीवन को चित्रित किया जाता था।
  - इस कला का उद्देश्य केवल सजावट नहीं था, बल्कि यह धार्मिक और सांस्कृतिक संदेश देने का भी एक माध्यम था।
- **विमान :**
  - यह शिखर के रूप में होता है जो मंदिर के गर्भगृह के ऊपर स्थित होता है। विमान का आकार और डिजाइन मंदिर की शैली पर निर्भर करते हैं।
  - इसे एक प्रकार की पवित्र संरचना माना जाता है, जो देवता के निवास स्थान के रूप में कार्य करता है।
- **प्रवेश द्वार :**
  - भारतीय मंदिरों में प्रवेश द्वार का महत्व बहुत अधिक होता है। इन द्वारों पर जटिल नक्काशी और मूर्तियाँ होती हैं जो भक्तों को मंदिर में प्रवेश करने से पहले धार्मिक चेतना की ओर निर्देशित करती हैं।
- **वास्तुशास्त्र :**
  - भारतीय स्थापत्य कला में वास्तुशास्त्र का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यह शास्त्र भवनों के निर्माण में दिशाओं, आकार और अनुपात का निर्धारण करता है। भारतीय मंदिरों का निर्माण वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार किया जाता था ताकि ऊर्जा का संतुलन और समृद्धि सुनिश्चित हो सके।
- **रंग और सजावट :**
  - भारतीय मंदिरों में रंगों का बहुत महत्व होता है। भवन की दीवारों और स्तंभों को विभिन्न रंगों से सजाया जाता है, जो देवताओं के प्रति श्रद्धा और भक्ति को व्यक्त करते हैं।
  - सजावट में स्वर्ण, चाँदी और अन्य धातुओं का भी उपयोग किया जाता है।
- **छत :**
  - मंदिरों की छत भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसे न केवल संरचनात्मक रूप से मजबूत बनाया जाता है, बल्कि इसे धार्मिक चित्रों, नक्काशी और रंगों से सजाया जाता है।
  - छत पर देवताओं की मूर्तियों या धार्मिक चित्रकला का चित्रण होता है।

❑ **भारतीय स्थापत्य कला के प्रसिद्ध उदाहरण:**

- **ताज महल (आगरा):**
  - मुग़ल स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण, जिसे सफेद संगमरमर से निर्मित किया गया है।
- **कुतुब मीनार (दिल्ली):**
  - इस्लामी वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण, यह दुनिया का सबसे ऊँचा ईंटों से बना मीनार है।
- **सोमनाथ मंदिर (गुजरात):**
  - प्राचीन हिन्दू मंदिर स्थापत्य का उदाहरण, जो भारतीय संस्कृति और वास्तुकला का प्रतीक है।
- **दिलवाड़ा जैन मंदिर (राजस्थान):**
  - यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट कारीगरी और जैन स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है।
- **सांची स्तूप (मध्य प्रदेश):**
  - बौद्ध स्थापत्य कला का प्रसिद्ध उदाहरण, जो बौद्ध धर्म के इतिहास को प्रदर्शित करता है।

भारतीय स्थापत्य कला एक विस्तृत और विविध क्षेत्र है, जो विभिन्न समयों, शासकों और धर्मों से प्रभावित हुआ है। यह कला न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखती है, बल्कि यह भारतीय समाज, उसके विश्वासों, कला, विज्ञान, और तकनीकी कौशल का प्रतीक भी है। भारतीय स्थापत्य ने विभिन्न स्थापत्य शैलियों को अपनाया और समृद्ध किया, जो आज भी भारत की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा हैं।

आधुनिक वास्तुकला

भारतीय वास्तुकला पर गहरे प्रभाव डालने वाले प्रमुख तत्वों में से एक हैं। विशेष रूप से **पुर्तगाली**, **फ्रांसीसी** और **ब्रिटिश वास्तुकला** ने भारतीय स्थापत्य कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन यूरोपीय शक्तियों के प्रभाव से भारतीय वास्तुकला में नए डिजाइन, निर्माण विधियाँ, और शहरी नियोजन की प्रक्रियाएँ आई।
यहाँ हम इन तीनों यूरोपीय प्रभावों को विस्तार से देखेंगे:

❑ **पुर्तगाली वास्तुकला :**

- पुर्तगाली उपनिवेश ने भारत के पश्चिमी तट, विशेष रूप से गोवा, में अपनी स्थापत्य शैली का महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा। पुर्तगालियों का भारत में आगमन 15वीं शताब्दी के अंत में हुआ, और उन्होंने यहां चर्चों, किलों और प्रशासनिक भवनों के निर्माण में अपनी शैली का समावेश किया।
- **विशेषताएँ:**
  - **गॉथिक शैली का प्रभाव:** पुर्तगाली चर्चों में गॉथिक शैली की वास्तुकला प्रमुख थी, जिसमें उच्च छतें, बड़े उद्घाटन और जटिल नक्काशी शामिल थी।
  - **किलों का निर्माण:** पुर्तगालियों ने भारत में कई किलों का निर्माण किया, जैसे **आगुआदा किला**, जो उनके सैन्य और प्रशासनिक कार्यों के लिए महत्वपूर्ण थे।
  - **धार्मिक संरचनाएँ:** पुर्तगालियों ने गोवा में **बासीलीका ऑफ बॉम जीसस** और **सी कैथेड्रल** जैसे चर्चों का निर्माण किया। इन चर्चों में यूरोपीय गोथिक शैली का मिश्रण और भारतीय तत्वों का समावेश देखा जा सकता है।

❑ **फ्रांसीसी वास्तुकला :**

- फ्रांसीसी वास्तुकला का प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ क्षेत्रों, विशेष रूप से **पुदुचेरी** में दिखाई देता है। फ्रांसीसियों ने पुदुचेरी को अपनी राजधानी के रूप में चुना और यहां अपनी स्थापत्य शैली को लागू किया।
- **विशेषताएँ:**
  - **क्लासिकल और बारोक शैली:** फ्रांसीसी वास्तुकला में **क्लासिकल शैली** और **बारोक शैली** का प्रभाव था, जो भव्यता और अनुशासन को दर्शाता था। इन शैलियों में बड़े स्तंभ, संगमरमर और सजावटी दीवारों का उपयोग किया गया।
  - **निर्माण में सुसंगतता:** पुदुचेरी में सड़क योजना, भवनों की ऊँचाई और उनके रूप में विशेष सुसंगतता दिखाई देती है।
  - **सार्वजनिक और प्रशासनिक भवन:** पुदुचेरी में **फ्रांसीसी कचहरी** और **सार्वजनिक स्थानों** के निर्माण में फ्रांसीसी वास्तुकला के तत्वों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

❑ **ब्रिटिश वास्तुकला :**

- ब्रिटिश साम्राज्य का भारत पर बहुत बड़ा प्रभाव था और ब्रिटिश वास्तुकला का प्रभाव भारत के अधिकांश प्रमुख शहरों में स्पष्ट रूप से देखा जाता है। 18वीं और 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश स्थापत्य शैली भारतीय निर्माण में प्रमुख हो गई, खासकर ब्रिटिश राज के समय।
- **विशेषताएँ:**
  - **नेओ-क्लासिकल और गॉथिक शैली:** ब्रिटिशों ने भारतीय भवनों में **नेओ-क्लासिकल**, **गॉथिक**, और **राजपूत पुनरुद्धार** शैली का प्रभाव डाला। इनमें इमारतों के बाहर और अंदर विस्तृत सजावट और उच्च स्तंभों का उपयोग किया गया।
  - **ब्रिटिश प्रशासनिक भवन: नई दिल्ली का संसद भवन**, **राष्ट्रपति भवन, कुतुब मीनार के पास बनी इमारतें**, और **सेंट्रल रेलवे स्टेशन (मुंबई)** ब्रिटिश वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरण हैं। इन भवनों में ब्रिटिश गॉथिक और विक्टोरियन शैली का प्रभाव देखा जाता है।
  - **सड़क और शहरी योजना:** ब्रिटिशों ने भारतीय शहरों में सड़कों और सार्वजनिक भवनों का निर्माण किया। **मुंबई**, **कोलकाता**, और **नई दिल्ली** जैसे शहरों में ब्रिटिश प्रभावी शहरी योजना और सड़कों का प्रभाव देखा जा सकता है। ब्रिटिश शासकों ने शहरों में चौड़ी सड़कों, सार्वजनिक उद्यानों, और भव्य इमारतों का निर्माण किया।
- **प्रमुख उदाहरण:**
  - **नई दिल्ली का राष्ट्रपति भवन**: यह भवन ब्रिटिश वास्तुकला का एक प्रमुख उदाहरण है, जो अंग्रेजी राज के दौरान निर्माण किया गया था। इसमें **क्लासिकल** और **बिजेंटाइन शैली** का प्रभाव देखने को मिलता है।
  - **इंडिया गेट** : यह भारत में एक प्रमुख युद्ध स्मारक है, जिसे ब्रिटिशों ने पहले विश्व युद्ध के शहीदों की याद में बनाया था। इसका डिज़ाइन भी **यूरोपीय** वास्तुकला के अनुसार किया गया था।
  - **विक्टोरिया मेमोरियल** : यह एक भव्य स्मारक है, जो ब्रिटिश स्थापत्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसे **नेओ-गॉथिक** और **नेओ-क्लासिकल** शैली में डिज़ाइन किया गया था।

❑ **आधुनिक भारत के प्रमुख वास्तुकार-**

- **बी.वी. दोशी**
  - अपनी विशिष्ट शैली के लिए जाने जाने वाले बी.वी. दोशी ने पारंपरिक भारतीय तत्वों को आधुनिक वास्तुकला सिद्धांतों के साथ मिलाकर एक कालातीत विरासत बनाई।
- **चार्ल्स कोरीया**
  - आधुनिक भारत को आकार देने वाले प्रमुख वास्तुकारों में से एक चार्ल्स कोरीया ने देश में समकालीन डिजाइनों के आंदोलन का नेतृत्व किया।
- **हफीज़ कॉन्ट्रैक्टर**
  - आधुनिक भारत को आकार देने वाले प्रमुख वास्तुकारों में से एक हफ़ीज़ कॉन्ट्रैक्टर ने देश में समकालीन डिजाइनों के आंदोलन का नेतृत्व किया।
- **ली कोर्बुसिए**
  - स्विस-फ्रेंच वास्तुकार ली कोर्बुसिए को आधुनिक भारतीय वास्तुकला का मुख्य प्रभाव माना जाता है।
- **प्रो. पीएस चानी**
  - आईआईटी रुड़की के आर्किटेक्चर और प्लानिंग विभाग में प्रोफ़ेसर प्रो. पीएस चानी आधुनिक भारतीय वास्तुकला के अध्ययन और शिक्षण में रुचि रखते हैं।

पुर्तगाली, फ्रांसीसी और ब्रिटिश वास्तुकला ने भारतीय स्थापत्य कला में एक नया आयाम जोड़ा। पुर्तगालियों ने गोवा और पश्चिमी तट पर गॉथिक और धार्मिक वास्तुकला का प्रभाव डाला, फ्रांसीसियों ने पुदुचेरी में क्लासिकल और बारोक शैली का समावेश किया, और ब्रिटिशों ने प्रशासनिक और सार्वजनिक भवनों के लिए नेओ-क्लासिकल और गॉथिक शैली का प्रभाव छोड़ा। इन तीनों यूरोपीय शक्तियों ने भारतीय वास्तुकला को एक समृद्ध और विविध रूप में आकार दिया, जिसमें भारतीय संस्कृति और यूरोपीय स्थापत्य शैलियों का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है।

भारतीय मूर्तिकला

भारतीय मूर्तिकला का तात्पर्य उस कला से है, जिसमें विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ या प्रतिमाएँ बनायी जाती हैं। यह कला भारत के प्राचीन इतिहास, धर्म, संस्कृति और सामाजिक जीवन को दर्शाने का एक महत्वपूर्ण तरीका रही है। भारतीय मूर्तिकला के माध्यम से न केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों को व्यक्त किया जाता है, बल्कि यह भारतीय जीवन की विविधता, प्रकृति और समाज के विभिन्न पहलुओं को भी चित्रित करती है।

❑ **भारतीय मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएँ:**

- **धार्मिक प्रेरणा:** भारतीय मूर्तिकला का सबसे प्रमुख उद्देश्य धार्मिक भावना को प्रकट करना है। प्राचीन काल में देवताओं, अवतारों, संतों और अन्य धार्मिक व्यक्तित्वों की मूर्तियाँ बनाई जाती थीं। उदाहरण स्वरूप, भगवान शिव, विष्णु, दुर्गा, गणेश, और बुद्ध की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से देखी जाती हैं।
- **स्थानीय शैलियाँ:** भारतीय मूर्तिकला की शैली समय, स्थान और संस्कृति के अनुसार भिन्न-भिन्न होती थी।
- **कुछ प्रमुख शैलियाँ हैं:**
  - **गांधार शैली:** उत्तर पश्चिम भारत में विकसित, जिसमें बौद्ध मूर्तियों का निर्माण हुआ।
  - **मथुरा शैली:** उत्तर भारत में उत्पन्न, जिसमें भगवान कृष्ण और अन्य हिंदू देवताओं की मूर्तियाँ बनायी जाती थीं।
  - **गुप्त शैली:** गुप्त काल में मूर्तियाँ और चित्रकलाएँ अत्यधिक शुद्ध और सुंदर होती थीं। इस समय की मूर्तियाँ जीवन की सरलता और सौंदर्य को प्रदर्शित करती हैं।
  - **चोल शैली:** दक्षिण भारत में विकसित हुई, जिसमें शिव और विष्णु से संबंधित मूर्तियाँ प्रचलित थीं।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतीक:** भारतीय मूर्तिकला में केवल धार्मिक प्रतीक ही नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी दर्शाया गया। उदाहरण के रूप में, नृत्य, संगीत, राजसी जीवन, और युद्ध के दृश्य भारतीय मूर्तिकला में दिखाई देते हैं।
- **आधुनिक प्रभाव और बदलाव:** समय के साथ, भारतीय मूर्तिकला पर विभिन्न विदेशी प्रभाव भी पड़े। जैसे कि मौर्य और गुप्त साम्राज्य के दौरान विदेशी कलाकारों का प्रभाव पड़ा। मुग़ल काल के दौरान भारतीय मूर्तिकला में इस्लामी कला का प्रभाव देखा गया, जिसमें शिल्प और सजावट के नए रूप सामने आए।
- **कला का माध्यम:** भारतीय मूर्तिकला में विभिन्न प्रकार के सामग्रियों का प्रयोग होता है जैसे कि पत्थर, लकड़ी, धातु, मिट्टी, संगमरमर आदि। इन सामग्रियों का उपयोग मूर्तियों की स्थायित्व और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए किया जाता था।

सिंधु कालीन मूर्तिकला

- **सिंधु घाटी सभ्यता** , जिसे हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है, लगभग 3300 ई.पू. से 1300 ई.पू. तक भारत और पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में फैली हुई थी। यह सभ्यता प्राचीन विश्व की एक प्रमुख सभ्यता मानी जाती है, और इसके अवशेषों से हमें न केवल लेखन और नगर नियोजन के बारे में जानकारी मिलती है, बल्कि इस सभ्यता की मूर्तिकला के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- सिंधु कालीन मूर्तिकला का अध्ययन हमें इस सभ्यता की धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक संरचनाओं और जीवनशैली के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

❑ **सिंधु कालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ:**

- **मूर्ति निर्माण का सामाग्री:** सिंधु घाटी सभ्यता में मूर्तियाँ बनाने के लिए मुख्यतः मिट्टी, पत्थर, ताम्र (तांबा), और कभी-कभी हड्डी का प्रयोग किया जाता था। मिट्टी की मूर्तियाँ सबसे अधिक पाई जाती हैं, जो सामान्यत: छोटे आकार में होती थीं। इन मूर्तियों में न तो अधिक चित्रकला होती थी और न ही ज्यादा शिल्प कौशल, लेकिन इनका निर्माण सरल और प्रभावशाली था।
- **स्त्री और पुरुष की मूर्तियाँ:** इस सभ्यता में कई प्रकार की मानव आकृतियाँ मिली हैं। इनमें प्रमुख रूप से स्त्री की मूर्तियाँ पाई जाती हैं, जिनका आकार छोटा होता है और जो अक्सर पूजा या घरेलू कार्यों से संबंधित प्रतीत होती हैं। एक प्रसिद्ध मूर्ति "Priest-King" की है, जो पत्थर से बनी हुई है और इसमें एक व्यक्ति का आकार प्रदर्शित किया गया है, जो एक प्रमुख व्यक्ति की भूमिका में प्रतीत होता है। सिंधु सभ्यता में आमतौर पर महिलाओं की मूर्तियाँ अधिक संख्या में पाई जाती हैं, जैसे "योनिपीठ" की मूर्तियाँ। इनमें महिलाओं को विशाल हिप्स और ब्रेस्ट के साथ दिखाया गया है, जो मातृत्व और उर्वरता का प्रतीक मानी जाती थीं।
- **पशु मूर्तियाँ:** सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला में पशुओं का भी महत्वपूर्ण स्थान था। प्रमुख रूप से बैल, हाथी, सांड और अन्य पशुओं की मूर्तियाँ मिली हैं। इनमें से कई मूर्तियाँ पूजा के उद्देश्यों के लिए बनाई गई थीं। विशेष रूप से हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे स्थलों पर सांड की मूर्ति को प्रमुखता से पूजा गया।
- **"प्रमुख पुरोहित या राजा" की मूर्ति:** सिंधु घाटी सभ्यता में एक प्रमुख पत्थर की मूर्ति मिली है जिसे "Priest-King" कहा जाता है। यह मूर्ति एक व्यक्ति की है जो एक राजा या उच्च श्रेणी के व्यक्ति का प्रतीक हो सकती है। इस मूर्ति में व्यक्ति के कपड़े और आभूषणों से उसकी उच्च सामाजिक स्थिति का अनुमान लगता है।
- **स्थल और कलात्मक दृष्टिकोण:** सिंधु सभ्यता की मूर्तियाँ आकार में छोटे और सरल होते हुए भी कलात्मक दृष्टिकोण से प्रगति को दर्शाती हैं। इनकी बनावट में बहुत अधिक सजावट या जटिलता नहीं होती थी, बल्कि वे सहजता और प्राकृतिकता को दर्शाती थीं। यह मूर्तिकला की वह शैली थी, जो उस समय के जीवन की सहजता और दैनिक गतिविधियों को प्रस्तुत करती थी।
- **मृदाक्षरों के प्रमाण:** सिंधु सभ्यता में लिखावट का भी एक महत्वपूर्ण स्थान था, जिसमें चित्र और प्रतीकों का उपयोग किया गया था। हालांकि यह लेखन पूरी तरह से पढ़ा नहीं जा सका है, लेकिन इन चिन्हों के माध्यम से मूर्तिकला और कला के अन्य रूपों को समझने में मदद मिलती है। इन प्रतीकों में धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन से संबंधित आकृतियाँ और दृश्य शामिल थे।

❑ **प्रमुख मूर्तियाँ और उनके उदाहरण:**

- **"योनिपीठ मूर्तियाँ":** यह मूर्तियाँ प्रजनन क्षमता और मातृत्व से जुड़ी हुई थीं। इन्हें अक्सर पूजा के उद्देश्य से प्रयोग किया जाता था।
- **पत्थर की सांड की मूर्तियाँ:** ये मूर्तियाँ विशेष रूप से मोहनजोदड़ो से मिलीं, जो धार्मिक प्रतीक मानी जाती हैं और वहां के पूजास्थलों के रूप में इस्तेमाल होती थीं।

- सिंधु कालीन मूर्तिकला ने भारतीय कला के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसने न केवल उस समय के धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों को दर्शाया, बल्कि इसके माध्यम से हम उस सभ्यता की सामाजिक संरचना और कला के प्रारंभिक रूपों को समझ सकते हैं। सिंधु सभ्यता की मूर्तियाँ सरल, सुंदर और प्रभावशाली थीं, जो उस समय की संस्कृति का प्रतिबिंब थीं।

सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला (Important Key words For Mains)

❑ **उपयोग की गई सामग्री**
- मिट्टी
- पत्थर
- ताम्र (तांबा)
- हड्डी

❑ **मूर्तियों के प्रकार**
- मानव मूर्तियाँ
- पुजारी-राजा मूर्ति
- स्त्री आकृतियाँ (उर्वरता देवी)
- पशु मूर्तियाँ
- सांड
- हाथी
- मानव और पशु का संयोजन
- मानव और पशु को मिलाकर बनाई गई मूर्तियाँ

❑ **धार्मिक महत्व**
- उर्वरता पूजा
- "योनिपीठ देवी" मूर्तियाँ (स्त्री उर्वरता आकृतियाँ)
- प्रतीकात्मक पशु पूजा
- सांड और अन्य पशु मूर्तियाँ
- पुजारी-राजा आकृति
- धार्मिक और राजनीतिक नेतृत्व का प्रतीक

❑ **मूर्तियों का उद्देश्य**
- धार्मिक और अनुष्ठानिक उपयोग
- पूजा, ध्यान, और अनुष्ठान
- सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व
- समाजिक संरचना और भूमिकाएँ
- सजावटी कला
- सार्वजनिक स्थानों, मंदिरों और घरों में

❑ **प्रमुख स्थल**
- मोहनजोदड़ो
- पुजारी-राजा मूर्ति, सांड की मूर्तियाँ
- हड़प्पा
- स्त्री आकृतियाँ (उर्वरता देवी)
- ढोलावीरा
- पशु और मानव मूर्तियाँ

❑ **प्रभाव और धरोहर**
- सामाजिक संरचना की समझ
- धार्मिक विश्वासों और अनुष्ठानों का प्रदर्शन
- कला और शिल्प कौशल में विकास

बौद्ध मूर्तिकला

प्राचीन भारत की कला और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो बौद्ध धर्म से संबंधित धार्मिक विचारों और विश्वासों को व्यक्त करने के लिए विकसित हुई। बौद्ध मूर्तिकला का उदय गांधार, गुप्त काल, और गांधार शैली से लेकर मध्यमकालीन भारत तक हुआ। बौद्ध मूर्तियों के माध्यम से बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, जैसे ध्यान, प्रकाश, और निर्वाण को दर्शाया गया।

❑ **बौद्ध मूर्तिकला की उत्पत्ति**

- बौद्ध मूर्तिकला का आरंभ बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध (6वीं-5वीं शताब्दी ईसा पूर्व) के जीवन और उपदेशों से हुआ। प्रारंभ में, बौद्ध धर्म में चित्रण और मूर्तिकला का विरोध था, क्योंकि बौद्ध धर्म के अनुयायी मानते थे कि बुद्ध को किसी मूर्ति में ढालना उनके अवध्यात्मिक स्वरूप के खिलाफ होगा। पहले बौद्ध धर्म में केवल धार्मिक प्रतीकों का ही प्रयोग होता था, जैसे धम्मचक्र (धर्मचक्र), पदचिह्न (पदचिह्न) और बोधिवृक्ष (बोधि वृक्ष)।
- लेकिन बाद में, बौद्ध मूर्तिकला का प्रचलन हुआ, विशेष रूप से कुषाण काल (1वीं-2वीं शताब्दी ईसा पूर्व) में।

❑ **बौद्ध मूर्तिकला की प्रमुख शैलियाँ**

बौद्ध मूर्तिकला में विभिन्न शैलियाँ और रूप विकसित हुए, जो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और समयकालों में विभिन्न प्रभावों को दर्शाती हैं। इन शैलियों में प्रमुख रूप से निम्नलिखित शामिल हैं:

- **गांधार शैली**
  - **समय:** 1वीं शताब्दी ईसा पूर्व - 5वीं शताब्दी ईसवी।
  - **स्थान:** गांधार (आधुनिक पाकिस्तान और अफगानिस्तान का क्षेत्र)।
  - **विशेषताएँ:**
    - यह शैली ग्रीक-रोमन कला से प्रभावित थी, जो बौद्ध मूर्तियों में हेलिनिस्टिक शैली का प्रभाव दिखाती है।
    - बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी शैली में बनी थीं, जिसमें बुद्ध के चेहरे पर ग्रीक शैली के बाल और शारीरिक सौंदर्य को प्रदर्शित किया गया था।
    - मूर्तियाँ अधिक सजीव और यथार्थवादी थीं।
    - बुद्ध की मुद्रा में ध्यान और निर्वाण को व्यक्त किया गया था।
- **मथुरा शैली**
  - **समय: 2वीं शताब्दी ईसा पूर्व - 3वीं शताब्दी ईसवी।**
  - **स्थान: मैथिली (उत्तर प्रदेश, भारत)।**
  - **विशेषताएँ:**
    - यह शैली भारतीय परंपराओं से प्रभावित थी, और इसमें मूर्तियों का रूप अधिक पारंपरिक और भारतीय था।

- बुद्ध की मूर्तियाँ अधिक आध्यात्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं से प्रेरित थीं।
- बुद्ध की मुद्रा अधिक शांतिपूर्ण और निर्वाण के लिए उपयुक्त थी।
- प्राकृतिक चित्रण और धार्मिक कृतियाँ मुख्य विशेषताएँ थीं।

- **गुप्त शैली**
  - **समय:** 4वीं - 6वीं शताब्दी ईसवी।
  - **स्थान:** गुप्त साम्राज्य (भारत)।
  - **विशेषताएँ:**
    - यह शैली सुरम्य और संतुलित थी, जिसमें बुद्ध की मूर्तियाँ विशेष रूप से शांतिपूर्ण, सौम्य और सुरम्य थीं।
    - बुद्ध के चेहरे में स्माइली और निरंतरता को दिखाने के लिए बारीकी से मूर्तिकला की गई थी।
    - मूर्तियाँ सामान्य जीवन और धार्मिक सिद्धांतों के बीच संतुलन बनाए रखती थीं।
    - यह शैली भारतीय संस्कृति के भीतर आध्यात्मिकता और धार्मिकता का प्रतीक थी।
- **द्रविड़ शैली**
  - **समय:** 6वीं शताब्दी ईसवी के बाद।
  - **स्थान:** द्रविड़ क्षेत्र (दक्षिण भारत)।
  - **विशेषताएँ:**
    - यह शैली दक्षिण भारत में विकसित हुई, जिसमें बौद्ध मूर्तियाँ बड़ी और अधिक सजीव होती थीं।
    - मूर्तियों में मलयालम और कन्नड़ शैलियाँ की झलक मिलती है।
    - मूर्तियाँ साधारणत: ध्यान और उत्कृष्टता का प्रदर्शन करती थीं।

❑ **बौद्ध मूर्तिकला की विशेषताएँ**

- **यथार्थवाद:** बौद्ध मूर्तियाँ यथार्थवादी होती हैं, जो प्राचीन भारतीय कला की एक प्रमुख विशेषता है।
- **आध्यात्मिक अभिव्यक्ति:** बौद्ध मूर्तियों में मुख्य रूप से बुद्ध के शांत और ध्यानपूर्ण रूप को दिखाया जाता है।
- **ध्यान की मुद्रा:** यह मूर्तियाँ बौद्ध धर्म के ध्यान, विकास, और निर्वाण को व्यक्त करती हैं।
- **सादा और सुंदर रूप:** मूर्तियों के रूप में अत्यधिक अलंकरण की कमी होती है और यह सरलता को दर्शाती हैं।

❑ **भारतीय बौद्ध प्रतीकों की मुद्राएँ (Buddhist Mudras)**

- भारतीय बौद्ध कला और संस्कृति का अहम हिस्सा हैं। ये मुद्राएँ बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, भावनाओं, और बौद्ध की आंतरिक स्थिति को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण तरीका हैं। मुद्राओं के माध्यम से बौद्ध धर्म में ध्यान, ज्ञान, शांति और निर्वाण के संदेश को व्यक्त किया जाता है।

- **ध्यान मुद्रा**
  - यह मुद्रा ध्यान और मनोयोग को दर्शाती है। इसे बौद्ध मूर्तियों में अक्सर ध्यान करते हुए दिखाया जाता है, जिसमें बुद्ध अपने दोनों हाथों को गोदी में रखता है। यह मुद्रा आत्म-निरीक्षण और ध्यान की शांति को व्यक्त करती है।
  - **विशेषताएँ:**
    - दोनों हाथ घुटनों पर रखे होते हैं।
    - हाथों की दिशा ऊपर की ओर होती है।
    - दृष्टि सामान्यत: नीचे की ओर होती है।
  - **उदाहरण:**
    - बुद्ध की ध्यान मुद्रा (ध्यान में लीन बुद्ध की मूर्ति, जैसे गुप्त काल में बनी मूर्तियाँ)।
- **वर्धमान मुद्रा (Vardhamana Mudra)**
  - यह मुद्रा शक्ति, ज्ञान, और वृद्धि का प्रतीक होती है। इसमें बुद्ध एक हाथ ऊपर की ओर उठाता है और दूसरा हाथ नीचे की ओर रहता है। इसे आशीर्वाद देने के रूप में भी देखा जाता है।
  - **विशेषताएँ:**
    - दाहिना हाथ ऊपर की ओर होता है, जबकि बायां हाथ नीचे रहता है।
    - यह मुद्रा शक्ति और वृद्धि के सिद्धांत को व्यक्त करती है।
  - **उदाहरण:**
    - गांधार शैली की मूर्तियाँ, जिनमें बुद्ध की वर्धमान मुद्रा दिखाई जाती है।
- **धर्मचक्र मुद्रा (Dharmachakra Mudra)**
  - यह मुद्रा धर्मचक्र (धर्म का चक्र) को घुमाने का प्रतीक होती है, जो बौद्ध धर्म के उपदेशों और शिक्षाओं का प्रसार करती है। इस मुद्रा में बुद्ध दोनों हाथों से चक्र का प्रतीक बनाता है।
  - **विशेषताएँ:**
    - दोनों हाथों के अंगूठे और तर्जनी से धर्मचक्र का रूप बनाते हैं।

- यह मुद्रा ज्ञान और धर्म के प्रचार का प्रतीक होती है।

- **उदाहरण:**
  - धर्मचक्र प्रवर्तन के दौरान बुद्ध की मूर्तियाँ, जैसे सारनाथ में पाई गई बुद्ध की मूर्ति।

- **भिक्षु मुद्रा (Bhiksu Mudra)**
- यह मुद्रा विनम्रता और भिक्षाटन का प्रतीक होती है। इसमें बुद्ध के दोनों हाथ नीचे की ओर झुके होते हैं, जैसे वह दान मांग रहे हों। यह मुद्रा सादगी और आध्यात्मिक खोज को व्यक्त करती है।
- **विशेषताएँ:**
  - दोनों हाथ जुड़े हुए होते हैं।
  - यह मुद्रा साधु और धर्म का पालन करने की भावना को प्रदर्शित करती है।
- **उदाहरण:**
  - बुद्ध की भिक्षु मुद्रा की मूर्तियाँ जो बुद्ध के दान मांगने की मुद्रा में होती हैं।

- **विजय मुद्रा (Abhaya Mudra)**
- यह मुद्रा अशांति और भय से मुक्ति का प्रतीक होती है। इसमें बुद्ध एक हाथ ऊपर की ओर उठाता है, जबकि दूसरा हाथ नीचे की ओर रखा होता है। यह मुद्रा दया, शांति, और सुरक्षा का प्रतीक मानी जाती है।
- **विशेषताएँ:**
  - दाहिना हाथ ऊपर की ओर उठता है, जैसे यह भय को दूर कर रहा हो।
  - यह मुद्रा दया और आशीर्वाद की भावना को व्यक्त करती है।
- **उदाहरण:**
  - बुद्ध की विजय मुद्रा जो उन्हें भय को दूर करने और शांति प्रदान करने वाले रूप में दिखाती है।

- **कल्याण मुद्रा (Kalyana Mudra)**
- यह मुद्रा कल्याण और धार्मिक समृद्धि का प्रतीक होती है। इसमें बुद्ध दोनों हाथों को जोड़ता है और एक हाथ दूसरे हाथ पर रखा होता है। यह मुद्रा बौद्ध धर्म में प्रेम, सम्मान और कल्याण की भावना को व्यक्त करती है।
- **विशेषताएँ:**
  - दोनों हाथों को एक दूसरे पर रखा जाता है।
  - यह धार्मिक समृद्धि और कल्याण का प्रतीक होती है।
- **उदाहरण:**
  - गुप्त काल की मूर्तियाँ, जिसमें कल्याण मुद्रा दर्शाई जाती है।

- **अर्धचंद्र मुद्रा (Ardhachandra Mudra)**
- यह मुद्रा संतुलन और विरोधी शक्तियों के सामंजस्य का प्रतीक होती है। इसमें बुद्ध के दोनों हाथों में एक हाथ ऊपर की ओर और दूसरा नीचे की ओर होता है। इसे एक प्रकार का चक्र भी माना जाता है।
- **विशेषताएँ:**
  - एक हाथ ऊपर और दूसरा नीचे की ओर होता है।
  - यह मुद्रा संतुलन और समझौते की भावना को व्यक्त करती है।
- **उदाहरण:**
  - गांधार शैली में अर्धचंद्र मुद्रा के साथ बौद्ध की मूर्तियाँ।

- **अन्य प्रमुख मुद्राये - भूमि स्पर्श मुद्रा , ज्ञान मुद्रा , बुद्ध पात्र मुद्रा**
- **भूमिस्पर्श मुदा -** इसमें पद्मासन लगाए बायाँ हाथ गोद में, हथेली ऊपर की ओर व दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली भूमि की ओर संकेत करती हुई बनाई जाती है। इस मुद्रा का आशय है कि बुद्ध, मार (एक दानव का नाम) के प्रलोभन के बावजूद अपनी शुचिता और शुद्धता का साक्षी होने के लिये पृथ्वी का आह्वान करते हैं।
- **ज्ञान मुद्रा -** इसे वज्र या बोधश्री मुद्रा भी कहा जाता है। इसमें बाएँ हाथ का अंगूठा तथा शेष अंगुलियाँ बंद दिखाई जाती हैं तथा तर्जनी सीधी खड़ी रहती है, जिसे दाहिने हाथ की मुट्ठी से बंद कर देते हैं। यह ज्ञान की सर्वोच्चता का प्रतीक है। इसमें वज्र की आकृति बन जाती है, इसलिये इसे 'वज्र मुद्रा' भी कहते हैं।
- **बुद्ध पात्र मुद्रा -** इसमें बायीं हथेली को इस प्रकार दिखाते हैं मानो उसमें कोई पात्र रखा हो। इसके ऊपर दायीं हथेली ऐसी स्थिति में होती है जैसे कोई पात्र ढका जा रहा है। इसके द्वारा यह व्यक्त किया जाता है कि व्यक्ति यह सत्य नहीं जान पाता कि वह बंधन में है।

भारतीय बौद्ध प्रतीक मुद्राएँ बौद्ध धर्म के गहरे विचारों और सिद्धांतों को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण तरीका हैं। इन मुद्राओं के माध्यम से बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धांतों को व्यक्त किया जाता है, जैसे ध्यान, शक्ति, शांति, धर्म और निर्वाण। बौद्ध मूर्तियाँ इन मुद्राओं का इस्तेमाल करके बौद्ध धर्म के आस्थावान अनुयायियों को मानसिक शांति, ध्यान, और आंतरिक शक्तियों के प्रतीक के रूप में दर्शन देती हैं।

मौर्यकालीन मूर्तिकला

भारतीय कला और संस्कृति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मौर्य साम्राज्य (लगभग 322-185 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान, कला और वास्तुकला में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। मौर्यकाल में भारतीय मूर्तिकला में सादगी, सशक्तता, और वास्तविकता के तत्व प्रमुख थे। इस काल में बौद्ध धर्म के उदय के साथ मूर्तिकला को विशेष रूप से महत्व दिया गया, खासकर बौद्ध धर्म के प्रतीक और बुद्ध के रूप में। मौर्यकालीन मूर्तिकला की शैली बहुत हद तक कुषाण कला और गांधार कला से अलग थी, और इसके रूप में भारतीय परंपराओं के प्रभाव को देखा जा सकता है।

❑ मौर्यकालीन मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएँ

- **सादगी और शुद्धता:** मौर्यकालीन मूर्तिकला में अधिक सजावट और अलंकृत रूप की बजाय सादगी और प्राकृतिकता पर ध्यान दिया गया था। मूर्तियाँ अधिकतर सरल और गांभीर्यपूर्ण होती थीं, जिसमें साधारणीकरण का प्रभाव स्पष्ट था।
- **प्राकृतिकता और यथार्थवाद**: मौर्यकालीन मूर्तिकला में प्राकृतिक रूप और यथार्थवादी चित्रण पर ध्यान दिया गया था। मूर्तियों में शारीरिक संरचना, विशेष रूप से चेहरे और शरीर के विशेषताओं को अत्यधिक बारीकी से उकेरा गया।
- **बौद्ध प्रतीकात्मक:** मौर्यकालीन मूर्तिकला में बौद्ध धर्म का विशेष प्रभाव था, खासकर बुद्ध की मूर्तियाँ और धर्मचक्र के प्रतीक। मौर्य काल के बाद, बौद्ध धर्म के धार्मिक प्रतीक जैसे धम्मचक्र, बोधिवृक्ष और बुद्ध के पदचिह्न का भी प्रयोग हुआ।
- **ध्यान केंद्रित और सरल रूप:** इस काल में मूर्तियों की बनावट में ध्यान देने योग्य विशेषताएँ थीं जैसे कि संतुलित स्थिति और शांत भावनाएँ। बुद्ध की मूर्तियाँ आमतौर पर ध्यान मुद्रा में या वर्धमान मुद्रा में देखी जाती हैं, जो शांति और ध्यान की स्थिति को दर्शाती हैं।

❑ **मौर्यकालीन मूर्तिकला के उदाहरण**

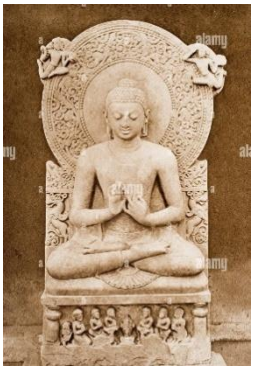

- **सारनाथ का बौद्ध स्तूप और मूर्तियाँ:**
  - सारनाथ में मौर्यकाल की मूर्तियाँ और स्तूप प्रसिद्ध हैं, जहाँ धर्मचक्र प्रवर्तन (धर्म चक्र घुमाने की मुद्रा) में बुद्ध की मूर्तियाँ पाई जाती हैं।
  - ये मूर्तियाँ आमतौर पर साधारण और सीधी होती हैं, जो बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को व्यक्त करती हैं।
- **लक्ष्मणरेखा और अशोक स्तम्भ:**
  - अशोक स्तम्भ (जो लक्ष्मणरेखा के नाम से भी प्रसिद्ध है) मौर्यकालीन मूर्तिकला का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसमें शेर की मूर्ति और धर्मचक्र उकेरे गए थे।
  - इन स्तंभों में शेरों की मूर्तियाँ और धर्मचक्र के प्रतीक थे, जो मौर्य सम्राट अशोक के धर्मप्रचार को दर्शाते थे। यह स्तम्भ अब भी भारतीय कला और संस्कृति के प्रतीक के रूप में प्रसिद्ध है।
- **अशोक के शिलालेख:**
  - मौर्यकाल में अशोक के शिलालेख (जो प्राचीन भारतीय लिपि में अंकित थे) भी मूर्तिकला के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। इनमें धर्म और नैतिक सिद्धांतों की बातें उकेरी गई हैं, जो मौर्यकाल के धार्मिक दृष्टिकोण को प्रकट करती हैं।
- **सारनाथ का बुद्ध प्रतिमा:**
  - सारनाथ में बुद्ध की प्रतिमा (सारनाथ बुद्ध प्रतिमा), जो धर्मचक्र प्रवर्तन (धर्म का चक्र घुमाने) की मुद्रा में है, मौर्य काल की प्रमुख मूर्ति है। इस मूर्ति में आध्यात्मिक शांति और ध्यान की मुद्रा को बहुत सुंदर तरीके से उकेरा गया है।

❑ **मौर्यकालीन मूर्तिकला की शैली**

- **सरलता:** मौर्यकाल की मूर्तियों की शैली में जटिल सजावट और अलंकरण की बजाय सादगी और कठोरता पर ध्यान दिया गया था। मूर्तियाँ आमतौर पर दृढ़ और स्थिर होती थीं, जो आत्मविश्वास और शक्ति को व्यक्त करती थीं।
- **वास्तविकता:** इस काल की मूर्तियाँ शारीरिक संरचना में यथार्थवादी थीं। उदाहरण के लिए, अशोक स्तम्भ पर शेरों का चित्रण बहुत बारीकी से और यथार्थवादी तरीके से किया गया था।
- **प्रतीकात्मकता:** मौर्यकालीन मूर्तियों में अक्सर धर्मचक्र, ध्वज, हाथियों, और शेर जैसे प्रतीकों का उपयोग किया गया था, जो शांति, शक्ति और धार्मिक प्रचार को दर्शाते थे।

मौर्यकालीन मूर्तिकला ने भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान लिया। यह काल सादगी और धार्मिक अभिव्यक्ति के प्रतीकों के रूप में प्रसिद्ध हुआ। अशोक स्तम्भ और बुद्ध की मूर्तियाँ इस काल की प्रमुख विशेषताएँ हैं, जो धर्मचक्र और सिद्धांतों के प्रचार को दर्शाती हैं। मौर्यकाल की मूर्तियाँ भारतीय कला की उस दिशा को दर्शाती हैं, जहां वास्तविकता, धर्म, और आध्यात्मिक शांति का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण हुआ था।

गुप्तकालीन मूर्तिकला (Gupta Period Sculpture)

भारतीय कला के इतिहास का एक स्वर्णिम युग माना जाता है, जो 4वीं से 6वीं शताबदी ईस्वी तक फैला हुआ था। इसे भारतीय कला की शिखर (peak) काल के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इस काल में कला, विज्ञान, और साहित्य में अपार उन्नति हुई थी। गुप्तकाल में कला का मुख्य उद्देश्य धार्मिक था, और यह मुख्य रूप से हिंदू, बौद्ध, और जैन धर्म से संबंधित था। गुप्त काल की मूर्तियाँ अपने आध्यात्मिक भाव और सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

❑ **गुप्तकालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ**

- **सौंदर्य और शांति:** गुप्तकालीन मूर्तियाँ अपनी सौंदर्यपूर्ण सादगी और शांति के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें संतुलन, सजावट, और भावनाओं का गहरा प्रभाव दिखता है। गुप्तकाल में मूर्तियों की चेहरे की अभिव्यक्ति अधिक मुलायम और शांत होती थी।
- **शारीरिक संतुलन और वास्तविकता:** गुप्तकाल की मूर्तियों में शारीरिक संरचना का चित्रण प्राकृतिक और यथार्थवादी तरीके से किया गया था। मूर्तियों में शारीरिक बनावट, जैसे कि शरीर के अंग, चेहरे के भाव, और मुद्रा का चित्रण बहुत सटीक और संगठित होता था। बुद्ध और देवी-देवताओं की मूर्तियाँ इस काल में बहुत ही व्यवस्थित रूप से बनाई जाती थीं।
- **आध्यात्मिक अभिव्यक्ति:** गुप्तकाल की मूर्तियाँ खासतौर पर आध्यात्मिक भावनाओं और धार्मिक संदेशों को व्यक्त करती हैं। यह काल धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था, जिसमें हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, और जैन धर्म के प्रतीकों का सृजन हुआ था।
- **आधुनिकता का प्रभाव:** गुप्तकाल में कला में परिष्कार और कला की उन्नति दिखती है। विस्तृत आकृतियाँ, नकली सौंदर्य, और गहरी मानसिकता इस समय की मूर्तियों में प्रमुख थे।
- **संगठित मूर्तिकला:** गुप्तकालीन मूर्तिकला में संगठित रूप और रूपात्मकता का आदान-प्रदान होता है। इन मूर्तियों में परिष्कृतता, पंक्तियाँ और संपूर्ण संरचना की प्रगति दिखी।

❑ **गुप्तकालीन मूर्तिकला के प्रमुख उदाहरण**

- **विष्णु की मूर्तियाँ :**गुप्तकाल में विष्णु की मूर्तियों का प्रमुख स्थान था। इन मूर्तियों में विष्णु को आमतौर पर न्यायिक, शांति, और सामाजिक समृद्धि का प्रतीक दर्शाया जाता था। सिद्धि के प्रतीक रूप में उनकी मूर्तियाँ बहुत प्रसिद्ध थीं।
  - **उदाहरण:** लक्ष्मण मंदिर, कांची (तमिलनाडु) में विष्णु की सुंदर मूर्तियाँ।
- **बुद्ध की मूर्तियाँ :** गुप्तकाल में बौद्ध धर्म का भी महत्वपूर्ण स्थान था। बुद्ध की मूर्तियाँ ध्यान और ध्यान मुद्रा में होती थीं। इन मूर्तियों में आध्यात्मिक शांति, ध्यान, और निर्वाण के भावों को प्रमुख रूप से दिखाया गया था।
  - **उदाहरण:** सारनाथ की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा वाली बुद्ध की मूर्तियाँ।
- **शिव की मूर्तियाँ :** गुप्तकाल में शिव की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से लिंग रूप में पाई जाती थीं। गुप्तकाल के शिव की मूर्तियाँ और उनके नटराज रूप बहुत प्रसिद्ध हैं।
  - **उदाहरण:** उज्जैन और कांची के शिव मंदिरों में पाए गए शिव के रूप।
- **सारनाथ के बौद्ध स्तूप की मूर्तियाँ:** गुप्तकाल में सारनाथ के बौद्ध स्तूप में पाई गई मूर्तियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इनमें धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध की मूर्तियाँ हैं। ये मूर्तियाँ शांति, समृद्धि, और ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक हैं।
- **भगवान विष्णु का 10 अवतार :** गुप्तकाल में भगवान विष्णु के दस अवतार का चित्रण भी लोकप्रिय था। इनमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि के रूप दिखाए जाते थे।

❑ **गुप्तकाल की मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएँ**

- **प्राकृतिकता और सजीवता:** गुप्तकालीन मूर्तियाँ अधिक सजीव और प्राकृतिक होती थीं। इन मूर्तियों में प्राकृतिक परिपूर्णता और सहजता का अहसास होता था।
- **विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ:** गुप्तकाल की मूर्तियों में विभिन्न मुद्राएँ देखी जाती हैं, जैसे वर्धमान मुद्रा, ध्यान मुद्रा, धर्मचक्र मुद्रा, और विजय मुद्रा। इन मुद्राओं के द्वारा मूर्तियों में आध्यात्मिक शांति, विजय, और ज्ञान के प्रसार को व्यक्त किया जाता था।
- **धार्मिक प्रभाव:** इस काल में हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, और जैन धर्म की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से बनी थीं। गुप्त सम्राटों के समय में धार्मिक नीतियों और कला का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान था।
- **संतुलन और गतिकता:** गुप्तकालीन मूर्तियों में संतुलन और गतिकता की विशेषता दिखती है। मूर्तियों में शरीर के अंगों का अनुपात और संतुलन बेहद सुरुचिपूर्ण और सटीक होता था।

गुप्तकालीन मूर्तिकला भारतीय कला के स्वर्णकाल का प्रतीक है, जो धार्मिक और आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों में उच्चतम स्तर पर पहुंची। इस काल में मूर्तियों में संतुलन, साधारणता, और सौंदर्य का अनूठा मिश्रण देखा जाता था। गुप्तकाल के सम्राटों ने धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को प्रोत्साहित किया, और उनकी कला की गहरी छाप आज भी भारतीय कला के इतिहास में देखी जाती है। हिंदू, बौद्ध, और जैन धर्म के प्रतीकों के माध्यम से गुप्तकालीन मूर्तिकला ने एक विशिष्ट शैली और पहचान बनाई, जो भारतीय संस्कृति और कला के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में जानी जाती है।

शुंगकालीन मूर्तिकला (Sunga Period Sculpture)

भारतीय कला के इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो शुंग साम्राज्य (185 ई. पू. से 75 ई. पू.) के दौरान विकसित हुआ। यह काल मौर्य साम्राज्य के बाद आता है और इसमें मौर्यकाल के प्रभाव के साथ-साथ कुछ नए कला रूपों और शैलियों का उदय हुआ। शुंग काल के दौरान भारतीय कला और मूर्तिकला में एक प्रकार का संक्रमणकाल देखा गया, जिसमें धार्मिक चित्रण और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ प्रमुख थीं।

शुंगकालीन मूर्तिकला में बौद्ध धर्म का विशेष प्रभाव देखा जाता है, साथ ही हिंदू और जैन धर्म की मूर्तियाँभी इस समय प्रमुख रूप से बननी शुरू हुईं। इस समय की मूर्तियों में विशेष रूप से बौद्ध धर्म के प्रतीकों और मूर्तियों का अधिक प्रभाव था, जैसे कि धर्मचक्र, बुद्ध की मूर्तियाँ, और बोधि वृक्ष।

❑ **शुंगकालीन मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएँ**

- **बौद्ध मूर्तिकला का प्रभाव:**
  - इस काल में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ और बुद्ध की मूर्तियाँ और धर्मचक्र के प्रतीकों का महत्व बढ़ा। शुंगकाल में बुद्ध को विभिन्न मुद्राओं में प्रस्तुत किया गया जैसे कि ध्यान मुद्रा, धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा आदि।
  - बौद्ध मूर्तिकला में यथार्थवाद और साधारणता के तत्व अधिक थे, जिनसे ध्यान और शांति का संदेश मिलता है।
- **बोधिवृक्ष और धर्मचक्र:**
  - शुंगकाल में बौद्ध धर्म के मुख्य प्रतीकों में धर्मचक्र और बोधिवृक्ष का चित्रण प्रमुख था। धर्मचक्र को एक बहुत ही महत्वपूर्ण बौद्ध प्रतीक के रूप में पूजा जाता था, जो धर्म के मार्ग को दर्शाता था।
- **साधारणता और यथार्थवाद:**
  - इस काल में मूर्तियाँ पहले के मौर्यकाल की तुलना में अधिक साधारण और यथार्थवादी होती थीं। मूर्तियों में धार्मिक और सांस्कृतिक चित्रण साधारण, शांत और ध्यानपूर्ण होते थे, जो उस समय की धार्मिक प्रवृत्तियों को दर्शाते थे।
- **शिलालेखों और मूर्तियों का समागम:**
  - शुंगकाल में शिलालेख और मूर्तिकला का संगम हुआ। मूर्तियों पर धार्मिक निर्देश, शिलालेख और सामाजिक संदेश उकेरे जाते थे।
- **हिंदू धर्म के प्रभाव:**
  - इस काल में हिंदू धर्म का भी प्रभाव बढ़ा, और शिव, विष्णु, और देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण हुआ। इन मूर्तियों में शांति, शक्ति और संतुलन का सुंदर चित्रण था।

❑ **शुंगकालीन मूर्तिकला के प्रमुख उदाहरण**

- **सारनाथ में बुद्ध की मूर्तियाँ:**
  - सारनाथ में बुद्ध की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में मूर्तियाँ पाई जाती हैं। इन मूर्तियों में बुद्ध का रूप शांत और ध्यानपूर्ण होता है, जो उनके धर्म प्रचार के प्रतीक हैं। यह मूर्तियाँ बौद्ध कला के उत्कर्ष को दर्शाती हैं।
- **लुनेला और बिहार में बौद्ध मूर्तियाँ:**
  - लुनेला (मध्यप्रदेश) में बौद्ध मूर्तियाँ और धर्मचक्र के प्रतीक पाए गए। यहाँ की मूर्तियाँ साधारण लेकिन सौंदर्यपूर्ण होती थीं, जो धार्मिक शांति और ध्यान की अवस्था को दर्शाती थीं।
- **धर्मचक्र और बोधिवृक्ष:**
  - सुंगकाल में बौद्ध धर्म का प्रतीक धर्मचक्र प्रमुख रूप से उकेरा गया, जो बुद्ध के ज्ञान और उपदेश का प्रतीक है। साथ ही बोधिवृक्ष का चित्रण भी बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में हुआ था।
- **मूर्तियों के शिलालेख:**
  - इस काल में मूर्तियों के साथ-साथ शिलालेख भी उकेरे जाते थे, जो धर्म और समाज के बारे में निर्देश और संदेश देते थे। ये शिलालेख धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थे।

❑ **शुंगकालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ**

- **साधारणता और शांति:**
  - इस काल की मूर्तियों में साधारणता और आध्यात्मिक शांति का प्रमुख स्थान था। यह मूर्तियाँ न तो बहुत जटिल होती थीं और न ही अत्यधिक अलंकरण किया गया था।
- **प्राकृतिकता और यथार्थवाद:**
  - मूर्तियों में यथार्थवाद का तत्व प्रमुख था। शरीर की संरचना, चेहरे के भाव और मुद्राएँ प्राकृतिक और यथार्थवादी तरीके से उकेरी जाती थीं।
- **धार्मिक अभिव्यक्ति:**
  - सुंगकाल की मूर्तियों में प्रमुख रूप से बौद्ध, हिंदू और जैन धर्म के प्रतीकों का समावेश था। इनमें धर्मचक्र, बुद्ध, शिव और विष्णु के रूपों का सुंदर चित्रण था।
- **समाज और संस्कृति का चित्रण:**
  - इस काल में मूर्तियाँ केवल धार्मिक नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण थीं। मूर्तियों के माध्यम से समाज की धार्मिक और नैतिक स्थितियों का चित्रण किया गया था।

शुंगकालीन मूर्तिकला भारतीय कला का एक संक्रमणकाल है, जिसमें मौर्यकाल के बाद बौद्ध धर्म और अन्य धार्मिक मतों का प्रभाव बढ़ा। इस काल में मूर्तियाँ साधारण, शांति से भरपूर, और प्राकृतिक रूप में उकेरी गईं। धर्मचक्र, बोधिवृक्ष, और बुद्ध की मूर्तियाँ इस काल के प्रमुख प्रतीक हैं। यह काल भारतीय कला के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भविष्य में आने वाले गुप्तकालीन मूर्तिकला पर भी गहरा प्रभाव डाला।

❑ **कुषाण और गुप्तकालीन मूर्तिकला में अंतर**

विशेषता	कुषाणकालीन मूर्तिकला	गुप्तकालीन मूर्तिकला
काल	1st से 3rd सदी ईस्वी तक	4th से 6th सदी ईस्वी तक
प्रभाव	यूनानी, ईरानी और भारतीय संस्कृतियों का मिश्रण	भारतीय और हिंदू धर्म का प्रमुख प्रभाव, बौद्ध धर्म का विकास
बुद्ध की मूर्तियाँ	पहली बार शारीरिक रूप में बुद्ध का चित्रण	ध्यान और शांति पर आधारित बुद्ध की मूर्तियाँ
शैली	हेलनिस्टिक (यूनानी) शैली, देवता और सम्राटों का चित्रण	संतुलन, सौंदर्य और शांति पर आधारित मूर्तियाँ
मुख्य विषय	बौद्ध धर्म, सम्राटों और विभिन्न धर्मों के प्रतीक	मुख्य रूप से हिंदू धर्म, विष्णु, शिव और देवी-देवताओं का चित्रण
मूर्तियों में चित्रण	प्राकृतिक रूप, संघर्षशील चित्रण	शांति, सौंदर्य और संतुलन का चित्रण
धार्मिक प्रतीक	बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म, यूनानी प्रतीक	मुख्यतः हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और कुछ जैन धर्म के प्रतीक

पल्लव मूर्तिकला

दक्षिण भारत के एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काल का हिस्सा है, जो पल्लव साम्राज्य (6वीं से 9वीं सदी ईस्वी तक) के दौरान विकसित हुई। पल्लव काल भारतीय कला का एक महत्वपूर्ण युग था, जिसमें वास्तुकला और मूर्तिकला दोनों में असाधारण विकास हुआ। पल्लव मूर्तिकला में मुख्य रूप से हिंदू धर्म की मूर्तियाँ और शैलियाँ देखने को मिलती हैं, विशेष रूप से विष्णु और शिव के रूपों की प्रस्तुति।

❑ **पल्लव मूर्तिकला की विशेषताएँ:**

- **शिव और विष्णु की मूर्तियाँ:** पल्लव काल में शिव और विष्णु की मूर्तियाँ प्रमुख थीं। इनमें विशेष रूप से शिव के नटराज रूप और विष्णु के विभिन्न रूपों का चित्रण मिलता है। पल्लव कलाकारों ने इन देवताओं की मूर्तियाँ अत्यधिक सौंदर्यपूर्ण और विस्तृत रूप में बनाई थीं।
- **शैलियों का मिश्रण:** पल्लव मूर्तिकला में गांधार और मौर्य काल की शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है, लेकिन इसके साथ-साथ यहां पर द्रविड़ शैली का प्रभाव भी देखा गया। पल्लव काल में मूर्तियों में प्राकृतिकता, आध्यात्मिकता और साधारणता को प्रमुखता दी गई।
- **नटराज रूप:** पल्लव काल के प्रसिद्ध मूर्तिकला रूपों में नटराज रूप (शिव का नृत्य रूप) शामिल है, जिसे सबसे सुंदर और भव्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह रूप द्रविड़ वास्तुकला और मूर्तिकला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

- **रॉक-कट और शैलाश्रय मूर्तियाँ:** पल्लव काल में रॉक-कट मूर्तियाँ (पहाड़ों या चट्टानों में उकेरी गई मूर्तियाँ) का निर्माण भी हुआ था। विशेष रूप से महाबलिपुरम में स्थित रॉक-कट मंदिर और चट्टानों में उकेरी गई मूर्तियाँ पल्लव कला का सबसे बेहतरीन उदाहरण हैं।
- **भव्य शिलालेख:** पल्लव मूर्तिकला में शिलालेखों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। इन शिलालेखों के माध्यम से धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदेश व्यक्त किए जाते थे।
- **शिव की पारंपरिक मूर्तियाँ:** पल्लव काल में शिव की मूर्तियों के विभिन्न रूपों का चित्रण हुआ, जैसे लिंग रूप और नटराज रूप। खासकर, शिव के नटराज रूप का चित्रण पल्लव मूर्तिकला में अत्यधिक प्रसिद्ध था।
- **देवी-देवताओं के चित्रण:** पल्लव काल में विष्णु, सूर्य देव, और देवी दुर्गा जैसी मूर्तियों का भी निर्माण हुआ। इन मूर्तियों में देवी-देवताओं की विभिन्न मुद्राएँ और रूप दर्शाए गए थे।

❑ **पल्लव मूर्तिकला के प्रमुख उदाहरण:**

- **महाबलिपुरम :**
  - महाबलिपुरम पल्लव काल का सबसे प्रसिद्ध स्थल है, जहां रॉक-कट मंदिर और मूर्तियाँ पाई जाती हैं। यहाँ अर्जुन का तप, पांच रथ, रथ मंदिर, और कृष्ण मन्नम जैसी शिल्पकला के बेहतरीन उदाहरण हैं।
- **कांची :**
  - कांची में पल्लव काल के कई मंदिरों और मूर्तियों के अवशेष हैं। यहां कांची कांतेश्वर मंदिर और दक्षिणेश्वर मंदिर जैसी ऐतिहासिक मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं।
- **नटराज रूप :**
  - पल्लव काल में शिव के नटराज रूप की मूर्तियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध थीं, जिनमें शिव को नृत्य करते हुए दिखाया गया था। यह रूप शिव के विश्व के निर्माण, पालन और संहार के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

पल्लव मूर्तिकला ने भारतीय कला की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल की मूर्तियों में सौंदर्य, धार्मिकता और प्राकृतिकता का अद्वितीय मिश्रण था। पल्लव काल की मूर्तियों में प्रमुख रूप से शिव और विष्णु के रूपों का चित्रण किया गया, और पल्लव कलाकारों ने इसे अत्यधिक शास्त्रीय और भव्य रूप में प्रस्तुत किया। महाबलिपुरम और कांची जैसे स्थान पल्लव मूर्तिकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

चालुक्य कालीन मूर्तिकला (Chalukya Period Sculpture)

भारत के दक्षिणी क्षेत्र में विशेष रूप से कर्नाटक और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में विकसित हुई थी। चालुक्य साम्राज्य की शुरुआत 6वीं सदी में हुई और यह लगभग 12वीं सदी तक रहा। इस काल की मूर्तिकला में द्रविड़ और उत्तर भारतीय कला शैलियों का मिश्रण देखने को मिलता है, जो इसे बहुत ही विशिष्ट और प्रभावशाली बनाता है।

❑ **चालुक्य कालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ:**

- **शिव और विष्णु की मूर्तियाँ:** चालुक्य काल में शिव, विष्णु, और अन्य हिंदू देवताओं की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से बनाई गईं। विशेष रूप से शिव की मूर्तियाँ, जैसे नटराज रूप, इस समय की प्रमुख विशेषता रही हैं।
- **नटराज रूप:** चालुक्य काल में शिव का नटराज रूप बेहद लोकप्रिय था, जिसमें शिव को नृत्य करते हुए और चारों दिशाओं में फैलते हुए चित्रित किया गया है। यह रूप शिव के विनाशक और सृजनात्मक पहलू को दर्शाता है।
- **द्रविड़ शैली का प्रभाव:** चालुक्य काल में द्रविड़ वास्तुकला का प्रभाव देखने को मिलता है, लेकिन यह उत्तर भारतीय शैलियों से भी प्रभावित था। मूर्तियाँ सटीक शिल्प कौशल, स्पष्ट रूपों, और तीव्र धार्मिक भावनाओं को प्रकट करती थीं।
- **रॉक-कट और मंदिर कला:** चालुक्य काल में रॉक-कट मूर्तियाँ और मंदिरों का निर्माण विशेष रूप से बैदनाथ और पाटन में किया गया था। चालुक्य कलाकारों ने चट्टानों और पत्थरों में उकेरी गई मूर्तियों को महत्व दिया। इन मंदिरों में हिंदू धर्म की विभिन्न मूर्तियाँ, जैसे शिव, विष्णु, और उनके अवतारों को दर्शाया गया।
- **विशाल और भव्य मूर्तियाँ:** चालुक्य कला में मूर्तियों का आकार और शैली बहुत भव्य और विशाल होती थीं। इन मूर्तियों में गहरी नक्काशी और विस्तृत डिज़ाइन होते थे। यह मूर्तियाँ न केवल धार्मिक उद्देश्य से बनाई जाती थीं, बल्कि उनका शिल्प भी दर्शनीय होता था।
- **आध्यात्मिकता और चित्रण:** चालुक्य काल की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से आध्यात्मिक और धार्मिक संदेश देने के उद्देश्य से बनाई जाती थीं। शिव, विष्णु, दुर्गा और अन्य देवी-देवताओं का चित्रण इस समय में शुद्ध आध्यात्मिक प्रेरणा और शक्तियों का प्रतीक था।
- **सजावट और शिलालेख:** चालुक्य मूर्तियों में शिलालेख और आकृतियों की नक्काशी भी देखी जाती है। इन शिलालेखों के माध्यम से उन समय की राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियों की जानकारी मिलती थी।

❑ **चालुक्य कालीन मूर्तिकला के प्रमुख उदाहरण:**

- **बैदनाथ (Badami):**
  - बैदनाथ में कई रॉक-कट मूर्तियाँ और मंदिर पाए जाते हैं। बैदनाथ के गुफा मंदिर और वहां की शिव की मूर्तियाँ चालुक्य मूर्तिकला का बेहतरीन उदाहरण हैं।
- **पाटन (Pattadakal):**
  - पाटन, चालुक्य काल का एक प्रमुख स्थल है, जहाँ पर कई शानदार मंदिर और मूर्ति बनीं। यहाँ पर विष्णु और शिव की मूर्तियाँ हैं और मंदिर की वास्तुकला द्रविड़ और उत्तरी भारतीय शैलियों का मिश्रण है।
- **कभी (Kavi):**
  - कर्नाटका के कभी में भी चालुक्य काल के कई प्राचीन मंदिरों और मूर्तियों के उदाहरण मिलते हैं।
- **विष्णु और शिव के रूप:**
  - चालुक्य काल में विष्णु के दशावतार और शिव के नटराज रूप की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से उकेरी गईं।

चालुक्य कालीन मूर्तिकला ने भारतीय कला में एक नया आयाम जोड़ा। इस काल की मूर्तियाँ धार्मिक रूप से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थीं और इनमें आध्यात्मिक भावनाओं के साथ-साथ शिल्प कला का भी उत्कृष्ट प्रदर्शन था। बैदनाथ और पाटन जैसे स्थान चालुक्य मूर्तिकला के बेहतरीन उदाहरण हैं। इन मूर्तियों में शक्ति, सौंदर्य और धार्मिक उद्देश्य का अद्वितीय मिश्रण था, जो आज भी भारतीय कला में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

राष्ट्रकूट कालीन मूर्तिकला (Rashtrakuta Period Sculpture)

भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण और गौरवमयी कालखंड का हिस्सा है। राष्ट्रकूट साम्राज्य (6वीं से 10वीं सदी) ने दक्षिण भारत में अपनी सत्ता स्थापित की थी, और इस काल के दौरान भारतीय मूर्तिकला और वास्तुकला में महत्वपूर्ण विकास हुआ। राष्ट्रकूट काल की मूर्तिकला में न केवल धार्मिकता, बल्कि शिल्प कला और स्थापत्य कला का भी अत्यधिक प्रभाव था।

❑ **राष्ट्रकूट कालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ:**

- **शिव और विष्णु की मूर्तियाँ:** राष्ट्रकूट काल में शिव और विष्णु की मूर्तियाँ प्रमुख थीं। विशेष रूप से शिव के लिंग रूप और विष्णु के विभिन्न अवतार के चित्रण के उदाहरण मिलते हैं। गंगेश्वर शिव और विष्णु के शेषनाग पर रूप प्रमुख थे।
- **रॉक-कट मूर्तियाँ :** राष्ट्रकूट काल की मूर्तिकला में रॉक-कट मूर्तियाँ (चट्टानों में उकेरी गई मूर्तियाँ) एक प्रमुख विशेषता थी। सबसे प्रसिद्ध उदाहरण एलोरा गुफाएँ हैं, जहां रॉक-कट मंदिर और मूर्तियाँ उकेरी गई थीं। एलोरा में कैलाशनाथ मंदिर (Kailasa Temple) की मूर्तियाँ और शिल्प इस काल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- **कैलाशनाथ मंदिर (Kailasa Temple):** एलोरा में स्थित कैलाशनाथ मंदिर को विशेष रूप से राष्ट्रकूट काल के मूर्तिकारों की कला का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है। यह मंदिर पूरी तरह से चट्टान में खुदा हुआ है और इसमें शिव के विभिन्न रूपों की मूर्तियाँ हैं। इसे एक ही विशाल शिला से उकेरा गया है, जो अपने आप में एक अद्वितीय शिल्प कार्य है।
- **संतुलन और विस्तार:** राष्ट्रकूट मूर्तिकला में संतुलन और विस्तार का अद्वितीय मिश्रण था। मूर्तियाँ न केवल सुंदरता को दर्शाती थीं, बल्कि उनकी मुद्रा और आकार में एक शक्तिशाली और गरिमापूर्ण रूप भी होता था।
- **आध्यात्मिक और धार्मिक संदेश:** राष्ट्रकूट काल की मूर्तियाँ धार्मिक और आध्यात्मिक संदेश देने के उद्देश्य से बनाई जाती थीं। शिव और विष्णु के अलावा, बौद्ध और जैन धर्म से संबंधित मूर्तियाँ भी इस काल में प्रचलित थीं।
- **नक्काशी और शिलालेख:** मूर्तियों में विस्तृत नक्काशी और शिलालेख होते थे, जो उस समय के राजनीतिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक संदर्भ को दर्शाते थे। इन शिलालेखों के माध्यम से हमें राष्ट्रकूट साम्राज्य के सम्राटों और उनके कार्यों के बारे में जानकारी मिलती है।

❑ **राष्ट्रकूट कालीन मूर्तिकला के प्रमुख उदाहरण:**

- **एलोरा गुफाएँ (Ellora Caves):**
  - एलोरा गुफाएँ में स्थित कैलाशनाथ मंदिर और अन्य मूर्तियाँ राष्ट्रकूट काल की प्रमुख शिल्पकला के उदाहरण हैं। यहां की रॉक-कट मूर्तियाँ और मंदिर भारतीय मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कैलाशनाथ मंदिर पूरी तरह से एक ही चट्टान से उकेरा गया है और इसमें शिव, विष्णु, और अन्य देवताओं की मूर्तियाँ हैं।
- **कांची (Kanchi):**
  - कांची में भी राष्ट्रकूट काल के कुछ प्रमुख मंदिरों और मूर्तियों के उदाहरण मिलते हैं। यहाँ पर भी शिव और विष्णु की मूर्तियाँ और मंदिरों की रचनाएँ देखने को मिलती हैं।

- **भीलसा (Bhilsā):**
  - भीलसा में एक प्रमुख जैन मंदिर स्थित है, जो राष्ट्रकूट काल की मूर्तिकला और शिल्पकला का एक अद्वितीय उदाहरण है। यहाँ की मूर्तियों में जैन धर्म के प्रतीकों और देवताओं का चित्रण है।
- **पलनी (Palani):**
  - पलनी में स्थित धर्मराजर (Dharmaraja) की मूर्तियाँ और अन्य धार्मिक मूर्तियाँ राष्ट्रकूट काल की कला के बेहतरीन उदाहरण हैं।

राष्ट्रकूट कालीन मूर्तिकला ने भारतीय कला के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इस काल की मूर्तियाँ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक प्रेरणा का प्रतीक थीं, बल्कि शिल्प और वास्तुकला के दृष्टिकोण से भी अत्यधिक परिष्कृत थीं। एलोरा गुफाएँ और कैलाशनाथ मंदिर जैसे स्थल राष्ट्रकूट कला के प्रमुख उदाहरण हैं। इन मूर्तियों में धार्मिक, सांस्कृतिक और कला के अद्वितीय तत्वों का सम्मिलन था, जो आज भी भारतीय कला के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं।

चोल कालीन मूर्तिकला (Chola Period Sculpture)

भारतीय कला के इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो लगभग 9वीं से 13वीं सदी तक दक्षिण भारत में प्रचलित थी। चोल साम्राज्य ने इस अवधि के दौरान दक्षिण भारत के बड़े हिस्से में अपनी शक्ति स्थापित की, और इस समय की मूर्तिकला ने भारतीय कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चोल कालीन मूर्तियाँ अपनी सुंदरता, परिष्कृत शिल्प कौशल और धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन मूर्तियों का मुख्य उद्देश्य पूजा और धार्मिक महत्व को व्यक्त करना था।

❑ **चोल कालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ:**

- **शिव और विष्णु की मूर्तियाँ:** चोल काल में शिव, विष्णु, और अन्य देवताओं की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से बनाई गईं। विशेष रूप से शिव के नटराज रूप और विष्णु के विभिन्न अवतारों का चित्रण बहुत प्रमुख था। शिव के नटराज रूप को विश्व प्रसिद्ध माना जाता है, जिसमें शिव को नृत्य करते हुए दिखाया गया है।
- **नटराज रूप:** नटराज रूप चोल कालीन मूर्तिकला का सबसे प्रसिद्ध और पहचानने योग्य रूप है। इसमें शिव को नृत्य करते हुए और चारों दिशा में फैलते हुए प्रदर्शित किया गया है। यह रूप शिव के सृजन, पालन, और संहार के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।
- **साफ़-सुथरी और परिष्कृत नक्काशी:** चोल काल की मूर्तियाँ अपनी उत्कृष्ट नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं। इन मूर्तियों में शिल्पकारों ने बड़े ध्यान और परिश्रम से विस्तृत नक्काशी की थी। शारीरिक संरचना, चेहरे की भावनाएँ, और देवताओं की मुद्राओं को बहुत ध्यान से उकेरा जाता था।
- **सोने-चांदी और धातु की मूर्तियाँ:** चोल काल में मूर्तियाँ न केवल पत्थर में बनाई जाती थीं, बल्कि सोने, चांदी, और कांसे जैसे धातुओं का भी प्रयोग किया जाता था। सोने की मूर्तियाँ विशेष रूप से चोल सम्राटों के समय में महत्वपूर्ण थीं।
- **धार्मिक प्रभाव और पूजा:** चोल काल की मूर्तियाँ धार्मिक उद्देश्यों के लिए बनाई जाती थीं। मुख्य रूप से शिव, विष्णु, देवी और अन्य हिंदू देवताओं की मूर्तियाँ पवित्र स्थानों, मंदिरों, और प्रार्थना कक्षों में स्थापित की जाती थीं। इन मूर्तियों का उद्देश्य भगवान की पूजा और ध्यान को बढ़ावा देना था।
- **राजा और देवी-देवताओं के चित्रण:** चोल कालीन मूर्तियों में राजा और देवी-देवताओं के चित्रण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। चोल कला में देवता की मूर्तियों के साथ-साथ राजाओं और सम्राटों के चित्रण भी महत्वपूर्ण थे।

❑ **चोल कालीन मूर्तिकला के प्रमुख उदाहरण:**

- **नटराज मूर्ति:** चोल काल की नटराज मूर्तियाँ विश्व प्रसिद्ध हैं। इन मूर्तियों में शिव को नृत्य करते हुए और अपने एक पैर पर खड़ा दिखाया जाता है, जो शिव के आध्यात्मिक ऊर्जा और सृष्टि के निर्माण के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सबसे प्रसिद्ध नटराज मूर्ति चिदंबरम के मंदिर में पाई जाती है।

- **बृहदीश्वर मंदिर :** बृहदीश्वर मंदिर, जिसे राजराजेश्वर मंदिर भी कहा जाता है, चोल काल का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर और यहाँ की मूर्तियाँ चोल वास्तुकला और मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यहाँ पर शिव की विशाल मूर्तियाँ और सुंदर नक्काशी की गई है।
- **गंगाईकोंडचोलापुरम :** यह एक अन्य प्रसिद्ध चोल कालीन मंदिर है, जहां पर शिल्पकला और मूर्तिकला का बेहतरीन उदाहरण देखने को मिलता है। यहां पर भी शिव और अन्य देवताओं की मूर्तियाँ और वास्तुकला बहुत ही परिष्कृत हैं।
- **द्रविड़ वास्तुकला:** चोल काल में द्रविड़ वास्तुकला की शैली का प्रभाव प्रमुख था। इस काल के मंदिरों की छतें और गुंबद बड़ी मात्रा में नक्काशी और सजावट से सुसज्जित होते थे। मंदिरों में मूर्तियों का आकार विशाल और भव्य होता था।

चोल कालीन मूर्तिकला भारतीय कला का एक स्वर्णिम अध्याय है। इन मूर्तियों में धार्मिक और आध्यात्मिक तत्वों का गहरा प्रभाव था और इन्हें अत्यधिक शिल्पकला के साथ प्रस्तुत किया गया था। नटराज रूप, बृहदीश्वर मंदिर, और गंगाईकोंडचोलापुरम जैसे उदाहरण चोल काल की मूर्तिकला के बेहतरीन उदाहरण हैं। इस काल में मूर्तियों के शिल्प, आकार, और धार्मिक महत्व ने भारतीय कला को एक नई दिशा दी और चोल साम्राज्य को एक समृद्ध कला और संस्कृति का प्रतीक बना दिया।

राजस्थान और गुजरात की मूर्तिकला

भारतीय कला के महत्वपूर्ण हिस्से हैं, जो अपनी विशिष्ट शिल्प कला, स्थापत्य और धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन दोनों राज्यों की मूर्तिकला में प्राचीन भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक धरोहर को प्रदर्शित करने वाली अद्भुत कृतियाँ मिलती हैं।

❑ राजस्थान की मूर्तिकला:

राजस्थान की मूर्तिकला में मुख्य रूप से हिंदू, जैन, और बौद्ध धर्मों की मूर्तियाँ मिलती हैं। राजस्थान की मूर्तिकला में शिल्पकला की विविधता, लय, और धार्मिक भावनाएँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं।

❑ राजस्थान की मूर्तिकला की विशेषताएँ:

- **राजपूत कला और शैली:** राजस्थान की मूर्तिकला में राजपूत शैली की छाप देखने को मिलती है, जिसमें शक्ति, वीरता और धार्मिकता का मिश्रण होता था। राजपूत कला में धार्मिक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाना आम था, विशेष रूप से विष्णु, शिव, और देवी दुर्गा की मूर्तियाँ प्रमुख होती थीं।
- **जैन मूर्तिकला:** राजस्थान में जैन धर्म का भी बहुत प्रभाव था, और यहाँ जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्रमुख रूप से बनाई जाती थीं। सवाई माधोपुर, उदयपुर और भीलवाड़ा जैसे स्थानों पर जैन मंदिरों की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं।
- **अलवर और अजमेर:** राजस्थान के अलवर और अजमेर में प्रमुख धार्मिक मूर्तियों और मंदिरों का निर्माण हुआ। अजमेर में स्थित अखिलेश्वर शिव मंदिर और अलवर में स्थित शिव मंदिर की मूर्तियाँ प्रमुख हैं।
- **हाथी पोल शैली:** राजस्थान में हाथी पोल शैली के तहत भी मूर्तियाँ बनाई गईं, जिनमें हाथी के आकार की मूर्तियाँ, यक्ष, देवी-देवताओं का चित्रण होता था।
- **विवरण और नक्काशी:** राजस्थान की मूर्तियों में नक्काशी और विवरण की बारीकी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन मूर्तियों में विभिन्न देवी-देवताओं के रूप, उनके आभूषण और अन्य दृश्य तत्वों की विस्तृत नक्काशी की जाती थी।

❑ गुजरात की मूर्तिकला:

गुजरात की मूर्तिकला भी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। गुजरात में प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक मूर्तिकला का उत्तम विकास हुआ था, विशेष रूप से जैन, हिंदू, और बौद्ध धर्मों से संबंधित मूर्तियाँ प्रमुख थीं।

❑ गुजरात की मूर्तिकला की विशेषताएँ:

- **बौद्ध और जैन मूर्तिकला:** गुजरात में बौद्ध और जैन धर्मों का प्रभाव बहुत प्रगति पर था। सूरत, सिद्धपुर, और पालिताना जैसे स्थानों पर जैन मंदिरों और मूर्तियों की अद्भुत कृतियाँ पाई जाती हैं। इन मूर्तियों में तीर्थंकरों का चित्रण प्रमुख होता है।
- **विष्णु और शिव मूर्तियाँ:** गुजरात में विष्णु और शिव की मूर्तियाँ प्रमुख होती थीं। गुजरात के प्रसिद्ध मंदिरों में सोमनाथ, द्वारका, और कोल्डी में शिव और विष्णु की विशाल मूर्तियाँ पाई जाती हैं। इन मूर्तियों का आकार बहुत ही भव्य और सजीव होता था।
- **अहमदाबाद और पाटन:** अहमदाबाद और पाटन जैसे ऐतिहासिक शहरों में प्राचीन मूर्तिकला की बेहतरीन कृतियाँ हैं। यहाँ के विष्णु मंदिरों और जैन मंदिरों में मूर्तियों की उकेरी हुई शैली बहुत ही सुंदर और विस्तृत है।
- **काठियावाड़ और सौराष्ट्र क्षेत्र:** काठियावाड़ और सौराष्ट्र क्षेत्र में भी जैन और हिंदू मंदिरों की मूर्तियाँ अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों में भगवान राम, कृष्ण, और शिव के विभिन्न रूपों की मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं।
- **गुजरात की शिल्पकला:** गुजरात की मूर्तियों में शिल्पकला का ध्यान पूर्वक निर्वाहन किया जाता है, जिसमें प्राकृतिक दृश्य, चित्रकला और नक्काशी की विशेषता देखने को मिलती है। इसके अलावा, गुजरात की मूर्तियों में प्राचीन शिलालेख भी प्रचलित थे, जो मंदिरों की दीवारों पर उकेरे जाते थे।

❑ राजस्थान और गुजरात की मूर्तिकला में समानताएँ और अंतर:

विषय	राजस्थान की मूर्तिकला	गुजरात की मूर्तिकला
धार्मिक प्रभाव	मुख्य रूप से हिंदू और जैन धर्म।	हिंदू, बौद्ध, और जैन धर्म।
प्रमुख देवता	शिव, विष्णु, देवी दुर्गा, जैन तीर्थंकर।	शिव, विष्णु, तीर्थंकर।
मूर्तियों का आकार	छोटी, बारीक नक्काशी वाली मूर्तियाँ।	विशाल और भव्य मूर्तियाँ, विशेषकर जैन तीर्थंकरों की।
नक्काशी की शैली	विस्तार और विवरण पर जोर, विशेष रूप से राजपूत शैली।	बारीकी से उकेरी हुई नक्काशी, विशेष रूप से जैन मंदिरों में।
प्रमुख स्थल	अजमेर, अलवर, उदयपुर, जयपुर।	अहमदाबाद, सूरत, पाटन, पालिताना।
विशिष्ट शैली	राजपूत कला, हाथी पोल शैली, जैन मूर्तियाँ।	जैन शिल्प, बौद्ध कला, विशेषकर सिद्धपुर और पालिताना की मूर्तियाँ।

राजस्थान और गुजरात की मूर्तिकला में दोनों राज्यों की ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं का अद्भुत सम्मिलन देखने को मिलता है। राजस्थान की मूर्तिकला में राजपूत शैली का प्रभाव और विस्तृत नक्काशी की विशेषता है, जबकि गुजरात में जैन, हिंदू और बौद्ध धर्मों के प्रभाव से मूर्तिकला का विकास हुआ। इन दोनों राज्यों की मूर्तिकला ने भारतीय कला को नया आयाम और समृद्धि प्रदान की है।

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला (Modern Indian Sculpture)

भारतीय कला का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो पारंपरिक और समकालीन शैलियों का सम्मिलन करता है। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान भारतीय मूर्तिकला में बदलाव देखा गया, जहां पश्चिमी प्रभाव, तकनीकी नवाचार, और सामाजिक बदलावों का योगदान महत्वपूर्ण रहा। इस युग में कलाकारों ने परंपराओं को चुनौती दी और नए दृष्टिकोणों के साथ मूर्तिकला का पुनर्निर्माण किया।

❑ **आधुनिक भारतीय मूर्तिकला की विशेषताएँ:**

- **पश्चिमी प्रभाव और शैलियाँ:** ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान पश्चिमी कला और शिल्प शैलियों ने भारतीय मूर्तिकला को प्रभावित किया। पश्चिमी प्रभाव ने भारतीय मूर्तिकारों को रियलिज़्म, क्लासिकल मूर्तिकला, और विक्टोरियन शैली से परिचित कराया। इससे भारतीय मूर्तिकला में सटीकता और विस्तार का एक नया दृष्टिकोण आया।
  - **उदाहरण:** 19वीं शताब्दी में राजकीय मूर्तियाँ और महात्मा गांधी या नेहरू जैसी मूर्तियाँ बनाई गईं, जो पश्चिमी शैली की मूर्तियों से प्रभावित थीं।
- **नवाचार और नई सामग्री का प्रयोग:** पारंपरिक पत्थर, संगमरमर और धातु की बजाय, आधुनिक भारतीय मूर्तिकारों ने नई सामग्री जैसे कंक्रीट, रेसिन, वायर, और लकड़ी का उपयोग करना शुरू किया। यह नए युग की तकनीकी और औद्योगिक प्रगति को दर्शाता था।
  - **उदाहरण:** कलाकारों ने सामग्री प्रयोग में नयापन लाने के लिए विभिन्न औद्योगिक उत्पादों और शहरी जीवन के प्रतीकों को मूर्तियों में बदला।
- **आध्यात्मिकता और आधुनिक मुद्दे:** आधुनिक भारतीय मूर्तिकला ने धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को भी प्रदर्शित करना शुरू किया। यह न केवल पारंपरिक धार्मिक मूर्तियों तक सीमित रही, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता, और संघर्ष जैसे विषयों को भी मूर्तियों के माध्यम से व्यक्त किया गया।
  - **उदाहरण:** महात्मा गांधी, नेहरू, और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की मूर्तियाँ, जो स्वतंत्रता संग्राम और देश की आज़ादी के प्रतीक के रूप में उभरीं।
- **भारतीय मूर्तिकला में आधुनिकता और अभिव्यक्ति:** आधुनिक भारतीय मूर्तिकला में अभिव्यक्ति और संवेदनशीलता की महत्वपूर्ण भूमिका है। कलाकारों ने मूर्तियों के माध्यम से अपनी सोच, चिंताएँ, और समाजिक रचनाओं को व्यक्त किया। पारंपरिक दृष्टिकोण के मुकाबले, मूर्तियाँ अब व्यक्तिगत संघर्ष, सामाजिक बदलाव, और आधुनिक जीवन की संवेदनाओं को व्यक्त करने के रूप में उभरीं।
  - **उदाहरण:** कलाकारों ने कंक्रीट और मिट्टी जैसी सामग्रियों का प्रयोग कर मूर्तियों में बदलाव की प्रक्रिया, व्यक्ति की आंतरिक यात्रा और समाज के समक्ष बदलाव के प्रतीक प्रस्तुत किए।
- **सामाजिक और राजनीतिक बदलाव:** 20वीं शताब्दी में भारतीय मूर्तिकला में राजनीतिक और सामाजिक बदलावों को दर्शाया गया। कलाकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से समाज में हो रहे परिवर्तनों, जैसे महिला सशक्तिकरण, जातिवाद और आधुनिक समाज की चुनौतियाँ को उजागर किया।
  - **उदाहरण:** दलित अधिकार, महिला सशक्तिकरण और गरीबी जैसे मुद्दों पर आधारित मूर्तियों ने भारतीय समाज की सोच को चुनौती दी।

❑ **आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के प्रमुख कलाकार:**

- **रामकुमार वर्मा:** रामकुमार वर्मा एक प्रमुख भारतीय मूर्तिकार थे, जिन्होंने भारतीय और पश्चिमी कला शैलियों का सम्मिलन किया। उनकी मूर्तियाँ आमतौर पर मानव रूप और समाजिक संदर्भों के विषय पर आधारित थीं।
- **शांती निकेतन के कलाकार:** रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ टैगोर) और उनके शिष्य के. सृणिवासन, सुनील दास आदि ने भारतीय मूर्तिकला में आधुनिकतावाद की नींव रखी। उन्होंने न केवल भारतीय सांस्कृतिक रूपों को नया रूप दिया, बल्कि नवाचार और पारंपरिकता के बीच संतुलन भी स्थापित किया।
- **अशोक ब्रोहा:** अशोक ब्रोहा ने संवेदनशील मूर्तिकला के क्षेत्र में काम किया। उनकी कृतियाँ समाजिक मुद्दों और व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष को दर्शाती थीं।
- **नंदलाल बोस:** नंदलाल बोस भारतीय समकालीन मूर्तिकला के महान कलाकारों में से एक माने जाते हैं। उनका काम भारतीय संस्कृति के प्रतीकों और आधुनिकतावाद को एक साथ जोड़ा।
- **सोनिया कुमारी:** सोनिया कुमारी भारतीय मूर्तिकला की एक युवा और प्रतिभाशाली कलाकार हैं, जिन्होंने 3D प्रिंटिंग और मूल सामग्रियों का प्रयोग किया है। उनके कार्य में प्राकृतिक और पारंपरिक भारतीय रूपों को समकालीन दृष्टिकोण से जोड़ा गया है।
- **अन्य –**
  - वर्तमान में भारत के कई मूर्तिकारों ने वैश्विक स्तर पर ख्याति प्राप्त की है, जिनमें प्रमुख रूप से राम वी. सुतार और अनिल आर. सुतार का नाम अग्रणी है।
  - अनिल आर. सुतार राम वी. सुतार के पुत्र हैं। राम वी. सुतार का जन्म 19 फरवरी, 1925 को महाराष्ट्र के गोन्दूर गाँव में हुआ था।
  - इन्होंने पिछले 60 वर्षों में लगभग 200 से अधिक कलाकृतियों की रचना की है। इनकी कलाकृतियों के प्रमुख विषयों में गांधी, टैगोर, सरदार पटेल, शिवाजी आदि शामिल रहे हैं।
  - इनके द्वारा डिज़ाइन की गई एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल को समर्पित 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी, विश्व की सर्वाधिक ऊँचाई वाली प्रतिमाओं में शुमार है।
  - राम वी. सुतार को उनके उल्लेखनीय कार्यों हेतु भारत सरकार द्वारा वर्ष 1999 में पद्म श्री और 2018 में टैगोर कल्चर पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

❑ **आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के रूप और विषय:**

- **अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ:** भारतीय मूर्तिकला ने अब वैश्विक स्तर पर भी पहचान प्राप्त की है। कई भारतीय मूर्तिकारों की कृतियाँ Biennale Exhibitions और अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में प्रदर्शित की जाती हैं। इसके द्वारा भारतीय संस्कृति और आधुनिकता का मिलाजुला रूप दुनिया भर में पहचाना जा रहा है।
- **विविधताएँ:** आधुनिक भारतीय मूर्तिकला में बहुलतावाद, सामाजिक मुद्दे, पर्यावरणीय जागरूकता, और आध्यात्मिक चिंतन को प्रस्तुत किया गया है। कलाकारों ने विभिन्न शैलियों जैसे अवंत-गार्डे, क्यूबिज़्म, और एब्स्ट्रैक्ट में अपने विचारों को मूर्त रूप में ढाला।

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला ने एक नई दिशा और परिभाषा ली है, जिसमें पारंपरिक कला और समकालीन विचारों का मिश्रण है। यह समाज की बदलती धारा, विचारधारा और जीवन के संदर्भ को प्रस्तुत करता है। भारतीय मूर्तिकला न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों को भी व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। आधुनिक भारतीय मूर्तिकला कला प्रेमियों और समाज के लिए एक जागरूकता, समाजिक प्रतिक्रिया, और नई सोच का प्रतीक है।

भारतीय चित्रकला

भारतीय चित्रकला एक प्राचीन और समृद्ध कला है, जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा रही है। यह कला कई प्रकार की शैली और विधाओं में विकसित हुई है, और यह भारतीय इतिहास, धर्म, समाज और प्रकृति के महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रदर्शित करती है।
भारतीय चित्रकला की प्रमुख शैलियां ये रहीं:
जैन शैली, पाल शैली, अपभ्रंश शैली, मुगल शैली, पटना या कम्पनी शैली, दक्कन शैली, गुजरात शैली, राजपूत शैली.

भारतीय चित्रकला के सिद्धांत

प्राचीन काल से ही कला के माध्यम से सौंदर्य, संस्कृति और धार्मिक विचारों का अभिव्यक्ति करते रहे हैं। इन सिद्धांतों का उद्देश्य चित्रकला को एक उच्च कला रूप में प्रस्तुत करना था, जो न केवल दृश्य सौंदर्य को उत्पन्न करें, बल्कि दर्शक को गहरे आध्यात्मिक और दार्शनिक अनुभव से भी जोड़ें। भारतीय चित्रकला के कुछ प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

❑ रस सिद्धांत

- रस सिद्धांत भारतीय कला का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसे **भरत मुनि** ने अपनी काव्यशास्त्र "नाट्यशास्त्र" में प्रस्तुत किया। रस का अर्थ "भावना" या "सौंदर्य का रस" होता है, और इसे कला में दर्शाया जाता है ताकि दर्शक उसे महसूस कर सकें।
- **नव रस**: भारतीय कला में नौ मुख्य रसों का वर्णन किया गया है:
- प्रत्येक रस को चित्रकला में दर्शाया जाता है और इसे चित्रकला के रंगों, रूपों और भावनाओं के माध्यम से महसूस किया जाता है।

❑ धर्म और आध्यात्मिकता

- भारतीय चित्रकला में आध्यात्मिकता और धर्म का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। चित्रकला केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि धार्मिक और दार्शनिक विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है।
- **ईश्वर का रूप**: भगवानों, देवी-देवताओं के चित्रों में उनके आभूषण, मुद्राएँ, और रंग उन्हें दिव्यता और उनके गुणों के साथ जोड़ते हैं।
- **साकार और निराकार रूप**: चित्रकला में भगवान के निराकार रूप को भी दर्शाया जाता है, जैसे बौद्ध कला में बुद्ध की ध्यानमुद्रा।
- **धार्मिक ग्रंथों का चित्रण**: महाभारत, रामायण, भगवद गीता आदि ग्रंथों से प्रेरित चित्रकला में नैतिक और आध्यात्मिक संदेश छिपे होते हैं।

❑ चित्रकला में प्रतीकात्मकता

- भारतीय चित्रकला में प्रतीकात्मकता का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रतीकों के माध्यम से चित्रकला में गहरे अर्थों और दार्शनिक विचारों को व्यक्त किया जाता है।
- **आधिकारिक और सांस्कृतिक प्रतीक**: जैसे कि देवी लक्ष्मी का चित्रण उनके हाथों में कमल फूल और सिक्कों के साथ होता है, जो धन और समृद्धि के प्रतीक होते हैं।
- **शिव के त्रिशूल**: त्रिशूल का चित्रण शिव के शक्ति, ज्ञान और सृजनात्मकता के प्रतीक के रूप में किया जाता है।
- **पक्षियों और जानवरों के प्रतीक**: विभिन्न जानवरों और पक्षियों का चित्रण भी खास अर्थ रखता है। जैसे, हाथी को गणेश जी के साथ जोड़ा जाता है, जो विघ्नहर्ता के रूप में पहचाने जाते हैं।

❑ साधारण और आदर्श रूपों का चित्रण

- भारतीय चित्रकला में चित्रकार अक्सर आदर्श रूपों का निर्माण करते थे, न कि वास्तविक रूपों का। यह आदर्श रूप दर्शकों को उच्चतम आत्मिक और दार्शनिक विचारों के साथ जोड़ते थे।
- **मुक्त और मुक्तिकरण**: चित्रकला में आदर्श रूपों का चित्रण आत्मिक मुक्ति और शांति की ओर संकेत करता है। उदाहरण स्वरूप, भगवान शिव को ध्यान मुद्रा में और देवी दुर्गा को राक्षसों पर विजय प्राप्त करते हुए चित्रित किया जाता है।
- **संतुलन और सौंदर्य**: चित्रों में संतुलन और सौंदर्य का विशेष ध्यान रखा जाता है ताकि दर्शक एक मानसिक शांति का अनुभव कर सकें।

❑ अलंकरण सिद्धांत

- भारतीय कला में अलंकरण का भी महत्वपूर्ण स्थान है। अलंकरण का मतलब है—चित्र के सौंदर्य और अर्थ को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त तत्वों का प्रयोग।
- **गहनों और आभूषणों का चित्रण**: देवी-देवताओं और शाही पात्रों के चित्रों में गहनों और आभूषणों का चित्रण किया जाता था। यह उनका साम्राज्यिक और दिव्य रूप प्रस्तुत करने के लिए किया जाता था।

- **फूल और आभूषण**: चित्रों में रंग-बिरंगे फूल और आभूषण भी सौंदर्य और शांति के प्रतीक होते हैं।

❑ **काव्यात्मकता और नाटकीयता**

- भारतीय चित्रकला में काव्यात्मकता और नाटकीयता का भी महत्वपूर्ण स्थान है। चित्रकला में चित्रकार भावनाओं और घटनाओं को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे दर्शक उन भावनाओं को महसूस कर सकें।
- **काव्यात्मक चित्रण**: चित्रकला में काव्यात्मक दृष्टिकोण से जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं, जैसे युद्ध, प्रेम, शांति, और दुःख को चित्रित किया जाता है।
- **नाटकीयता**: जैसे, युद्ध के दृश्य में शौर्य, संघर्ष और विजय के भावनात्मक पहलुओं को चित्रित किया जाता है।

❑ **संपूर्णता का सिद्धांत**

- भारतीय चित्रकला का एक और सिद्धांत यह है कि कला का प्रत्येक तत्व अपनी जगह पर महत्वपूर्ण होता है और एक साथ मिलकर सम्पूर्णता का रूप प्रस्तुत करता है।
- **हर हिस्सा महत्त्वपूर्ण होता है**: जैसे, चित्र में प्रत्येक पात्र, पृष्ठभूमि, रंग और मुद्रा का एक गहरा अर्थ और उद्दीपन होता है।
- **विस्तार और रूपात्मकता**: प्रत्येक चित्र में विस्तार और रूप का सामंजस्यपूर्ण रूप में मिलकर सौंदर्य की सम्पूर्णता प्रस्तुत होती है।

❑ **सहजता और सरलता**

- भारतीय चित्रकला में अक्सर यह सिद्धांत पाया जाता है कि कला को सरल और सहज रूप में प्रस्तुत किया जाए, ताकि दर्शक उसमें गहरे अर्थों को आसानी से समझ सकें।
- **सौंदर्य की सहजता**: चित्रकला में कोई अत्यधिक जटिलता नहीं होती, बल्कि चित्रों के माध्यम से व्यक्ति और समाज के प्रति विचार, भावनाएँ, और संदेश सहज रूप से व्यक्त होते हैं।

प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकला

वह चित्रकला है जो मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल में, लेखन के पहले के समय में विकसित हुई। इसे "पेट्रोग्लिफ्स" (पाषाण चित्रकला) या "पेंटिंग्स" कहा जाता है। यह चित्रकला उस समय की मानवता, उनकी सोच, विश्वास, जीवनशैली, और उनके सामाजिक ढांचे का प्रतिरूप है। प्रागैतिहासिक काल में चित्रकला के उदाहरण मुख्य रूप से गुफाओं और चट्टानों पर पाए जाते हैं, और इन्हें आमतौर पर शिकार, धार्मिक अनुष्ठान, प्रकृति, और समाजिक जीवन से जुड़ी घटनाओं के चित्रण के रूप में देखा जाता है।

❑ **प्रागैतिहासिक चित्रकला का महत्व**

- यह चित्रकला मानवता की प्रारंभिक अभिव्यक्ति है, जो जीवन, प्रकृति, और समाज के बारे में उनकी समझ को दर्शाती है।
- यह कला न केवल संचार का एक माध्यम थी, बल्कि यह प्राचीन समाज के विश्वासों, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक परंपराओं का भी संकेत देती है।
- चित्रकला के माध्यम से प्राचीन मानव ने अपनी दिनचर्या, शिकार के दृश्य, और अन्य प्राकृतिक घटनाओं को समझने और रिकॉर्ड करने की कोशिश की।

❑ **प्रमुख स्थल और उदाहरण**

प्राचीन चित्रकला के उदाहरण मुख्य रूप से गुफाओं, चट्टानों, और पत्थरों पर पाए जाते हैं। कुछ प्रमुख स्थल और उदाहरण इस प्रकार हैं:

- **आजंता और एलोरा गुफाएँ**

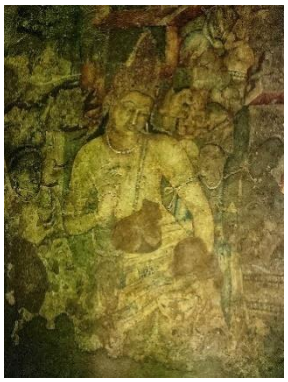

  - आजंता गुफाएँ महाराष्ट्र में स्थित हैं और इन गुफाओं में चित्रित चित्र प्राचीन भारतीय चित्रकला का अद्वितीय उदाहरण हैं। ये चित्र मुख्य रूप से बौद्ध धर्म और भगवान बुद्ध के जीवन को दर्शाते हैं।
  - एलोरा गुफाएँ भी महाराष्ट्र में हैं, जहां चित्रकला में बौद्ध, हिंदू और जैन धर्म की छवियाँ देखी जा सकती हैं। यहाँ की चित्रकला धार्मिक कथाओं और देवी-देवताओं के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।

- **भीमबेटका गुफाएँ**
  - मध्य प्रदेश में स्थित **भीमबेटका गुफाएँ** प्राचीन भारतीय चित्रकला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। इन गुफाओं में चित्रित चित्र 12,000 साल पुरानी हैं, और ये चित्र प्राचीन मानव के जीवन, शिकार, और सामाजिक गतिविधियों को दर्शाते हैं।
  - इन चित्रों में पशु, मानव, और शिकार के दृश्य प्रमुख हैं, जो प्राचीन मनुष्यों के प्राकृतिक जीवन और उनके वातावरण से जुड़ी घटनाओं को दर्शाते हैं।
- **पेट्रोग्लिफ्स और शैलचित्र**
  - **पेट्रोग्लिफ्स** या शैलचित्र चट्टानों पर उकेरे गए चित्र होते हैं। ये चित्र प्राचीन काल में शिकार, धार्मिक अनुष्ठानों, और सामाजिक जीवन को दर्शाते हैं।
  - इन चित्रों में आमतौर पर पशुओं जैसे हाथी, गाय, बाघ, हिरण, और अन्य जंगली जानवरों के चित्र होते हैं। साथ ही, कुछ चित्रकला मानवों के शिकार और अन्य सामाजिक गतिविधियों को दर्शाती हैं।

- **कांची गुफाएँ**
  - दक्षिण भारत में स्थित कांची गुफाएँ भी प्राचीन चित्रकला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। यहाँ के चित्रों में बौद्ध धर्म और भारतीय धार्मिक विचारों का चित्रण है।

❑ **चित्रकला की शैली और सामग्री**

- प्रागैतिहासिक चित्रकला की शैली अत्यधिक सरल और प्राकृतिक होती थी, जो उन समय के समाज की वास्तविकताओं को दर्शाती थी। इन चित्रों में मुख्यतः प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया था।
- **प्राकृतिक रंग**: पेंटिंग्स बनाने के लिए मिट्टी, खनिज, चारकोल, और अन्य प्राकृतिक सामग्री का उपयोग किया जाता था। काले, लाल, पीले और भूरे रंग मुख्य रूप से उपयोग किए जाते थे।
- **साधारण रूप**: चित्रों में सरल रेखाएँ, बिंदु, और आकार का उपयोग होता था, ताकि चित्र अधिक स्पष्ट और समझने योग्य हो। यह चित्रकला ज्यादातर स्थूल और संक्षिप्त रूप में होती थी।
- **चट्टानों और गुफाओं की दीवारें**: प्राचीन चित्रकला का अधिकांश भाग गुफाओं और चट्टानों पर उकेरा गया था। चित्रकला की विशेषता यह थी कि वह प्राकृतिक सतहों का अनुसरण करती थी, जैसे कि गुफाओं की दीवारों की बनावट और चट्टानों के आकार का ध्यान रखा जाता था।

❑ **प्रमुख विषयवस्तु**

प्रागैतिहासिक चित्रकला में विभिन्न प्रकार के दृश्य और विषय होते थे, जो प्राचीन समाज के जीवन और विश्वासों का प्रतीक होते थे।

- **शिकार चित्रण**: प्राचीन चित्रकला में शिकार के दृश्य सबसे आम थे। इन चित्रों में शिकार करते समय मानव और जानवरों के बीच की संघर्ष की घटनाओं का चित्रण किया गया था।
- **प्राकृतिक दृश्य**: प्राकृतिक दृश्यों, जैसे पेड़-पौधे, जानवर, आकाश, सूरज, और चाँद का चित्रण भी इन चित्रों में देखने को मिलता है।
- **सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठान**: कुछ चित्रकला धार्मिक या अनुष्ठानिक गतिविधियों को दर्शाती है, जैसे पवित्र अनुष्ठान, देवी-देवताओं का चित्रण, और शिकार के दौरान किए गए अनुष्ठान।
- **पशु चित्रण**: प्राचीन चित्रकला में जानवरों के चित्र बहुत महत्वपूर्ण थे। जैसे हाथी, गाय, शेर, बाघ, आदि के चित्रों में उनकी विशेषताएँ और ताकत को दर्शाया जाता था।

❑ **चित्रकला का उद्देश्य**

- प्राचीन मानव चित्रकला का उपयोग अपनी भावनाओं, विश्वासों और विचारों को व्यक्त करने के लिए करता था।
- चित्रकला में धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों को चित्रित करना आम था, जिससे यह प्रतीकात्मक रूप से भी कार्य करती थी।
- शिकार के दृश्यों के चित्रण से यह सिद्ध होता है कि चित्रकला शिकार के लिए एक प्रकार का जादू या प्रार्थना भी हो सकती थी, ताकि शिकार सफल हो सके।

❑ **प्रागैतिहासिक चित्रकला का विकास**

प्राचीन चित्रकला समय के साथ विकसित होती गई और इसमें समय के साथ अधिक तकनीकी, धार्मिक और सांस्कृतिक परिष्कृतताएँ जुड़ीं। धीरे-धीरे चित्रकला के माध्यमों में बदलाव आया और यह सभ्यता के साथ विकसित होती गई।

प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकला न केवल मानव सभ्यता की प्रारंभिक अभिव्यक्ति है, बल्कि यह प्राचीन मानव के जीवन, सोच, विश्वास और उनके समाज की गहरी समझ का भी एक महत्वपूर्ण संकेत है। गुफाओं और चट्टानों पर उकेरे गए चित्र आज हमें उस समय की जीवनशैली, प्रकृति और धार्मिक विश्वासों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

हड़प्पा कालीन चित्रकला

प्राचीन भारतीय सभ्यता की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है, जो **सिंधु घाटी सभ्यता** या हड़प्पा सभ्यता (लगभग 3300–1300 ईसा पूर्व) से जुड़ी हुई है। यह चित्रकला हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे प्रमुख शहरों में पाई गई है, जो आज पाकिस्तान और भारत के कुछ हिस्सों में स्थित हैं। हड़प्पा कालीन चित्रकला के उदाहरण मुख्य रूप से मिट्टी की मूर्तियों, मुहरों, पेंटिंग्स और विभिन्न अन्य कलात्मक वस्तुओं पर मिलते हैं।

हड़प्पा कालीन चित्रकला का उद्देश्य न केवल सौंदर्य और कला था, बल्कि यह संस्कृति, समाज, और धर्म से भी जुड़ी हुई थी। इस काल की कला प्राचीन भारतीय जीवन, प्रकृति, और सामाजिक संरचना की गहरी समझ प्रदान करती है।

❑ **हड़प्पा कालीन चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ:**

- **सिल और मुद्राएँ**
  - हड़प्पा काल में प्रमुख कला रूप **सील** थे, जो विभिन्न प्रकार के चित्रों और प्रतीकों से ढंके होते थे। ये सील प्रायः छोटे आकार के होते थे और इन पर विभिन्न देवताओं, जानवरों, मानवों और प्रतीकों का चित्रण किया गया था।
  - हड़प्पा सील में प्रायः **पुरुष या पशु आकृतियाँ**, **पशुओं का शिकार**, **धार्मिक प्रतीक**, और **फूलों या पत्तियों के डिज़ाइन** देखे जाते हैं। सबसे प्रसिद्ध सील में **पशु आकृतियाँ**, जैसे बाघ, हाथी, और सियार, और कभी-कभी मानवों की आकृतियाँ भी शामिल होती हैं।

  - एक प्रसिद्ध सील, जिसे **"पुरुष देवता"** कहा जाता है, उसमें एक मानव आकृति को उल्टे पांवों और शेर जैसी आकृति के साथ बैठा हुआ दिखाया गया है। इसे कभी-कभी "शिव" या अन्य देवता का प्रतीक माना जाता है।

- हड़प्पा सील पर विशेष रूप से हाथी और बाघ जैसे जंगली जानवरों का चित्रण किया जाता था, जो इस बात का संकेत देते हैं कि इस सभ्यता में पशु-आधारित चित्रकला का महत्वपूर्ण स्थान था।

- **पात्रों और बर्तनों पर चित्रकला**
  - हड़प्पा काल में बर्तन, मिट्टी के पात्र और अन्य वस्तुएं बनाई जाती थीं, जिन पर चित्रकला के कई उदाहरण मिलते हैं। इन पर कभी-कभी जटिल डिज़ाइन, **फूलों के पैटर्न**, **जंतु चित्रण**, और **ज्यामितीय रूप** देखे जाते हैं।
  - बर्तनों पर **लाइन** डिवीजन, **सर्कल्स**, **लहरों के रूप**, और **ज्यामितीय आकृतियाँ** अधिक प्रचलित थीं।
  - हड़प्पा कालीन चित्रकला में रंगों का उपयोग सीमित था, और प्रायः काले, लाल और सफेद रंगों का इस्तेमाल होता था। ये रंग मिट्टी के प्राकृतिक खनिजों से प्राप्त किए जाते थे।

Harappa Burial Pottery

- **ज्यामितीय डिजाइन और पैटर्न**
  - हड़प्पा चित्रकला में **ज्यामितीय डिज़ाइन** और **पैटर्न** का प्रमुख स्थान था। इन डिज़ाइनों में विशेष रूप से **लहरें**, **बिंदु** और **सर्पिल** आकारों का चित्रण किया जाता था।
  - ये डिज़ाइन सामाजिक, धार्मिक या आध्यात्मिक उद्देश्य से जुड़े हो सकते थे और इसके माध्यम से कला में सौंदर्य के साथ-साथ गहरे प्रतीकात्मक अर्थ भी व्यक्त किए जाते थे।

- **पशु और पक्षियों का चित्रण**
  - हड़प्पा चित्रकला में **पशुओं** और **पक्षियों** का चित्रण एक प्रमुख तत्व था। मुहरों और बर्तनों पर विभिन्न प्रकार के जानवरों का चित्रण किया जाता था, जैसे कि **सिंह (शेर)**, **हाथी**, **बकरा**, **मुर्गा**, और अन्य पक्षी।
  - ये चित्रण एक ओर समाज में पशु-पालन की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाते हैं, तो दूसरी ओर धार्मिक या सांस्कृतिक प्रतीक हो सकते हैं।

- **मिट्टी की मूर्तियाँ और शिल्पकला**
  - हड़प्पा कालीन चित्रकला में **मिट्टी की मूर्तियाँ** भी महत्वपूर्ण थीं। इनमें अधिकतर महिलाओं की आकृतियाँ, जैसे **मातृदेवी की मूर्तियाँ**, पाई जाती थीं। इन मूर्तियों का धार्मिक या सांस्कृतिक महत्व हो सकता है।
  - **मातृदेवी की मूर्तियाँ** प्रजनन और उर्वरता के प्रतीक के रूप में मानी जाती थीं।
  - अन्य शिल्पकला में हाथ से बनाई गई आकृतियाँ और जटिल डिज़ाइन शामिल थे, जिनसे यह संकेत मिलता है कि हड़प्पा काल में कारीगरी का अत्यधिक महत्व था।

- **प्राकृतिक दृश्य**
  - हड़प्पा चित्रकला में कुछ प्राकृतिक दृश्य, जैसे **झीलों**, **नदियों**, **वृक्षों**, और **फूलों** का चित्रण किया जाता था। यह चित्रण प्रकृति से गहरे संबंध को और उसे संरक्षित करने की कोशिश को दर्शाता है।

- **सामाजिक जीवन और गतिविधियाँ**
  - हड़प्पा चित्रकला में कुछ चित्रों से यह संकेत मिलता है कि इस काल में **सामाजिक जीवन** और **धार्मिक गतिविधियाँ** महत्वपूर्ण थीं। इसमें शिकार के दृश्य, खेती, और अन्य सामाजिक गतिविधियाँ चित्रित की जाती थीं।
  - **हड़प्पा के चित्र** जीवन के दैनिक पहलुओं और उसके संबंधों को दर्शाते हैं, जैसे शिकार के दृश्य, युद्ध, उत्सव, और धार्मिक अनुष्ठान।

हड़प्पा कालीन चित्रकला उस समय की संस्कृति, जीवनशैली और धार्मिक विश्वासों का प्रतिबिंब है। यह चित्रकला न केवल सौंदर्य और कला के एक रूप में विकसित हुई, बल्कि यह समाज, जीवन और प्रकृति के प्रति प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करती है। हड़प्पा सभ्यता की चित्रकला जटिल और विविध थी, जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रतीकों और डिज़ाइनों का उपयोग किया गया था, जो उस काल की धार्मिक और सांस्कृतिक समझ को दर्शाते हैं।

अजंता चित्रकला

भारतीय चित्रकला का एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो **अजंता गुफाओं** में स्थित है। ये चित्रकला प्राचीन भारतीय धर्म, संस्कृति और समाज के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाती हैं। अजंता गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य में स्थित हैं और इनका समयकाल **5वीं से 6वीं शताब्दी** के बीच माना जाता है। ये चित्रकला बौद्ध धर्म से संबंधित हैं और मुख्य रूप से **बौद्ध जीवन** और **धार्मिक कथाएँ** के चित्रण के रूप में प्रकट होती हैं।

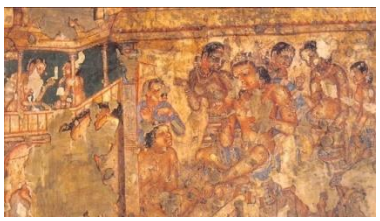

❑ **अजंता गुफाएँ और चित्रकला का संदर्भ**

- अजंता गुफाएँ, **अजन्ता रॉक** की गुफाएँ हैं, जो लगभग **30 गुफाओं** का समूह हैं। इन गुफाओं में से कुछ गुफाएँ बौद्ध भिक्षुओं के ध्यान और साधना के लिए बनाई गई थीं, जबकि अन्य गुफाएँ भित्तिचित्रों (मुरल्स) और मूर्तिकला के लिए **प्रसिद्ध** हैं।
- ये चित्रकला ज्यादातर **मध्यकालीन बौद्ध धर्म** की कथाओं और **बुद्ध के जीवन** से जुड़ी घटनाओं का चित्रण करती हैं।
- अजंता गुफाओं की चित्रकला की विशेषता यह है कि यहाँ के चित्रों में भावनाओं और रंगों का अत्यधिक सुंदर उपयोग किया गया है। इन चित्रों का उद्देश्य न केवल सौंदर्य प्रस्तुत करना था, बल्कि धर्म, भक्ति और बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार करना भी था।

❑ अजंता चित्रकला की विशेषताएँ

अजंता चित्रकला का शिल्प, शैली और विषयवस्तु कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। इन चित्रकला की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **बौद्ध जीवन और कथाएँ**
  - अजंता के चित्रों में मुख्य रूप से **भगवान बुद्ध के जीवन** के विभिन्न घटनाएँ और उनके उपदेशों को चित्रित किया गया है। जैसे, उनका जन्म, उनकी तपस्या, उनके ज्ञान की प्राप्ति, और उनके उपदेशों का प्रसार।
  - इन चित्रों में **जातक कथाएँ** (बुद्ध के पिछले जन्मों की कथाएँ) भी चित्रित की गई हैं। जातक कथाएँ बौद्ध धर्म की कहानियाँ हैं, जो दर्शाती हैं कि बुद्ध ने अपने पिछले जन्मों में किस प्रकार धार्मिक गुणों का पालन किया था।
  - चित्रों में भगवान बुद्ध के **स्मरणोत्सव**, **ध्यान मुद्रा**, और **उपदेश** की भावनाओं को दर्शाया गया है।
- **चित्रकला की शैली और तकनीक**
  - **चित्रों का रंग**: अजंता चित्रकला में रंगों का बहुत सुंदर और तीव्र उपयोग किया गया था। यहाँ के चित्रों में गहरे और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया, जैसे लाल, पीला, हरा, नीला, काला और सफेद।
  - **मूर्तिकला का प्रभाव**: अजंता चित्रकला की शैली में मूर्तिकला का भी प्रभाव देखा जा सकता है। चित्रों में भगवान बुद्ध और अन्य धार्मिक पात्रों की आकृतियाँ बहुत ही जीवंत और भावपूर्ण होती हैं।
  - **समुद्र मंथन और अन्य दृश्य**: चित्रों में बौद्ध धर्म के अलावा हिंदू धर्म की कुछ कथाओं, जैसे समुद्र मंथन, आदि का भी चित्रण किया गया है। यह चित्रकला अन्य धर्मों के साथ बौद्ध धर्म के समन्वय का संकेत देती है।
- **सजावट और अलंकरण**
  - चित्रकला में **सजावट** और **अलंकरण** का अच्छा इस्तेमाल किया गया था। गुफाओं की दीवारों पर चित्रों के साथ-साथ आभूषणों, वस्त्रों और अन्य सजावटी तत्वों का भी दृश्य दिखाया जाता था।
  - चित्रों में विभिन्न रंगों का उपयोग करके दृश्य को और अधिक आकर्षक और स्पष्ट बनाया गया था। इन रंगों का उपयोग बौद्ध जीवन और धार्मिक काव्य की भावना को व्यक्त करने के लिए किया गया था।
- **भावनाओं और मानव आकृतियों का चित्रण**
  - अजंता चित्रकला में **मानव भावनाओं** और **मानव आकृतियों** को बहुत सुंदर तरीके से व्यक्त किया गया है। चित्रों में खुशी, दुख, संतोष, प्रेम और करुणा जैसी भावनाओं को दर्शाया गया है।
  - चित्रित मानव आकृतियाँ **संवेदनशील** और **प्राकृतिक** होती हैं, जो उस समय की संस्कृति और सौंदर्यशास्त्र को दर्शाती हैं।

❑ अजंता चित्रकला के प्रमुख दृश्य

- **बुद्ध का जन्म**
  - एक प्रसिद्ध चित्र में **सिद्धार्थ** (बुद्ध के जन्म से पहले का नाम) का जन्म **लुम्बिनी** में होता हुआ दर्शाया गया है। चित्र में माँ **महामाया** के पास एक हाथी के द्वारा बुद्ध का जन्म दर्शाया जाता है, जो भारतीय कला में शुभ संकेत माना जाता है।
- **बुद्ध का ज्ञान प्राप्ति**
  - **बोधि वृक्ष** के नीचे भगवान बुद्ध की **ध्यान मुद्रा** में चित्रित दृश्य को अजंता चित्रकला में प्रमुख स्थान प्राप्त है। यह दृश्य बुद्ध के ज्ञान की प्राप्ति का प्रतीक है।
- **बुद्ध का उपदेश**
  - एक चित्र में भगवान बुद्ध अपने अनुयायियों को उपदेश देते हुए दिखाए गए हैं। यह चित्र बौद्ध धर्म के शिक्षाओं और उनके जीवन के कार्यों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।
- **जातक कथाएँ**
  - इन चित्रों में भगवान बुद्ध के पिछले जन्मों की कथाएँ चित्रित हैं, जैसे शेरों के साथ उनकी मित्रता, प्यासे पक्षियों को पानी पिलाना, आदि। इन कथाओं के माध्यम से बुद्ध के उच्च मानवीय गुणों को बताया जाता है।

❑ अजंता चित्रकला का महत्व

- **सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण**: अजंता चित्रकला बौद्ध धर्म के दर्शन, नैतिकता और बुद्ध के उपदेशों को व्यक्त करने का महत्वपूर्ण साधन थी।
- **कला का उत्कर्ष**: यह चित्रकला भारतीय चित्रकला के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि इसमें उच्च कोटि की रंगों की कारीगरी, भावनाओं का चित्रण, और धार्मिक संदेशों का समावेश है।
- **प्राकृतिक सौंदर्य और कलात्मकता**: इन चित्रों में भारतीय कला का स्वाभाविक सौंदर्य, प्राकृतिक रूप, और शास्त्रीय कला का उत्कृष्ट मिश्रण देखा जा सकता है।

अजंता चित्रकला भारतीय कला और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक धार्मिक अभिव्यक्ति थी, बल्कि यह भारतीय चित्रकला की उत्कृष्टता, रंगों के प्रयोग, और मानवीय भावनाओं के चित्रण का आदर्श प्रस्तुत करती है। अजंता गुफाओं के चित्र भारतीय कला की अमूल्य धरोहर हैं, जो आज भी दुनिया भर के कला प्रेमियों और विद्वानों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

बाघ गुफाओं की चित्रकला

भारतीय चित्रकला का एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो **मध्य प्रदेश** राज्य के **बाघ गुफाओं** में स्थित है। बाघ गुफाएँ, **भीमबेटका** और **उज्जैन** के बीच स्थित हैं, और यह गुफाएँ बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई हैं। बाघ गुफाओं की चित्रकला को प्राचीन भारतीय चित्रकला की उत्कृष्ट कृतियों में गिना जाता है। इन गुफाओं की चित्रकला विशेष रूप से **5वीं और 6वीं शताब्दी** के आसपास की मानी जाती है और यह **अजंता गुफाओं** की चित्रकला की शैली से मिलती-जुलती है।

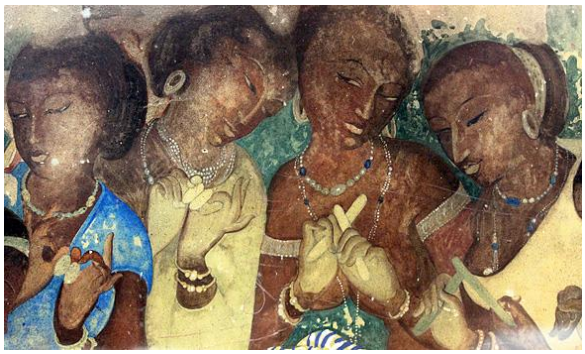

❑ बाघ गुफाओं का इतिहास और संदर्भ

- बाघ गुफाएँ मध्य प्रदेश के दमोह जिले में स्थित हैं। यह गुफाएँ बौद्ध धर्म से संबंधित हैं, और यह स्थान एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल था।
- बाघ गुफाओं की चित्रकला आज भी अपनी सुंदरता और चित्रण के कारण प्रसिद्ध है, और यह गुफाएँ भारतीय प्राचीन चित्रकला के उदाहरण के रूप में पहचान रखती हैं।
- इन गुफाओं में चित्रित चित्र मुख्य रूप से **बुद्ध के जीवन** और **बौद्ध धर्म के सिद्धांतों** को दर्शाते हैं।

❑ बाघ गुफाओं की चित्रकला की विशेषताएँ

बाघ गुफाओं की चित्रकला की शैली बहुत ही सूक्ष्म और विस्तृत है। यह चित्रकला की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार हैं:

- **बुद्ध के जीवन के चित्रण**
  - बाघ गुफाओं में मुख्य रूप से **भगवान बुद्ध के जीवन** के महत्वपूर्ण क्षणों का चित्रण किया गया है। इसमें **बुद्ध का जन्म**, **बुद्ध का ध्यान लगाना**, **बुद्ध का उपदेश देना**, और **बुद्ध के आकाशीय जीवन** को दिखाया गया है।
  - **बुद्ध के जीवन के दृश्य** चित्रित होते समय, कलाकार ने बौद्ध धर्म के मूल तत्वों जैसे **करुणा**, **ध्यान** और **ज्ञान** को उजागर किया।
- **विवरण और भावनाएँ**
  - बाघ गुफाओं के चित्र बहुत ही **सजीव** और **भावपूर्ण** होते हैं। चित्रों में विभिन्न **मानवीय भावनाओं** जैसे **दुख**, **आनंद**, **संवेदना**, और **ध्यान** को चित्रित किया गया है।
  - चित्रों में व्यक्त की गई भावनाएँ दर्शकों के मन में गहरी छाप छोड़ती हैं, और यह चित्रकला न केवल सौंदर्य बल्कि धार्मिक संदर्भ में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।
- **प्राकृतिक रंगों का उपयोग**
  - इन चित्रों में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया है, जो गुफाओं की दीवारों पर जीवन को चित्रित करते हैं। इन चित्रों में मुख्य रूप से **लाल**, **पीला**, **सफेद**, और **नीला** रंग देखा जाता है।
  - इन रंगों का उपयोग कलाकारों ने बहुत सटीकता और सुंदरता से किया था, जो प्राचीन चित्रकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- **जटिल शिल्प और आंतरिक सजावट**
  - बाघ गुफाओं की चित्रकला में न केवल चित्रों का उपयोग किया गया, बल्कि गुफा की दीवारों और आंतरिक स्थानों की भी सुंदर सजावट की गई थी। चित्रों और सजावट में **ज्यामितीय पैटर्न**, **फूलों और पत्तों** के डिज़ाइन, और **शिल्पकला** के तत्व दिखते हैं।
  - इन सजावटों का उद्देश्य गुफा के धार्मिक महत्व को और बढ़ाना था और वातावरण को एक पवित्र और शांतिपूर्ण स्थान में बदलना था।
- **शास्त्रीय काव्य और प्रतीकवाद**
  - बाघ गुफाओं की चित्रकला में **धार्मिक और शास्त्रीय प्रतीक** का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। चित्रकला के माध्यम से विभिन्न **धार्मिक प्रतीकों**, जैसे **लोटस**, **धम्मचक्र** (धर्मचक्र), और **मुद्राएँ**, को प्रदर्शित किया गया।
  - इन प्रतीकों का धार्मिक और आध्यात्मिक अर्थ था, और इन्हें चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया था।
- **सार्वभौमिक मानवता**
  - बाघ गुफाओं की चित्रकला में मनुष्य और प्रकृति के बीच **संबंध** को दर्शाया गया था। चित्रों में **पशु, पक्षी, वृक्ष**, और **प्राकृतिक दृश्य** बहुत प्रमुख रूप से चित्रित किए गए थे, जो उस समय की मानवता और धार्मिक दृष्टिकोण को उजागर करते हैं।

❑ बाघ चित्रकला की शैली और तकनीकी पहलू

बाघ गुफाओं की चित्रकला की तकनीक भी काफी विकसित और अद्वितीय थी। यहाँ के चित्रों में कई शास्त्रीय तत्व हैं:

- **नकली और वास्तविकता का मिश्रण:** चित्रों में एक **काव्यात्मक** शैली का उपयोग किया गया था, जिसमें वास्तविकता और रचनात्मकता का अद्भुत मिश्रण था।

- **चित्रों की दीवारों पर उकेरी गई आकृतियाँ**: चित्रकला में उकेरी गई आकृतियाँ और चित्र एक दूसरे से अलग और स्पष्ट होती थीं, जो दर्शकों को एक अलग अनुभव प्रदान करती थीं।

❑ **बाघ गुफाओं की चित्रकला का धार्मिक प्रभाव**

- बाघ गुफाओं की चित्रकला बौद्ध धर्म की **धार्मिक शिक्षा** और **सिद्धांतों** को फैलाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम थी। इन चित्रों के माध्यम से बौद्ध धर्म के आदर्श, जैसे **करुणा**, **शांति**, और **अहिंसा**, को प्रदर्शित किया गया।
- इन चित्रों का उद्देश्य धर्म के अनुयायियों को **ध्यान** और **धार्मिक विचारों** में गहराई से जुड़ने के लिए प्रेरित करना था।

बाघ गुफाओं की चित्रकला भारतीय चित्रकला का एक अद्वितीय और प्रेरणादायक उदाहरण है। यह चित्रकला न केवल धार्मिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय कला के शास्त्रीय दृष्टिकोण, रंगों की समझ, और मानव भावनाओं के चित्रण का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है। बाघ गुफाओं के चित्र हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति, धर्म और कला के गहरे संबंध को समझने में मदद करते हैं, और ये आज भी कला प्रेमियों और विद्वानों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

एलोरा चित्रकला

भारतीय चित्रकला की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शैली है, जो **महाराष्ट्र** राज्य के **एलोरा गुफाओं** में पाई जाती है। एलोरा गुफाएँ, जो कि **वेरुली गुफाएँ** के नाम से भी जानी जाती हैं, विश्व धरोहर स्थल के रूप में UNESCO द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। ये गुफाएँ **बौद्ध**, **हिंदू**, और **जैन धर्म** की धार्मिक मान्यताओं के प्रतीक हैं और इन गुफाओं की चित्रकला भी इन धर्मों के विचारों और आदर्शों को दर्शाती है। एलोरा गुफाओं की चित्रकला का समयकाल **6वीं से 10वीं शताब्दी** के बीच माना जाता है, और ये चित्रकला भारतीय प्राचीन कला की महान कृतियों में शामिल होती हैं।

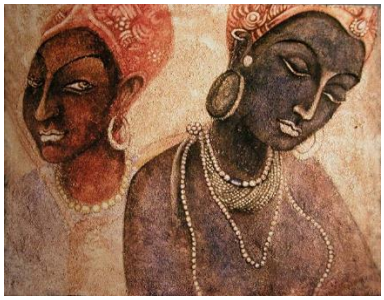

❑ **एलोरा गुफाएँ और चित्रकला का संदर्भ**

- **एलोरा गुफाएँ** 34 गुफाओं का एक समूह है, जो **अलंपूर** और **वेरुली** के आसपास स्थित है। इनमें से कुछ गुफाएँ **बौद्ध**, कुछ **हिंदू** और कुछ **जैन** धर्म से जुड़ी हैं, और इन गुफाओं की चित्रकला में इन तीनों धर्मों के प्रतीकों और काव्य को दर्शाया गया है।
- इन गुफाओं में चित्रकला का प्रयोग **धार्मिक उद्देश्यों** के लिए किया गया था, और यह धार्मिक विचारों, कथा-चित्रण और पूजाओं के कार्यों के रूप में प्रकट होती है। इन गुफाओं की चित्रकला में बौद्ध, हिंदू और जैन धर्मों के प्रभाव साफ दिखाई देते हैं।

❑ **एलोरा चित्रकला की विशेषताएँ**

- **हिंदू चित्रकला का प्रभाव**
  - **हिंदू धर्म** से जुड़ी गुफाओं में भगवान **शिव**, **विष्णु**, और अन्य देवताओं की मूर्तियों और चित्रों का बहुत ही सुंदर चित्रण किया गया है। **कैलाश मंदिर** (गुफा 16) की चित्रकला विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जहाँ भगवान शिव के विभिन्न रूपों और उनकी कथाओं का चित्रण किया गया है।
  - **शिवलिंग** और **शिव की नटराज मुद्रा** जैसे दृश्य इन गुफाओं की दीवारों और शिल्पों पर चित्रित किए गए हैं, जो भगवान शिव के महत्व को दर्शाते हैं।
- **बौद्ध चित्रकला का प्रभाव**
  - **बौद्ध गुफाओं** में मुख्य रूप से **बुद्ध** के जीवन के विभिन्न क्षणों को चित्रित किया गया है, जैसे **बुद्ध का जन्म**, **बुद्ध का ज्ञान प्राप्ति**, और **बुद्ध का उपदेश देना**। इन चित्रों में भगवान बुद्ध की करुणा, शांति और ध्यान की भावना को प्रमुखता से दर्शाया गया है।
  - बौद्ध चित्रकला में **जताक कथाएँ** भी दर्शाई जाती हैं, जो भगवान बुद्ध के पिछले जन्मों की कथाएँ हैं और बौद्ध धर्म की नैतिक शिक्षाओं को फैलाने का माध्यम बनती हैं।
- **जैन चित्रकला का प्रभाव**
  - **जैन धर्म** से जुड़ी गुफाओं में **तीर्थंकरों** के चित्रों का चित्रण किया गया है। ये चित्र जैन धर्म के मुख्य प्रतीक हैं और शांति, अहिंसा, और आत्मज्ञान के आदर्शों को दर्शाते हैं।
  - जैन गुफाओं में **जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ** और उनके विभिन्न जीवन-प्रसंगों के चित्रण मिलते हैं।

❑ **एलोरा चित्रकला की शैली और तकनीक**

- **चित्रण का आकार और संरचना**
  - एलोरा गुफाओं की चित्रकला बहुत ही **विस्तृत** और **शास्त्रीय** होती है। चित्रों में **जटिल शिल्प**, **कठिन रूपांकन** और **स्पष्ट रूपरेखा** का समावेश होता है।
  - गुफाओं की दीवारों पर चित्रों के अलावा **मूर्ति शिल्प** भी प्रमुख रूप से दिखाई देती है, जो चित्रकला के साथ साथ वास्तुकला में भी योगदान करती हैं।
- **रंगों का प्रयोग**
  - इन चित्रों में रंगों का **गहरे और प्राकृतिक तरीके से** उपयोग किया गया था। मुख्य रूप से **लाल**, **पीला**, **हरा**, **नीला** और **सफेद** रंगों का इस्तेमाल होता था।

- चित्रों में रंगों का चयन उस समय की कला की तकनीकी और सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाता है। इन रंगों का उपयोग चित्रों में भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया था।

- **प्राकृतिक दृश्य और धार्मिक प्रतीक**
  - एलोरा की चित्रकला में **प्राकृतिक दृश्य** और **धार्मिक प्रतीकों** का मिश्रण किया गया है। जैसे कि **देवताओं की मूर्तियाँ**, **सूर्य और चंद्रमा**, **पशु और पक्षी**, और **जंगल के दृश्य**।
  - इसके अलावा, कुछ चित्रों में **आध्यात्मिक प्रतीक** जैसे **धर्मचक्र** और **कमल के फूल** का उपयोग किया गया है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में सामने आते हैं।

❑ **प्रमुख दृश्य और चित्र**

एलोरा गुफाओं के चित्रों में कुछ प्रमुख दृश्य देखे जाते हैं, जो धर्म, जीवन और धार्मिक काव्य से जुड़ी हुई हैं:

- **शिव के कैलाश पर्वत पर निवास**
  - गुफा 16 (कैलाश मंदिर) में भगवान शिव की मूर्ति और उनके कैलाश पर्वत पर निवास को बहुत सुंदर तरीके से चित्रित किया गया है। इस चित्र में भगवान शिव की नटराज मुद्रा और उनके अद्वितीय रूप को दर्शाया गया है।

- **बुद्ध का ध्यान**
  - बौद्ध गुफाओं में भगवान बुद्ध को ध्यान करते हुए चित्रित किया गया है। यह चित्र बौद्ध धर्म के अनुयायियों को शांति, ध्यान, और ध्यानमग्नता का महत्व बताने का एक तरीका था।

- **जताक कथाएँ**
  - एलोरा गुफाओं में **जताक कथाएँ** भी चित्रित हैं, जो भगवान बुद्ध के पिछले जन्मों की कथाएँ हैं। इन कथाओं के माध्यम से बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और नैतिक शिक्षा को लोगों तक पहुँचाया गया।

- **जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ**
  - जैन गुफाओं में **तीर्थंकरों** के जीवन के चित्र और उनके धार्मिक आदर्शों को दर्शाते चित्र मिलते हैं। जैन धर्म में अहिंसा, सत्य, और आत्म-ज्ञान को प्रमुख स्थान दिया गया है।

❑ **एलोरा चित्रकला का महत्व**

- **धार्मिक एकता और विविधता**: एलोरा की चित्रकला ने तीन प्रमुख धर्मों (हिंदू, बौद्ध, और जैन) के बीच धार्मिक एकता और विविधता को दर्शाया। इन चित्रों में हर धर्म की खासियत और शिक्षाएँ स्पष्ट रूप से चित्रित की गई हैं।
- **कला और वास्तुकला का अद्भुत मिश्रण**: एलोरा गुफाओं की चित्रकला न केवल धार्मिक विचारों का प्रतिबिंब है, बल्कि यह भारतीय कला और वास्तुकला के उत्तम उदाहरणों में से एक है। चित्रकला के साथ-साथ गुफाओं की वास्तुकला और मूर्तिकला भी अत्यंत जटिल और सुंदर हैं।
- **प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक ध्यान**: एलोरा की चित्रकला में प्राकृतिक दृश्यों और धार्मिक ध्यान के रूपों को सम्मिलित किया गया, जो दर्शाता है कि उस समय की कला केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए भी थी।

एलोरा चित्रकला भारतीय चित्रकला का एक महान उदाहरण है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और शास्त्रीय दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह चित्रकला धार्मिक धरोहर, कला और वास्तुकला का अद्भुत संयोजन प्रस्तुत करती है, जो आज भी कला प्रेमियों और विद्वानों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। एलोरा गुफाओं की चित्रकला भारतीय चित्रकला की उत्कृष्ट कृतियों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

अन्य महत्वपूर्ण भारतीय चित्रकलाएं

❑ **बादामी चित्रकला**

- कर्नाटक के बागलकोट ज़िले में स्थित बादामी गुफा मंदिरों की भित्तिचित्रों से जुड़ी है ।
- बादामी गुफा मंदिरों में ब्राह्मण, हिन्दू, और जैन धर्म से जुड़े विषयों के चित्र हैं।
- इन गुफाओं में शिव-पार्वती, नटराज, और इंद्र सभा का चित्रण है।
- चित्रकला में बाघ और अजंता की चित्रकला से मिलती-जुलती प्रविधि का इस्तेमाल किया गया है।
- उत्तर और दक्षिण की शास्त्रीय परंपरा का बेहतरीन उदाहरण है।
- बादामी गुफाओं की खोज स्टेला क्रामेरिश ने साल 1924 में की थी।
- बादामी गुफा मंदिरों का निर्माण छठी शताब्दी में शुरू हुआ था।
- बादामी गुफा मंदिर, दक्कन पठार के सबसे पुराने मंदिरों में से एक हैं।
- चालुक्य राजाओं के चित्र भी हैं।
- बादामी गुफा मंदिरों में लयबद्ध रेखाओं का इस्तेमाल किया गया है।

- इन गुफाओं में धारा प्रवाह रूप और सुसंहत संयोजन कला का बेहतरीन उदाहरण मिलता है।

❑ **सित्तनवासल गुफाओं की चित्रकलाएं**

- इन चित्रों में जैन समवसरण की थीम है।
- कमल तालाब, फूल, तालाब से कमल इकट्ठा करने वाले लोग, दो नृत्य करने वाली आकृतियाँ, लिली, मछली, गीज़, भैंस और हाथी दिखाए गए हैं।
- पांड्य राजा-रानी और एक नर्तकी के चित्र भी हैं।
- हरे और भूरे और पुकीले रंगों का इस्तेमाल किया गया है।
- कमल एक नीली चमक के तहत, विविध हरियाली के बीच काल्पनिक तालाबों से उगते हैं।
- इस्तेमाल किया गया रंग 1000 साल से भी पुराना है।
- दीवारों के अलावा छत और स्तंभों पर भी बनाया गया है।

❑ **भित्ति चित्र कला,**

- भित्ति चित्र कला में, जिस जगह पर चित्र बनाया जाता है, उसके वास्तुशिल्पीय तत्वों को चित्र में शामिल किया जाता है।
- भित्ति चित्र कला बनाने के लिए कई तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है, जिनमें से एक फ्रेस्को है।
- भित्ति चित्र कला, त्रि-आयामी होती है क्योंकि यह किसी जगह को बदलकर उसे जैसा दिखना चाहिए, वैसा बनाती है।
- **भित्ति चित्र कला के कुछ उदाहरण-**
  - अजंता की गुफाएं
  - सित्तानवासल पेंटिंग
  - बाग की गुफाएं
  - एलोरा की गुफाएं
- **भारत में भित्ति चित्र कला के कुछ उदाहरण-**
  - तमिलनाडु के दक्षिणी क्षेत्रों में पल्लव, पांड्या और चोल राजवंशों के शासनकाल में भित्ति चित्र कला की परंपरा रही।
- हिन्द पुर के पास लेपाक्षी मंदिर में भित्ति चित्रों की आखिरी शृंखला है।
- दक्षिणी फ्रांस के लासकॉक्स ग्रोट्टोस में गुफा चित्र भी भित्ति चित्र कला के उदाहरण हैं।

❑ **भीमबेटका की गुफा**

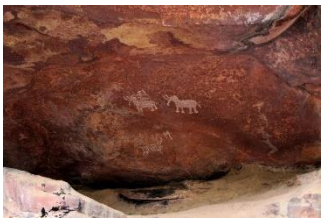

- भीमबेटका की गुफाओं में बने चित्रों को प्राकृतिक रंगों से बनाया गया था। इनमें लाल, सफ़ेद, हरा, भूरा, बैंगनी जैसे रंगों का इस्तेमाल किया गया था।
- इन चित्रों में शिकार, नृत्य, बच्चों का पालन-पोषण, घुड़सवारी, हाथी की सवारी, और शहद इकट्ठा करने जैसी कई गतिविधियां दिखाई गई हैं।
- इन चित्रों में हाथी, बाइसन, हिरण, मोर, सांप जैसे जानवरों को भी दर्शाया गया है।
- भीमबेटका की गुफाओं में बने चित्रों की खोज साल 1957-58 में वी.एस. वाकणकर ने की थी।
- साल 2003 में भीमबेटका को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- भीमबेटका में करीब 600 गुफाएं हैं, जिनमें से सिर्फ़ 12 गुफाएं आगंतुकों के लिए खुली हैं।

1500-1550 ईस्वी की चित्रकला

भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और संक्रमणकालीन समय था। इस अवधि में भारत में कई महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक बदलाव आए, और इन बदलावों का गहरा प्रभाव भारतीय चित्रकला पर पड़ा। इस समयकाल में **मुगल कला** के उदय, **राजपूत कला** और **दकनी कला** जैसे विभिन्न शैलीओं का मिश्रण हुआ। इस अवधि की चित्रकला की विशिष्टताएँ और विशेषताएँ बहुत विविध थीं और ये भारतीय चित्रकला के सुनहरे युग की शुरुआत के रूप में मानी जाती हैं।

❑ **मुगल कला का उदय**

- मुगलों के भारत में आगमन के साथ, मुगल चित्रकला ने भारतीय कला के परिप्रेक्ष्य को पूरी तरह से बदल दिया। इस समय के दौरान, बाबर (1526-1530) से लेकर अकबर (1556-1605) तक की अवधि में मुगल कला का विशेष विकास हुआ।
- मुगलों का चित्रकला में योगदान मुख्य रूप से फारसी कला और भारतीय कला का मिश्रण था। मुगल सम्राटों ने चित्रकला को राजसी और धार्मिक उद्देश्यों के लिए बढ़ावा दिया।
- अकबर के शासनकाल में चित्रकला का महत्वपूर्ण विकास हुआ। अकबर ने **फारसी चित्रकला** को भारतीय शैलियों के साथ मिलाकर एक नई शैली की शुरुआत की। अकबर के दरबार में कई प्रमुख चित्रकार जैसे **किंबरली**, **मुर्रत काजी**, **दारा शिकोह** आदि काम करते थे।

❑ **राजपूत चित्रकला**

- राजपूत चित्रकला का विकास इस समय के दौरान भी हुआ। राजपूत कला में **धार्मिक कथाएँ**, **राजसी चित्रण** और **प्राकृतिक दृश्यों** का चित्रण प्रमुख था।

- **कश्मीर**, **मालवा**, **मारवाड़** और **मेवाड़** जैसे विभिन्न राजपूत राज्यों में अलग-अलग चित्रकला शैलियाँ विकसित हुई।
- **राजपूत चित्रकला** में चित्रित की जाने वाली विषय वस्तु में मुख्यतः **हिंदू देवताओं** और **महाकाव्य कथाएँ** (जैसे **रामायण** और **महाभारत**) होती थीं।
- इस समय के प्रमुख चित्रकला केंद्रों में **मवली चित्रकला** और **मेवाड़ चित्रकला** का योगदान प्रमुख था। **मेवाड़ चित्रकला** में विशेष रूप से **राजा महाराणा प्रताप** के युद्ध चित्रण और **राजसी चित्रों** का चित्रण किया गया था।

❑ **दकनी चित्रकला**

- दक्षिण भारत में दकनी **चित्रकला** का एक नया रूप उभर रहा था। यह कला फारसी और भारतीय चित्रकला का संगम थी। दकनी चित्रकला में रंगों का अत्यधिक उपयोग और समृद्ध परंपरा को देखा जा सकता है।
- इस शैली में **प्राकृतिक दृश्य**, **राजसी चित्रण**, और **काव्यात्मक चित्रण** प्रमुख थे।
- **दकनी चित्रकला** की सबसे प्रसिद्ध कृतियाँ **विजय नगर साम्राज्य** और **कुतुब शाही शासन** के तहत उभरीं। इन चित्रकला कृतियों में मुगलों की शैली और हिंदू धार्मिक चित्रकला के तत्वों का समावेश देखा जाता है।

❑ **मुगल-राजपूत मिश्रित शैली**

- 1500-1550 के बीच, खासकर **अकबर** के शासनकाल में, मुगल और राजपूत कला के बीच एक प्रकार का **सामंजस्य** और **मिश्रण** हुआ। मुगलों ने राजपूत चित्रकला की जीवंतता और रंगों का इस्तेमाल किया, जबकि राजपूत कलाकारों ने मुगलों से **कला तकनीकों**, जैसे **प्रोफ़ाइल चित्रण** और **मूल रंगों का उपयोग** सीखा।
- **बघलामी शैली** और **मुगल दरबार के चित्र** ने इस मिश्रण को और विकसित किया, जहाँ दोनों शैलियों के तत्व जैसे कि **वस्त्रों के रंग**, **आकृतियों की शुद्धता**, और **चित्रित दृश्य** एक साथ आकर एक नए रूप में प्रस्तुत होते थे।

❑ **चित्रकला के प्रमुख विषय**

- इस अवधि में चित्रकला के प्रमुख विषयों में **धार्मिक कथाएँ** (जैसे **रामायण** और **महाभारत**), **राजसी चित्रण**, **राजाओं और साम्राज्य के युद्ध**, **प्राकृतिक दृश्य** और **पारंपरिक जीवन** शामिल थे।
- **मुगल चित्रकला** में अकबर के दरबार में राजदरबार, शिकार दृश्य, और दरबार के महत्वपूर्ण सदस्य जैसे **बीरबल** और **मैन सिंह** के चित्र प्रसिद्ध हैं।
- **राजपूत चित्रकला** में धार्मिक चित्रण और मंदिरों के निर्माण के साथ-साथ **काव्य और प्रेम गीतों** के चित्रण का भी महत्व था।

❑ **चित्रकला की तकनीक**

- इस समयकाल में चित्रकला में **जल रंग** का अधिक प्रयोग किया गया, और चित्रकला को अधिक जीवन्त और प्रामाणिक बनाने के लिए **स्वर्ण पत्र** का भी उपयोग किया जाता था।
- चित्रकला की तकनीक में एक निश्चित सटीकता और शुद्धता आ गई थी, जिससे चित्रों में एक नए प्रकार की **विवरणात्मकता** और **सजीवता** देखी जाती थी।
- **फारसी प्रभाव** के तहत चित्रकला में काले और सुनहरे रंगों का अधिक प्रयोग किया गया था, जो भारतीय और फारसी शैली के मिश्रण को प्रकट करता था।

❑ **प्रमुख चित्रकला केंद्र**

- **दिल्ली और आगरा**: जहां मुगलों ने अपनी दरबारी कला का विकास किया।
- **राजस्थान**: जहां राजपूतों की **कश्मीर**, **मालवा**, **मेवाड़**, **मारवाड़** जैसी कला शैलियाँ विकसित हुई।
- **दक्कन**: जहां दकनी शैली का प्रभाव था और फारसी कला के साथ भारतीय कला का संलयन हुआ।

1500-1550 ईस्वी की भारतीय चित्रकला एक महत्वपूर्ण संक्रमणकाल था, जिसमें विभिन्न शैलियाँ और तकनीकें उभरीं। **मुगल चित्रकला** और **राजपूत चित्रकला** के बीच एक **सांस्कृतिक मिश्रण** हुआ, जिससे एक नई चित्रकला शैली का निर्माण हुआ। इस समय की चित्रकला में **धार्मिक विषयों**, **राजसी चित्रण** और **प्राकृतिक दृश्यों** का अद्भुत संयोजन देखने को मिला। यह अवधि भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत के रूप में मानी जाती है।

मुगल कालीन प्रमुख चित्र

भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक विशेष स्थान रखते हैं। **मुगल कला** का प्रारंभ **बाबर** (1526-1530) से हुआ था, लेकिन इसका शिखर **अकबर** (1556-1605) और बाद में **जहाँगीर** (1605-1627) और **शाहजहाँ** (1628-1658) के शासनकाल के दौरान देखने को मिला। इस समय की चित्रकला में फारसी, भारतीय और तुर्की चित्रकला का मिश्रण था, जिससे एक नई शैली का उदय हुआ। मुगल कला की चित्रकला में रंगों का सुंदर इस्तेमाल, विस्तार से चित्रित दृश्य और बारीकियों को ध्यान में रखते हुए पात्रों का चित्रण होता था।

- **मुग़ल काल के प्रमुख चित्रकार -** बिहज़ाद, मुर्रत काज़ी, किंबरली, ईसा, अब्दुल समद, दलवेर खान, नदीर अली, सैयद अली, रजा अली खान, सालिम अली, दीन-ए-इलाही, शाह अब्बास, ईसा और अब्दुल समद, और अब्दुल समद शामिल हैं।

❑ **अकबर के दरबार के चित्र**

- अकबर के शासनकाल में चित्रकला में विशेष बदलाव आया। अकबर ने चित्रकला को बहुत बढ़ावा दिया और दरबार में प्रमुख चित्रकारों को नियुक्त किया, जिनमें **बिहज़ाद**, **किंबरली**, **मुर्रत काज़ी**, और **इसा** जैसे कलाकार शामिल थे। इन कलाकारों ने अकबर के दरबार और युद्धों के दृश्य चित्रित किए।
- **प्रमुख चित्र:**
  - **अकबर का चित्र**: अकबर के चित्र में उसे शाही पोशाक में सजाया गया था और इसमें उसे शाही मुद्रा में दिखाया गया था, जहां वह एक गंभीर और शक्तिशाली सम्राट के रूप में दिखाई देता है। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण **अकबर की हाथी पर सवारी** वाले चित्र में देखा जा सकता है।
  - **अकबर का युद्ध दृश्य**: अकबर के युद्धों के दृश्य अक्सर चित्रित किए गए, जैसे **पानीपत की लड़ाई** का चित्रण। इनमें शाही शैली में युद्ध के दृश्य और सैनिकों की भीड़ को चित्रित किया गया था।

❑ **जहाँगीर के चित्र**

- जहाँगीर के **समय** में भी मुगली कला ने नई दिशा प्राप्त की। जहाँगीर के दरबार में चित्रकला को काफी महत्त्व दिया गया और उन्होंने स्वयं कला में रुचि दिखाते हुए कई चित्रकारों को प्रोत्साहित किया। जहाँगीर के शासनकाल में चित्रकला में अधिक **प्राकृतिकता** और **स्पष्टता** आई। जहाँगीर के चित्र में उन्हें **प्राकृतिक दृश्य** और **संवेदनशील चित्र** पसंद थे।
- **प्रमुख चित्र:**
  - **जहाँगीर का पोर्ट्रेट**: इस चित्र में जहाँगीर को उच्च शाही पोशाक में दिखाया गया है, साथ ही साथ उनके साथ एक प्राकृतिक दृश्य भी चित्रित किया गया है, जिसमें वह एक कलाकार के रूप में दिखाई देते हैं।
  - **जहाँगीर और गोरिल्ला**: इस चित्र में जहाँगीर को गोरिल्ला के साथ दिखाया गया है, जो उनकी प्रकृति प्रेम और जीवों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को दर्शाता है।
  - **जहाँगीर और शाह अब्बास**: इस चित्र में शाह अब्बास के साथ उनकी मुलाकात को दर्शाया गया है, जिसमें दोनों सम्राटों की आदान-प्रदान और सामरिक महत्व का चित्रण किया गया है।

❑ **शाहजहाँ के चित्र**

- शाहजहाँ के शासनकाल में चित्रकला का स्वरूप अधिक **कला के शाही तत्वों** और **राजसी ठाठ** के साथ उभरा। इस दौरान क़लमदार चित्रकला में अत्यधिक बारीकियां आईं और विशेष रूप से **कीर्तन** और **मंदिरों** के चित्रण पर जोर दिया गया।
- **प्रमुख चित्र:**
  - **महारानी मुमताज़ महल का चित्र**: यह चित्र मुमताज़ महल के महान और शाही स्वरूप को दर्शाता है, जो शाहजहाँ के शाही जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। यह चित्र विशेष रूप से उनके व्यक्तित्व और संबंधों को दर्शाता है।
  - **ताज महल का निर्माण**: शाहजहाँ के समय में ताज महल के निर्माण का चित्रण भी हुआ था, जो एक आदर्श शाही स्थापत्य के रूप में सामने आया। यह चित्र ताज महल की भव्यता और इसके निर्माण कार्य को दिखाता है।

❑ **मुगल दरबार के शाही दृश्य**

- मुगल कला के दौरान **दरबारी चित्रकला** ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। इस प्रकार के चित्रों में सम्राट और उनके दरबारियों के जीवन को दर्शाया गया था। इन चित्रों में राजसी समारंभ, दरबार में हो रही चर्चाएँ, उत्सव, शाही खेल और मनोरंजन के दृश्य दिखाई देते थे।
- **प्रमुख चित्र:**

- **मुगल दरबार का दृश्य**: इस प्रकार के चित्रों में सम्राट अपने दरबारियों और सिखों के साथ दिखाई देते थे। यह चित्र उस समय के **राजसी परिधानों**, **धन-धान्य** और **शाही पोशाकों** को प्रदर्शित करते हैं।
- **शाही समारोह**: इस चित्र में सम्राट के दरबार में आयोजित होने वाले उत्सव, संगीत, नृत्य और शाही मेहमानों के स्वागत को दिखाया गया है।

❑ **मुगल चित्रकला में प्रकृति और जीवों का चित्रण**

- मुगल चित्रकला में प्रकृति, जीव-जंतु और फूलों का चित्रण भी प्रमुख था। मुगलों के समय में चित्रकारों ने पेंटिंग्स में प्राकृतिक दृश्यों, शिकार के दृश्य और अद्भुत जीवों की **चित्रण** की।
- **प्रमुख चित्र:**
- **शिकार दृश्य**: मुगलों के दरबार में शिकार एक महत्वपूर्ण शाही क्रिया थी, और कई चित्रों में शिकार के दृश्य को जीवंत रूप में दर्शाया गया है।
- **प्राकृतिक दृश्य**: चित्रों में गुलाब, कमल, और अन्य फूलों को भी प्रमुखता से चित्रित किया गया था, साथ ही साथ पेड़-पौधों और नदी-झील के दृश्य भी इस समय के चित्रों का हिस्सा थे।

मुगल कालीन चित्रकला की प्रमुख कृतियाँ भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन चित्रों में **राजसी ठाट** और **प्राकृतिक दृश्यों** का मिश्रण होता था, साथ ही **धार्मिक और सांस्कृतिक पहलुओं** का भी सटीक चित्रण किया जाता था। इस समय के चित्रों ने भारतीय चित्रकला की तकनीकी और कलात्मक कक्षाओं में नए मानक स्थापित किए, और ये चित्र कला की **कला और संस्कृति का अद्भुत संगम** हैं।

मध्य भारत की चित्रकला

मध्य भारत में चित्रकला का विकास विशेष रूप से **मालवा** ,**गुजरात**, और **राजस्थान** जैसे क्षेत्रों में हुआ। इस क्षेत्र की चित्रकला में धार्मिक, ऐतिहासिक, और शाही विषयों को प्रमुखता से चित्रित किया गया।

- **विशेषताएँ:**
- मध्य भारतीय चित्रकला में भारतीय धार्मिक कथाओं, खासकर हिंदू धर्म, से जुड़े दृश्य चित्रित किए जाते थे।
- मालवा शैली में चित्रित चित्रों में नायक-नायिका की प्रेमकथाएँ और भक्ति भावना प्रमुख थीं।
- प्राकृतिक दृश्य, जैसे पेड़, पक्षी, और पशु, इन चित्रों में बार-बार दिखाई देते थे।
- मध्य भारतीय चित्रकला में हल्के और मध्यम रंगों का उपयोग किया जाता था, जो चित्रों को शांति और संतुलन प्रदान करते थे।
- **मुख्य कृतियाँ:**
- मालवा और ग्वालियर के चित्रों में बौद्ध और हिंदू धार्मिक चित्रण, शाही दरबार के दृश्य और युद्ध के चित्र देखने को मिलते हैं।
- ग्वालियर के किलों में पाए गए चित्रकला के उदाहरण विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

❑ **राजस्थानी शैली की चित्रकला**

राजस्थानी चित्रकला एक अत्यंत समृद्ध और विविध शैली है, जो मुख्य रूप से **राजस्थान** राज्य में विकसित हुई थी। इस शैली का सबसे अधिक प्रभाव **17वीं से 19वीं शताबदी** के बीच देखा गया। इसे शाही दरबारों और मंदिरों में चित्रित किया जाता था।

- **विशेषताएँ:**
- राजस्थानी चित्रकला में शाही दरबारों और सम्राटों के चित्रण की विशेषता है। इन चित्रों में राजा और रानी के शानदार चित्र, युद्ध, शाही सवारी, और दरबार के दृश्य दिखाए जाते थे।
- राजस्थानी चित्रकला में **मिनीचर कला** का प्रचलन था, जिसमें बहुत सूक्ष्म और विस्तृत चित्र बनाए जाते थे।
- राधा-कृष्ण की प्रेमकथाएँ, राम-रावण युद्ध, और देवी-देवताओं के चित्रण आम थे।
- इस शैली में चमकदार और गहरे रंगों का प्रयोग किया जाता था, जिनमें सोने और चांदी की पत्तियों का भी इस्तेमाल किया जाता था।
- राजस्थानी चित्रकला में काव्यात्मक और कल्पनाशील दृश्य होते थे, जो भारतीय मिथकों और पुरानी कथाओं से प्रेरित होते थे।
- **राजस्थानी चित्रकला की मुख्य शैलियाँ:**
- **मीणा शैली** : इस शैली में प्रमुख रूप से भगवान विष्णु, कृष्ण और राधा के चित्र होते थे।
- **मारवाड़ी शैली** : इस शैली में मुख्य रूप से राजसी चित्र, दरबारी जीवन, और यथार्थवादी युद्ध दृश्य चित्रित होते थे।
- **मेरठ शैली** : यह शैली भी धार्मिक विषयों पर आधारित थी और इसमें प्रमुख रूप से राधा-कृष्ण के चित्र होते थे।
- **राजपुर शैली** : इस शैली में युद्धों, शिकार, और दरबारी जीवन के चित्रण होते थे।
- **मुख्य कृतियाँ:**
- **मीनाक्षी मंदिर चित्रकला**: मीनाक्षी मंदिर में पाए गए चित्र धार्मिक और पौराणिक घटनाओं को प्रदर्शित करते हैं।
- **चित्रकला श्रृंगार**: राधा-कृष्ण के चित्र और श्रृंगार के दृश्य राजस्थानी चित्रकला की विशेष पहचान हैं।

- **मेवाड़ शैली**
  - मेवाड़ शैली की चित्रकला में विस्तार, जीवंत रंग और सूक्ष्म शिल्प कौशल पर ध्यान दिया जाता है।
  - इन चित्रों में सरल चमकीले रंगों का इस्तेमाल होता है और इनमें प्रत्यक्ष भावनात्मक आकर्षण होता है।
  - मेवाड़ शैली के चित्रों में पात्रों की वेशभूषा, पृष्ठभूमि में वनस्पतियों, जीवों और जादुई घटनाओं को सावधानीपूर्वक दर्शाया जाता है।
  - मेवाड़ शैली के प्रमुख चित्रकार रहे हैं - साहिबदीन, मनोहर, गंगाराम, कृपाराम, जगन्नाथ आदि।
  - मेवाड़ शैली के प्रमुख केंद्र उदयपुर, नाथद्वारा और चावंड आदि हैं।
  - मेवाड़ शैली के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं- मिसर्दी द्वारा चित्रित रागमाला की शृंखला (1605), साहिलदीन द्वारा चित्रित रागमाला की शृंखला (1628), अरण्य कांड का सचित्र उदाहरण (1651), रामायण की सातवीं पुस्तक (उत्तर कांड) का चित्रण आदि।
- **बूंदी चित्रकला**
  - बूंदी चित्रकला में राजघरानों की जीवनशैली, युद्ध, त्योहार, और घुड़दौड़ को खूबसूरती से दिखाया गया है।
  - इन चित्रों में नारी पात्र बहुत लुभावने लगते हैं. इनके चेहरे छोटे और गोल, नाक तीखी, और आंखें बादाम जैसी होती हैं।
  - इन चित्रों में आम, पीपल, फूल-पत्तियां, और बेलों को दिखाया गया है।
  - इन चित्रों में चित्र के ऊपर वृक्षावली और नीचे पानी, कमल, और बत्तख बनाए गए हैं।
  - बूंदी चित्रकला में नीले, हरे, काले, और लाल रंगों का इस्तेमाल किया गया है।
  - बूंदी चित्रकला में राग-रागिनी, बारहमासा, नायिका भेद, और रसिक प्रिया जैसे विषयों को चित्रित किया गया है।
  - बूंदी चित्रकला में कृष्ण और अन्य देवताओं की कहानियां, रागमाला, शाही जुलूस, और दरबार के दृश्य भी दिखाए गए हैं।
- **कोटा चित्रकला शैली**
  - राजस्थान की एक प्रसिद्ध चित्रकला शैली है।
  - यह शैली, मुस्लिम और हिंदू शैलियों का मिश्रण है।
  - कोटा चित्रकला शैली, लड़ाई, शिकार, विवाह, और राजनीतिक घटनाओं को दर्शाती है।
  - हाथी पर सवार राजा को शिकार के दौरान और उसके अनुयायियों को घने जंगलों में दिखाया गया है।
  - बाघ और भालू के शिकार को अक्सर दिखाया गया है।
  - पहाड़ी जंगलों को अद्वितीय तरीके से दिखाया गया है।
  - राजसी वेशभूषा में हॉर्स और घोड़े पर बैठे लोगों को दिखाया गया है।
  - लाल, हल्का हरा, और पीला रंग का इस्तेमाल ज़्यादा किया गया है।
  - भवनों को कंगूरेनुमा और चकचराते ज्यामितीय अलंकरणों से सजाया गया है।
  - मानवीय और प्राकृतिक संबंधों को दिखाया गया है।
  - चंपा, गरज, नाचते हुए मोर, दरबार के दृश्य, कदम्ब के पेड़ के नीचे बैठे शेर आदि को दिखाया गया है
- **मारवाड़ चित्रकला शैली**
  - मारवाड़ शैली की शुरुआत 17वीं शताब्दी के पहले भाग में हुई थी.
  - इस शैली में कमल नयनों का अंकन, जुल्फ़ों का घुमाव, नीलाम्बर में गोल बादलों का अंकन जैसी खासियतें हैं.
  - मारवाड़ शैली के चित्रों में ऊंटों की सवारी प्रमुख रूप से दिखती है.
  - इस शैली के चित्रों में लाल और पीले रंगों का कलात्मक प्रयोग किया गया है.
  - मारवाड़ शैली के चित्रों में प्रकृति का निरूपण प्रतीकात्मक तरीके से किया गया है.
  - इस शैली के चित्रों में व्यक्ति चित्रों में सामंती स्वाभिमान और शान है.
  - इस शैली के चित्रों में शौर्य, त्याग, और प्रेम की छटा दिखती है.
  - इस शैली के चित्रों में आकृतियों में गति है, मुद्राओं में नाटकीयता है.
  - इस शैली के चित्रकारों में नारायण दास, अमरदास, किशनदास, छज्जू, रतन जी भाटी आदि शामिल हैं
- **बीकानेर चित्रकला शैली**
  - यह शैली मुगल भव्यता का कलात्मक विरासत मिश्रण हैं।
  - राव बीका राठौर ने 1488 में एक प्रमुख राजस्थानी राज्य बीकानेर की स्थापना की।
  - अनूप सिंह के शासन (1669-1698) के दौरान , बीकानेर में पांडुलिपियों और चित्रकलाओं से समृद्ध एक पुस्तकालय था।
  - मुगलों के साथ लम्बे समय तक संबंध होने के कारण , बीकानेर की चित्रकला शैली में मुगल सौंदर्य और सौम्य रंग-शैली समाहित थी।
  - बीकानेर स्कूल सर्वाधिक प्रलेखित चित्रकला स्कूलों में से एक है।
  - "बहिस", शाही डायरियाँ, बीकानेर कलाकृतियों पर कई शिलालेखों के साथ, स्कूल के इतिहास का एक समृद्ध रिकॉर्ड प्रस्तुत करते हैं।
  - शिलालेख, मुख्यतः मारवाड़ी और कभी-कभी फ़ारसी में, कलाकारों, तिथियों, निर्माण स्थानों और निर्माण अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

❑ मालवा शैली की चित्रकला

- मालवा शैली की चित्रकला में रेखांकन का अहम योगदान है। ये रेखांकन स्थूल होते थे और इनके अंदर रंग भरे जाते थे।

- इन चित्रों में रंगों का वैविध्य इस क्षेत्र के लोगों की विविध आकांक्षाओं को दर्शाता है।
- मालवा शैली की चित्रकला में वास्तुकला दृश्यों की ओर झुकाव होता है।
- इन चित्रों में प्राकृतिक दृश्य को बनाने के लिए रंगों का खूबसूरत इस्तेमाल किया जाता है।
- मालवा शैली की चित्रकला में सावधानी से तैयार की गई सपाट संरचना और श्रेष्ठ प्रारूपण होता है।
- माण्डु में चित्रित कल्पसूत्र 1437 ईस्वी, मालवा शैली की चित्रकला का सबसे पुराना ज्ञात उदाहरण है।
- पंद्रहवीं शताब्दी में मालवा शैली की चित्रकला में फारसी शैली का प्रभाव दिखने लगा था।
- पश्चिमी भारतीय पाण्डुलिपियों में गहरा नीला और सुनहरा रंग का इस्तेमाल भी फारसी चित्रकला के प्रभाव को दर्शाता है।

❑ राजपूत और मुग़ल शैली में चित्रकला के प्रमुख अंतर

विशेषता	राजपूत शैली	मुगल शैली
उत्पत्ति	राजपूत चित्रकला का विकास राजस्थानी दरबारों में हुआ।	मुग़ल चित्रकला का विकास मुग़ल साम्राज्य के दरबार में हुआ।
मुख्य विषय	धार्मिक, शाही दरबार, युद्ध, प्रेमकथाएँ, राधा-कृष्ण चित्रण।	सम्राटों के दरबार, युद्ध, पशु, दरबारी जीवन, और शाही दृश्य।
चित्रकला की शैली	मिनिएचर शैली, जिसमें चित्रों का आकार छोटा होता है और विस्तृत विवरण होता है।	बड़े आकार के चित्र, जहां परिदृश्यों और व्यक्तियों का बड़ा और यथार्थवादी चित्रण होता है।
रंगों का प्रयोग	जीवंत और चमकदार रंगों का उपयोग, जैसे लाल, हरा, नीला।	मुग़ल चित्रकला में प्राकृतिक रंगों का संतुलन और रियलिज़्म की झलक।
सामग्री	पत्तियों, कागज, और कपड़े पर चित्रण, ज्यादातर छोटे आकार के चित्र होते थे।	कागज, कैनवास, और विशेष रूप से गिल्ट और चांदी के साथ बड़े चित्र बनाए जाते थे।
कला का उद्देश्य	धार्मिक, ऐतिहासिक और शाही घटनाओं को चित्रित करना।	सम्राटों की शक्ति, शाही ठाट और प्राकृतिक दृश्य को चित्रित करना।

पहाड़ी चित्रकला

भारतीय चित्रकला की एक शैली है। यह शैली 17वीं से 19वीं शताब्दी के बीच उत्तर भारत के हिमालय के पहाड़ी राज्यों में विकसित हुई।

- पहाड़ी चित्रकला में प्राकृतिक सुंदरता, भाव चित्रण, और नारी सौंदर्य प्रमुख तत्व थे।
- पहाड़ी चित्रकला में धार्मिक, साहित्यिक, श्रृंगारिक ग्रंथ, प्रेम कथाएं, राग-रागिनियां, नायक-नायिका भेद, गीत गोविन्द, सतसई, रसिक प्रिया, और बारहमासा जैसे विषयों को दर्शाया गया।
- पहाड़ी चित्रकला में रंग खनिज और वनस्पति से तैयार किए जाते थे।
- पहाड़ी चित्रकला को कांगड़ा कलम कहा जाता है।
- पहाड़ी चित्रकला की उत्पत्ति राजस्थानी लोककला और मुगल शैली से हुई।
- पहाड़ी चित्रकला को राजपूत शासकों ने संरक्षण दिया था।
- पहाड़ी चित्रकला की शुरुआत बसोहली राज्य में हुई थी।
- बसोहली और कुल्लू के पहाड़ी कलाकारों के लिए रामायण पसंदीदा ग्रंथ था।
- कुल्लू राजपरिवार से जुड़े स्थान 'शांगरी' के नाम पर निर्मित चित्रक

❑ बसोहली चित्रकला

- बसोहली चित्रकला में रंग और रेखाओं का प्रयोग साहसिक और जीवंत तरीके से किया जाता है।
- इसमें प्राथमिक रंगों का ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है।
- इसमें विशेष तरह के चेहरे बनाए जाते हैं।
- बसोहली चित्रकला में पौराणिक कथाओं और पारंपरिक लोक कलाओं का मिश्रण होता है।
- बसोहली चित्रकला में अलंकरण के लिए शुद्ध चांदी और 24 कैरेट सोने का इस्तेमाल किया जाता है।
- बसोहली चित्रकला में वील पेपर या आइवरी शीट का इस्तेमाल कैनवास की जगह किया जाता है।
- गिलहरी के बालों या कलमुन्हा पक्षी के पंखों से विशेष कूंचियां बनाई जाती हैं।
- सूखे फूलों, पत्तियों, भ्रमर के पंखों, और खड़िया से रंगों का मिश्रण तैयार किया जाता है।

❑ **कांगड़ा चित्रकला**

- कांगड़ा चित्रकला में श्रृंगार को मुख्य विषय माना गया है।
- समाज की जीवनशैली को दिखाया गया है।
- ठंडे नीले और हरे रंगों का इस्तेमाल किया गया है।
- विषयों को काव्यात्मक तरीके से दर्शाया गया है।
- स्त्री के आकर्षण को बहुत ही खूबसूरत तरीके से दिखाया गया है।
- महिलाओं के चेहरे को कोमल और परिष्कृत तरीके से दर्शाया गया है।
- प्राकृतिक रंग का इस्तेमाल किया गया है।
- वनस्पति और खनिज अर्क से बने रंगों का इस्तेमाल किया गया है।
- रूप और रंग का गीतात्मक मिश्रण किया गया है।
- प्राकृतिक दृश्यों को बहुत बारीकी से दिखाया गया है।
- छायाचित्रों जैसी समानता है।
- नायिकाओं के तीनों रूपों को दिखाया गया है।

आधुनिक काल में चित्रकला

भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। 19वीं और 20वीं शताब्दी में चित्रकला ने नई दिशाओं में विकास किया, जहां पारंपरिक शैलियों के साथ-साथ पश्चिमी कला और विचारधाराओं का भी प्रभाव देखने को मिला।

❑ **आधुनिक काल की चित्रकला की विशेषताएँ:**

- **पश्चिमी प्रभाव**:
  - 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में, भारत में ब्रिटिश उपनिवेशी शासन के दौरान पश्चिमी कला और तकनीकों का प्रभाव बढ़ा। भारतीय चित्रकारों ने यूरोपीय शैली को अपनाया, जैसे रियलिज़्म, इम्प्रेशनिज़्म और ऑयल पेंटिंग।
- **यथार्थवाद :**
  - भारतीय चित्रकला में यथार्थवाद का प्रवेश हुआ, जहाँ चित्रकारों ने वास्तविक जीवन को चित्रित करना शुरू किया। यह पश्चिमी कला के प्रभाव का परिणाम था।
- **अवधारणाओं का परिवर्तन**:
  - पारंपरिक धार्मिक और शाही चित्रकला के बजाय, भारतीय चित्रकारों ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीयता और समाज सुधारकों की छवि चित्रित की जाने लगी।
- **प्रयोगात्मक कला**:
  - आधुनिक चित्रकला में भारतीय चित्रकारों ने नई तकनीकों, जैसे एब्स्ट्रैक्ट आर्ट, क्यूबिज़्म, और फ्यूचरिज़्म का उपयोग किया। चित्रकला के पारंपरिक रूपों को छोड़कर, चित्रकारों ने अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के लिए नए प्रयोग किए।
- **कलात्मक स्वतंत्रता**:
  - चित्रकारों ने पारंपरिक कला शैलियों को छोड़कर अधिक स्वतंत्रता से कार्य करना शुरू किया, और अपनी शैली और तकनीकों में नवाचार किया।

❑ **आधुनिक काल के प्रमुख भारतीय चित्रकार:**

- **रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ ठाकुर)** – एक प्रसिद्ध कवि और चित्रकार, जिन्होंने चित्रकला में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने एक विशिष्ट शैली विकसित की जिसमें रंग और रूपों की अनूठी प्रस्तुति होती थी।
- **अमृता शेरगिल** – भारतीय चित्रकला की प्रसिद्ध चित्रकार, जो यूरोपीय और भारतीय कला शैलियों का मिश्रण करती थीं। उनकी कला में भारतीय ग्रामीण जीवन और महिला पात्रों का चित्रण प्रमुख था।

- **हसन अहमद** – एक भारतीय चित्रकार जिन्होंने आधुनिक भारतीय कला को एक नई दिशा दी। उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं और ऐतिहासिक घटनाओं को चित्रित किया।
- **एफ.एन. Souza** – भारतीय चित्रकला के एक प्रमुख व्यक्तित्व, जो यूरोपीय और भारतीय कला को मिलाकर एक नई शैली विकसित करते थे। उनकी कला में मानव रूपों और भावनाओं का उग्र चित्रण था।
- **एम.एफ. हुसैन** – आधुनिक भारतीय चित्रकला के सबसे प्रसिद्ध नामों में से एक। उनकी कला में भारतीय संस्कृति, नृत्य और भारतीय जीवन की विविधता का चित्रण होता था। उन्होंने आधुनिक कला में अभिव्यक्तिवादी दृष्टिकोण अपनाया।
- **सुहासिनी हैरिस** – आधुनिक चित्रकला में एक प्रमुख भारतीय चित्रकार जो भारतीय और पश्चिमी कला शैलियों को मिश्रित करती थीं।

❑ **आधुनिक काल में चित्रकला के प्रवृत्तियाँ:**

- **सामाजिक और राजनीतिक विषय**: चित्रकला में सामाजिक मुद्दों जैसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, महिला सशक्तिकरण, और जातिवाद पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **नवजागरण कला** : स्वतंत्रता संग्राम के साथ ही भारतीय चित्रकारों ने भारतीय समाज और संस्कृति की पुनर्रचना की।
- **आधुनिक भारतीय मूर्तिकला**: चित्रकला के साथ-साथ भारतीय मूर्तिकला में भी बदलाव आया, जिसमें धातु, पत्थर और अन्य सामग्रियों से बनावट का प्रयोग हुआ।

आधुनिक काल में भारतीय चित्रकला ने यूरोपीय और भारतीय शैली के मिश्रण से एक नया रूप लिया। चित्रकला के पारंपरिक रूपों के साथ-साथ नई तकनीकों और विचारधाराओं का प्रयोग किया गया, जिससे भारतीय चित्रकला के दायरे को और विस्तारित किया गया। इस काल के चित्रकारों ने भारतीय समाज, राजनीति, और संस्कृति को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

स्वतंत्रता पश्चात भारतीय चित्रकला का विकास

स्वतंत्रता पश्चात भारतीय चित्रकला का विकास एक नए और महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंचा, जहाँ परंपरागत शैलियों के साथ-साथ आधुनिक और समकालीन शैलियाँ भी विकसित हुईं। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारतीय चित्रकला में एक नया दृष्टिकोण, विचारधारा, और प्रयोगात्मकता देखने को मिली। इस काल में भारतीय चित्रकला ने न केवल अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखा, बल्कि दुनिया भर में भारतीय कला की पहचान भी स्थापित की।

❑ **स्वतंत्रता पश्चात भारतीय चित्रकला का विकास:**

- **राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव**:
  - स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, चित्रकला का उपयोग स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए किया गया। चित्रकारों ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक चित्रित किए। स्वतंत्रता के बाद, यह भावना और भी गहरी हुई, और चित्रकारों ने भारतीय पहचान और सांस्कृतिक धरोहर को व्यक्त किया।
- **प्रयोगात्मकता और समकालीन कला**:
  - स्वतंत्रता के बाद, भारतीय चित्रकला में एक नई प्रयोगात्मकता आई। चित्रकारों ने पश्चिमी शैलियों (जैसे क्यूबिज़्म, एब्स्ट्रैक्ट, इम्प्रेशनिज़्म) के साथ भारतीय परंपराओं को मिश्रित किया।
  - इस दौरान, समकालीन भारतीय चित्रकारों ने अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के लिए नई शैली और तकनीकों को अपनाया।
- **महत्वपूर्ण चित्रकारों का योगदान**:
  - **एम.एफ. हुसैन**: भारतीय चित्रकला के सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली चित्रकारों में से एक। उनकी कला में भारतीय संस्कृति और समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया गया, जिसमें जीवंत रंगों और दृश्यात्मकता का बेहतरीन प्रयोग था।
  - **फिरोज़ा वाडिया**: उन्होंने भारतीय कला के आधुनिक रूपों में दिलचस्प प्रयोग किए और भारतीय और पश्चिमी शैलियों को मिश्रित किया।
  - **अमृता शेरगिल**: भारतीय चित्रकला में एक महत्वपूर्ण नाम, जिन्होंने पश्चिमी कला तकनीकों का उपयोग किया लेकिन साथ ही भारतीय तत्वों और संस्कृति को चित्रित किया।
  - **रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ टैगोर)**: उन्होंने चित्रकला में एक नया दृष्टिकोण पेश किया और भारतीय कला की दृष्टि को दुनिया भर में पहचाना।
- **कला संस्थाओं का निर्माण**:
  - स्वतंत्रता के बाद, कई प्रमुख कला संस्थाएँ स्थापित हुईं जैसे **ललित कला अकादमी** और **राष्ट्रीय चित्रकला संस्थान**, जिन्होंने भारतीय चित्रकला के विकास को बढ़ावा दिया और युवा चित्रकारों को प्रेरित किया।
  - **बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)**, **जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU)**, और **भारत भवन (भोपाल)** जैसी संस्थाओं ने भी चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का संगम**:
  - स्वतंत्रता के बाद, भारतीय चित्रकला में पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का सम्मिलन हुआ। पारंपरिक चित्रकला जैसे **मिनीचर**, **राजस्थानी**, और **मुग़ल शैली** को पुनः नए रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि आधुनिक शैलियाँ जैसे **एब्स्ट्रैक्ट**, **क्यूबिज़्म** और **फ्यूचरिज़्म** को भी अपनाया गया।
- **भारतीय कला की अंतरराष्ट्रीय पहचान**:
  - स्वतंत्रता के बाद, भारतीय चित्रकला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। भारतीय चित्रकारों ने यूरोप, अमेरिका और एशिया में अपनी कला का प्रदर्शन किया और वहां की कला जगत में अपनी पहचान बनाई।
  - **भारत कला प्रदर्शनी** और **इंटरनेशनल आर्ट फेस्टिवल** जैसे आयोजनों ने भारतीय चित्रकला को वैश्विक मंच पर पहुँचाया।

❑ **आधुनिक और समकालीन भारतीय चित्रकला के प्रमुख प्रवृत्तियाँ:**

- **एब्स्ट्रैक्ट और अमूर्त कला**:
  - इस दौरान, अमूर्त कला का प्रभाव बढ़ा। चित्रकारों ने रूप और आकार से परे जाकर केवल रंगों और रूपों के माध्यम से अपनी भावनाओं और विचारों का प्रदर्शन किया। उदाहरण के लिए, **हुसैन** की अमूर्त कला।
- **प्राकृतिक और सामाजिक मुद्दे**:
  - चित्रकारों ने सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर ध्यान केंद्रित किया, जैसे जातिवाद, शहरीकरण, और पर्यावरणीय मुद्दे।
- **नई मीडिया और डिजिटल कला**:
  - 21वीं सदी में, डिजिटल तकनीकों का प्रयोग भारतीय चित्रकला में हुआ। चित्रकारों ने डिजिटल माध्यम का उपयोग कर कला के नए रूप और रूपांतरण विकसित किए।
- **भारतीय कला में पश्चिमी प्रभाव**:
  - पश्चिमी कला के प्रभाव से, भारतीय चित्रकला में नई तकनीकों और शैलियों को अपनाया गया, जैसे पेंटिंग्स में मोनोक्रोमेटिक रंगों का प्रयोग और आधुनिक कला की अन्य शैलियाँ।
- **लोक कला और कला के नए रूप**:
  - स्वतंत्रता के बाद, भारतीय चित्रकला में लोक कला और आदिवासी कला का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन शैलियों ने आधुनिक भारतीय चित्रकला को एक नया आयाम दिया।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय चित्रकला ने न केवल अपनी परंपराओं को बरकरार रखा, बल्कि आधुनिकता, समकालीनता, और वैश्विक प्रभाव को भी आत्मसात किया। इस समय की चित्रकला ने भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति के मुद्दों को चित्रित किया, और वैश्विक कला मंच पर अपनी पहचान बनाई।

भारतीय नृत्यकला

- नृत्य एक सार्वभौमिक तथा मानवीय अभिव्यक्ति का रसमय और क्रियात्मक प्रदर्शन है। अंग-प्रत्यंग एवं मनोभावों के साथ की गई नियंत्रित यति-गति को नृत्य कहते हैं।
- भारतीय नृत्यकला धर्म एवं दर्शन से जुडी हुयी है।
- भारतीय पुराणों में नृत्य को ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया गया है।
- भारतीय परंपरा में नृत्यकला के दो अंग स्वीकार किये गए हैं- तांडव तथा लास्य।
- तांडव नृत्य में संपूर्ण खगोलीय रचना एवं इसके विनाश की एक लयबद्ध कथा को नृत्य के रूप में दर्शाया गया है।
- तांडव नृत्य में दो भगिमाएँ हैं- रौद्र रूप एवं आनंद रूप।
- लास्य नृत्य का आरंभ देवी पार्वती से माना जाता है। इसमें नृत्य की मुद्राएँ बेहद कोमल, स्वाभाविक एवं प्रेमपूर्ण होती हैं, तथा इसमें जीवन के श्रृंगारिक पक्षों को विभिन्न प्रतीकों व भावों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।
- भारतीय नृत्य को दो भागो में विभाजित कर समझ सकते हैं - शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य

शास्त्रीय नृत्य

- शास्त्रीय नृत्य मूल रूप से शास्त्रीय पद्धति पर आधारित है।
- शास्त्रीय नृत्य से संबंधित उल्लेख भरतमुनि द्वारा लिखित **'नाट्यशास्त्र'** एवं आचार्य नदिकेश्वर द्वारा रचित **'अभिनय दर्पण'** में मिलता है।
- नाट्यशास्त्र में वर्णित मुद्राएँ ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य की मूल आधार हैं।
- भारतीय नृत्य परंपरा में शास्त्रीय नृत्य को शैलियाँ प्रचलित थीं- भरतनाट्यम, कथकली, कथक एवं मणिपुरी।
- कुचिपुड़ी एवं ओडिसी को शास्त्रीय नृत्य की मान्यता बाद में मिली। लगभग 20 वर्ष पहले मोहिनीअट्टम को शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में ख्याति मिली, जबकि सत्रिया नृत्य शैली को संगीत नाटक अकादमी द्वारा 15 नवंबर, 2000 को शास्त्रीय नृत्य को सूची में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार भारत में वर्तमान समय में 8 शास्त्रीय नृत्य प्रचलित हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है-

- **शास्त्रीय नृत्य**
  - कत्थक (उत्तर प्रदेश)
  - भरतनाट्यम (तमिलनाडु)
  - कथकली (केरल)
  - मणिपुरी (मणिपुर)
  - ओडिशी (ओडिशा)
  - कुचीपुड़ी (केरल)
  - सत्तीया (असम)
  - मोहिनीअट्टम (केरल)

❑ भरतनाट्यम नृत्य

- **राज्य -** तमिलनाडु
- भरतनाट्यम नृत्य के क्रम में ये भाग होते हैं- आलारिप्पु, जातीस्वरम, शब्दम, वर्णम, पदम, तिल्लाना।
- **मुख्य तथ्य -**
  - यह शुरुआती दिनों में मंदिर की देवदासियों द्वारा भगवान की मूर्ति के समक्ष किया जाता था। इसे 'दासीअट्टम' के नाम से भी जाना जाता था।
  - रुक्मिणी देवी अरुंडेल तथा ई. कृष्ण अय्यर के प्रयासों से इस नृत्य को प्रसिद्धि मिली।
  - भरतनाट्यम में नृत्य और अभिनय सम्मिलित होता है।
  - इस नृत्य में शारीरिक भंगिमा पर विशेष बल दिया जाता है।
  - इस नृत्य का उदाहरण नटराज की मूर्ति को माना जाता है।
  - भरतनाट्यम में शारीरिक प्रक्रिया को तीन भागों में बाँटा जाता है- समभंग, अभंग एवं त्रिभंग।
- प्रमुख कलाकार- पद्मा सुब्रह्मण्यम, यामिनी कृष्णमूर्ति, सोनल मानसिंह, मृणालिनी साराभाई, मल्लिका साराभाई आदि हैं।

❑ कथकली नृत्य

- **राज्य -** केरल
- **मुख्य तथ्य**

- यह मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य था, किंतु नृत्यांगना रागिनी देवी ने पुरुषों के इस एकाधिकार को तोड़ा।
- पुरुष प्रधान नृत्य होने के कारण इसमें स्त्री पात्र का नृत्य भी पुरुष ही करते थे।
- इस नृत्य में नर्तक द्वारा रामायण, महाभारत तथा पुराणों से लिये गए चरित्रों का अभिनय किया जाता है।
- इसमें चेहरे के हाव-भाव, नेत्र एवं भौंह के संचालन, गालों, नाक एवं ठोड़ी की अभिव्यक्ति पर विशेष रूप से जोर दिया जाता है।
- इस नृत्य में दो प्रकार के पात्र होते हैं- पाचा (नायक) व कैथी (खलनायक)।
- इस नृत्य में नर्तक के चेहरे पर हरा, लाल, पीला एवं काला रंग लगाया जाता है, जिसमें हरा रंग सद्गुण एवं मर्यादा का सूचक होता है, लाल रंग पाप का सूचक, काला रंग तामसिक प्रवृत्ति को दर्शाता है जबकि पीला रंग सात्त्विक स्वभाव का परिचायक है। इसके अलावा सफेद रंग का भी प्रयोग किया जाता है।
- मुखौटा नृत्य का सम्बन्ध कथकली नृत्य शैली से है।
- 17वीं शताब्दी में कोट्टारक्करा तम्पुरान ने जिस रामनाट्यम का आविष्कार किया, उसका विकसित रूप कथकली है।
- कोट्टक्कल शिवरामन एक दक्षिण भारतीय नर्तक थे। इन्होंने केरल के शास्त्रीय नृत्य कथकली में महिला भूमिकाओं के चित्रण को प्रभावी रूप प्रदान किया है।

- **प्रमुख कलाकार -** कलामंडलम रामन कुट्टी नायर, कोटक्कल कृष्णान कुट्टी नायर, रीता गांगुली, सदानम कृष्णनकुट्टी, मृणाली साराभाई, गुरु गोपीनाथ, शान्ता राव, माधुवर वासुदेव ।

❑ मोहिनीअट्टम नृत्य

- **राज्य** - केरल
- **मुख्य तथ्य -**

- इसे एकल महिला द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
- मोहिनी का अर्थ है सुन्दर स्त्री और अट्टम का अर्थ है नृत्य।
- 19वीं सदी में त्रावणकोर के राजा स्वाति तिरूनल राम वर्मा के काल में इसका विकास हुआ।
- इसमें भावनाओं के प्रवाह के साथ कदमताल, शारीरिक हाव-भाव और संगीत की बारीकियों के बीच संतुलन साधा जाता है।
- मोहिनीअट्टम आँखों एवं इशारों की अभिव्यक्ति के लिये कथकली का ऋणी है।
- यह एक लास्य प्रधान नृत्य है जिसकी प्रस्तुति नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार होती है।

- **प्रमुख कलाकार -** वैजयंती माला, हेमा मालिनी, जयप्रभा मेनन, सुनंदा नायर, गोपिका वर्मा, पल्लवी कृष्णन आदि।

❑ कुचिपुड़ी नृत्य

- **राज्य -** आंध्र प्रदेश
- **मुख्य तथ्य -**

- इसका जन्म आंध्र प्रदेश के कुचेलपुरम गाँव में हुआ तथा इसी के नाम पर इसे 'कुचिपुड़ी' नाम दिया गया। ब्राह्मण इस नृत्य का पारम्परिक रूप से अभ्यास करते थे। परम्परा के अनुसार यह नृत्य केवल ब्राह्मण पुरुषों द्वारा किया जाता था।
- यह गीत एवं नृत्य का समन्वित रूप है।
- भागवत् पुराण इसका मुख्य आधार है।
- कुचिपुड़ी नृत्य का सबसे लोकप्रिय रूप मटका नृत्य है जिसमें एक नर्तकी मटके में पानी भरकर और उसे अपने सिर पर रखकर, पीतल की थाली में पैर रखकर, नृत्य करती है।
- इस नृत्य की एक अन्य प्रमुख विशेषता है कि कलाकार नृत्य के दौरान अपने पैर के अंगूठे से फर्श पर एक काल्पनिक आकृति बनाता है।
- कुचिपुड़ी नृत्य का प्रारम्भ आन्ध्र प्रदेश में हुआ।
- कुचिपुड़ी नृत्य में नर्तक प्रासंगिक रूप से कथोपकथन का प्रयोग करते हैं।

- **प्रमुख कलाकार -** यामिनी कृष्णमूर्ति, राधा रेड्डी, भावना रेड्डी, राजा रेड्डी, यामिनी रेड्डी आदि।

भरतनाट्यम और कुचिपुड़ी के बीच मुख्य अंतर इस प्रकार हैं	
भरतनाट्यम	**कुचिपुड़ी**
उत्पत्ति में प्राचीन	भरतनाट्यम से अपेक्षाकृत नया
राज्य - तमिलनाडु	राज्य- आंध्र प्रदेश
सटीक और लयबद्ध कदम	गोल कदम
'अरमंडी' पर ध्यान केंद्रित	नर्तक जमीन पर कम नहीं बैठते हैं
विषय- धार्मिक और आध्यात्मिक	विषय-धार्मिक-भगत पुराण
पहले देवदासियों द्वारा प्रस्तुत (नए-पुरुष और महिला नर्तक)	पहले - पुरुष ब्राह्मण अब-नर और मादा दोनों
नर्तक संवाद नहीं बोलते हैं	**नर्तक संवाद बोलते हैं**
पैर, कूल्हे और हाथ के संक्रमणकालीन परिवर्तन। भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अभिव्यंजक नेत्र चलन और हाथ के इशारों का उपयोग किया जाता है	कुचिपुड़ी नृत्य में, एकल आइटम हैं मंडुका शबदाम (मेंढक की कहानी) बालगोपाला तरंगा **(पीतल की थाली के किनारों पर नृत्य करते हुए सिर पर पानी से भरा घड़ा)** और ताला चित्रा नृत्य (नृत्य करने वाले पैर की उंगलियों के साथ चित्र बनाना)।

❑ ओडिसी नृत्य

- **राज्य -** ओडिशा
- **मुख्य तथ्य -**
  - ईसा पू. द्वितीय शताब्दी में 'महरिस' नामक संप्रदाय था। जो शिव मंदिरों में नृत्य करता था, कालांतर में इसी से ओडिसी नृत्यकला का विकास हुआ।
  - ओडिसी नृत्य को पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर सबसे पुराने जीवित शास्त्रीय नृत्यों में से एक माना जाता है।
  - ओडिसी नृत्य में त्रिभंग पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। त्रिभंग में एक पाँव मोड़ा जाता है और देह थोड़ी. किंतु विपरीत दिशा में कटि और ग्रीवा पर वक्र की जाती है।
  - इस नृत्य की मुद्राएँ एवं अभिव्यक्तियों भरतनाट्यम से मिलती-जुलती हैं।
  - ओडिसी नृत्य में भगवान कृष्ण के बारे में प्रचलित कथाओं के आधार पर नृत्य किया जाता है।
  - इस नृत्य में ओडिशा के परिवेश एवं वहाँ के लोकप्रिय देवता भगवान जगन्नाथ को महिमा का गान किया जाता है।
  - इस नृत्य में प्रयोग होने वाले छद संस्कृत नाटक 'गीतगोविदम्' से लिये गए हैं।
- **प्रसिद्ध कलाकार -** संयुक्ता पाणिग्रही, सोनल मानसिह, कुमकुम मोहंती, माधवी मुद्गल, अदिति वद्योपाध्याय, अरुणा मोहंती आदि।

❑ मणिपुरी

- **राज्य - मणिपुर**
- **मुख्य तथ्य**
  - इसमें नर्तक बहुत हल्के से, जमीन पर पैर रखता है। पैरों के संचालन में कोमलता एवं मृदुलता का परिचय मिलता है।
  - यह नृत्य रूप 18वीं शताब्दी में वैष्णव संप्रदाय के साथ विकसित हुआ।
  - इसमें विष्णु पुराण, भागवत पुराण तथा गीतगोविंद से लिये गए कथानकों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।
  - इस नृत्य में भक्ति पर अधिक बल दिया गया है।
  - इसमें तांडव एवं लास्य दोनों का समावेश होता है।
  - गुरु बिपिन सिंह को मणिपुरी नृत्य का जनक माना जाता है
- **प्रमुख कलाकार -** दर्शन झावेरी, गम्भिनी देवी, गुरु बिपिन सिंह, राजकुमार सिंघजीत सिंह , एलाम एन्दिरा देवी

Note:-

- **मणिपुरी संकीर्तन**
  - इसमें अनुष्ठान गायन, ढोलक और नृत्य शामिल हैं।
  - इसे 2013 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में भी अंकित किया गया था।
  - यह मुख्य रूप से मणिपुर (त्रिपुरा और असम के कुछ हिस्सों में) में वैष्णव समुदाय द्वारा प्रचलित है।
  - यह भगवान कृष्ण के जीवन और कार्यों को बताने के लिए किया जाता है।
  - इसमें करताल और ड्रम का उपयोग प्रदर्शन में किया जाता है।
  - मणिपुरी नृत्य से रवींद्रनाथ टैगोर अत्यधिक प्रभावित थे तथा उन्होंने दक्ष नर्तकों को शिक्षकों के रूप में शांति निकेतन में नियुक्त किया।
  - चौंगलैजॉन नृत्य विवाहित महिला की मृत्यु हो जाने पर पति की पीड़ा को चित्रित करने हेतु किया जाता है।

❑ कथक नृत्य

- **राज्य -** उत्तर प्रदेश
- **मुख्य तथ्य**
  - कथक का उद्भव 'कथा' शब्द से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - कथा कहना।
  - प्राचीन समय में कथावाचक गानों के रूप में इसे बोलते थे तथा अपनी कथा को नया रूप देने के लिये नृत्य करते थे।
  - कथक उत्तर प्रदेश की ब्रजभूमि की रासलीला परंपरा से जुड़ा हुआ है।
  - इस नृत्य के केंद्र में राधा-कृष्ण की अवधारणा मौजूद है।
  - इसमें पौराणिक गाथाओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण किया जाता है।
  - इसे 'नटवरी नृत्य' के नाम से भी जाना जाता है।
  - अवध के नवाब वाजिद अली शाह के समय ठाकुर प्रसाद एक उत्कृष्ट नर्तक थे।
  - जिन्होंने नवाब को नृत्य सिखाया तथा ठाकुर प्रसाद के तीन पुत्रों बिंदादीन, कालका प्रसाद एवं भैरव प्रसाद ने कथक को लोकप्रिय बनाया।
  - कालका प्रसाद के तीन पुत्रों अच्छन, लच्छू तथा शम्भू ने इस पारिवारिक शैली को आगे बढ़ाया।
  - कथक नृत्य को खास विशेषता इसके पद संचालन एवं घिरनी खाने (चक्कर काटने) में है। इसमें घुटनों को नहीं मोड़ा जाता।
  - इसमें हस्तमुद्राओं तथा पद-ताल पर अधिक ध्यान दिया जाता है जो नृत्य को प्रभावी बनाता है।

- कथक नृत्य को ध्रुपद एवं ठुमरी गायन के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।
- 19वीं सदी में अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण के तहत इसका स्वर्णिम रूप देखने को मिलता है।
- उत्तर भारत का प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य कत्थक अपने वर्तमान स्वरूप में मुगल परम्परा से प्रभावित है।
- **प्रमुख कलाकार -** बिरजू , अच्छन, लच्छू , शम्भू

❑ **कत्थक से सम्बंधित घराने**

- **जयपुर घराना**
- कथक के जयपुर घराने में नृत्य के दौरान पाँव की तैयारी, अंग संचालन एवं नृत्य की गति पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- **प्रमुख कलाकार -** नृत्याचार्य गिरधारी महाराज एवं श्रीमती शशि मोहन गोयल , शोभना नारावण, राजेंद्र गंगानी
- **लखनऊ घराना**
- इस घराने से संबंधित नृत्य पर मुगल प्रभाव के कारण नृत्य में श्रृंगारिकता के साथ ही अभिनय पक्ष पर भी विशेष जोर दिया जाता है।
- **प्रमुख कलाकार -** पंडित लच्छू महाराज एवं पंडित बिरजू महाराज
- **बनारस घराना**
- बनारस घराना, जयपुर घराने के समकालीन माना गया है। इस घराने में प्राचीन शैली पर जोर दिया जाता है।
- **प्रमुख कलाकार -** नृत्यांगना सितारा देवी , जयंतीमाला

❑ **सत्रिया नृत्य (असम)**

- **राज्य -** असम
- **मुख्य तथ्य**
- यह संगीत, नृत्य तथा अभिनय का सम्मिश्रण है।
- इसके विकास का श्रेय शंकरदेव को दिया जाता है।
- शंकरदेव ने इसे 'अकिया नाट' के प्रदर्शन के लिये विकसित किया था।
- इसमें पौराणिक कथाओं का समावेश होता है। प्रारंभ में यह पुरुषों द्वारा किया जाता था, परंतु अब इसे महिलाएँ भी करती हैं।
- इसमें शंकरदेव द्वारा संगीतबद्ध रचनाओं का प्रयोग होता है, जिसे 'बोरगीत' कहा जाता है।
- इसमें ढोल, ताल एवं बाँसुरी का प्रयोग होता है। हाल के दिनों में हारमोनियम का भी प्रयोग होने लगा है।
- इस नृत्य शैली को संगीत नाटक अकादमी द्वारा 15 नवंबर, 2000 को शास्त्रीय नृत्य की सूची में सम्मिलित कर लिया गया।
- यह नृत्य कला 500 से अधिक वर्षों से चली आ रही परम्परा है। यह नृत्य असम की वैष्णव मठों, जोकि सत्रा के नाम से जाना जाता है, की पुरानी जीवन्त परम्परा है।
- **प्रमुख कलाकार-** गुरु जतिन गोस्वामी , शारोदी सैकिया, गहन चंद्रा गोस्वामी, जीबेश्वर गोस्वामी , रामेश्वर सैकिया , हरीचरण सैकिया

लोकनृत्य

- राज्य स्तर पर प्रसिद्ध नृत्य को लोक नृत्य कहा जाता हैं
- इसमें नृत्य की पारम्परिक प्रणालियाँ होती हैं।
- भारतीय लोकनृत्य को सामान्य तौर पर 4 वर्गों में रखा जाता है- वृत्तिमूलक , धार्मिक, आनुष्ठानिक , सामाजिक
- **उदाहरण -** गरबा (गुजरात), भांगड़ा (पंजाब), पण्डवानी (छत्तीसगढ़) इत्यादि ।

❑ **रउफ**

- **राज्य -** कश्मीर घाटी
- **मुख्य तथ्य**
- इसे सिर्फ महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- यह नृत्य फसल कटाई के अवसर पर किया जाता है; इसे रमजान के महीने में भी किया जाता है।
- इस नृत्य के आयोजन में किसी भी प्रकार के वाद्ययंत्र का उपयोग नहीं होता है।

❑ **हिक्कात**

- **राज्य -** कश्मीर घाटी
- **मुख्य तथ्य**
- हिक्कात कश्मीर घाटी में प्रचलित लोकनृत्य है।
- इसमें युवा लड़के-लड़कियाँ आपस में जोड़ा बनाकर नृत्य करते हैं।
- इस नृत्य में किसी वाद्ययंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता और नर्तक केवल गीत के बोल पर नृत्य करते हैं।

- **चक्करी**
  - **राज्य -** कश्मीर
  - **मुख्य तथ्य**
    - यह कश्मीर का सबसे लोकप्रिय लोकगायन है।
    - इसका गायक चक्कारी गीत गाते समय उनके बोलों पर नृत्य भी करता है।
    - इसमें नर्तक गायक की भूमिका में भी रहता है। इसे प्रायः सभी शुभ अवसरों पर किया जाता है।
- **भांगड़ा**
  - **राज्य -** पंजाब
  - **मुख्य तथ्य**
    - भांगड़ा पंजाब का एक जीवंत लोकनृत्य है।
    - भांगड़ा की शुरुआत फसल कटाई उत्सव के रूप में हुई, किंतु आगे चलकर यह विवाह एवं नववर्ष समारोहों का भी अंग वन गया।
    - इसमें पंजाबी गीतों की धुन पर एक घेरे में लुंगी और पगड़ी पहने एक व्यक्ति ढोल बजाता है तथा उसके इर्द-गिर्द लोग नृत्य करते हैं।
    - भांगड़ा में ढोल, ताशे तथा करतालों जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है।
- **गिद्दा**
  - **राज्य -** पंजाब
  - **मुख्य तथ्य**
    - गिद्दा पंजाब में महिलाओं द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य है।
    - इस नृत्य में एक गोल घेरा बनाकर बोलियाँ गाई जाती हैं तथा तालियाँ बजाई जाती हैं।
    - इनमें से दो प्रतिभागी घेरे से निकलकर बीच में आती हैं और अभिनय करती हैं, जबकि शेष समूह में गाती हैं।
- **कुडियाट्टम**
  - **राज्य -** केरल
  - **मुख्य तथ्य**
    - यह केरल का प्रमुख लोकनृत्य है।
    - इसमें कलाकारों का एक समूह नृत्य नाटक का मंचन करता है, इसलिये इसका नाम 'कुडियाट्टम' या 'एक साथ नृत्य' कहा गया।
    - इसमें महिला एवं पुरुष दोनों भाग लेते हैं।
    - कुडियाट्टम नृत्य शैली का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व अभिनय है।
    - कुडियाट्टम का मंचन मंदिर के आकार के बनाए गए थियेटर में किया जाता है।
    - इसमें वाद्ययंत्र के रूप में ढोल, मंजीरा का प्रयोग किया जाता है।
- **पडुआ गिद्दा**
  - **राज्य -** हिमाचल प्रदेश
  - **मुख्य तथ्य**
    - यह नृत्य हिमाचल प्रदेश के सोलन बिलासपुर तथा मंडी के कई स्थानों में प्रचलित है।
    - हिमाचल का पडुआ गिद्दा नृत्य पंजाब में होने वाले गिद्दा नृत्य से काफी भिन्न होता है।
    - यहाँ यह नृत्य अर्द्ध-चंद्राकार स्थिति में विवाह के अवसर पर किया जाता है।
    - जब बारात वधू के घर पर जाती है तो उसके पश्चात् घर की स्त्रियाँ घर में ही यह मंगल नृत्य करती हैं।
- **नाटी**
  - **राज्य -** हिमाचल प्रदेश
  - **मुख्य तथ्य**
    - धीमी गति से आरंभ होने के कारण इसे शुरुआत में ढीली नाटी कहा जाता है, बाद में यह द्रुतगति से बढ़ता जाता है।
    - इसमें ढोलक, करताल, रणसिंघा, बाँसुरी, शहनाई का प्रयोग किया जाता है।
- **गरबा**
  - **राज्य -** गुजरात
  - **मुख्य तथ्य**
    - यह गुजरात का अत्यंत लोकप्रिय नृत्य है, जिसे नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है।
    - इस नृत्य में घेरा बनाकर स्त्रियाँ वृत्ताकार रूप से नृत्य करती हैं।
    - गोलाकार वृत्त के बीच में एक महिला सिर पर घड़ा रखकर खड़ी रहती है तथा घड़े के ऊपर एक जलता हुआ दीपक रखा रहता है।

- गरबा नृत्य देवी दुर्गा की आराधना में किया जाता है।

❑ **डांडिया रास**

- **राज्य -** गुजरात
- **मुख्य तथ्य**

- यह गुजरात का पारंपरिक लोकनृत्य है।
- इसे नवरात्रि के अवसर पर प्रस्तुत किया जाता है।
- डांडिया, माँ दुर्गा की तलवार का प्रतीक है।

❑ **घूमर**

- **राज्य -** राजस्थान
- **मुख्य तथ्य**

- यह राजस्थान का परंपरागत लोकनृत्य है।
- यह नृत्य राजस्थान की भील जनजाति द्वारा विकसित किया गया, जिसे बाद में राजस्थान के अन्य समुदायों ने अपना लिया।
- घूमर नृत्य केवल महिलाओं द्वारा विवाह समारोह जैसे शुभ अवसरों पर किया जाता है।

❑ **बिहू नृत्य**

- **राज्य -** असम
- **मुख्य तथ्य**

- यह नृत्य असम की कचारी, खासी आदि जनजातियों द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है।
- इस नृत्य में फुर्तीली नृत्य मुद्राएँ एवं हाथों की तीव्र गति का प्रयोग होता है।
- इस नृत्य के 3 रूप हैं- बोहाग बिहू, माघ बिहू एवं काटी बिहू। एक ही वर्ष में विभिन्न अवसरों पर इनकी प्रस्तुति की जाती है।
- इस नृत्य में ढोल, पेपा (भैंस के सींग से बना उपकरण), बाँसुरी जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है।

❑ **पंडवानी**

- **राज्य -** छत्तीसगढ़
- **मुख्य तथ्य**

- यह छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध लोकनृत्य है।
- इस लोकनृत्य का मूल आधार पांडवों की कथाएँ हैं। इसी कारण इसे पंडवानी नृत्य कहा जाता है।
- इसमें नृत्य एवं अभिनय के द्वारा पांडवों की कथाएँ 'इकतारे' के साथ प्रदर्शित की जाती हैं।
- हबीब तनवीर के नाटकों में इसका प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है।
- तीजनबाई इसकी प्रसिद्ध कलाकार हैं।

❑ **तेरहताली नृत्य**

- **राज्य -** राजस्थान
- **मुख्य तथ्य**

- इस नृत्य का उद्गम स्थल पादरला गाँव (पाली जिला में अवस्थित) को माना जाता है। यह रामजी के मेले का मुख्य आकर्षण होता है।
- यह कमाड़ जाति की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- इस नृत्य को करते समय महिलाएँ अपने हाथों, पैरों और शरीर के 13 स्थानों पर मंजीरें बाँधती हैं।
- इस नृत्य के समय पुरुष तम्बूरे की तान पर भजन गाते हैं।
- कभी-कभी दाँतों के बीच छोटी तलवार और सिर पर सजावटी बर्तन को सन्तुलित किया जाता है।

❑ **रासलीला**

- **राज्य -** उत्तर प्रदेश
- **मुख्य तथ्य**

- इसमें नर्तक राधा-कृष्ण तथा गोप-गोपियों का रूप धारण करके नृत्य करते हैं।
- रासलीला में शास्त्रीय संगीत, नृत्य एवं नाटक, तीनों तत्त्वों का समावेश होता है।
- संगीत एवं नाटक के जरिये राधा और कृष्ण के प्रेम से जुड़ी कथाओं को प्रदर्शित किया जाता है।
- रासलीला के सभी पात्र मुख्य रूप से किशोर अथवा युवा पुरुष ही होते हैं, जो महिला पात्रों को भूमिका को भी निभाते हैं।

❑ **छऊ**

- **राज्य -** झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल
- **मुख्य तथ्य**

- छऊ का सामान्य अर्थ 'छाया' अथवा 'मुखौटा' होता है।
- यह नृत्य मुख्यतः झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के जनजातीय क्षेत्रों में प्रचलित है। चैत्र माह में तीन दिनों तक इसकी प्रस्तुति की जाती है।
- सन् 2010 में छऊ नृत्य को यूनेस्को द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल कर लिया गया।

तमाशा

- **राज्य -** महाराष्ट्र
- **मुख्य तथ्य**
  - इस नृत्य के माध्यम से पौराणिक कथाओं को सुनाया जाता है।
  - इसमें मुख्य रूप से महिलाएँ भाग लेती हैं।
  - इस नृत्य में ढोलकी, ड्रम, तुनतुनी, मंजीरा, झाँझ, डफ, हलगी, कड़े, हारमोनियम और घुंघरुओं का प्रयोग होता है।
  - तमाशा नृत्य, महाराष्ट्र के कोल्हाटी समुदाय द्वारा किया जाता है।

लावणी

- **राज्य -** महाराष्ट्र
- **मुख्य तथ्य**
  - यह तमाशा का अभिन्न अंग है।
  - लावणी शब्द 'लावण्य' से बना है, जिसका अर्थ होता है- 'सुंदरता'।
  - यह दो प्रकार का होता है- निर्गुणी लावणी तथा श्रृंगारी लावणी।
  - निर्गुणी लावणी में जहाँ आध्यात्मिकता की ओर झुकाव होता है, वहीं श्रृंगारी लावणी श्रृंगार रस में डूबी होती है।

लोहो/लाहो नृत्य

- **राज्य -** मेघालय
- **मुख्य तथ्य**
  - लोहो नृत्य 'बेहदीनखलम' उत्सव का एक हिस्सा है।
  - इस नृत्य में पुरुषों एवं महिलाओं को साथ-साथ नृत्य करने की स्वीकृति है।
  - यह नृत्य जयन्तिया जनजाति के लोगों द्वारा किया जाता है।

सरहुल नृत्य

- **राज्य -** छत्तीसगढ़
- **मुख्य तथ्य**
  - सरहुल नृत्य छोटानागपुर क्षेत्र तथा छत्तीसगढ़ की संथाल, मुंडा, ओराँव आदि जनजातियों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
  - यह अविवाहित युवक-युवतियों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
  - सरहुल नृत्य चैत्र मास में फसल की कटाई के अवसर पर किया जाता है।

चरकुला

- **राज्य -** बज क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)
- **मुख्य तथ्य**
  - यह नृत्य मुख्य रूप से होली के तीसरे दिन आयोजित किया जाता है।
  - इसमें महिलाएँ दीपक रखे हुए गोलाकार पात्र को सिर के ऊपर रखकर नृत्य करती हैं।

नौटंकी

- **राज्य -** उत्तर प्रदेश
- **मुख्य तथ्य**
  - यह उत्तर प्रदेश का प्रमुख लोकनृत्य है।
  - इसे मेलों अथवा विवाह के अवसर पर किया जाता है।
  - नौटंकी में नृत्य, नाटक एवं संगीत सभी सम्मिलित होते हैं।

यक्षगान

- **राज्य -** कर्नाटक
- **मुख्य तथ्य**
  - यक्षगान कर्नाटक की पारपरिक नृत्य-नाट्य शैली है।
  - इसको विषयवस्तु पौराणिक धार्मिक कथाएँ है।
  - इन्हीं पौराणिक कथाओं को भाव के रूप में व्यक्त करने के लिये कथावस्तु में गीत एवं संगीत को जोड़ा जाता है।

- कलाकारों के आभूषण लकड़ी के बने होते हैं, जिन्हें शीशे एवं सुनहरे कागजों से सजाया जाता है।
- इसमें पुगी, हारमोनियम, झाँझ जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग होता है।

❑ **काठी**

- **राज्य -** पश्चिम बंगाल
- **मुख्य तथ्य**
  - काठी पश्चिम बंगाल की पिछड़ी जातियों का प्रमुख नृत्य है।
  - इस नृत्य में 'मादल' नामक वाद्य-यंत्र का प्रयोग होता है।

❑ **बाउल**

- **राज्य -** पश्चिम बंगाल
- **मुख्य तथ्य**
  - बाउल नृत्य पश्चिम बंगाल में अति प्रचलित है।
  - इसमें गीतों के साथ इकतारा बजाकर नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है।

❑ **'कारागम'**

- **राज्य -** तमिलनाडु
- **मुख्य तथ्य**
  - ग्रामीण लोग इस नृत्य को वर्षा देवी 'मारी अम्मन' और नदी देवी 'गंगई अम्मन' की प्रशंसा में अपने रीति रिवाजों के अन्तर्गत करते हैं।
  - इस नृत्य में कलाकार अपने सिर पर पानी के बर्तन को सन्तुलित करते हैं।

❑ **चाक्यारकुथु**

- **राज्य -** केरल
- **मुख्य तथ्य**
  - इसे चाक्यार जाति द्वारा किया जाता है।
  - इस नृत्य प्रदर्शन में दो प्रकार के संगीत वाद्ययन्त्रों का प्रयोग किया जाता है-मियावु तथा इलाथलम।
  - इसका नाट्य रूप कूथाम्बलम है।
  - इस लोकनृत्य में हिन्दू महाकाव्यों (रामायण और महाभारत) की कथाओं का वंचन किया जाता है।
  - चाक्यारकुथु मूलरूप से केवल हिन्दू मन्दिरों के कृथाम्बलम में किया जाता है। यह हिन्दू उच्च जातियों के बीच भी लोकप्रिय था।

❑ **ओजापली**

- **राज्य -** असम
- **मुख्य तथ्य**
  - यह राज्य की समृद्ध परम्परा और सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है।

❑ **लुड्डी**

- **राज्य -** हिमाचल प्रदेश
- **मुख्य तथ्य**
  - यह मण्डी जनपद में विशेष उत्सवों, मेलों व त्योहारों के अवसर पर किया जाने वाला लोकनृत्य है।

❑ **बुर्रा**

- **राज्य -** आन्ध्र प्रदेश
- **मुख्य तथ्य**
  - इसे बुर्रा कथा भी कहा जाता है, जो जंगम कथा परम्परा में एक मौखिक कहानी को कहने की तकनीक है।
  - इसकी प्रस्तुति में एक मुख्य कलाकार तथा दो सह-कलाकार शामिल होते हैं।

❑ **याली**

- **राज्य -** उत्तराखण्ड
- **मुख्य तथ्य**
  - यहाँ की बद्दी जनजाति का पुरुष ढोलक तथा सारंगी बजाकर गीत की प्रथम पंक्ति गाता है तथा उसकी पत्नी थालियों के साथ विभिन्न मुद्रा में नृत्य प्रस्तुत करती है।

नृत्य से जुड़े प्रमुख व्यक्तित्व

❑ **पद्मा सुब्रह्मण्यम**

- **सम्बंधित नृत्य -** भरतनाट्यम

- **अन्य तथ्य -**
  - इनका जन्म मद्रास प्रेसिडेंसी में 4 फरवरी, 1943 ई. को हुआ था।

❑ **सोनल मानसिंह**

- **सम्बंधित नृत्य -** ओडिसी नृत्य
- **अन्य तथ्य**
  - इनका जन्म 30 अप्रैल, 1944 ई. को मुंबई में हुआ था।
  - ओडिसी के अतिरिक्त ये भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी एवं छऊ नृत्य से भी जुड़ी हैं।
  - इन्हें पद्मविभूषण, पद्मभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड सहित कई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

❑ **मृणालिनी साराभाई**

- **सम्बंधित नृत्य -** कथकली एवं भरतनाट्यम
- **अन्य तथ्य**
  - इनका जन्म 11 मई, 1918 ई. को केरल में हुआ था।
  - इन्होंने प्रसिद्ध नृत्यांगना मीनाक्षी सुंदरम पिल्लई से भरतनाट्यम का प्रशिक्षण लिया, उसके पश्चात् दक्षिण भारत के थाकाजी कुंचू कुरूप से कथकली का प्रशिक्षण प्राप्त किया।
  - भारत सरकार द्वारा इन्हें पद्मश्री, पद्मभूषण तथा कालिदास सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

❑ **सितारा देवी**

- **सम्बंधित नृत्य -** 'कथक'
- **अन्य तथ्य**
  - इनका जन्म 8 नवंबर, 1920 ई. को कोलकाता में हुआ था।
  - इन्होंने शंभू महाराज एवं अच्छन महाराज से नृत्य की शिक्षा ग्रहण की।
  - सितारा देवी कथक के साथ ही भरतनाट्यम सहित कई भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों एवं लोकनृत्य में पारंगत थीं।
  - सितारा देवी के द्वारा किये जाने वाले कथक में बनारस एवं लखनऊ घराने का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।
  - कला के क्षेत्र में इनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्मश्री, कालिदास सम्मान आदि से सम्मानित किया गया।
  - इनका देहावसान 25 नवंबर, 2014 को मुंबई में हुआ।

❑ **बिरजू महाराज**

- **सम्बंधित नृत्य -** कथक
- **अन्य तथ्य**
  - प्रसिद्ध कथक नर्तक एवं शास्त्रीय गायक बिरजू महाराज का जन्म लखनऊ के एक बड़े कथक घराने में हुआ था।
  - इनके पिता अच्छन महाराज एवं चाचा शंभू महाराज कथक के सुप्रसिद्ध कलाकार थे।
  - इन्होंने कथक के साथ कई प्रयोग किये तथा कई फिल्मों में नृत्य निर्देशन का भी कार्य किया।
  - इन्हें पद्मविभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, कालिदास सम्मान तथा 'विश्वरूपम' फिल्म के लिये बेस्ट कोरियोग्राफर के राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा गया।

❑ **लच्छू महाराज**

- **सम्बंधित नृत्य -** कथक
- **अन्य तथ्य**
  - इन्होंने हिंदी सिनेमा 'मुगल-ए-आजम' और 'पाकीजा' के लिये भी नृत्य निर्देशन किया।
  - इन्होंने पंडित बिंदादीन महाराज से नृत्य की शिक्षा ली।
  - कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए इन्हें 1957 ई. में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

❑ **यामिनी कृष्यामूर्ति**

- **सम्बंधित नृत्य -** 'भरतनाट्यम' एवं 'कुचिपुड़ी'
- अन्य तथ्य
  - इनका जन्म 20 दिसंबर, 1940 ई. में आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में हुआ था।
  - कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए इन्हें पद्मश्री , पद्मभूषण , पद्मविभूषण प्रदान किया गया।
  - इन्हें 8 मार्च, 2014 ई. को महिला कला एवं संस्कृति दिवस के मौके पर सांभवी स्कूल ऑफ डांस द्वारा 'नाट्यशास्त्र सम्मान' से सम्मानित किया गया।

❑ **आरुषि मुद्गल**

- **सम्बंधित नृत्य -** ओडिसी

- **अन्य तथ्य**
  - इन्होंने माधवी मुद्गल से नृत्य की शिक्षा ली।
  - माधवी मुद्गल के अतिरिक्त इन्होंने केलुचरण महापात्र, लीला सैमसन, प्रियदर्शिनी गोविंद जैसे कलाकारों का भी मार्गदर्शन प्राप्त किया।
  - इन्हें संगीत नाटक अकादमी के प्रतिष्ठित 'बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार' समेत अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

❑ **चारू सिजा माथुर**

- **सम्बंधित नृत्य -** मणिपुरी
- **अन्य तथ्य**
  - मणिपुरी नृत्य की सेवा के लिये इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, दिल्ली साहित्य कला परिषद् सम्मान तथा इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार प्रदान किये गए हैं।

❑ **भारती शिवाजी**

- **सम्बंधित नृत्य -** मोहिनीअट्टम
- **अन्य तथ्य**
  - इनका जन्म 1948 ई. में तमिलनाडु के कुंबकोणम में हुआ था।
  - शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में इनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए इन्हें पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कार प्रदान किये गए हैं।

❑ **कलामण्डलम क्षेमवती**

- **सम्बंधित नृत्य -** मोहिनीअट्टम
- **अन्य तथ्य**
  - यह केरल कलामण्डलम की पूर्व छात्रा है।
  - इन्होंने दस वर्ष की उम्र में ही संस्थान में प्रवेश ले लिया था।

❑ **कोट्टक्कल शिवरामन**

- **सम्बंधित नृत्य -** कथकली
- **अन्य तथ्य**
  - एक दक्षिण भारतीय नर्तक थे।
  - इन्होंने केरल के शास्त्रीय नृत्य कथकली में महिला भूमिकाओं के चित्रण को प्रभावी रूप प्रदान किया है।

❑ **लक्ष्मी विश्वनाथन**

- **सम्बंधित नृत्य -** भरतनाट्यम
- **अन्य तथ्य**
  - गुरु कांजीवरम एलप्पा पिल्लई की प्रमुख शिष्या रही हैं।
  - वह तंजावुर की संस्कृति को अपने नृत्य के माध्यम से प्रदर्शित करती हैं।

❑ **एन. माधवी देवी**

- **सम्बंधित नृत्य -** मणिपुरी
- **अन्य तथ्य**
  - मणिपुरी नृत्य भक्ति पर बल देता है।
  - इसमें प्रमुख रूप से भगवान शिव और पार्वती को दिखाया जाता है।

❑ **प्रतिभा प्रहलाद**

- **सम्बंधित नृत्य -** भरतनाट्यम
- **अन्य तथ्य**
  - इन्होंने 'दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय कला महोत्सव की स्थापना वर्ष 2007 में की।
  - वर्ष 2001 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी द्वारा नृत्य के लिए पुरस्कृत किया गया।
  - वर्ष 2016 में इन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

❑ **वेम्पति चिन्ना सत्यम**

- **सम्बंधित नृत्य -** कुचिपुड़ी
- **अन्य तथ्य**
  - वर्ष 1961 में इन्हें कुचिपुड़ी नृत्य के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार दिया गया था।
  - इन्होंने वर्ष 1963 में मद्रास में कुचिपुड़ी कला अकादमी की शुरुआत की।
  - इन्हें वर्ष 1998 में पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

❑ **रुक्मिणी देवी**

- **सम्बंधित नृत्य** - भरतनाट्यम
- **अन्य तथ्य**
  - इनका जन्म तमिलनाडु राज्य में हुआ था।
  - इन्हें नृत्य की एक विद्या आधिर को पुनः स्थापित करने के लिए जाना जाता है।

भारतीय राज्य और लोक नृत्य

राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	लोक नृत्य
आंध्रप्रदेश	कुचिपुड़ी, वीरानाट्यम, बुट्टा बोम्मलू , भामकल्पम , दप्पू , तपेता गुल्लू , लम्बाडी , धीमसा , कोलट्टम
असम	बिहू, बीछुआ, नटपूजा, महारास, कालिगोपाल, बागुरुम्बा, नागा नृत्य, खेल गोपाल, कानोई, झूमूरा होबजानाई।
बिहार	जाट– जातिन , पनवारिया, बिदेसिया, कजारी।
गुजरात	गरबा, डांडिया रास, टिप्पनी जुरुन, भावई।
हरियाणा	झूमर, फाग, डाफ, धमाल, लूर, गुग्गा, खोर, जागोर।
हिमाचल प्रदेश	झोरा, झाली, छारही, धामन, छापेली, महासू, नटी, डांगी।
जम्मू और कश्मीर	रऊफ, हीकत, मंदजात, कूद डांडी नाच।
कर्नाटक	यक्षगान, हुट्टारी, सुग्गी, कुनीथा, करगा, लाम्बी।
केरल	कथकली (शास्त्रीय), मोहिनीअट्टम, कूरावारकली
महाराष्ट्र	लावणी, डिंडी , काला , दहीकला दसावतार।
ओडीशा	गोतिपुआ , छाउ, घुमूरा , रानाप्पा , संबलपुरी नृत्य
पश्चिम बंगाल	लाठी, गंभीरा, ढाली, जतरा, बाउल, छाऊ, संथाली डांस।
पंजाब	भांगड़ा, गिद्दा, दफ्फ, धामल , दंकारा।
राजस्थान	घूमर, गणगौर, झूलन लीला, कालबेलिया, छारी ।
तमिलनाडु	भरतनाट्यम, कुमी, कोलट्टम, कवाडी अट्टम।
उत्तर प्रदेश	नौटंकी, रासलीला, कजरी, चाप्पेली।
उत्तराखंड	भोटिया नृत्य ,चमफुली और छोलिया
गोवा	देक्खनी, फुग्दी, शिग्मो, घोडे, जगोर, गोंफ, टोन्या मेल
मध्यप्रदेश	जवारा, मटकी, अडा, खाड़ा नाच, फूलपति, ग्रिदा नृत्य, सालेलार्की, सेलाभडोनी, मंच।
छत्तीसगढ़	गौर मारिया, पैंथी, राउत नाच, पंडवाणी, वेडामती, कपालिक, भारथरी चरित्र, चंदनानी।
झारखंड	झूमर, जनानी झूमर, मर्दाना झूमर, पैका, फगुआ, मुंदारी नृत्य, सरहुल, बाराओ, झीटका, डांगा, डोमचक, घोरा नाच।
अरुणाचल प्रदेश	बुईया, छालो, वांचो, पासी कोंगकी, पोनुंग, पोपीर, बारडो छाम।
मणिपुर	डोल चोलम, थांग टा, लाई हाराओबा, पुंग चोलोम, खांबा थाईबी, नूपा नृत्य, रासलीला।
मेघालय	शाद सुक मिनसेइम, शाद नॉन्गरेम, लाहो।
मिजोरम	छेरव नृत्य, खुल्लम, चैलम, च्वांगलाईज्वान, जंगतालम, सरलामकई/ सोलाकिया, तलंगलम।
नगालैंड	रेंगमा , बांस नृत्य चंगी नृत्य , आलूयट्टू ,
त्रिपुरा	होजागिरी, गारिया, झूम।
सिक्किम	सिंघी छाम और याक छाम, तमांग सेलो मारूनी नाच।
लक्ष्यद्वीप	लावा, कोलकाली , परीचाकली

भारतीय संगीतकला

संगीत किसी भी संस्कृति की आत्मा है, और भारत में संगीत आविष्कार का एक लंबा इतिहास है। ऐसा कहा जाता है कि संगीत की कला को **नारद मुनि (ऋषि) ने** पृथ्वी पर पेश किया था।

- **भारतीय संगीत** की उत्पत्ति का पता **सामवेद** से लगाया जा सकता है , जिसमें संगीतबद्ध श्लोक थे।
- धार्मिक अनुष्ठानों में अभी भी निर्धारित स्वर और उच्चारण के साथ वैदिक स्तोत्रों का उच्चारण शामिल है।
- भारतीय संगीत इतिहास को तीन प्रमुख कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है **: प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक।**
- भारतीय शास्त्रीय संगीत के **तीन मुख्य स्तंभ** हैं - **राग, ताल और स्वर।**

❑ स्वर

- **"स्वर"** शब्द मूलतः वेदों के उच्चारण से जुड़ा था।
- समय के साथ, यह शब्द किसी रचना के **'नोट'** या **'स्केल डिग्री' को संदर्भित करने लगा है।**
- **भरत ने नाट्यशास्त्र** में स्वरों को **बाईस स्वरों** में विभाजित किया है।
- हिंदुस्तानी संगीत की सांकेतिक प्रणाली वर्तमान में इन संक्षिप्त स्वरों द्वारा परिभाषित की जाती है: **सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी।**
- **सप्तक** या **सरगम सात स्वरों** का सामूहिक नाम है।

❑ राग

- **'राग'** शब्द संस्कृत शब्द **'रंज' से लिया गया है,** जिसका शाब्दिक अर्थ है किसी को प्रसन्न **करना , खुश करना और संतुष्ट करना।**
- राग **राग के आधार** का काम करते हैं , जबकि ताल लय के आधार का काम करता है।
- प्रत्येक राग की संगीतात्मक संरचना में विषय के विशिष्ट व्यक्तित्व और ध्वनियों द्वारा उत्पन्न मनोदशा के साथ कुछ समानता होती है।
- किसी राग के संचालन के लिए आवश्यक मूल तत्व वह स्वर है जिस पर वह आधारित है।

❑ ताल

- भारतीय संगीत में मात्राओं के समूह को ताल कहते हैं।
- भारतीय संगीत में 108 तालो का वर्णन हैं।
- संगीत का समय ताल अवधारणा के अनुसार सरल और जटिल मीटरों में विभाजित किया गया है।
- यह समय माप सिद्धांत हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत द्वारा साझा नहीं किया गया है।
- ताल की अवधारणा इस मायने में अद्वितीय है कि यह उस संगीत से स्वतंत्र है जिसके साथ इसे बजाया जाता है तथा इसके अपने विभाग हैं।
- लय **ताल की वह गति है** जो समय की एकरूपता बनाए रखती है।

संगीत का वर्गीकरण

संगीत को अध्ययन की सुविधा के लिये तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है- शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, लोक संगीत

❑ शास्त्रीय संगीत

- शास्त्रीय संगीत ऐसा संगीत जो गायन, वादन और नर्तन में पूरी तरह से नियमबद्ध हो। इसमें नियमों का कठोरता से पालन करना अनिवार्य होता है।
- शास्त्रीय संगीत एक ऐसी शैली है जिसके नियमों का पालन करने के लिये गायक को लंबे समय तक नियमित अभ्यास करना होता है। इस अभ्यास को 'रियाज' कहते हैं।
- शास्त्रीय संगीत की शैली में **ध्रुपद** प्रमुख है।
  - ध्रुपद, भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक गायन शैली है. यह भक्ति रस की गायकी है।
  - ध्रुपद, आलाप मंत्रो के लिए संस्कृत अक्षरों पर आधारित होता हैं।
  - इस शैली के विकास में तानसेन और उनके गुरु स्वामी हरिदास का अप्रतिम योगदान रहा हैं।
- इसके अलावा इसमें ख्याल, धमार, चतुरंग, तराना, त्रिवद्, रागमाला, लक्षणगीत आदि शैलियों शामिल हैं।
- शास्त्रीय संगीत अध्ययन की सुविधा के लिये दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है - हिंदुस्तानी संगीत, कर्नाटक संगीत

▪ हिंदुस्तानी संगीत

- हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैली है। यह मूल रूप से गायन प्रधान है। इसमें राग और ताल दो आधारभूत तत्व होते हैं. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को 'क्लासिकल म्यूज़िक' भी कहा जाता है।
- **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विशेषताएं-**
- यह गायन, वादन, और नृत्य से मिलकर बना है।
- इसमें राग और ताल का महत्व होता है।
- इसमें सुर का महत्व होता है।
- इसमें आध्यात्मिकता का प्रभाव होता है।
- इसमें शब्द-प्रधानता की बजाय सुर-प्रधानता होती है।

- **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की कुछ लोकप्रिय गायन शैलियां** - ठुमरी, टप्पा, ध्रुपद, ख्याल।
- **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कुछ घराने-** आगरा घराना, पटियाला घराना

- **कर्नाटक शास्त्रीय**

- कर्नाटक शास्त्रीय संगीत, भारत के शास्त्रीय संगीत की एक शैली है। यह दक्षिण भारत में उत्पन्न हुई थी। कर्नाटक संगीत में रागों का गायन तेज़ होता है और यह हिंदुस्तानी संगीत से काफ़ी अलग है।
- **कर्नाटक संगीत की विशेषताएं -**
- इसमें ज़्यादातर गीत भक्ति से जुड़े होते हैं।
- इसमें रागों का गायन तेज़ होता है।
- इसमें रागों का गायन हिंदुस्तानी संगीत से कम समय का होता है।
- इसमें जटिल लयबद्ध और मधुर पैटर्न होते हैं।
- इसमें राग, ताल, और भाव जैसे तत्व होते हैं।
- इसमें प्रदर्शन मुखर और वाद्य संगत के साथ होता है।
- **प्रसिद्ध संगीतकार - त्यागराज, अन्नमाचार्य** मुथुस्वामी दीक्षितार, **श्यामा शास्त्री**, पुरंदर दास, वीणा कुप्पय्यार, पटनम सुब्रह्मण्य अय्यर, रामनद श्रीनिवास अयंगर.

Note:-

- त्यागराज ने कर्नाटक संगीत में कई नए रागों का सृजन किया।
- अन्नामाचार्य कीर्तन भगवान वेंकटेश्वर की स्तुति के भक्ति गीत हैं।
- ये विष्णु के एक रूप वेंकटेश्वर की स्तुति में संकीर्तन नामक गीतों की रचना करने वाले सबसे पहले ज्ञात भारतीय संगीतकार हैं।
- त्यागराज भगवान राम के प्रबल भक्त थे। इनकी रचनाएँ भगवान राम की भक्ति से परिपूर्ण हैं।

- कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति को त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार, और श्यामा शास्त्री कहा जाता है।
- **कर्नाटक संगीत की मुख्य विधाएँ-** अलंकारम्, लक्षणगीतम्, स्वराजाति, आलापनम्, कलाकृति, पल्लवी, तिल्लाना, पद्म, जवाली, भजनम्, रागमालिका आदि हैं।

❑ **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में समानताएँ**

- दोनों भारत की ही संगीत पद्धतियाँ हैं।
- दोनों पद्धतियों में शुद्ध तथा विकृत कुल 12 स्वर लगते हैं।
- दोनों ने संगीत में तालों के महत्त्व को स्वीकार किया है।
- दोनों के गायन में आलाप तथा ताल का प्रयोग होता है।

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत की तुलना	
हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत	**कर्नाटक शास्त्रीय संगीत**
इस पर अरब, फ़ारसी, अफ़गान प्रभाव हैं।	इस पर स्वदेशी प्रभाव हैं।
कलाकारों के लिए सुधार की गुंजाइश है। इसलिए विविधता की भी गुंजाइश है।	सुधार की कोई स्वतंत्रता नहीं है।
अनेक उप-शैलियाँ जिनके कारण 'घराना' का उदय हुआ है।	गायन की केवल एक विशेष निर्धारित शैली है।
गायन के साथ ताल का महत्त्व केवल गीत तक ही होता हैं।	गायन संगीत पर अधिक जोर दिया जाता हैं।
6 प्रमुख राग है।	72 राग है।
समय का पालन करता है	किसी भी समय का पालन नहीं करता है।
इसमें सारंगी , सितार और संतूर उपकरण का प्रयोग होता हैं।	इसमें वीणा, मृदंग और मैंडोलिन उपकरण का प्रयोग होता हैं।
यह उत्तर भारत में प्रचलित हैं।	यह दक्षिण भारत में प्रचलित हैं।

Note:-

- मुगल शासक अकबर ने लाला कलावंत से हिन्दू संगीत की शिक्षा ली थी। लाला कलावंत ने अकबर को हिन्दी भाषा में मौजूद हर ध्वनि और श्वसन तकनीक सिखाई थी। अकबर संगीत के प्रति बहुत उत्साही थे.
- मंगानियर के नाम से जाना जाने वाला लोगों का समुदाय पश्चिमोत्तर भारत में अपनी संगीत परंपरा के लिये विख्यात है।

❑ **उपशास्त्रीय संगीत**

- उपशास्त्रीय संगीत में कम सख्ती के साथ स्वरों, रागों के नियमों का पालन किया जाता है।
- इसमें राग, ताल और लय में ज्यादा मधुरता और शोखी नजर आती है।

- इसमें ठुमरी, टप्पा, कजरी, चैती और ग़ज़ल आदि शामिल हैं।
- **ठुमरी**
  - इसमें रस, रंग और भाव की प्रधानता होती है।
  - लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में ठुमरी गायन शैली नई ऊँचाइयों तक पहुँची।
  - वाजिद अली शाह स्वयं **'अख्तर पिया'** के नाम से ठुमरियों की रचना करते और गाते थे।
  - **प्रसिद्ध ठुमरी गायक -** छन्नूलाल मिश्र, सिद्धेश्वरी देवी, गिरिजा देवी
- **टप्पा**
  - इसे पंजाब के ऊँट हाकने वाले गाते थे।
  - इस शैली में मूल रूप से हीर-रांझा के प्रेम और विरह प्रसंग है।
  - अवध के नवाब आसफ उद्-दौला के दरबारी गायक मियाँ गुलाम नबी शोरी ने टप्पा गायन को लोक-शैली से ऊपर उठाकर शास्त्रीय शैली का रूप दिया था।
  - **प्रमुख टप्पा गायक-** मालिनी राजुर्कर, आरती अंकालिकर, आशा खादिलकर, गुलाम नबी शोरी
- **गजल**
  - यह अरबी साहित्य की प्रसिद्ध काव्य विधा है।
  - गजल के पहले शेर को 'मतला' और अंतिम शेर को 'मकता' कहा जाता है।
  - गजल के शेर में तुकांत शब्दों को 'काफिया' और बार-बार दोहराये जाने वाले शब्दों को 'रदीफ' कहा जाता है।
  - शेर की पक्ति को 'मिस्रा' कहते हैं। एक गजल में 5 से लेकर 25 तक शेर हो सकते हैं।
  - गजल लेखन के साथ-साथ गायन की भी एक प्रसिद्ध विधा है।
  - इसमें भाव की प्रधानता होती है तथा स्वर की मधुरता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
  - इस गायन शैली में तबलों के साथ-साथ बाँसुरी, वायलिन, सारंगी, गिटार आदि वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है।
  - **प्रमुख गजल गायक -** जगजीत सिंह, बेगम अख्तर, मल्लिका पुखराज, गुलाम अली, मेहदी हसन, पंकज, मिर्जा गालिब,
- **कव्वाली**
  - इस विधा को विकसित करने का श्रेय **अमीर खुसरो** को जाता है।
  - कव्वाली मुख्य गायक के नेतृत्व में समूह में गाई जाती है।
  - कव्वाली सूफियों की देन है
  - कव्वाली का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप नुसरत फतेह अली खान के गायन से सामने आया।
  - इसमें सवाल-जवाब का तरीका भी अपनाया जाता है।
- **प्रमुख कव्वाली गायक-** शंकर शंभू, साबरी ब्रदर्स

❑ **लोक संगीत**

- लोक जीवन से निकला गीत ही लोक संगीत कहलाता है।
- ये गीत फसल कटने, विवाह, त्योहारों और यहाँ तक कि मृत्यु जैसे दुखद अवसरों पर भी गाए जाते हैं।
- लोक संगीत किसी प्रकार के जटिल नियमों में बंधे नहीं होते।
- **बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाले लोकगीत-** सोहर, खेलौनो
- **विवाह के विभिन्न के अवसर पर गाया जाने वाले लोकगीत-** कोहबर, घोड़ी, बन्ना, मांडवा, भात, गारी

❑ **फाग**

- ऋतु गीतों में फाग प्रमुख गीत है।
- फाग गीत मुख्य रूप से पुरुषों का गीत है जो बसंत पंचमी से लेकर होलिका दहन के सवेरे तक गाया जाता है।
- अवधी, ब्रज, राजस्थानी, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, बैसवाड़ी, बघेली, भोजपुरी आदि अनेक बोलियों में फाग संबंधी गीत गाए जाते हैं।
- फाग के प्रकारों में होली, चौताल, डेढ़ताल आदि प्रमुख हैं।

❑ **भारतीय संगीत के कुछ प्रमुख ग्रंथ और उनके रचयिता**

- **संगीत रत्नाकर -** शारंगदेव
- **नाट्यशास्त्र -** भरत मुनि
- **संगीत तरंग -** राधामोहन सेन
- **राग बोध -** सोमनाथ
- **श्रृंगार प्रकाश -** राजा भोज
- **संगीत समय सार -** पार्श्व देव
- **अभिलाषीर्थ चिंतामणि -** चालुक्य राजा सोमेश्वर
- **रसिक प्रिय -** राणा कुंभा
- **मंकुतुह -** ग्वालियर रियासत के महाराजा मानसिंह तोमर

- **संगीत दर्पण** - दामोदर मिश्रा
- **अभिनव भारती**- अभिनव गुप्ता
- **संगीत राज** - महाराणा कुम्भा
- **अलंकार शास्त्र** - राजा भोज
- **संगीत मकरंद** - नारद
- **राज तरंगिणी** - पंडित लोचन
- **रागमाला** - पुण्डरीक विठ्ठल
- **रस कौमुदी** - श्री कण्ठ
- **चतुर्दण्डी प्रकाशिका** - वेंकट माखिन

भारतीय संगीत के प्रमुख वाद्यों का परिचय

- भारत में वाद्ययंत्रों को पारंपरिक रूप से चार समूहों में बांटा गया है: **अवनद्ध वाद्य, घन वाद्य, सुषिर वाद्य, तत वाद्य।**
- **भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में वाद्ययंत्रों को इन चार समूहों में बांटा था।**
  - **तत्:** जिसमें तार का उपयोग होता है, वे वाद्य तत् कहे जाते हैं, जैसे- वीणा, तंबूरा, सारंगी, बेला, सरोद आदि।
  - **सुषिर:** जिसका भीतरी भाग सच्छिद्र (पोला) हो और जिसमें वायु का उपयोग होता हो, उसको सुषिर कहते हैं, जैसे- बाँसुरी, अलगोजा, शहनाई, बैंड, हारमोनियम, शंख आदि।
  - **अवनद्ध:** चमड़े से मढ़ा हुआ वाद्य 'अवनद्ध' कहलाता है, जैसे- ढोल, नगाड़ा, तबला, मृदंग, डफ, खंजड़ी आदि।
  - **घन:** परस्पर आघात से बजाने वाला वाद्य घन कहलाता है, जैसे- झाँझ, मंजीरा, करताल आदि।

❑ वीणा

- वीणा तंत्री वाद्यों का संरचनात्मक नाम है।
- तंत्री या तारों के अलावा इसमें घुड़च, तरब के तार तथा सारिकाएँ होती हैं।
- सरस्वती और नारद को इसका वादन करते दर्शाया जाता है।
- वीणा में सामान्यतः 4 तार होते हैं और तारों की लंबाई में किसी प्रकार का विभाजन नहीं होता।
- वीणा से ही 'रुद्रवीणा' और 'विचित्रवीणा' विकसित हुई हैं।

❑ घटम

- घटम एक भारतीय संगीत वाद्य है।
- यह मूलतः एक विशेष प्रकार की मिट्टी से बनाया गया पात्र होता है।
- घटम का उपयोग लोक संगीत में होता है।
- कश्मीर में इस वाद्य को 'नूत' कहा जाता है और इसे सीधा रखकर ही बजाया जाता है।

❑ शहनाई

- भारत में शहनाई का प्रचलन बहुत पुराना है।
- शहनाई भारत के सबसे लोकप्रिय वाद्य यंत्रों में से एक है।
- शहनाई का प्रयोग शास्त्रीय संगीत से लेकर लोक संगीत तक में किया जाता है।
- 'भारत रत्न' से सम्मानित उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का योगदान अद्वितीय है।
- **प्रसिद्ध शहनाई वादक** - चंदे राम , बिस्मिल्लाह खाँ

❑ संतूर

- यह भारत के सबसे लोकप्रिय वाद्य यंत्रों में से एक है।
- संतूर का भारतीय नाम 'शततंत्री वीणा' है जिसे बाद में फारसी भाषा से संतूर नाम मिला।
- इसे आगे से मुड़ी हुई डडियों से बजाया जाता है।
- संतूर मूल रूप से कश्मीर का लोक वाद्य यंत्र है और इसे सूफी संगीत में इस्तेमाल किया जाता था।
- **प्रसिद्ध संतूर वादक** - शिव कुमार शमां

❑ सारंगी

- सारंगी मुख्य रूप से गायकी प्रधान वाद्य यंत्र है।
- लहरा अर्थात् अन्य वाद्य यंत्रों की जुगलबंदी के साथ पेश किया जाता है।
- यह संगीत वाद्य इण्डो-इस्लामिक उत्पत्ति का है।
- सारंगी का इस्तेमाल गायक अपनी गायकी में जुगलबंदी के रूप में करते रहे हैं।
- सारंगी वाद्य- यंत्र का प्राचीन नाम सारिंदा है. जो कालांतर के साथ सारंगी हुआ।
- सभी सारंगियों में लोक सारंगी सर्वश्रेष्ठ है।

- इस वाद्य में 29 तार होते हैं तथा मुख्य बाज में चार तार होते हैं।
- बाज के तारों पर गज, जिसकी सहायता से एवं रगड़ से सुर निकलते हैं, चलता है। सारंगी के ऊपर लगी खुटियों को 'झीले' कहा जाता है।
- **प्रसिद्ध सारंगी वादक -** सुल्तान खाँ, राम नारायण, अब्दुल करीम खाँ, अब्दुल लतीफ खाँ, अहमद खाँ, गुलाम सबीर खाँ, शकूर खाँ आदि।

❑ **बाँसुरी**

- बाँसुरी अत्यंत लोकप्रिय वाद्य यंत्र है।
- यह प्राकृतिक बाँस से बनाई जाती है, इसलिये लोग इसे बाँस बाँसुरी भी कहते हैं।
- आधुनिक समय में बाँसुरी धातु की भी बनाई जा रही है।
- पन्ना लाल घोष ने बाँसुरी वाद्य में अनेक परिवर्तन कर एवं इसकी वादन शैली को नया रूप देकर बाँसुरी को भारतीय संगीत में सम्मानीय स्थान दिलाया।
- **प्रसिद्द बाँसुरी वादक** पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, रानू मजूमदार आदि विश्व प्रसिद्ध बाँसुरी वादक हैं।

❑ **तबला**

- आधुनिक काल में गायन, वादन तथा नृत्य की संगति में तबले का प्रयोग होता है।
- यह संगीत वाद्य इण्डो-इस्लामिक उत्पत्ति का है।
- तबले के पूर्व यही स्थान पखावज अथवा मृदंग को प्राप्त था।
- कुछ दिनों से तबले का स्वतंत्र वादन भी अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है।
- **प्रसिद्द तबला वादक** - पंडित कंठे महाराज, सामता प्रसाद, **उस्ताद अल्लारक्खा खाँ,** उस्ताद जाकिर हुसैन और किशन महाराज आदि।
- **तबला वादन से जुड़े कुछ मशहूर घराने** - दिल्ली घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना, पंजाब घराना और फर्रुखाबाद घराना शामिल हैं।

❑ **सितार**

- यह संगीत वाद्य इण्डो-इस्लामिक उत्पत्ति का है।
- संगीत यन्त्र सितार, वीणा एवं तम्बूरा का मिश्रण है।
- 14वीं शताब्दी में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी हज़रत अमीर खुसरो ने मध्यमादि वीणा पर 3 तार चढ़ाकर सितार को जन्म दिया। उस समय उसका नाम सहतार रखा गया।
- फारसी में सह का अर्थ 3 होता है। धीरे-धीरे सहतार बिगड़ते-बिगड़ते सितार हो गया और इसमें 3 तार के स्थान पर 7 तार अथवा 8 तार लगाए जाने लगे।
- **प्रसिद्द सितार वादक** - पंडित रविशंकर (उन्हें 1999 में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था।)

❑ **अकुम एवं तोड़ी**

- सुषिर वाद्य (वात संगीत वाद्य) हैं। जिन वाद्य यंत्रों को फूंककर बजाया जाता है, उन्हें सुषिर वाद्य कहते हैं
- वाद्य में छिद्र खोलने और बन्द करने के लिए अंगुलियों का उपयोग करके ध्वनि के स्वरमान को नियन्त्रित किया जाता है।

Note:-

- उत्तरी भारतीय शास्त्रीय संगीत का 'बाइबिल ग्रन्थ' नाट्यशास्त्र है। नाट्यशास्त्र संस्कृति में भरत मुनि द्वारा लिखित संगीत और नाटक का सबसे पहला साहित्य है।

❑ **हारमोनियम**

- हारमोनियम भारतीय वाद्य नहीं है, लेकिन अब यह अनिवार्य तौर पर भारतीय लोक संगीत में शामिल हो गया है।
- हारमोनियम, 'पेटी' या 'रीड ऑर्गन' भी कहलाता है।

❑ **मृदंग**

- यह दक्षिण भारत का एक थाप यंत्र है। मृदंग कर्नाटक संगीत में प्राथमिक ताल यंत्र होता है।
- मृदंग को मृदंग खोल, मृदंगम आदि भी कहा जाता है।
- पखावज का प्राचीन नाम मृदंग था।
- मृदंग पहले मिट्टी से ही बनाया जाता था, लेकिन मिट्टी जल्दी फूट जाने और जल्दी खराब होने के कारण आजकल यह लकड़ी के खोल से बनाया जाने लगा है।
- मृदंग ढोलक के जैसा ही होता है। इसका एक सिरा काफी छोटा और दूसरा सिरा काफी बड़ा (लगभग 10 इंच) होता है।

❑ **तंबूरा**

- यह वाद्य हिंदुस्तानी और कर्नाटक शैली में प्रयुक्त होता है।
- यह गायक के लिये आधार स्वर तैयार करने का काम करता है।
- शास्त्रीय संगीत प्रस्तुतीकरण में यह एक अनिवार्य वाद्य है।

❑ **रावणहत्था**

- यह राजस्थान के भोपा और गुजरात के लोक संगीत का प्रमुख वाद्य है।
- इसमें एक छोटा तूंबा होता है जिसे नारियल की खप्पर से बनाया जाता है।

❑ **इकतारा**

- इसे एक हाथ से ही बजाया जाता है।
- इसे कालबेलिया, नाथ साधु व संन्यासी आदि बजाते हैं।

संगीतके प्रमुख वाद्य यन्त्र एवं उनके वादक		
क्र.सं.	**वाद्ययंत्र**	**वादक**
1	बॉसुरी	**हरिप्रसाद चौरसिया, पन्नालाल घोष,** एन.नीला, **रोनू मजूमदार** आदि
2	सितार	**निखिल बनर्जी, पंडित रविशंकर, विलायत खॉ**,बंदे हसन, शाहिद परवेज, उमाशंकर मिश्र , **देबू चौधरी** आदि
3	तबला	लतीफ खॉ, **जाकिर हुसैन, अल्ला रक्खा खॉ**, सुखविन्दर सिंह,गुदई महाराज, फैय्याज खॉ आदि
4	सरोद	**अली अकबर खॉ**, **अमजद अली खॉ**, अलाउद्दीन खॉ,हाफिज खॉ, विश्वजीत राय चौधरी आदि
5	शहनाई	दयाशंकर, बिस्मिल्ला खॉ, जगन्नाथ अली अहमद हुसैन खॉ
6	वायलिन	**विष्णु गोविद जोग**, **यहूदी मेनुहिन**, डॉ एन. राजन, **ओमकार नाथ ठाकुर**, **कन्या कुमारी,** कुनक्कडी बैद्यनाथन आदि
7	वीणा	बदरूदीन डागर, कल्याण कृष्ण भागवतार,एस.बालचन्द्रम, **सादिक अली खां ,** बी० दोरोस्वामी आदि
8	संतूर	भजन सोपोरी, **शिवकुमार शर्मा** आदि
9	पखावज	गोपाल दास, उस्ताद रहमान खॉ, **पंडित अयोध्या प्रसाद , कुदक सिंह** आदि
10	रूद्रवीणा	**असद अली खॉ**, उस्ताद सादिक अली खॉ आदि
11	मृदंग	पालधार रधु, ठाकुर भीकम सिंह, डॉ जगदीश सिंह आदि
12	सारंगी	उस्ताद बिन्दु खॉ, माधव प्रसाद, गोपाल जी मिश्र आदि

घराना	**वादक**
किराना घराना	**भीमसेन जोशी, गंगूबाई हंगल**, **अब्दुल करीम खां**
बनारस घराना	**नारायण मिश्र, प.रविशंकर**, **बिस्मिला खां, गिरिजा देवी, किशन महाराज**
आगरा घराना	**फैय्याज खां,** प. विश्वंभरदीन, **अता हुसैन खां,**
लखनऊ घराना	बिन्दादीन , बेगम अख्तर, पं अयोध्या प्रसाद
ग्वालियार घराना	**पं विष्णु दिगंबर,** विनायक नाथ पटवर्धन, **ओंकारनाथ ठाकुर**

रागों का समयानुसार वर्गीकरण	
विभिन्न राग	गाए जाने का समय ऋतु
राग दरबारी	देर रात
राग भैरवी	प्रातः काल
राग यमन	सायंकाल
राग विहाग	रात्रि का द्वितीय प्रहर
राग बिलावल	देर सुबह
राग भूपाली	रात्रि का प्रथम प्रहर
राग देस	रात्रि का द्वितीय प्रहर
राग बागेश्री	रात्रि का द्वितीय प्रहर
राग रागेश्री	वर्षा ऋतु में किसी भी समय
राग हिंडोल	बसंत ऋतु
राग काफी	फाल्गुन माह
राग दीपक	शाम में दीपक प्रज्वलित करते समय
राग मालकौंस	शीत ऋतु
राग मेघ	रात्रि का द्वितीय प्रहर
राग मल्हार	वर्षा ऋतु (पूरी रात)

Note:-

- **ललित कला अकादमी** की स्थापना भारत सरकार द्वारा 5 अगस्त, 1954 में की गई।
  - यह एक स्वायत्त संस्था है।
  - इसका उद्घाटन तत्कालीन शिक्षा मन्त्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के द्वारा किया गया।
- **संगीत नाटक अकादमी** की स्थापना 31 मई, 1952 को हुई थी।
  - यह भारत सरकार द्वारा स्थापित भारत की संगीत एवं नाटक की राष्ट्रीय स्तर की सबसे बड़ी अकादमी है।
  - इसका मुख्यालय दिल्ली में है।
- **राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय** की स्थापना वर्ष 1959 में संगीत नाटक अकादमी के एक घटक के रूप में हुई।
  - वर्ष 1975 में यह एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में स्थापित हुआ।
- **सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण संस्थान** भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय के अधीन यह एक स्वायत्त संस्थान है।
  - इसकी स्थापना मई, 1979 में हुई।

भारतीय रंगमंच

रंगमंच

रंगमंच एक मिश्रित कला रूप है जिसमें कई कौशल, कला और शिल्प एक साथ लाए जाते हैं। शिल्प वस्तुओं की एक विस्तृत श्रृंखला विशेष रूप से नाटक, नृत्य या संगीत प्रदर्शनों में उपयोग के लिए बनाई जाती है, जैसे कि निम्नलिखित:

- मास्क
- मेकअप
- सिर पर पहनने वाली पोशाकें
- वेशभूषा
- हल्के आभूषण
- दृश्य और मंच
- ढोल और तुरही, मंजीरों के साथ संगीत

संस्कृत रंगमंच

- भारत में रंगमंच की समृद्ध परंपरा का आधार सस्कृत रंगमंच को माना जाता है। प्राचीन भारत में नाटकों के 2 प्रकार थे-
  - **लोकधर्मी -** दैनिक जीवन का यथार्थवादी चित्रण।
  - **नाट्यधर्मी -** अत्यधिक प्रतीकों, परंपराओं द्वारा चित्रण।
- संस्कृत रंगमंच के विकसित स्वरूप का उल्लेख भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है , इसे विश्व के प्राचीनतम नाट्यशास्त्र के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- **संस्कृत रंगमंच की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-**
  - शहरी जीवन पर केंद्रित होते थे।
  - विषयवस्तु-प्रेम एवं नायकवाद।
  - संस्कृत रंगमंच शास्त्रबद्ध थे।
  - 'रस' इसका केंद्रीय तत्त्व थे।
  - संस्कृत नाटकों के आख्यान प्रायः किसी प्रसिद्ध कृति से लिये जाते थे जिसमें नायक प्रायः राजर्षि, राजा, विद्वान, वीर या प्रख्यात वंश का कोई प्रतापी पुरुष होता था।
  - संस्कृत नाटकों में सामान्य पात्र 'विदूषक' प्रायः ब्राह्मण वर्ण का होता है। विदूषक का उपयोग कालिदास, भास आदि नाटककारों ने किया है। विदूषक भारतीय नाटकों में एक हँसाने वाला पात्र होता है।

❑ प्राचीनकाल के मुख्य नाट्यकार

- **भास**
  - यह उत्तरी भारत में रहते थे, महाभारत तथा रामायण जैसे विषयों को लेकर इन्होंने कई नाटकों की रचना की।
  - 'उरूभंगम' में महाभारत युद्ध के दौरान भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा तोड़ने पर हुई उसकी मृत्यु दर्शायी गई है।
  - संस्कृत नाटकों में एकमात्र यही दुखांत नाटक माना जाता है।
  - सोते हुए पाँचों पांडव पुत्रों की अश्वत्थामा द्वारा की गई हत्या इसे और नाटकीय बनाती है।
- **कालिदास**
  - यह राजा विक्रमादित्य के दरबारी थे और उनके दरबार के नवरत्नों में से एक थे।
  - **काव्य -** रघुवंशम्, ऋतुसंहार, कुमारसंभव तथा मेघदूत।
  - **नाटक -** मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् व अभिज्ञानशाकुन्तलम्।
- **शूद्रक**
  - भास के अधूरे नाटक 'चारुदत्त' के चार अंकों को लेकर, उनमें थोड़ा परिवर्तन कर और अन्य छह अंक जोड़कर इन्होंने 'मृच्छकटिकम्' की रचना की।
- **विशाखदत्त**
  - विशाखदत्त राजनीति से जुड़े विषयों के नाटककार थे।
  - **नाटक -** 'मुद्राराक्षस'
- **हर्ष**
  - **नाटक -** रत्नावली, प्रियदर्शिका तथा नागानंद की रचना की।
  - **रत्नावली** में राजा उदयिन तथा राजकुमारी रत्नावली का प्रेम दिखाया गया है।

- **प्रियदर्शिका** में राजा उदयिन का प्रेम प्रसंग दिखाया गया है।
- **नागानंद** में राजकुमार जिमुत वाहन को गरुड़ के समक्ष सर्पों की बलि रोकने के लिये स्वयं की बलि देते हुए दर्शाया गया है।

लोक रंगमंच

- भारतीय रंगमंच की दूसरी परंपरा लोक रंगमंच की है।
- लोकमंच जनसाधारण, विशेष रूप से ग्रामीण जनता के दैनिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है जो फुरसत के क्षणों में उनका मन बहलाव करता है।
- इस रूप में लोकमंच जीवन की उमंग की स्वाभाविक एवं अनायास अभिव्यक्ति है। लोक रंगमंच के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसको स्थापित करने के लिये किसी विशेष प्रयास, परिश्रम एवं धन की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि यह स्वतः जन्म लेता है तथा मानव जीवन के साथ फलता-फूलता है।
- लोक रंगमंच में मुख्य रूप से दो प्रवृत्तियाँ होती है- धार्मिक प्रवृत्ति , लौकिक प्रवृत्ति
  - **धार्मिक प्रवृत्ति-** रासलीला, रामलीला, कुडियाट्टम, अकियानाट, तेरूकुत्तु, यक्षगान प्रमुख हैं।
  - **लौकिक प्रवृत्ति-** स्वांग, ख्याल, नौटंकी, नाच एवं तमाशा जैसी शैलियाँ सम्मिलित हैं
- **लोक रंगमंच की विशेषताएँ -**
  - लोक रंगमंच में कोई शास्त्रसम्मत अनुशासन नहीं होता।
  - यह सरल एवं स्फूर्त होता है जिसमें अभिनय पर बल न देकर गायन, वाचन एवं नृत्य पर ज्यादा जोर दिया जाता है।
  - इसमें स्थानीय रीति-रिवाजों एवं वेश भूषा को महत्त्व दिया जाता है
  - लोक रंगमंच की प्रस्तुति में हास्य तत्व अधिक होता है, लौकिक एवं व्यावहारिक छंदों का प्रयोग खूब देखने को मिलता है।
  - लोक रंगमंच में प्रयोग किये जाने वाले वाद्य यंत्रों में ढोल, तबला, हारमोनियम एवं नगाड़े उल्लेखनीय हैं।

हिंदी रंगमंच

- आधुनिक हिंदी रंगमंच का उत्थान 'भारतेंदु' के आगमन के बाद ही हुआ।
- 1871 में स्थापित 'अल्फ्रेड नाटक मंडली' ने भारतेंदु और राधाकृष्ण दास के नाटकों का मंचन किया।
- भारतेंदु के तीन नाटक 'सत्य हरिश्चंद्र', 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी' तत्कालीन व्यवस्था पर तो व्यंग्य है ही, भारतीय रंगमंचीय परंपरा में भी अपना खास स्थान रखते हैं।
- भारतेंदु के नाटकों का मूल उद्देश्य मनोरंजन के साथ जनसामान्य को जागृत करना और उभर रही राष्ट्रीयता की भावना को अभिव्यक्ति प्रदान करना था। इस दौरान लिखे नाटकों में प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम जगाने, मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था बनाए रखने तथा पश्चिम के गलत प्रभावों से समाज को बचाए रखने का प्रयास किया गया।
- 1906 में स्थापित 'भारतेंदु नाटक मंडली' की भूमिका हिंदी रंगमंच के विकास में महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इस मंडली ने 'सत्य हरिश्चंद्र', 'सुभद्रा हरण', 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त' एवं 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटकों का मंचन किया।
- जयशंकर प्रसाद के आगमन से हिंदी नाटक के विकास को नई दिशा मिली।
- देश में राष्ट्रीय चेतना की लहर ने इस समय के साहित्य को प्रभावित किया।
- जयशंकर प्रसाद ने 'कल्याणी', 'राज्यश्री', 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'अजातशत्रु', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटक लिखे।
- भारत मे रगमच कला धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' और मोहन राकेश के 'आधे-अधूरे', 'आषाढ़ का एक दिन' व 'लहरों के राजहंस' भी आधुनिकता बोध के नाटकों के रूप में ही वर्गीकृत किये जाते हैं।
- सत्तर के बाद की नाट्य रचना और भी व्यापक है। इस दौर में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का 'बकरी', ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'शुतुरमुर्ग', भीष्म साहनी के 'कबीरा खड़ा बाजार में' को काफी सराहा गया।
- 1943 में इप्टा अर्थात् 'इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन' का जन्म देश में वामपंथी आंदोलन के गर्भ से हुआ था। इस समूह ने प्रगतिशील नाटकों के मंचन को बढ़ावा दिया। 1960 तक सैकड़ों प्रगतिशील नाटकों का मंचन इप्टा द्वारा किया गया।
- राजेंद्र रघुवंशी, रामविलास शर्मा, ख्वाजा अहमद अब्बास, पं. रवि शंकर, उत्पल दत्त, ऋत्विक घटक जैसे महान लोग इप्टा से जुड़े थे।
- हिंदी रंगमंच को आम जनता के साथ जोड़े रखने में इप्टा की भूमिका ऐतिहासिक मानी जाती है। आज भी इप्टा समकालीन रंगमंच पर अपनी सक्रियता बनाए हुए है।
- वर्तमान में 'संगीत नाटक अकादमी' एवं 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' अपने उत्सवों, महोत्सवों में लोकनाट्यों के प्रयोग को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

अन्य रंगमंच

पारसी रंगमंच

- विक्टोरियन रंगमंच की नकल थी, जिसमें पृष्ठभूमि के लिये रंगे हुए पर्दों का इस्तेमाल किया जाता था।
- **इसकी मुख्य विशेषताएँ** –
  - दृश्य में विश्वसनीयता के लिए दृश्य के अनुरूप अलग-अलग पर्दों का प्रयोग।
  - संगीत, नृत्य एवं गायन का अत्यधिक प्रयोग।

- भड़कीले रंग एवं अलंकरणों से युक्त परिधान दर्शकों को आकर्षित करते थे।
- इसमें लंबे संवाद होते थे।
- इसने बांग्ला, मराठी एवं हिंदी रंगमंच के लिये पथ-प्रदर्शक का कार्य किया।

बांग्ला, मराठी रंगमंच

- सर्वप्रथम बांग्ला एवं इसके बाद मराठी भाषा में बुद्धिजीवियों के संरक्षण में रंगमंच का विकास हुआ।
- यह पारसी रंगमंच से अलग था।
- भारतीय नवजागरण का आरंभिक आगमन चूँकि बांग्ला एवं मराठी क्षेत्र में हुआ था, इसलिये यहाँ के रंगमंच ने भी स्वयं को इस आंदोलन से जोड़ा।
- माइकल मधुसूदन दत्त ने 'मेघनाद वध' तथा दीनबंधु मित्र के 'नील दर्पण' आदि नाटकों ने उस समय की प्रवृत्तियों को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है।

कन्नड़ रंगमंच

- कन्नड़ नाटक एवं रंगमंच का विकास कुछ संस्कृत नाटकों के मंचन से माना जाता है।
- 1918 में टी. पी. केलाराम के नाटकों ने कन्नड़ रंगमंच में एक नए दौर की शुरुआत की, जिसे शिवराम कारंत, आद्य रंगाचार्य ने और आगे बढ़ाया।

उड़िया रंगमंच

- 'रामाशंकर रे' द्वारा रचित 'कांची कावेरी' को प्रथम उड़िया नाटक की संज्ञा दी जाती है।
- नव्य नाट्य आंदोलन के समय 'मनोरंजन दास' ने उड़िया नाट्य की कमान सँभाली। विजय मिश्रा ने अपने नाटक 'सबा भक मने' से उड़िया थियेटर को नई ऊँचाइयाँ दीं। विजय का नाटक उड़िया का पहला 'एब्सर्ड नाट्य' माना जाता है।
- वर्तमान समय में उड़िया जनता एब्सर्ड थियेटर की प्रतीकात्मकता को अधिक समय तक झेलने के लिये तैयार भी नहीं दिखाई देती, इसके चलते उडिया थियेटर जनता को अपनी ओर खींचने में असफल रहा है।

गुजराती रंगमंच

- गुजरात में रंगमंच का विकास कम हुआ है।
- मधु राय के 'कुमार की छत पर' और 'किसी एक फूल का नाम लो', विनायक पुरोहित का 'स्टील फ्रेम' ने पर्याप्त यश अर्जित किया है।

भारतीय लोक नाट्यकला

- भारतीय लोक नाट्यकला को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:-

❑ उत्तरी भारत के नाट्यकला

- **भाँड पाथेर**
  - **राज्य** - कश्मीर
  - **अन्य तथ्य**
  - नृत्य, संगीत और अभिनय का अनोखा संगम.
  - कटु व्यंग्य, बुद्धि और पैरोडी इस रूप की विशेषता बताते हैं।
  - सुरनाई, नगाड़ा और ढोल के साथ संगीत प्रदान किया जाता है।
  - भांड पाथेर के कलाकार मुख्य रूप से कृषक समुदाय से हैं और नाटक में उनके जीवन जीने के तरीके, आदर्शों और संवेदनशीलता का प्रभाव स्पष्ट है।
- **स्वाँग**
  - **राज्य -** हरियाणा और पश्चिमी यूपी में
  - **अन्य तथ्य**
  - **स्वांग का अर्थ है प्रतिरूपण।**
  - मूलतः यह मुख्यतः संगीत-आधारित था। धीरे-धीरे गद्य ने भी संवादों में अपनी भूमिका निभानी शुरू कर दी।
  - भावनाओं की कोमलता, रस की सिद्धि के साथ चरित्र का विकास भी देखा जा सकता है।
  - स्वांग की दो महत्वपूर्ण शैलियाँ **रोहतक और हाथरस** से हैं। रोहतक से संबंधित शैली में, इस्तेमाल की जाने वाली भाषा **हरियाणवी (बांगरू) है और हाथरस में** , यह **ब्रजभाषा है।**
- **नौटंकी**
  - **राज्य -** यूपी
  - **अन्य तथ्य**
  - इस पारंपरिक नाट्यकला शैली के सबसे लोकप्रिय केंद्र **हैं**
  - छंदों में प्रयुक्त छंद हैं: **दोहा, चौबोला, छप्पई, बिहार-ए-ताबील।**
  - एक समय था जब नौटंकी में केवल पुरुष ही अभिनय करते थे लेकिन आजकल महिलाएं भी इसमें भाग लेने लगी हैं।
  - श्रद्धा से याद किये जाने वालों में **कानपुर की गुलाब बाई** भी शामिल हैं। उन्होंने थिएटर की इस पुरानी विधा को एक नया आयाम दिया।
- **रासलीला**
  - **राज्य -** यूपी
  - **अन्य तथ्य**
  - **यह विशेष रूप से भगवान कृष्ण की** कथाओं पर आधारित है।
  - ऐसा माना जाता है कि **नंद दास ने कृष्ण के जीवन पर आधारित प्रारंभिक नाटक लिखे थे।**
  - गद्य में संवादों को गीतों और कृष्ण की शरारतों के दृश्यों के साथ खूबसूरती से जोड़ा गया।
- **डॉ**
  - **राज्य -** मध्य प्रदेश
  - **अन्य तथ्य**
  - माच शब्द का प्रयोग **मंच के साथ-साथ नाटक के लिए भी** किया जाता है।
  - इस नाट्य विधा में संवादों के बीच में गीतों को प्रमुखता दी जाती है।
  - इस रूप में संवाद के लिए शब्द **बोल** है और कथन में तुकबंदी को **वनाग** कहा जाता है। इस नाट्य शैली की धुनों को **रंगत के नाम से जाना जाता है।**
- **रम्मन**
  - **राज्य -** उत्तराखंड
  - **अन्य तथ्य**
  - यह रंगमंच, संगीत, ऐतिहासिक पुनर्निर्माण और पारंपरिक मौखिक और लिखित कहानियों का संयोजन करने वाला एक बहुरूपी सांस्कृतिक कार्यक्रम है।
  - यह हर साल बैसाख माह (अप्रैल) में उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित भूमियाल देवता के मंदिर के प्रांगण में मनाया जाता है।
  - मुखौटा नृत्य विशेष रूप से भंडारी (क्षत्रिय जाति) द्वारा किया जाता है।
  - मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में शामिल।
- **रामलीला**
  - **राज्य -** उत्तर प्रदेश में
  - **अन्य तथ्य**
  - आम तौर पर दशहरा उत्सव के दौरान रामलीला का मंचन किया जाता है।
  - रामलीला दस दिनों तक मनाई जाती है जो दशहरा उत्सव पर समाप्त होती है।
  - यह त्योहार बुरी शक्तियों के प्रतीक रावण पर भगवान राम द्वारा प्रस्तुत अच्छाई की जीत के लिए मनाया जाता है।
  - रामलीला के प्रदर्शन के समय, नृत्य और सुखद संगीत के साथ लगातार रामायण का पाठ किया जाता है।

- यह नृत्य, संगीत, माइम, अभिनय और कविता का एक अद्भुत मिश्रण है जिसे उत्साही और धार्मिक दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

- **करियाला**
- **राज्य -** हिमाचल प्रदेश
- **अन्य तथ्य**
- यह ओपन एयर लोक नाट्य शैली है, जो हिमाचल प्रदेश के शिमला, सोलन और सिरमौर जिलों में सबसे लोकप्रिय है।
- प्रकृति में मनोरंजक होने के कारण, करियाला मुख्यतः सामाजिक व्यंग्य पर आधारित है। हास्य के सभी रंगों को दर्शाती यह कला नौकरशाही और सामाजिक मुद्दों पर तीखे और तीखे व्यंग्य बहुत ही साहसपूर्वक प्रस्तुत करती है।

पूर्वी भारत के नाट्यकला

- **अंकिया नट**
- **राज्य -** असम
- **अन्य तथ्य**
- अंकिया नाट्स एकांकी नाटकों की एक श्रेणी है।
- अंकिया नाट के आविष्कार का श्रेय आमतौर पर मध्यकालीन संत और समाज सुधारक श्रीमंत शंकरदेव को दिया जाता है।
- अंकिया नाट की एक विशेष प्रस्तुति को भाओना कहा जाता है। नाटकों में आम तौर पर जीवंत वाद्य यंत्रों और गायकों, नृत्य और विस्तृत वेशभूषा का संयोजन होता है।
- अंकिया नट का सूत्रधार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है , क्योंकि वह श्लोक पढ़ता है, नृत्य गाता है और नाटक के प्रत्येक कार्य को गद्य में समझाता है।

- **ओजापाली**
- **राज्य -** असम
- **अन्य तथ्य**
- **ओजापाली कथकता परंपरा से विकसित हुई है और इसे एक समूह में प्रदर्शित किया जाता है।**
- समूह के सदस्य में एक ओजा शामिल होता है, जो प्रदर्शन का नेतृत्व करता है और चार या पांच तालियां होती हैं, जो झांझ बजाकर निरंतर लय के साथ प्रदर्शन को पूरक बनाती हैं।
- कई मान्यताएँ हैं कि **शंकरदेव ने** भी अपना अंकिया भाओना बनाने के लिए ओजापाली से प्रेरणा ली थी।

- **बिदेशिया**
- **राज्य -** बिहार
- **अन्य तथ्य**
- बिदेसिया एक ऐसे शख्स की कहानी है जिसे नौकरी की तलाश में अपना गांव और परिवार छोड़ना पड़ता है।
- भिखारी ठाकुर इस कला के संस्थापक हैं।
- यह मुख्य रूप से संगीत थिएटर है, जिसमें अधिकांश आदान-प्रदान मौजूदा भोजपुरी लोक गीतों और धुनों पर आधारित संगीत के माध्यम से होता है।
- बिदेसिया बिहारी गांवों में लोकप्रिय बना हुआ है, क्योंकि इसका विषय प्रासंगिक बना हुआ है, जो ग्रामीण जीवन की वास्तविकता को दर्शाता है जहां पुरुषों को अपने परिवारों को छोड़कर अपनी आजीविका कमाने के लिए शहरों की ओर पलायन करना पड़ता है।

- **प्रह्लाद नाटक**
- **राज्य -** ओडिशा
- **अन्य तथ्य**
- 'डंडा' नामक विशेष अधिनियम इस लोक कला को नए सीखने वालों के लिए कठिन कार्य बनाते हैं।
- प्रह्लाद नाटक के प्रदर्शनों की सूची में केवल एक ही नाटक है, जिसका कथानक विष्णु के अवतार नरसिम्हा के मिथक पर आधारित है।
- उचित बिंदुओं पर स्वर और वाद्य संगीत दोनों ही प्रभाव को तीव्र करते हैं। संगीत के साथ संवाद भावनात्मक प्रस्तुति को यथार्थवादी प्रस्तुति से कहीं आगे ले जाता है।
- प्रह्लाद नाटक पारंपरिक ओडिसी संगीत पर काफी हद तक आधारित है।

- **सुंगा**
- **राज्य -** ओडिशा
- **अन्य तथ्य**
- सुआंगा एक संगीतमय लोकनाट्य है जिसका शाब्दिक अर्थ मुखौटा या प्रहसन है।
- बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक यह तटीय ओडिशा में सबसे लोकप्रिय था।
- सुआंगा की तकनीक शानदार प्रह्लाद नाटक की भी जानकारी देती है।

पश्चिमी भारत के नाट्यकला

- **भवाई**

- **राज्य -** गुजरात
- **अन्य तथ्य**
- इस स्वरूप के केंद्र कच्छ और काठियावाड़ हैं
- भवई में प्रयुक्त वाद्ययंत्र हैं: भूंगल, तबला, बांसुरी, पखावज, रबाब, सारंगी, अंजीरा, आदि ।
- भवई में, भक्ति और रोमांटिक भावनाओं का एक दुर्लभ संश्लेषण है।

- **तमाशा**
- **राज्य -** महाराष्ट्र
- **अन्य तथ्य -**
- **यह गोंधल, जागरण और कीर्तन** जैसे लोक रूपों से विकसित हुआ है ।
- अन्य थिएटर रूपों के विपरीत, तमाशा में **महिला अभिनेत्री** नाटक में नृत्य आंदोलनों की मुख्य प्रतिपादक होती है। उसे **मुर्की के नाम से जाना जाता है.**
- शास्त्रीय संगीत, बिजली की गति से चलने वाला फुटवर्क और जीवंत हाव-भाव नृत्य के माध्यम से सभी भावनाओं को चित्रित करना संभव बनाते हैं।

दक्षिणी भारत के नाट्यकला

- **दशावतार**
- **राज्य -** गोवा
- **अन्य तथ्य**
- कलाकार **संरक्षण और रचनात्मकता के देवता – भगवान विष्णु के दस अवतारों का** चित्रण करते हैं ।
- दस अवतार हैं मत्स्य (मछली), कूर्म (कछुआ), वराह (सूअर), नरसिम्हा (शेर-मानव), वामन (बौना), परशुराम, राम, कृष्ण (या बलराम), बुद्ध और कल्कि।
- स्टाइलिश मेकअप के अलावा, दशावतार कलाकार लकड़ी और कागज की लुगदी से बने मुखौटे पहनते हैं।

- **कृष्णअट्टम**
- **राज्य -** केरल
- **अन्य तथ्य**
- यह केरल का फ्लॉक थिएटर है ।
- 17वीं शताब्दी के मध्य में कालीकट के राजा मानवदा के संरक्षण में अस्तित्व में आया ।
- कृष्णट्टम लगातार आठ दिनों तक खेले जाने वाले आठ नाटकों का एक चक्र है।
- नाटक हैं अवतारम, कालियामंडन, रस क्रीड़ा, कामसवध, स्वयंवरम, बाण युद्धम, विविध वधम और स्वर्गारोहण ।
- एपिसोड भगवान कृष्ण की थीम पर आधारित हैं – उनका जन्म, बचपन की शरारतें और बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाने वाले विभिन्न कार्य।

- **मुडियेट्टु**
- **राज्य -** केरल
- **अन्य तथ्य**
- यह वृश्चिकम (नवंबर-दिसंबर) महीने में मनाया जाता है ।
- यह आमतौर पर केवल केरल के काली मंदिरों में देवी को अर्पित करने के रूप में किया जाता है।
- इसमें असुर दारिका पर देवी भद्रकाली की विजय को दर्शाया गया है ।
- मुदियेट्टु में सात पात्र: शिव, नारद, दारिका, दानवेंद्र, भद्रकाली, कुली और कोइम्बिडर (नंदिकेश्वर) सभी भारी रूप से बने हुए हैं।

- **थेय्यम**
- **राज्य -** केरल
- **अन्य तथ्य**
- 'थेय्यम' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'दैवम' से हुई है जिसका अर्थ है भगवान । इसलिए इसे भगवान का नृत्य कहा जाता है ।
- थेय्यम विभिन्न जातियों द्वारा पूर्वजों, लोक नायकों की आत्माओं को प्रसन्न करने और उनकी पूजा करने के लिए किया जाता है।
- थेय्यम की विशिष्ट विशेषताओं में से एक रंगीन पोशाक और विस्मयकारी हेडगियर (मुडी) है, जो लगभग 5 से 6 फीट ऊंची होती है, जो सुपारी के टुकड़े, बांस, सुपारी के पत्तों के आवरण और लकड़ी के तख्तों से बनी होती है और हल्दी, मोम और का उपयोग करके विभिन्न मजबूत रंगों में रंगी जाती है। अरक.

- **कूडियाअट्टम/कुटियाअट्टम**
- **राज्य -** केरल
- **अन्य तथ्य**
- यह केरल के सबसे पुराने पारंपरिक थिएटर रूपों में से एक है और यह संस्कृत थिएटर परंपराओं पर आधारित है।
- इस नाट्य शैली के पात्र हैं: चाक्यार या अभिनेता, नांबियार, वादक और नांगयार, जो महिलाओं की भूमिका निभाते हैं।
- सूत्रधार या कथावाचक और विदूषक या विदूषक नायक हैं।
- विदूषक ही संवाद बोलते हैं।
- हाथ के इशारों और आंखों की गतिविधियों पर जोर इस नृत्य और नाट्यकला शैली को अद्वितीय बनाता है।

- इसे आधिकारिक तौर पर यूनेस्को द्वारा मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत की उत्कृष्ट कृति के रूप में मान्यता दी गई है।

- **यक्षगान**
- **राज्य -** कर्नाटक
- **अन्य तथ्य**
- यह कर्नाटक का पारंपरिक नाट्यकला है।
- यह पौराणिक कथाओं और पुराणों पर आधारित है।
- सबसे लोकप्रिय एपिसोड महाभारत से हैं यानी द्रौपदी स्वयंवर, सुभद्रा विवाह, अभिमन्यु वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध और रामायण से यानी राज्याभिषेक, लव-कुश युद्ध, बाली-सुग्रीव युद्ध और पंचवटी।

- **थेरुकुथु**
- **राज्य -** तमिलनाडु
- **अन्य तथ्य**
- इसका शाब्दिक अर्थ है "नुक्कड़ नाटक"।
- यह ज्यादातर समृद्ध फसल प्राप्त करने के लिए मरियम्मन (वर्षा देवी) के वार्षिक मंदिर उत्सवों के समय किया जाता है।
- थेरुकुथु के व्यापक प्रदर्शन के मूल में द्रौपदी के जीवन पर आधारित आठ नाटकों का एक चक्र है
- थेरुकुथु प्रदर्शन के सूत्रधार कट्टियाकरन दर्शकों को नाटक का सार बताते हैं और कोमली अपनी मस्ती से दर्शकों का मनोरंजन करते हैं।

- **बुर्रा कथा / हरि कथा**
- **राज्य -** आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु
- **अन्य तथ्य**
- मंडली में एक मुख्य कलाकार और दो सह-कलाकार होते हैं।
- यह एक कथात्मक मनोरंजन है जिसमें प्रार्थना, एकल नाटक, नृत्य, गीत, कविताएँ और चुटकुले शामिल हैं।
- विषय या तो कोई हिंदू पौराणिक कहानी होगी या समसामयिक सामाजिक समस्या।
- हरिकथा, जिसे कथा कलाक्षेपा के नाम से भी जाना जाता है, एक प्रकार है जो भगवान कृष्ण, अन्य देवताओं और संतों की कहानियाँ सुनाती है।

- **वीधि नाटकम**
- **राज्य -** आंध्र प्रदेश
- **अन्य तथ्य -**
- तेलुगु में ' **वीधि' का अर्थ है 'सड़क या खुली जगह'**। चूंकि भगवान पर नाटक खुले स्थान पर किए जाते थे, इसलिए उन्हें वैधी नाटकम कहा जाता था।
- नाटकों का **प्रदर्शन भगतों द्वारा किया जाता** था , जो भगवान के भक्त थे, इसलिए उन्हें कभी-कभी विधि भागवत भी कहा जाता था। **यह आंध्र प्रदेश** का सबसे लोकप्रिय लोक नाट्य रूप है।

कठपुतली कला

कठपुतली एक गुड़िया या आकृति होती है जो किसी व्यक्ति, जानवर, वस्तु या विचार का प्रतिनिधित्व करती है और इसका उपयोग कहानी सुनाने के लिए किया जाता है। कठपुतली विभिन्न सामग्रियों से बनी होती है और इसे अलग-अलग तरीकों से चलाया जा सकता है।

भारत में कठपुतली कला की एक समृद्ध परंपरा है, विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार की कठपुतलियों का उपयोग किया जाता है। यहां भारत और उन राज्यों में कठपुतलियों के चार प्रमुख प्रकार हैं - दस्ताना , रॉड , छाया , स्ट्रिंग

❑ **दस्ताना कठपुतलियाँ**

- पावाकुथु – केरल
  - केरल की दस्ताना कठपुतली का प्रकार
  - कठपुतली कलाकार कठपुतलियों को अपने हाथों में दस्ताने की तरह पहनते हैं।
  - कठपुतली कलाकार अपनी तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से कठपुतली को चलाता है।
  - प्रदर्शन के साथ लयबद्ध ताल या ढोलक बजते हैं।
  - इन प्रदर्शनों में कथकली नृत्य शैली का प्रभाव देखा जा सकता है।
  - नाटक रामायण और महाभारत पर आधारित हैं।
- सखी कुन्धेही नाता - ओडिशा
- बेनी पुतुल - पश्चिम बंगाल

❑ **रॉड कठपुतलियाँ**

- पुतुल नच - पश्चिम बंगाल
  - उड़ीसा, असम और बंगाल की रॉड कठपुतली
  - वे पूर्वी भारत में आम तौर पर पाई जाने वाली एक प्रकार की हाथ की कठपुतली हैं।
  - कठपुतली को नियंत्रित करने के लिए कठपुतली की कमर से जुड़ी एक छड़ी का उपयोग किया जाता है।
  - प्रदर्शन के साथ-साथ एक संगीत समूह भी प्रस्तुति देता है।
- यमपुरी-बिहार
  - बिहार की कठपुतली
  - कठपुतलियाँ लकड़ी से बनी होती हैं और इनमें कोई जोड़ नहीं होता।
  - वे लकड़ी से बने हैं और जीवंत रंगों से रंगे और सजाए गए हैं।
- काठी कांधे - ओडिशा

❑ **छाया कठपुतलियां**

- थोलु बोम्मालता - आंध्र प्रदेश
  - ये चमड़े की आकृतियाँ हैं जो सपाट हैं। चमड़े के दोनों किनारों को आकृतियों से चित्रित किया गया है।
  - स्क्रीन पर छाया प्रभाव उत्पन्न करने के लिए, कठपुतलियों को एक सफेद स्क्रीन पर रखा जाता है, जिसके पीछे से प्रकाश गिरता है।
  - आंकड़ों को इस तरह से प्रबंधित किया जाता है कि सफेद स्क्रीन पर बने सिल्हूट एक कहानी बताते हैं।
  - यह प्रदर्शन शास्त्रीय संगीत पर आधारित है और पुराण आध्यात्मिक कहानियों पर आधारित है। कठपुतलियाँ बड़ी होती हैं और उनके दो किनारे रंगीन होते हैं।
- तोगालु गोम्बेयाता – कर्नाटक
  - कठपुतलियों का आकार पात्र के सामाजिक-आर्थिक स्तर के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है।
  - परिणामस्वरूप, शासकों को आम लोगों से बड़ा दिखाया जाता है।
- रावणछाया – ओडिशा
  - शो में उपयोग की जाने वाली कठपुतलियों में कोई जोड़ नहीं होता है और उन्हें संचालित करने के लिए प्रतिभा की आवश्यकता होती है।
  - गैर-मानवीय कठपुतलियों का भी उपयोग किया जाता है।
- थोलपावाकुथु - केरल
- चामाड्याचे बाहुल्य - महाराष्ट्र
- थोल बोम्मालट्टम - तमिलनाडु

❑ **स्ट्रिंग कठपुतलियाँ**

- **पुतुल नाच**
  - **राज्य -** असम
  - **अन्य तथ्य**

- कठपुतलियाँ लकड़ी से बनी हैं और 9 इंच लंबी हैं।
- तेल के रंग का उपयोग लकड़ी को रंगने और आंखें, नाक और अन्य विशेषताएं जोड़ने के लिए किया जाता है।
- कठपुतलियों को अधिक जीवंत अनुभव देने के लिए, छोटे आभूषण लगाए जाते हैं।

- **गोम्बेयट्टा**
  - कर्नाटक की कठपुतली
  - यह कर्नाटक के यक्षगान थिएटर से प्रभावित है।
  - आमतौर पर, प्रत्येक कठपुतली में हेरफेर करने के लिए एक से अधिक कठपुतली मौजूद होते हैं।
- **गोपालिला कुंडेही**
  - उड़ीसा की कठपुतली
  - ये छोटी स्कर्ट वाली हल्की लकड़ी की मूर्तियां हैं।
  - इन कठपुतलियों में अतिरिक्त जोड़ होते हैं, जिससे कठपुतली को अधिक स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति मिलती है।
  - तारों को पकड़ने के लिए एक त्रिकोणीय प्रोप का उपयोग किया जाता है।
- **कठपुतली**
  - राजस्थान की कठपुतली
  - कठपुतली का अर्थ है "लकड़ी की गुड़िया।" कठपुतलियों को पारंपरिक राजस्थानी पोशाकें पहनाई जाती हैं।
  - शो में साथ देने के लिए नाटकीय लोक संगीत का उपयोग किया जाता है।
  - पैरों की कमी एक विशिष्ट लक्षण है। कठपुतली कलाकारों की उंगलियाँ तारों से बंधी होती हैं।
- **बोम्मलाट्टम**
  - तमिलनाडु की कठपुतली
  - कठपुतली की डोरियाँ एक लोहे के छल्ले से जुड़ी रहती हैं।
  - कठपुतली कलाकार इस अंगूठी को अपने सिर पर पहनता है।
  - भारत में सबसे बड़ी और भारी कठपुतलियाँ बोम्मालट्टम कठपुतलियाँ हैं।
  - कुछ 5 फीट लंबे होते हैं और उनका वजन 10 किलोग्राम होता है।

❑ **कठपुतली से जुड़ी मुख्य विशेषताएं**

- पारंपरिक थिएटर की तरह थीम महाकाव्यों और किंवदंतियों पर केंद्रित हैं।
- विभिन्न देश वर्गों की कठपुतलियों का अलग-अलग व्यक्तित्व होता है। क्षेत्रीय चित्रकला और मूर्तिकला तकनीकें उन्हें प्रभावित करती हैं।
- बच्चों और वयस्कों की रुचि बढ़ाने के लिए कठपुतली शो में तेज़ संगीत और गाने होते हैं। कठपुतली शो में संगीत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- कठपुतली कई भाषाओं में विभिन्न क्षेत्रीय रूपों को अपनाती है, हालांकि कुछ असामान्य विशेषताएं शास्त्रीय संस्कृत नाटक के लिंक पर जोर देती हैं।
- कठपुतली शो लंबे समय से औपचारिक समारोहों से जुड़े रहे हैं, जिसमें त्योहारों या समारोहों जैसे शादियों या अन्य पारिवारिक और सामुदायिक समारोहों में प्रदर्शन होते हैं।

❑ **भारत में आधुनिक कठपुतली**

- भारत में आधुनिक कठपुतली कला लगभग 50 वर्ष पुरानी है, जो रूस के सर्गेई ओब्रात्सोव स्कूल से प्रेरित है। "गुजरात में दर्पण अकादमी के साथ काम करने वाले मेहर कॉन्ट्रैक्टर को भारत में आधुनिक कठपुतली की शुरुआत करने और भारतीय कठपुतली कलाकारों को बाकी दुनिया से जोड़ने का श्रेय दिया जाता है।"

❑ **भारत में कठपुतली कला के ह्रास के कारण**

- आज की दुनिया में संरक्षण सीमित है।
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, एक लोकप्रिय प्रकार का मनोरंजन, इसके साथ प्रतिस्पर्धा करता है। लोग टेलीविजन पर रामायण और महाभारत जैसी महाकाव्य कहानियों को देखने के बजाय कठपुतली खेलना पसंद करते हैं।
- कठपुतली कला आमतौर पर धार्मिक और पौराणिक कथाओं तक ही सीमित है।
- आज की दुनिया में, कठपुतली वर्तमान सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को संबोधित नहीं करती है।
- पटकथा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि और अन्य मंचीय प्रभावों के मामले में कठपुतली कला पुरानी हो चुकी है।
- कठपुतली का उपयोग लंबे समय से दुनिया के अधिकांश हिस्सों में सूचना संप्रेषित करने के लिए किया जाता रहा है। कठपुतली छात्रों को खुद को रचनात्मक रूप से व्यक्त करने की अनुमति देने के लिए साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और रंगमंच के तत्वों को जोड़ती है।

धर्म और दर्शन

धर्म

- धर्म शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'धृ' धातु से मानी जाती है, जिसका अर्थ है- धारण करना। जो कुछ भी धारण करने योग्य है, वही धर्म है।
- धर्म शब्द को अंग्रेज़ी के 'Religion' का समानार्थी माना जाता है। इसमें 'Re' का आशय 'दोबारा' तथा 'ligion' का आशय 'बांधने' से है अर्थात् 'Religion' का अर्थ हुआ 'दोबारा से बांधना'। इसे धार्मिक अर्थ में आत्मा को परमात्मा से बांधने के रूप में देखा जाता है।
- इस प्रकार, हम देखते हैं कि धर्म एक व्यापक अवधारणा है, इसे परिभाषित करना सरल नहीं है। किंतु, उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर धर्म को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है- "धर्म एक व्यापक अभिवृत्ति है, जिसमें किसी अलौकिक शक्ति में विश्वास, मनुष्य की भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति, कर्मकांड, नैतिक आचरण आदि पक्षों पर बल दिया जाता है।"

दर्शन

- लौकिक एवं पारलौकिक सत्ताओं के अस्तित्व, अनास्तित्व, जन्म-मरण-मुक्ति, वास्तविक ज्ञान का स्वरूप, उसकी सीमा व प्रामाणिकता आदि के संदर्भ में गहन बौद्धिक चिंतन एवं अध्ययन ही दर्शन है।
- दर्शन का अंग्रेजी पर्यायवाची 'Philosophy' है जिसका शाब्दिक अर्थ है- ज्ञान के प्रति अनुराग। इस प्रकार दर्शन को ऐसी जीवन दृष्टि या जीवन पद्धति के रूप में देखा जा सकता है जिसमें ज्ञान के प्रति विशेष अनुराग दिखाई देता है।
- भारतीय दर्शन के छह संप्रदाय है, जिन्हें 'षड्दर्शन' कहा जाता है।
  - सांख्य दर्शनः महर्षि कपिल
  - न्याय दर्शनः महर्षि गौतम
  - पूर्व मीमांसाः महर्षि जैमिनी
  - योग दर्शनः महर्षि पतंजलि
  - वैशेषिक दर्शनः महर्षि कणाद
  - उत्तर मीमांसा (वेदांत): महर्षि बादरायण
- प्रमुख दार्शनिक पद्धतियों को वेदों में विश्वास रखने या न रखने के आधार पर आस्तिक या नास्तिक दो श्रेणियों में बाँटा गया।
  - **आस्तिक दर्शनः** इसके अंतर्गत षड्दर्शन आते हैं- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा।
  - **नास्तिक वर्शनः** वे भारतीय दर्शन जो वेदों में विश्वास नहीं रखते हैं। इसके अंतर्गत चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन को रखा जाता है।

धर्म के विविध प्रकार

- हिन्दू धर्म
- बौद्ध धर्म
- जैन धर्म
- मुस्लिम धर्म
- पारसी धर्म
- ईसाई धर्म

हिंदू धर्म

- 'हिंदू' शब्द न तो धर्म का प्रतीक था और न ही किसी विचारधारा का; इसके पीछे भौगोलिक परिस्थितियाँ थीं। वस्तुतः हिंदू धर्म को उसके विश्वासों, धर्मग्रंथों, पूजा के तरीकों आदि विशेषताओं से पहचाना जाता है।
- हिंदू धर्म में निम्नलिखित विश्वास प्रचलित हैं। -
  - हिंदू धर्म को मानने वाले लोग आश्रम व्यवस्था में विश्वास करते हैं।
  - इस व्यवस्था के अनुसार जन्म से 25 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य, 25 से 50 वर्ष की आयु तक गृहस्थ, 50 से 75 वर्ष की आयु तक वानप्रस्थ तथा 75 वर्ष से जीवन के अंत तक संन्यास आश्रम।
  - चार प्रकार के पुरुषार्थों- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में विश्वास रखते हैं।
  - 16 संस्कारों में विश्वास करते हैं जैसे -पुंसवन, सीमंतोन्नयन, वेदारंभ, समापवर्तन एवं अंत्येष्टि आदि।
  - हिंदू समाजमें चार वर्ण क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। ये चारों वर्ण व और उनसे पहचान रखने वाली जातियाँ परस्पर विवाह, भोजन आदिप्र से जुड़े निषेधों का पालन करती हैं।
  - हिंदू धर्म के उपासक ईश्वर की सत्ता, कर्म नियम, आत्मा की अमरता, मूर्ति-पूजा, अवतारवाद आदि में आस्था रखते हैं।

- हिंदुओं में बहिर्गोत्रीय एवं अंतर्जातीय विवाह करने का प्रचलन है।
- हिंदू समाज के धार्मिक ग्रंथों में चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को रखा गया है।

❑ **हिन्दू धर्म के सम्प्रदाय**

- वैष्णव धर्म
- शैव धर्म
- शाक्त धर्म

वैष्णव धर्म एवं शैव धर्म

❑ **वैष्णव धर्म/ भागवत धर्म**

- भागवत धर्म का उद्भव मौर्योत्तर काल में हुआ। इस धर्म के विषय में प्रारम्भिक जानकारी उपनिषदों में मिलती है।
- इस धर्म के सस्थापक वासुदेव कृष्ण थे जो वृष्णि वंशीय यादव कुल के नेता थे।
- भगवत गीता के अनुसार भगवत धर्म का उपदेश सर्प्रथम कृष्ण द्वारा सूर्य को दिया गया इसे **अष्टांगिक योग** कहा जाता हैं।
- वासुदेव की पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख भक्ति के रूप में पाणिनि के समय ई० पू० पाँचवी सदी में मिलता है।
- छान्दोग्य उपनिषद में श्री कृष्ण का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है। उसमें कृष्ण को देवकी पुत्र वे ऋषि घोरा अंगिरस का शिष्य बताया गया है।
- बाह्मण धर्म के जटिल कर्मकाण्ड एवं यज्ञीय व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप उदय होने वाला पहला सम्प्रदाय भागवत सम्प्रदाय था।
- वासुदेव कृष्ण के भक्त या उपासक भागवत कहलाते थे।
- एक मानवीय नायक के रूप में वासुदेव के देवीकरण का सबसे प्राचीन उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी से प्राप्त होता है।
- वासुदेव कृष्ण को वैदिक देव विष्णु का अवतार माना गया। बाद मे इनका समीकरण नारायण से किया गया। नारायण के उपासक पांचरात्रिक कहलाए।
- भागवत धर्म सम्भवत सूर्य पूजा से सम्बन्धित है।
- भावगत धर्म का सिद्धान्त भगवद्गीता में निहित है।
- वासुदेव-कृष्ण सम्प्रदाय सांख्य योग से सम्बन्धित था। इसमें वेदान्त, सांख्य और योग के विचारधाराओं के दार्शनिक तत्वों को मिलाया गया है।
- वाराह, कूर्म व मत्स्य अवतार को प्रजापति के रूप में उल्लेख किया गया है।
- जैन धर्म गन्ध **उत्तराध्ययन सूत्र** में वासुदेव जिन्हें केशव नाम से भी पुकारा गया है को 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का समकालीन बताया गया है।
- भागवत सम्प्रदाय के मुख्य तत्व भक्ति और अहिंसा है।
- भगवतगीता में प्रतिपादित 'अवतार सिद्धान्त' भागवत धर्म की महत्वपूर्ण विशेषता है।
- मत्स्य पुराण में विष्णु के अवतारों के क्रम में कृष्ण के स्थान पर 'बुद्ध' को स्थान दिया गया है।
- भागवत सम्प्रदाय के नायकों का विवरण वायु पुराण में निम्नलिखित उपास्यों के रूप में मिलता है-
  - **संकर्षण-** रोहिणी पुत्र
  - **वासुदेव-** देवकी पुत्र
  - **प्रद्युम्न -** रुक्मणी पुत्र (विदर्भराज की कन्या)
  - **साम्ब -** जाम्बवती पुत्र
  - **अनिरुद्ध -** प्रद्युम्न पुत्र
- **ऐतरेय ब्राह्मण** में विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में किया गया है।
- भगवान विष्णु को अपना इष्टदेव मानने वाले भक्त वैष्णव कहलाए तथा तत्सम्बन्धी धर्म वैष्णव कहलाया।
- भागवत से वैष्णव धर्म की स्थापना विकास क्रम की एक धारा है।
- विष्णु के अधिकतम अवतारों की संख्या 24 है पर मत्स्यपुराण में दस अवतारों का उल्लेख मिलता है।
- इन अवतारों में कृष्ण का नाम नहीं है क्योंकि कृष्ण स्वयं भगवान के साक्षात् स्वरूप है।
- **प्रमुख दस अवतार निम्न हैं-** मत्स्य, कूर्म (कच्छप), वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध और कल्कि (कलि)।
  - विष्णु के अवतारों में 'वराह अवतार सर्वाधिक लोकप्रिय था।
  - वराह का प्रथम उल्लेख **ऋग्वेद** में है।।
  - नारायण, नृसिंह एव वामन दैवीय अवतार माने जाते हैं और शेष सात मानवीय अवतार माने जाते हैं।
  - अवतारवाद का सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख **भगवद्गीता** में मिलता है।
  - परम्परानुसार शूरसेन जनपद के अंधक, वृष्णि संघ में कृष्ण का जन्म हुआ था और वे अंधक, वृष्णि संघ के प्रमुख भी थे।
  - कालान्तर में पाँच वृष्णि- नायकों (वीरों), संकर्षण (बलदेव), वासुदेव कृष्ण प्रद्युम्न, साम्ब, अनिरुद्ध की पूजा की जाती थी।
  - वासुदेव कृष्ण सहित चार वृष्णि वीरों की पूजा की **चतुर्वर्यूह** के रूप में कल्पना की गई है।
  - चतुर्वर्यूह पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख विष्णु संहिता में मिलता है
  - **चतुर्वर्यूह के चार प्रमुख देवता**
    - संकर्षण
    - प्रद्युम्न
    - अनिरुद्ध

- साम्ब

- **पाञ्चरात्र -** यह वैष्णव धर्म का प्रधान मत था। इस मत का विकास लगभग तीसरी शती ई०पू० में हुआ।
  - नारद के अनुसार पाञ्चरात्र में परमतत्व, मुक्ति, युक्ति, योग और विषय (संसार) जैसे पांच पदार्थ हैं इसलिए यह पाञ्चरात्र कहा गया है।
  - पाञ्चरात्र के मुख्य उपासक नारायण विष्णु थे।
  - **पाञ्चरात्र व्यूह के प्रमुख**
    - वासुदेव
    - लक्ष्मी
    - संकर्षण
    - प्रद्युम्न
    - अनिरुद्ध
  - साम्ब (सूर्य पूजा से सम्बन्धित था) पाञ्चरात्र व्यूह में नहीं आते हैं जबकि चतुर्यूह में आते हैं।
- दक्षिण भारत में भागवत धर्म के उपासक **अलवार** कहे जाते थे।
- अलवार अनुयायियों की विष्णु अथवा नारायण के प्रति अपूर्व निष्ठा और आस्था थी।
- वैष्णव धर्म का गढ़ दक्षिण में तमिल प्रदेश में था।
- 9वीं और 10वीं शताब्दी का अंतिम चरण अलवारों के धार्मिक पुनरुत्थान का उत्कर्ष काल था।
- इन भक्ति आन्दोलन में **तिरुमंगाई, पेरिय अलवार, स्त्री संत अण्डाल** तथा **नाम्मालवार** के नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- 'नारायण' का प्रथम उल्लेख **'शतपथ ब्राह्मण'** में मिलता है।
- मेगस्थनीज ने कृष्ण को **'हेराक्लीज'** कहा।

❑ **वैष्णव धर्म के सिद्धान्त एवं शाखाएँ**

वैष्णव धर्म के सिद्धान्त एवं शाखाएँ			
प्रमुख सम्प्रदाय	मत	आचार्य	समय
वैष्णव सम्प्रदाय	विशिष्टाद्वैत	रामानुज	12वीं शताब्दी
ब्रह्म सम्प्रदाय	द्वैतवाद	माधव (आनंदतीर्थ)	13वीं शताब्दी
रूद्र सम्प्रदाय	शुद्धाद्वैत	विष्णु स्वामी / बल्लभाचार्य	13वीं शताब्दी
सनक सम्प्रदाय	द्वैताद्वैत	निम्बार्क	13वीं शताब्दी

- प्रतिहार के शासक मिहिर भसोज ने विष्णु को निगुण और सगुण दोनों रूपों में स्वीकार करते हुए 'हृषीकेश' कहा।
- केरल का सन्त राजा कुलशेखर विष्णु का भक्त था।
- वामन की उपासना प्रदेश के अलवारों ने चिरकाल तक होती रही। वे वाराह की भी उपासना करते थे।

- **Note :-**
- भगवत गीता मूलतः महाभारत के छठवें पर्व भीष्म पर्व का भाग है।
- यह महाभारत के युद्ध के समय भगवान श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश है।
- इसमें 18 अध्याय तथा 700 छन्द है। इसका प्रथम अंग्रेजी अनुवाद चार्ल्स विल्किंस ने 1785 ई. में लंदन में किया था।
- इसकी प्रस्तावना गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग ने लिखा था।
- गाँधी जी ने इसे 'विश्वमाता' कहकर सम्बोधित किया है।
- सर्वप्रथम इसी में अवतारवाद का विवरण प्राप्त होता है।
- इसमें ज्ञानयोग, भक्तियोग तथा कर्मयोग का अद्भुत समन्वय मिलता हैं।

शैव धर्म

❑ **शैव धर्म**

- शैव धर्म की शुरुआत शुंग-सातवाहन काल में हुई थी और गुप्त काल में यह चरम पर पहुंचा था।
- इसके अनुयायी शिव को सर्वोच्च शक्ति मानकर उनकी पूजा करते हैं।
- इसकी शिक्षाएं वेदों, उपनिषदों, शैव लघु उपनिषदों, और आगमों पर आधारित हैं।
- इसके अनुयायियों को शैव या नयनार कहा जाता है।
- इसमें कई उप-संप्रदाय हैं, जैसे कि पाशुपत, कापालिक, कालमुख, लिंगायत, शाक्त, नाथ, दसनामी, और नाग।
- इसके अनुयायी भगवा या सफ़ेद वस्त्र पहनते हैं।
- इसके अनुयायी भभूति और चंदन का तिलक लगाते हैं और रुद्राक्ष माला पहनते हैं।
- इसमें समाधि देने की परंपरा है।
- इसके अनुयायी चंद्रमा पर आधारित व्रत-उपवास करते हैं।

- इसके अनुयायियों के मंदिर को शिवालय कहते हैं।
- शैवमत का मूलरूप ऋग्वेद में रुद्र की आराधना में हैं।
- 12 रुद्रों में प्रमुख रुद्र ही आगे चलकर शिव, शंकर, भोलेनाथ और महादेव कहलाए।
- **शैव धर्म के पांच मंत्र (पंचमंत्र) बताए जाते हैं-**
  - ईशान (शिव का मस्तक),
  - तत्पुरुष (शिव का मुख),
  - घोर (शिव का हृदय),
  - कामदेव (शिव का गुह्य अंग),
  - संद्योजात (शिव का पाद)।
- **शैव धर्म तीन मूल पदार्थों में विश्वास करता है-**
  - पति - शिव ही पति है।
  - पशु - जीवात्मा ही पशु है।
  - पाश - यह जीवात्मा का बंधन है।
- शैव धर्म के अनुसार, पाश हटने के बाद जीव चैतन्य शिव बन जाता है।
- **पाश से मुक्ति के चार उपाय हैं-** विद्या ,योग ,क्रिया ,तप
- **शैव धर्म के त्रिरत्न हैं-**
  - शिव (कर्ता)
  - शक्ति (कारण)
  - बिंदु (उपादान)
  - इन तीनों के सम्मिलित योग से ही ज्ञान प्राप्ति संभव है।

❑ **शैव सम्प्रदाय**

- **महाभारत में माहेश्वरों (शैव) के चार सम्प्रदाय बतलाए गए हैं:**
  - शैव
  - पाशुपत
  - कालदमन
  - कापालिक।
- **पाशुपत**
  - शैवों का सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है जिसकी उत्पत्ति ई. पूर्व. दूसरी शताब्दी में हुई थी।
  - पुराणों के अनुसार इस सम्प्रदाय की स्थापना लकुलीश अथवा लकुली नामक ब्रह्मचारी ने की थी।
  - इस सम्प्रदाय के अनुयायी लकुलीश को शिव का अवतार मानते हैं।
  - लकुलीश का जन्म गुजरात में कायावरोहण नामक स्थान पर हुआ था।
  - इन्होंने ईसा पूर्व दूसरी सदी में पाशुपत सम्प्रदाय की स्थापना की थी।
  - इस सम्प्रदाय के लोग अपने हाथ में एक लकुट या दण्ड धारण करते थे, जिन्हें शिव का प्रतीक माना जाता था।
  - इसका प्राचीनतम अंकन कुषाण शासक हुविष्क की एक मुद्रा पर मिलता है।
- **कालामुख संप्रदाय** –
  - शिवपुराण में इन्हें महाव्रतधर कहा गया है।
  - नर-कपाल में भोजन करना, सुरा पीना तथा मानव-चिता- भस्म का शरीर पर लेपन इनके कर्म थे।
- **कापालिक संप्रदाय**
  - इस संप्रदाय के ईष्टदेव- भैरव थे तथा इसका केंद्र- श्री शैल नामक स्थान पर था।
  - इस संप्रदाय में भैरव को नरबलि तथा सुरा का भोग लगाया जाता था।
  - सिर पर बड़े बाल, रुद्राक्ष की माला एवं शरीर पर श्मशान की भस्म लगाना आदि इनके प्रमुख लक्षण थे।
  - कापालिकों का उल्लेख भवभूति कृत **'मालती माधव'** ग्रंथ में किया गया है।
  - अघोरी एक अन्य वाममार्गी शैव संप्रदाय था।
- **शैवाद्वैत संप्रदाय**
  - संस्थापक शंभूदेव तथा श्रीकंठ शिवाचार्य थे।
  - श्रीकंठ ने शैवाद्वैत को दार्शनिक रूप में प्रस्तुत किया। शैवाद्वैत संप्रदाय को शिव विशिष्टाद्वैत भी कहा जाता है।
  - इस संप्रदाय में 'परमशिव' को ब्रह्म माना गया है।

❑ **अन्य शैव सम्प्रदाय**

- **कश्मीरी शैव मत**
  - इस संप्रदाय के संस्थापक वसुगुप्त।
  - यह विशुद्ध ज्ञानमार्गी और दार्शनिक संप्रदाय है, जिसमें कापालिकों के घृणित आचारों का निषेध किया गया।
- **लिंगायत / वीरशैव संप्रदाय**
  - इसके प्रवर्तक बसव थे

- इन्हें नंदी का अवतार माना जाता है।
- यह कलचुरि नरेश के मंत्री थे।
- लिंगायत शिवलिंग को चांदी के सम्पुट में रखकर गले में धारण करते है।
- लिंग और नंदी की पूजा करते हैं।
- वे पुनर्जन्म के सिद्धांत को नहीं मानते हैं।
- अक्का महादेवी इस संप्रदाय की प्रमुख महिला संत थीं।
- लिंगायत ब्राह्मण विरोधी थे तथा मूर्तिपूजा, वर्णाश्रम व जाति प्रथा आदि को नकारते हैं।
- ये दाह संस्कार के विरोधी हैं तथा शवों को दफनाते हैं।
- लिंगायत निष्काम कर्म में विश्वास रखते हैं।
- **इस सम्प्रदाय के 5 महापुरुष माने जाते हैं**-रेणुकाचार्य, दारुकाचार्य, एकोरामाचार्य, पंडिताराध्य और विश्वाराध्य। इस मत में निष्काम कर्म को प्रधानता दी गई है।

❑ **शैव धर्म का विकास**

काल	विकास सम्बंधित तथ्य
हड़प्पा काल	शैव धर्म सैंधव सभ्यता से ही मिलना प्रारंभ हो जाती है। मोहनजोदड़ो से पद्मासन मुदा में त्रिमुखी योगी को मार्शल ने शिव देवता बताया है।
वैदिक काल	ऋग्वेद में शिव को 'रुद्र' बताया है। उहुत मुद्राओं पर वृषभ तथा नंदि पद के विद्ध मिलते हैं।
मौर्योत्तर काल	कुषाणों के सर्वाधिक सिक्के शैव धर्म से ही संबंधित हैं। कनिष्क एवं हुविष्क के सिक्कों पर शिव का उल्लेख मिलता है। वासुदेव शैव मतायलंबी था। शक शासक भोग एवं पहलय शासक गोष्योफर्नीस की मुद्राओं पर शिवांकन मिलता है।
गुप्त काल	शिव का पहला उल्लेख हरिषेण रचित प्रयाग प्रशस्ति में गंगा अवतरण के रूप में मिलता है। गुप्तकालीन कवि कालिदास ने 'कुमारसंभव' और रघुवंश में शिव की महिमा का गान किया है। कुमारगुप्त प्रथम के समय में खोह तथा करमदंडा में शिवलिंग की स्थापना हुई। गुप्त काल में नचना कुवार में पार्वती मंदिर तथा मूमरा में शिव मंदिर का निर्माण कराया गया। कुमारगुप्त के सिक्कों पर मयूर पर बैठे कार्तिकय की आकृति मिलती है। स्कंदगुप्त ने शिव के सम्मान में वृषभ प्रकार के सिक्के चलवाए।
वर्द्धन काल	बौद्ध धर्म अपनाने से पहले हर्ष वर्द्धन शैव था। मधुबन ताम्रपत्र से हर्ष की उपाधि तथा शैव होने का उल्लेख मिलता है। हर्ष का दरबारी कवि बाणभट्ट शैव थे हर्ष का समकालीन, गौड़ नरेश शशांक भी कट्टर शैव था। मेगस्थनीज ने शिव को 'डायनीसस' कहा हैं। पतंजलि, मौर्य सम्राटों द्वारा शिव व स्कंद की प्रतिमाएं बनाकर बेचे जाने का उल्लेख करते हैं।
राजपूत काल	राजपूत काल में चंदेलों ने खजुराहो में कन्दरिया महादेव का मंदिर बनवाया। कलचुरि, परमार, प्रतिहार, सेन, चंदेल, चेदि, गहड़वाल आदि राजपूत शासकों ने समय-समय पर शिव की आराधना की थी।
राष्ट्रकूट	कृष्ण प्रथम ने एलोरा में प्रसिद्ध शिव मंदिर का निर्माण करवाया
पाल शासक	नारायण पाल ने बौद्ध होते हुए भी एक सहस्री शिव मंदिरों का निर्माण करवाया। विग्रहपाल ने भी शिव मंदिर बनवाया। पाल राजाओं ने पाशुपत संप्रदाय के लिए शिवालयों की स्थापना की। पाल युग में असम, बंगाल और उड़ीसा में अनेक शिव मंदिर बने।
चालुक्य शासक(गुजरात)	भीम प्रथम ने सोमनाथ के प्रस्तर मंदिर का निर्माण करवाया। महमूद गजनवी द्वारा तोड़ दिए जाने पर कुमारपाल ने सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
दक्षिण भारत	दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाले प्रमुख नयनार संत थे

- **Note:-**
- शिव की प्राचीनतम मूर्ति चेन्नई के निकट रेन्निगुंटा के गुण्डिमल्लम से मिली **'गुण्डिमलमलिंग'** है।
- प्रमुख नयनार संत थे-सुंदरमूर्ति, अप्पार, तिरुग्नन सम्बन्दर, माणिक्कवाचगर, नाम्बिआन्दार नाम्बि आदि।
- श्वेताश्वर उपनिषद में कहा गया है कि न सत् है न असत् है केवल शिव है।
- शैव धर्म से संबंधित द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं -सोमनाथ, नागेश्वर (द्वारका के समीप), केदारनाथ, विश्वनाथ (काशी), वैद्यनाथ, महाकालेश्वर (उज्जैन), ओंकारेश्वर (म.प्र.), भीमेश्वर (नासिक), त्र्यम्बकेश्वर (नासिक), घुश्मेश्वर (राजस्थान), मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश), रामेश्वरम्।

❑ **दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रारंभ:**

- शैव धर्म की जड़ें दक्षिण भारत में बहुत पुरानी हैं।
- यहां शिव की पूजा व्रत, अनुष्ठान और तपस्या के रूप में प्रारंभिक काल से ही होती रही है।

- यह भूमि शिव के विविध रूपों की उपासना और धार्मिक ध्यान का गढ़ रही है।
- दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रमुख प्रचार तीर्थ और मंदिरों के माध्यम से हुआ।
- इन मंदिरों में शिव की पूजा के विभिन्न रूपों को प्रतिष्ठित किया गया और लोक समाज में भी शैव धर्म का व्यापक प्रभाव पड़ा।
- **दक्षिण शैव संतों का योगदान:**
  - संतों और भक्तों ने शैव धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से नयनमार संतों का योगदान उल्लेखनीय है।
  - **आदिगुरु शंकराचार्य (788 A.D.-820 ई.)**
    - **जन्म :** कालडी ग्राम (केरल)
    - **मृत्यु :** केदारनाथ (उत्तराखण्ड)
    - **गुरु :** गोविन्द योगी
    - **मठ :-** उत्तर दक्षिण पूर्व और पश्चिम
      - **ज्योर्तिमठ :** बद्रीधाम (उत्तर)
      - **श्रृंगेरीमठ :** रामेश्वरम् (दक्षिण)
      - **गोवर्धनमठ:** जगन्नाथपुरी (पूर्व)
      - **शारदामठ** : द्वारिका पुरी (पश्चिम)
  - **नयनमार**
    - नयनमार (शैव संत) ने भगवान शिव की भक्ति में अपने जीवन को समर्पित किया और उनका काव्य शैव भक्ति को लोकप्रिय बनाने में सहायक रहा।
    - **इनके प्रमुख संत** - कवियारासि, तीरुणा, संत तिरुनावुकारसार, और अम्बा थे।
    - **इनके प्रमुख महिला संत -** कारइक्काल अम्मईयार, मंगयरक्करसियार व इसइननियार हैं।
    - इन शैव संतों ने कैवल्य योग, उपासना, और शिव तंत्र के माध्यम से शैव धर्म का प्रचार किया। उन्होंने शिव के लिंग रूप की पूजा, साथ ही शिव के अन्य रूपों जैसे नटराज, भिक्षाटन, और दक्षिणामूर्ति को भी भक्तों के बीच प्रसारित किया।
  - **नयनारों के प्रमुख ग्रंथ हैं-**
    - **तीवरम-** इसमें नयनारों के भजनों का संकलन है।
    - **तिरुवाशगम-** यह नयनार संत मणिक्कवाचगर के भक्ति गीतों का संकलन है।
    - **पेरियपुराणम-** यह 63 नयनारों की गाथा है, जिसका संकलन नम्बी अंडार नम्बी द्वारा किया गया है।
    - **तिरुत्तोष्कार तिरुवन्तति-** नम्बी अंदार नंबी रचित इस ग्रंथ में संतों के चरित्र का वर्णन है।
    - **तिरुमुरई-** यह नयनार संतों की अंतिम कृति है।
  - शैव एवं पाशुपत संप्रदाय के प्रारंभिक साहित्य को 'आगम' कहा जाता है।
  - आगमों की संख्या 14 एवं भाषा तमिल है।
  - इनका रचना काल लगभग 1400 ई. के आस-पास है।
  - 'आगम' शैव धर्म की बाइबिल के नाम से भी जा है।
- **चोल साम्राज्य और शैव धर्म:**
  - चोल साम्राज्य (9वीं से 13वीं शताब्दी) के दौरान शैव धर्म का सबसे अधिक विकास हुआ।
  - इस साम्राज्य ने शिव के मंदिरों को प्रायोजित किया और शैव धर्म के लिए एक सशक्त संस्थान स्थापित किया।
  - चोलों ने प्रमुख शिव मंदिरों का निर्माण किया, जैसे कि बृहदेश्वर मंदिर (तंजावुर), उद्धनलूर और गंगईकोंडा चोलपुरम।
  - इन मंदिरों में शिव की पूजा का महत्व बढ़ा और उन्होंने शैव धर्म की धारा को मजबूत किया।
  - चोल सम्राटों ने शिव के लिंग रूपों की पूजा को बढ़ावा दिया और देवालयों में लिंग पूजा के अनुष्ठान को प्रोत्साहित किया।

शाक्त धर्म

❑ शाक्त धर्म

- इस सम्प्रदाय में शक्ति को इष्ट देवी मानकर पूजा की जाती थी।
- शाक्त सम्प्रदाय का शैव मत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- इस आदि शक्ति या देवी की पूजा का स्पष्ट उल्लेख महाभारत में प्राप्त होता है।
- पुराणों के अनुसार शक्ति की उपासना मुख्यतया काली और दुर्गा की उपासना तक ही सीमित है।
- वैदिक काल में उमा, पार्वती, अम्बिका, हेमवती, रुद्राणी और भवानी जैसे नाम मिलते हैं।
- ऋग्वेद के 'दशम मण्डल' में एक पूरा सूक्त ही शक्ति की उपासना से संबन्धित है; जिसे तान्त्रिक देवी सूक्त कहते हैं।
- चौसठ योगिनी का मन्दिर (जबलपुर) शाक्त धर्म के विकास और प्रगति को प्रमाणित करने का साक्ष्य उपलब्ध है।
- उपासना पद्धति - शाक्तों के दो वर्ग हैं- कौलमार्गी और समयाचारी।
- कौल मार्गी पंचमकार की उपासना करते हैं; जिसमें मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन है, जो 'म' से प्रारम्भ होते हैं।
- देवी की उपासना तीन रूपों में की जाती थी।
  - **ये रूप हैं-** सौम्य रूप, उग्र और काम प्रधान रूप।
  - सौम्य रूप- उमा पार्वती लक्ष्मी
  - उग्र रूप- - चंडी दुर्गा भैरवी कपाली
  - काम प्रधान रूप- कामाख्या
- शाक्त धर्म से संबंधित प्रमुख मंदिर
  - वैष्णो देवी का मंदिर (जम्मू)
  - विंध्यवासिनी देवी का मंदिर (विंध्याचल)

- चौसठ योगिनी का मंदिर, (भेड़ाघाट, मध्य प्रदेश)
- पार्वती मंदिर (नाचना कुठार, मध्य प्रदेश)
- कामाख्या मंदिर (असम)
- दक्षिणेश्वर काली मंदिर (कोलकाता)

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के प्रणेता गौतम बुद्ध (सिद्धार्थ) थे। गौतम इनके गौत्र का अविधान था।

❑ जीवन परिचय

- **जन्म -** कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी (आधुनिक रूमिन्नदेई)
- **पिता -** शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्यगण प्रधान)
- **माता -** मायादेवी (कोलिय गणराज्य की कन्या)
- **बचपन का नाम -** सिद्धार्थ
- **पालन-पोषण -** विमाता प्रजापति गौतमी
- **पत्नी -** यशोधरा (शाक्य कुल की कन्या)
- **पुत्र** – राहुल (**अर्थ** – बंधन)
- **घोड़े का नाम -** कंथक
- **सारथी का नाम -** चन्ना

❑ बुद्ध के जीवन की महत्पूर्ण घटनाये

- सिद्धार्थ के जन्म के समय **कालदेव** और **कौण्डिन्य** ने भविष्यवाणी की थी कि यह बड़ा होकर या तो बहुत बड़ा संन्यासी बनेगा या कोई चक्रवर्ती सम्राट बनेगा।
- सामान्य राजकुमार का जीवन जीते हुए बुद्ध के जीवन में भोग एवं इसकी विलासिता के बीच एक एकाकीपन था।
- **चार विशिष्ट दृश्य का प्रभाव माना जाता है -** वृद्ध व्यक्ति, बीमार व्यक्ति, मृत व्यक्ति, निद्वंद्व संन्यासी।
  - इन दृश्यों को देखने के पश्चात् गौतम बुद्ध भौतिक जीवन की वास्तविकता से परिचित हुए और संन्यास धारण किया।
- गौतम बुद्ध ने 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग दिया, जिसे बौद्ध साहित्य में **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया है।
- गौतम ने विभिन्न संन्यासियों से शिक्षा ग्रहण की। सर्वप्रथम वैशाली के पास **आलार कलाम** के आश्रम में तपस्या किया, जो **सांख्य दर्शन** के आचार्य थे। उनसे उन्होंने **उपनिषद्** की शिक्षा ग्रहण की।
- इसके बाद राजगृह में रूद्रक **रामपुत्त** से मिले और वहाँ **योग** की शिक्षा ली। किंतु वहाँ भी संतुष्ट नहीं हुए। तत्पश्चात् **उरुवेला (गया)** में पाँच ब्राह्मण के पास पहुँचे तथा निरंजना नदी के किनारे, **पीपल वृक्ष** के नीचे कठोर तपस्या आरंभ कर दी।
- छह वर्ष के पश्चात् कठोर तपस्या से असंतुष्ट गौतम कुछ नर्तकियों का गीत सुन मध्यमार्ग की ओर प्रेरित हुए।
- गौतम बुद्ध द्वारा सुजाता के हाथ से खीर खाने के कारण उनके पाँच ब्राह्मण साथी साथ छोड़कर सारनाथ चले गये।
- 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की रात को 49 दिन की साधना के बाद उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। इस अवधि में असुर कामदेव (मार) ने तपस्या में व्यवधान भी डाला।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध (प्रकाशमान, जागृत) कहलाए यानि उन्हें दुःख के कारणों का पता लग गया।
- **बुद्ध के अन्य नाम :** तथागत (वह जो सत्य को प्राप्त करे), शाक्यमुनि (शाक्यों का गुरू)
- सबसे पहले **तपस्सु** और **मलिक** नामक दो बंजारों को उपदेश देकर अपना अनुयायी बनाया।
- निर्वाण प्राप्त करने के बाद वे ऋषिपत्तन (सारनाथ) गये, जहाँ पाँच ब्राह्मण संन्यासियों (कौडिन्य, आज, अस्सजि, वप्प, भद्दीय) को पहला उपदेश दिया। यह घटना **धर्मचक्र प्रवर्तन** कहलाती है।
- सारनाथ से उरुवेला जाते समय भद्र सहित 30 धनी युवकों को अपना शिष्य बनाया।
- इसके बाद राजगृह गये जहाँ बिंबिसार ने बेणुवन दान किया तथा सारिपुत्र, मौदग्लायन्, उपालि, अभय आदि शिष्य बने। उन्होंने राजगृह में ही रहते हुए कपिलवस्तु की यात्रा की जहाँ अपने परिवार को दीक्षित किया तथा शाक्यों के नवनिर्मित संस्थागार का भी उद्घाटन किया।
- राजगृह के बाद **वैशाली** गये जहाँ लिच्छवियों द्वारा महावन में कूटाग्रशाला निर्मित कराया गया। यहीं पहली बार आनंद के कहने पर महिला को **(पहली महिला गौतमी प्रजापति, दूसरी महिला - आम्रपाली)** संघ प्रवेश की अनुमति मिली तथा उनके लिए भिक्षुणी संघ बना। उन्होंने श्रावस्ती में ही **अंगुलिमार नामक डाकू** को शिष्य बनाया।
- मल्ल की राजधानी पावा में चंद नामक लुहार की आम्र वाटिका में ठहरे जहाँ सुकरमद्दव खाने से **अमातिसार** हो गया।
- वहाँ से वे कुशीनगर पहुँचे, जहाँ 483 ई.पू. में 80 वर्ष की आयु में शरीर त्याग दिया। यह घटना **महापरिनिर्वाण** कहलायी।
- **निर्वाण का शाब्दिक अर्थ है :** बाती का बुझ जाना, यानि कामना का अंत होना।
- मृत्यु से पूर्व उन्होंने कहा 'सभी सांधातिक वस्तुओं का विनाश होता है, परिश्रम के साथ चेष्टा करो।'
- बुद्ध ने **सुभद्द** को उपदेश देकर अपना अंतिम शिष्य बनाया।
- बुद्ध ने अंतिम वर्षाकाल वैशाली में बिताया। मल्लों द्वारा उनका अंत्येष्टि संस्कार किया गया।
- उनके शरीर धातु के आठ भाग विभिन्न राजाओं को दिए गए, जिस पर स्तूपों का निर्माण किया गया।
  - **ये राजा हैं :-**
    - पावा तथा कुशीनारा के मल्ल

- कपिलवस्तु के शाक्य
- वैशाली के लिच्छवि
- अलकल्प के बुलि
- रामग्राम के कोलिय
- पिप्पलिवन के मोरिय
- बेठद्वीप के ब्राह्मण
- मगधराज अजातशत्रु

❑ **बौद्ध दार्शनिक सिद्धांत**

■ **बौद्ध मत के प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत निम्नलिखित हैं** –

○ चार आर्य सत्य

- **दुःखवाद -** संसार दुःखमय हैं
- **दुःख समुदाय -** दुःख का कारण
- **दुःख निरोध -** दुःख को रोका जा सकता हैं
- **दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा -** दुःख रोकने का मार्ग

■ **दुःखवाद -**

○ यह कर्मफल उत्पन्न करने वाले अज्ञानरूपी चक्र अर्थात् प्रतीत्य (इसके होने से) समुत्पाद (यह उत्पन्न होता है) है। प्रतीत्य-समुत्पाद मध्यम मार्ग का परिचायक है।

○ यह वस्तुओं की परिवर्तनशीलता को मानता है तथा सापेक्ष कारणतावाद को स्थापित करता है। प्रतीत्य समुत्पाद में 12 चक्र हैं।

○ बौद्ध दर्शन का समस्त परवर्ती सिद्धांत प्रतीत्य समुत्पाद पर निर्भर है। इस सिद्धांत से कर्मवाद की स्थापना होती है।

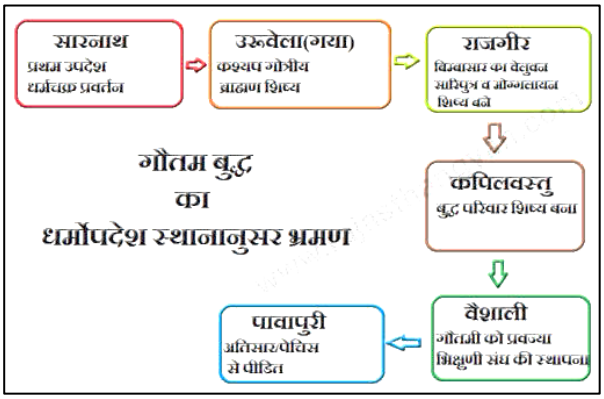

■ **दुःख समुदाय -** दुःख का कारण

○ द्वितीय आर्य सत्य (दुःख समुदाय) से प्रत्यीत्य-समुत्पाद का सिद्धांत प्राप्त होता है।

○ इसी से क्षणभंगवाद सिद्धांत की उत्पत्ति भी होती है।

○ प्रतीत्य-समुत्पाद का अर्थ है: प्रतीत्य (इसके होने से), समुत्पाद (अन्य की उत्पति)। यह कर्मफल उत्पन्न करने वाला अज्ञान रूपी चक्र है।

■ **दुःख निरोध**

○ अविद्या तथा तृष्णा (आसक्ति) का त्याग दुःख दूर करने के रास्ते को सुगम करता है।

■ **दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा-**

○ यह अष्टांगिक मार्ग द्वारा संभव है, जिन्हें तीन स्कंदों शील, समाधि तथा प्रज्ञा में बाँटा गया है।

○ शील तथा समाधि से प्रज्ञा की प्राप्ति होती है।

■ **आष्टांगिक मार्ग**

○ **सम्यक् दृष्टि**: वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होना अर्थात् सुख के मिथ्यात्व का ज्ञान।

○ **सम्यक् संकल्प**: आर्य सत्यों के पालन का निश्चय।

○ **सम्यक् वाक्**: असत्य न बोलना, किसी की निंदा या चुगली न करना, अप्रिय वचन न बोलना।

○ **सम्यक् कर्मांत**: अपने जीवन में हिंसा, स्तेय आदि बुरे कर्मों का परित्याग।

○ **सम्यक् आजीव**: ईमानदारी से जीविकोपार्जन करना।

○ **सम्यक् व्यायाम**: बुरे विचारों को मन से बाहर निकालना तथा अच्छे विचारों को लाना।

○ **सम्यक् स्मृति**: वास्तविक ज्ञान के प्रति जागरूक बने रहना।

○ **सम्यक् समाधि**: गहन ध्यान करना जिसकी अंतिम स्थिति में निर्वाण की अवस्था आ जाती है।

■ **पंचमहाव्रत हैं-**

○ अहिंसा

○ अपरिग्रह

○ असत्य न बोलना

○ नशे का सेवन न करना

○ ब्रह्मचर्य (दुराचार से दूर रहना)।

■ **चार ऋद्धिपाद-**

○ छन्द (प्रबल इच्छा)

○ वीर्य (पराक्रम)

○ चित्त (चेतना)

○ मीमांसा (विमर्श)

■ **5 इंद्रियाँ-**

○ श्रद्धा (बुद्ध, धम्म एवं संघ के प्रति श्रद्धा)

○ वीर्य

- स्मृति
- समाधि
- प्रज्ञा

- **बौद्धधर्म के त्रिरत्न**

- बुद्ध
- धम्म
- संघ

- **अनात्मवाद -** आत्मा नहीं है।
- **क्षणिकवाद -** शरीर क्षणभंगुर है तथा पाँच स्कंधों - रूप, संज्ञा, वेदना, विज्ञान, संस्कार से बना है।
- **कर्मवाद -** कर्मफल शेष रहने पर पुनर्जन्म होता है।
- **अनीश्वरवाद -** ईश्वर की सत्ता अस्वीकार।
- **पंचशील :** हत्या, चोरी, व्यभिचार, असत्य, मादक द्रव्यों से दूर रहना।
- **सबसे पवित्र दिन है-** वैशाख पूर्णिमा- इसी दिन बुद्ध का जन्म, निर्वाण (ज्ञान प्राप्ति) तथा महापरिनिर्वाण (मृत्यु) हुई।
- **शंकराचार्य** पर बौद्ध धर्म के तर्क के प्रभाव के कारण ही उन्हें **प्रच्छन्न बौद्ध** कहा जाता है।

बौद्ध परिषद	वर्ष	स्थल	राजा	अध्यक्षता
प्रथम	483 ई.पू	राजगृह	अजातशत्रु	महाकश्यप उपाली
द्वितीय	383 ई.पू	वैशाली	कलासोका	सबकामी
तीसरी	236 ई.पू	पाटलिपुत्र	अशोका	मोगलीपुट्टा तिस्सा
चौथी	72 ई	कुंडलवन	कनिष्क	वसुमित्र

❑ **बौद्ध संघ-**

- ऋषिपत्तन (सारनाथ) में अपने प्रथम पाँच ब्राह्मण शिष्यों के साथ बुद्ध ने संघ की स्थापना की।
- संघ बुद्ध के सामाजिक संकल्पना का व्यावहारिक रूप है।
- यह लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ विकसित हुआ और इसमें मानवीय समतावाद पर बल दिया है।
- संघ में प्रवेश के लिए माता-पिता की अनुमति आवश्यक थी।
- 15 वर्ष से कम आयु वालों, अस्वस्थ (रोगी), विकलांग, चोरों, अपराधियों, दासों, राजा के सेवकों, सैनिकों, कर्जदारों को संघ में प्रवेश नहीं दिया जाता था।
- 15 वर्ष की अवस्था (न्यूनतम्) में श्रमणेर/श्रमण के रूप में संघ में प्रवेश दिया जाता था।
- गृहस् जीवन का त्याग **प्रवज्या** कहलाता था।
- इन्हें दस नियमों (शिक्षाप्रद) का पालन करना होता था।
- योग्यता होने पर बाद में उसे उपसंपदा के माध्यम से भिक्षु का दर्जा दिया जाता था।
- संघ का अध्यक्ष चयनित होता था। उसे संघ के सदस्यों के मतानुसार कार्य करना होता था एवं अत्यंत महत्वपूर्ण फैसले अध्यक्ष एक परिषद के साथ मिलकर करता था।
- संघ में कोई भी कार्य संपादित करवाने के लिए प्रस्ताव (नति/वृत्ति) पेश किया जाता था। सारी बातें मतदान पर निश्चित होती थीं। प्रस्ताव पाठ को **अनुसावन** कहते थे।
- विशेष अवसर पर होने वाली धर्मवार्त्ता को **उपोसथ** तथा **वस्स** (भिक्षुओं को वर्षाकाल में एक जगह स्थिर रहना पड़ता था, जिसे वस्स कहा जाता था) की समाप्ति पर होने वाली अपराध स्वीकृति को **पत्तिमोक्ख पवारण** कहते थे ।
- बुद्ध ने किसी को भी अपना उत्तराधिकारी घोषित नहीं किया।

❑ **बुद्ध के प्रमुख शिष्य -**

- **आनंद-** बुद्ध के चचेरे भाई थे इनका प्रारंभिक नाम स्थविर था।
- भिक्षु बनने के बाद यह आनंद नाम से जाने गए इन्होने ही सुत्तपिटक की रचना की।
- इनकी निवेदन पर ही वैशाली में बुद्ध ने महिलाओं को संघ में प्रवेश दिया था।
- **उपालि -** विनयधर उपालि , उपालि भाषा के महान विद्वान थे
- इन्होने विनयपिटक की रचना की।
- यह नाई जाति से सम्बंधित थे।
- **महाकश्यप -** यह मगध के एक ब्राह्मण बौद्ध भिक्षु थे जिन्होंने प्रथम बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की।
- **अंगुलिमाल -** यह श्रावस्ती के एक कुख्यात डाकू थे जो बाद में बौद्ध भिक्षु बन गए।
- **आम्रपाली -** यह वैशाली की नगरवधू थी जिसने अपने समस्त वैभव को बौद्ध भिक्षुओं को दान कर दिया और स्वयं बौद्ध धर्म को धारण किया।
- **कौण्डिन्य -** सारनाथ के धर्मचक्र परिवर्तन के समय कौण्डिन्य के साथ अन्य **चार भिक्षु -** अस्सजी , आंज , वप्प, और भद्दीय ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।

❑ **प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक एवं विद्वान**

- **अश्वघोष -** कवि, नाटककार, संगीतकार, विद्वान तथा तर्कशास्त्री थे।
- बुद्धचरित (बुद्ध के जीवन पर आधारित महाकाव्य), सौन्दरानंद, सारिपुत्र प्रकरण (प्रथम नाटक) इनकी प्रमुख रचना है।
- **नागार्जुन-** शून्यवाद के नाम से प्रसिद्ध माध्यमिक धारा के प्रणेता।

- प्रथम सदी ईस्वी में चीन जाकर बौद्ध कृतियों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।
- **असंग एवं वसुष-** दोनों भाई थे। पंजाब के बौद्ध भिक्षु थे।
- मूलतः सर्वास्तिवाद संप्रदाय से संबंधित थे।
- योगाचार धारा के प्रणेता मैत्रेयनाथ असंग के गुरू थे।
- **वसुबंधु -** अभिधम्मकोष तथा त्रिशिका (इसका ह्वेनसांग ने चीनी भाषा में अनुवाद किया) की रचना की।
- वसुबंधु ने चौथी सदी ईस्वी में नेपाल की यात्रा की।
- **दिगनाग-** पाँचवीं सदी के महान पाली विद्वान उनकी रचना विशुद्धिमग्ग को त्रिपिटक की कुंजी माना जाता है।
- पाँचवी सदी के महान बुद्धिजीवी, तर्कशास्त्र के प्रवर्तक थे।
- मध्यकालीन न्याय के जनक के रूप में प्रसिद्ध है।
- **आर्यदेव, शांतिदेव, संतरक्षित, कमलशील-** शून्यवाद के विद्वान थे।
- **धर्मकीर्ति-** सातवीं सदी के एक महान बौद्ध नैयायिक थे। वे सूक्ष्म दार्शनिक चिंतक तथा भाषा वैज्ञानिक थे।

❑ **बौद्ध धर्म के अष्ट महास्थान**

- **अष्ठमहास्थान :-** लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकाशी, राजगृह एवं वैशाली।
- इन आठों स्थल को अष्ट महास्थान कहा जाता है।
- बुद्ध ने धर्म प्रचार के दौरान सबसे ज्यादा समय श्रावस्ती में बिताया।
- पश्चिमी भारत के अधिकांश स्थल शैल निर्मित गुफाओं के रूप में हैं।

❑ **बुद्ध से संबंधित प्रतीक चिन्ह -**

- उनके जीवन से जुड़े चार पशु प्रमुख हैं।
- **हाथी -** बुद्ध के गर्भ में आने का प्रतीक
- **सांड -** यौवन
- **घोड़ा -** गृह त्याग
- **शेर -** समृद्धि
- **बोधिवृक्ष और नीचे में वज्रासन -** ज्ञान की प्राप्ति
- **चक्रम -** पदयात्रा का प्रतीक
- **चक्र-** धर्मचक्र प्रवर्तन
- **स्तूप -** मृत्यु का प्रतीक
- हीनयान में उनका प्रतिनिधित्व निम्नलिखित प्रतीकों के माध्यम से किया जाता था।

❑ **बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण और प्रसार**

- बिम्बिसार , अजातशत्रु, प्रसेनजित, प्रधोत आदि ने संरक्षण दिया।
- आगे चलकर अशोक ने इसके प्रचार के लिए विदेशों में प्रचारक भेजे।
- बौद्ध विद्वान अश्वघोष, वसुमित्र, पार्श्व, कनिष्क के समकालीन थे। इसी समय इसका प्रचार चीन हुआ।
- चीनी यात्री फाह्यान (फो-क्यो-की), इवेनसांग (सी-यू-की), शुंगयून, इत्सिंग बौद्ध धर्म से प्रभावित थे।
- ह्ववेनसांग के अनुसार हर्ष महायान संप्रदाय का अनुयायी था।
- पाल शासक बौद्ध धर्म के अंतिम महान संरक्षक थे। इसी समय बौद्ध धर्म में तंत्रवाद का विकास हुआ।
- धर्मपाल ने **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** की स्थापना की जबकि देवपाल **नालंदा विश्वविद्यालय** का संरक्षक था।
- 12वीं सदी में तुर्की आक्रमण के साथ बौद्ध धर्म का अंत हो गया। तुर्कों ने नालंदा, विक्रमशिला, ओदंतपुरी को लूटा।

❑ **बौद्ध संप्रदाय-**

- **स्थविरवादी -**परंपरावादी सबको बुद्धत्व प्राप्त नहीं हो सकता था। इसका मुख्य पीठ कश्मीर में था।
- द्वितीय संगीति के बाद स्थविरवादी को ही महासांघिक हीनयानी कहने लगे।
- इन्हे थेरवादी भी कहा जाता था।
- **महासांघिक -** प्रत्येक व्यक्ति में बुद्धत्व प्राप्ति की स्वाभाविक शक्ति है।
- इसका प्रधान केन्द्र मगध में था। बाद में महासांघिकों ने ही महायान के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।
- **हीनयान -** बुद्ध की मूल शिक्षा में विश्वास, मूर्तिपूजन में अविश्वास (प्रतीक चिन्हों की पूजा)।
- इसकी प्रमुख शाखा - सर्वस्तिवाद, सौतांत्रिक, सामित्य।
- बाद में भारत में इसकी लोकप्रियता समाप्त हो गई, पर श्रीलंका, वर्मा, कम्बोडिया, लाओस तथा थाइलैंड में यह विकसित हुआ।
- **समित्य :** हीनयान की सबसे आगे की धारा जो बौद्ध धर्म के अनात्मवाद को अस्वीकार करते हुए मानता है कि आत्मा है और इसी का पुनर्जन्म होता है।
- **वैभाषिक -** वैभाषिक संप्रदाय इसका आधार विभाषाशास्त्र नामक बौद्ध ग्रंथ है।
- इसकी उत्पत्ति का केंद्र कश्मीर में माना जाता है।
- इसका सर्वाधिक प्रचार गांधार में हुआ।
- इस मत को बाह्य प्रत्यक्षवाद भी कहा जाता है, जिसके अनुसार बाह्य जगत का ज्ञान प्रत्यक्ष से ही संभव है।
- **इसके आचार्य हैं-** वसुमित्र, बुद्धदेव, धर्मत्रात् और घोषक।

- **सौतांत्रिक -** इसका मुख्य आधार वैभाषिक के प्रतिकूल सूत्त है अतः इसे सौतांत्रिक कहा गया।
  - चित्त एवं बाह्यजगत की सत्ता विद्यमान है। किंतु इसका प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो सकता।
  - इसका ज्ञान हम अपने ही मन में बने प्रतिबिम्ब के आधार पर करते हैं।
  - वाह्य वस्तु का प्रतिविम्ब मन में बनता है, इसी से बाह्य सत्ता का बोध होता है।
  - **इसके प्रमुख आचार्य -** कुमारलाट, श्रीलाभ और यशोमित्र।
- **महायान-** इसकी उत्पत्ति ग्रीक आदि आक्रमण, ईसाई प्रभाव, ब्राह्मण संशोधनवाद, विस्तार की अपेक्षा, दार्शनिक आधार की आवश्यकता के मद्देनजर हुई।
  - इसे बोधिसत्वयान भी कहा जाता है।
  - इसका अर्थ बृहतयान अर्थात् अधिकाधिक प्राणियों को निर्वाण सुख की प्राप्ति का महापथ गृहस्थों के लिए भी संभव।
  - कालांतर में पूजा-पाठ भी करने लगे (मूर्ति पूजा भी)।
  - इसमें सुखावति (स्वर्ग) की परिकल्पना भी उभरकर आयी, जिसके अभिभावक अमिताभ हैं।
- **माध्यमिक या शून्यवाद -** प्रतिपादक नागार्जुन (पुस्तक माध्यधिककारिका)।
  - इस मत के प्रवर्तक नागार्जुन हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना माध्यामिक कारिका एवं प्रज्ञापारमितासूत्र हैं।
  - प्रज्ञापारमितासूत्र में महात्मा बुद्ध के मध्यममार्ग का विकास दिखता है।
  - नागार्जुन के अनुसार "यदि संसार मिथ्या है, तो निर्वाण भी मिथ्या है।"
  - इस चिंतन को शून्यवाद या सापेक्षतावाद भी कहा जाता है।
  - इस दर्शन को आइटिन के सापेक्षवाद का पूर्वगामी भी माना जाता है।
  - **इस मत के अन्य विद्वान हैं-** चंद्रकीर्ति, शांतिदेव , आर्यदेव, शांतिरक्षित
- **योगाचार या विज्ञानवाद :-** तीसरी शताब्दी ई. में **मैत्रेय** द्वारा स्थापित किया गया।
  - शून्यवाद के ही समान यह भी बाह्य वस्तु की सत्ता को अस्वीकार करता है किंतु चित्त की सत्ता को मानता है।
  - चित्त को ही विज्ञान मानता है जिसमें बाह्य सत्ता के अस्तित्व की प्रतीति मात्र होती है। चित्त की प्रवृत्ति ही पुनर्जन्म का कारण है।
  - **इसके अन्य विद्वान-** असंग (इनकी पुस्तक सूत्रालंकार), वसुबन्धु, धर्मकीर्ति, स्थिरमति, दिगनाग (बौद्ध तर्कशास्त्र के जनक) आदि थे।

❑ **बोधिसत्व**

- बोधिसत्व महायान द्वारा प्रस्तुत आदर्श है।
- बोधिसत्व वह है, जिसने बुद्धत्व की प्राप्ति हेतु आवश्यक बोधचित्त (सहज इच्छा व करुणा) विकसित कर लिया है।
- यद्यपि स्वयं की मोक्ष प्राप्ति के बाद भी वह दूसरे प्राणियों की मुक्ति हेतु निरंतर प्रयासरत है।
- जातक कथाओं के अनुसार बुद्ध अपने पूर्वजन्मों में बोधिसत्व थे।
- बोधिसत्व द्वारा 10 पारमिताओं एवं दस भूमियों को पार करना आवश्यक है।
- बोधिसत्व को महासांधिकों द्वारा उपपादुक (स्वतः उत्पन्न) एवं सर्वास्तिवादियों द्वारा जरायुज माना जाता है।

हीनयान एवं महायान में अंतर

हीनयान	महायान
हीनयान का शाब्दिक अर्थ है- निम्न मार्ग।	महायान का शाब्दिक अर्थ है- उत्कृष्ट मार्ग।
यह दुखवादी दर्शन है जो मानता है कि इच्छा आदि को त्याग कर धम्मचक्र परिवर्तन सुत्त के अनुसार अर्हत की प्राप्ति कर सकते हैं	यह एक उदारवाद दर्शन है जो मानता है कि स्वयं को मोक्ष प्रदान करना अपर्याप्त है। सभी को मोक्ष मिल सकता है अतः इस आधार पर उन्होंने बोधिसत्व की संकल्पना विकसित की
यह व्यक्तिवादी धर्म है। इसके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रयत्नों से ही मोक्ष प्राप्त करना चाहिए।	इसमें परोपकार एवं परसेवा पर बल दिया गया। इसका उद्देश्य समस्त मानव जाति का कल्याण है।
हीनयान बुद्ध को भी एक शिक्षक के रूप में देखते हैं एवं उनके प्रतीक सम्बद्ध स्थल को ही महत्व देते हैं।	महायानी बुद्ध को देवता मानते हैं और उनकी मूर्ति पूजा करते हैं
भाषा- पाली	भाषा- संस्कृत
यह मूर्तिपूजा एवं भक्ति में विश्वास नहीं करते है।	यह मूर्तिपूजा एवं भक्ति में विश्वास करते है।
बुद्ध मानव के रूप में मानते हैं	बोधिसत्व (बुद्ध प्राक् रूप) के रूप में मानते हैं
यह आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते है।	यह आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते है।
इसकी साधन पद्धति अत्यंत कठोर है तथा यह भिक्षु जीवन का समर्थक है।	इनके सिद्धांत सरल एवं सर्व- साधारण के लिए सुलभ हैं।
इसका आदर्श 'अर्हत' पद को प्राप्त करना है।	इसका आदर्श 'बोधिसत्व' है।
इसके प्रमुख संप्रदाय हैं- वैभाषिक तथा सौत्रांतिक।	इसके प्रमुख संप्रदाय हैं- शून्यवाद (माध्यमिक) तथा विज्ञानवाद (योगाचार)।
प्रसार- मुख्यतः भारत में रहा।	**प्रसार -** भारत मध्य एवं दक्षिण एशिया के साथ ही संपूर्ण विश्व में
हीनयान त्रिकाय की संकल्पना का खंडन करता है।	महायान त्रिकाय (धर्मकाय, निर्माणकाय एवं संभोगकाय) का समर्थक है।
हीनयानी आत्मा को नहीं मानते हैं।	महायानी आत्मा को मानते हैं।

- **Note :-**
- **त्रिकाय -** धर्मकाय, निर्माणकाय एवं संभोगकाय

❑ बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की तुलना

- बौद्ध एवं जैन दोनों ही धर्म छठी शताब्दी ई.पू. से प्रारंभ हुए
- दोनों ही द्वितीय नगरीकरण प्रसूत सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संक्रियाओं का परिणाम थे।
- दोनों के प्रमुख प्रवर्तक गौतम बुद्ध एवं महावीर भी समकालीन थे।
- विनय पिटक महावीर व बुद्ध को समकालीन बताता है।
- दीघ निकाय के सामन्नफलसुत्त एवं जैन ग्रंथ स्थानंग के अनुसार भी ये समकालीन थे।
- बौद्ध ग्रंथों में महावीर को निगन्थनाथपुत्त कहा गया है, उनकी मृत्यु बुद्ध से पहले होने का वर्णन भी मिलता है।
- मज्झिमनिकाय में बुद्ध व महावीर की भेंट तथा बुद्ध द्वारा महावीर की प्रशंसा का उल्लेख है।
- **बौद्ध एवं जैन धर्म में समानता**

○ दोनों धर्मों का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति।
○ दोनों धर्मों में कर्मवाद, अहिंसा, अस्तेय, सदाचार आदि गुणों पर विशेष बल।
○ दोनों धर्म उपनिषदों के चिंतन् से प्रभावित।
○ दोनों ही गृहस्थ धर्मावलंबियों हेतु नियमों में छूट का प्रावधान करते हैं।
○ दोनों ही क्षत्रियों को ब्राह्मणों पर वरीयता देते हैं।
○ दोनों ही वर्णव्यवस्था के विरोधी थे। इन्होंने कर्म को ही सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार माना।
○ दोनों ही व्यापारी वर्ग को प्रोत्साहन देते थे।
○ दोनों ही धर्मों ने संसार को दुःखों से भरा माना है।
○ दोनों ही धर्म अनीश्वरवादी हैं।
○ दोनों ही धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।
  - बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म का विश्लेषण मिलिंदपन्हो में मिलता है।
○ दोनों ही धर्मों में ज्ञान एवं ध्यान को आवश्यक माना गया।

बौद्ध एवं जैन धर्म में असमानताएं	
जैन धर्म	**बौद्ध धर्म**
जैन धर्म कण-कण में आत्माजीव की सत्ता मानता है	बौद्ध धर्म आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया है।
महावीर के अनुसार, मोक्ष या निर्वाण मृत्यु के पश्चात ही संभव है	गौतम बुद्ध ने इसी जीवन में निर्वाण संभव बताया।
महावीर ने अतिशय काया-क्लेश एवं नग्नता पर बल दिया	गौतम बुद्ध ने 'अति' का विरोध करते हुए मध्यम मार्ग का उपदेश दिया।
महावीर द्वारा संपूर्ण जगत को शाश्वत एवं नित्य माना गया	बुद्ध के अनुसार संसार क्षणमंगुर एवं अस्थिर है।
जैन धर्म बहुसांसारिक संकल्पना पर मौन है।	बौद्ध धर्म बहुसांसारिक संकल्पना को मानता है
प्रसार - मुख्यतः भारत में ही	**प्रसार** - पूरे विश्व में
भाषा- प्राकृत	**भाषा**- पालि
जैन धर्म अहिंसा पर अत्यधिक बल देता है।	बौद्ध धर्म अहिंसा के पक्षधर हैं, परंतु जैन धर्म से कम।

❑ बौद्ध धर्म की देन

- अहिंसा का सिद्धांत
- सामाजिक समता की संकल्पना
- स्त्रियों को धार्मिक मठों में प्रवेश
- कला स्थापत्य
- विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार
- चक्रवर्ती राज्य की संकल्पना
- दासों के प्रति मानवीय व्यवहार का दृष्टिकोण
- व्यावसायिक विकास में योगदान
- मूर्ति पूजा

❑ बौद्ध दर्शन से सम्बंधित शब्दावली -

शब्द	अर्थ
पत्तिमोक्ख	अपराधों का प्रायश्चित
उपोषद	धर्म विशेष के विषयों पर चर्चा
पवारण	वर्षाकाल की समाप्ति के बाद नए सत्र के प्रारम्भ
विनय धर	संघ का प्रमुख
नत्ति	संघ की सभा में प्रस्तुत प्रस्ताव
भू-मस्किम	बहुमत से पारित हुआ प्रस्ताव

अनुसावन	संघ की सभा में प्रस्ताव का पाठ
अधिकरण	प्रस्ताव पर मतभेद
पाराजिक	गंभीरतम 4 अपराध (संभोग, चोरी, हत्या, आध्यात्मिक उपलब्धि की झूठी घोषणा)
गुल्हक	गुप्त मतदान
विवतक	प्रत्यक्ष मतदान
शलाका ग्राहक	मतदान अधिकारी
उपसंपदा	बौद्ध संघ में प्रवेश
संघाराम	भिक्षुओं का आवास
उदकसाटि	भिक्षुणियों के वस्त्र
प्रव्रज्या	गृहस्थ जीवन का त्याग

❑ **बौद्ध धर्म के त्रिपिटक**

पिटक	संकलनकर्ता	महत्वपूर्ण तथ्य
विनय पिटक	उपालि	नियमों का संग्रह, सबसे छोटा पिटक
सुत्त पिटक	आनंद	बुद्ध के उपदेश
अभिधम्म पिटक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	बौद्ध दर्शन

❑ **बौद्ध धर्म के पतन के कारण**

- सम्राटों का संरक्षण न मिलना
- बौद्ध भिक्षुओं का पतित जीवन
- बौद्ध संघों में स्त्रियों का प्रवेश
- बौद्ध धर्म का सम्प्रदाओं में विभक्त होना
- भाषा में परिवर्तन
- देवस्तुति एवं मूर्ति पूजा का प्रारम्भ
- गृहस्थ धर्म की अवहेलना
- नास्तिकता
- विदेशियों के आक्रमण।

❑ **अन्य सम्प्रदाय**

- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार, छठी सदी ई. पू. में भारत में लगभग 62 सम्प्रदाय थे, जिनमें कुछ प्रमुख सम्प्रदाय निम्नलिखित थे

सम्प्रदाय	संस्थापक	मुख्य विचार
भौतिकवादी	अजित-केस-कम्बलिन	अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल नहीं होता, अधिकतम सुख प्राप्त करना चाहिए।
अक्रियावादी	पूरण कश्यप	'न तो कर्म होता है और न पुनर्जन्म'
आजीवक	मक्खलि गोशाल	आत्मा को अनेकानेक पुनर्जन्मों के पूर्व निर्धारित अटल चक्र से गुजरना ही पड़ता है।
नियतिवादी	पकुध कच्चायन	सब कुछ पूर्व से ही निश्चित है।
अनिश्चियवादी	संजय वेलिट्ठपुत्र	न तो यह कहा जा सकता है कि स्वर्ग या नरक है या फिर नहीं है।

जैन धर्म

❑ **तीर्थंकर परिचय**

- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए।
- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है, जिसका अर्थ विजेता है।
- जैन संस्थापकों को तीर्थंकर जबकि जैन महात्माओं को निर्ग्रंथ कहते हैं।
- जैन धर्म में 63 शलाका पुरुषों की मान्यता है।
- जैन धर्म 'वेद' की प्रामाणिकता को नहीं मानता।
- 'सप्तमंगीनय सिद्धांत' के अनुसार, वेद वाक्य सर्वमान्य प्रमाण नहीं हो सकता।
- जैन धर्म के दो तीर्थंकरों ऋषभनाथ (प्रथम तीर्थंकर) एवं अरिष्टनेमि (22वें तीर्थंकर) का उल्लेख ऋग्वेद में पाया जाता है।
- महाभारत के अनुसार अरिष्टनेमि वासुदेव श्रीकृष्ण के संबंधी थे। संभवतः श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे।
- वायु पुराण तथा भागवत पुराण में ऋषभनाथ को 'नारायण का अवतार' कहा गया है।
- बौद्ध ग्रंथों में महावीर को निगण्ठनाथपुत्त कहा गया है।
- ऋषभनाथ जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में पहले थे।

❑ **ऋषभनाथ**

- **अन्य नाम -** आदिनाथ एवं वृषभनाथ
- **प्रतीक -** वृषभ

- ऋषभनाथ राजा थे तथा वह अपने पुत्र भरत के पक्ष में राज्य त्याग कर 'यति' बन गए थे।
- उनके एक पुत्र बाहुबली (गोमतेश्वर या गोम्मट) भी हैं, जिनकी विशाल प्रतिमा श्रवणबेलगोला में स्थापित है।
- इनका उल्लेख श्रीमद्भगवद्गीता में भी मिलता है।
- जैन परंपरा के अनुसार, ब्राह्मी लिपि का आविष्कार ऋषभदेव द्वारा किया गया। उन्होंने अपनी पुत्री ब्राह्मी (बम्भी) के नाम पर इस लिपि को ब्राह्मी कहा।

❑ **पार्श्वनाथ**

- 23वें तीर्थंकर
- **प्रतीक -** सर्पफण
- **पिता -** बनारस के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन,
- **माता -** वामा,
- **पत्नी -** प्रभावती।
- ये महावीर से 250 वर्ष पूर्व हुए।
- 30 वर्ष की आयु में वैराग्य धारण किया।
- 83 दिन की तपस्या के बाद ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति (सम्मेद पर्वत पर) हुयी। अगले 70 वर्ष तक उन्होंने अपने धर्म का प्रचार किया।
- 100 वर्ष की अवस्था में सम्मेद शिखर (पारसनाथ की पहाड़ी) पर शरीर त्यागा।
- इनके अनुयायियों को निग्रंथ कहा गया।
- पार्श्व ने चार व्रतों की चर्चा की
  - सत्य, अहिंसा, अस्तेय तथा अपरिग्रह, इसे चतुर्याम सिद्धांत कहा जाता हैं।
- महावीर के माता-पिता संभवतः पार्श्व के अनुयायी थे।

❑ **महावीर स्वामी (540 ई.पू. से 468 ई.पू.)**

- **प्रतीक -** सिंह
- **जन्म -** वैशाली के निकट कुंडग्राम में
- **पिता -** सिद्धार्थ (ज्ञात्रिक क्षत्रियों के संघ के प्रधान),
- **माता -** त्रिशला /विदेहदत्ता (वैशाली के लिच्छवि कुल के प्रमुख चेटक की बहन)।
- **पत्नी -** यशोदा (कुंडिय गोत्र की कन्या)।
- **पुत्री -** अणोज्जा (प्रियदर्शना)।
- **दामाद -** जामालि (महावीर का पहला शिष्य)
- **तपश्चर्या :-** गृह त्याग के तेरह महीने बाद वस्त्र त्याग दिया।
  - वे वैशाली होते हुए नालंदा गए, जहाँ मक्खलि गोशाल उनसे मिला तथा उनका शिष्य बन गया। किंतु 6 वर्ष बाद साथ छोड़ दिया।
  - 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद **जम्भिकग्राम** के समीप **ऋजुपालिका** नदी के तट पर एक **साल** वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ। इसके बाद वे **केवलिन** कहलाए।
- **महावीर की अन्य उपाधियाँ :-** जिन (विजेता) - समस्त इंद्रियों को जीतने के कारण , अर्हत् – योग्य , निग्रंथ- बंधन रहित
- **मृत्यु -** 468 ई.पू. में 72 वर्ष की अवस्था में पावापुरी नामक स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग दिया।
- **धर्मप्रचार**
- कल्पसूत्र के अनुसार ज्योतिषियों ने महावीर के लिए भी चक्रवर्ती राजा या महान संन्यासी बनने की भविष्यवाणी की थी।
  - कैवल्य प्राप्ति के बाद तीस वर्षों तक समाज में अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाया। महावीर भी बुद्ध के समान आठ महीने धर्मप्रचार करते जबकि वर्षा ऋतु में (चार महीने) विभिन्न नगरों में विश्राम करते थे।
  - **महावीर के शिष्य -** 11 प्रधान शिष्य **गणधर** कहलाये।
  - कल्पसूत्र में इनके नाम दिए गये हैं- इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति (ये तीनो भाई थे), व्यक्त, सुधर्मन्, मण्डित, मोरियपुत्र, अंकपित, अचलभाता, मेतायं तथा प्रभास इन्द्रभूति
  - सुधर्मन को छोड़कर सभी गणधरों की मृत्यु महावीर के जीवनकाल में ही हो गई।
  - महावीर के मरणोपरांत सुधर्मन जैन संघ के अध्यक्ष बने।
  - अंतिम नंद राजा के समय संभूतिविजय तथा भद्रबाहु अध्यक्ष थे।
  - भद्रबाहु के नेतृत्व में अकाल के समय कुछ भिक्षु कर्नाटक चले गये यह दिगंबर कहलाये।
  - कुछ स्थूलभद्र के नेतृत्व में उत्तर भारत में ही रहे ये श्वेताम्बर कहलाये।
  - इससे जैन धर्म में मतभेद बढ़े।
  - **श्वेताम्बर -** इनके संतों को यति, साधु, आचार्य कहा गया
  - **दिगंबर -** इनके संतों को क्षुल्लक, ऐल्लक, निग्रंथ कहा गया
- **संघ (वसवि) :** पाँचवीं सदी में कर्नाटक में स्थापित मठों को वसवि कहते हैं।

❑ **जैन धर्म का सिद्धांत और ज्ञान तत्व**

- जैन धर्म के अनुसार समस्त विश्व जीव तथा अजीव नामक दो नित्य एवं स्वतंत्र तत्वों से मिलकर बना है।
- इसी आधार पर जैन दर्शन सांख्य दर्शन के सबसे करीब है।

- जीव चेतन तत्व है जबकि अजीव अचेतन जड़ तत्व है।
  - अजीव का विभाजन पाँच भागों में हुआ- पुद्गल, काल, आकाश, धर्म तथा अधर्म।
    - यहाँ धर्म तथा अधर्म गति तथा अगति का सूचक है।
    - पुद्गल से तात्पर्य उस तत्व से है जिसका संयोग तथा विभाजन किया जा सके।
    - इसका सबसे छोटा भाग अणु कहलाता है।
    - अणुओं में जीव निवास करते हैं।
    - समस्त भौतिक पदार्थ अणुओं के ही संयोग से निर्मित होता है।
    - पुद्गल का अर्थ है कर्म स्पर्श, रस, गंध तथा वर्ण ये सभी पुद्गल के गुण हैं।
- जैन धर्म के अनुसार सृष्टि कुछ शाश्वत् कानूनों के द्वारा परिचालित होती है।
- इस शाश्वत विश्व में अनेक चक्र होते हैं।
- उत्थान काल को उहसर्पिणी और पतन काल को अवसर्पिणी कहते हैं।
- प्रत्येक चक्र में 63 श्लाका पुरुष, 24 तीर्थंकर होते है

❑ **जैन धर्म का उद्देश्य**

- जैन धर्म का चरम लक्ष्य निर्वाण है।
- यह सत्कर्म एवं सन्मार्ग से ही संभव है।
- भौतिक तत्वों के विनाश और कर्म फल से मुक्ति ही जीव को निर्वाण की ओर प्रेरित करती है।
- जैन धर्म के सिद्धांतों में निवृत्तिमार्ग का प्रधान स्थान था, जिसके माध्यम से व्यक्ति जगत् के नाना प्रकार के व्याधियों और तृष्णाओं से विमुक्त हो जाता है।
- जैन ज्ञान तत्व के अंतर्गत कर्म का सिद्धांत महत्वपूर्ण है।
- सत् और असत् कर्म से ही बंधन और मुक्ति होती है।
- पाप और पुण्य मनुष्य के कर्मों से होते हैं, ईश्वर से नहीं। यानि ईश्वर को न मानकर मनुष्य के कर्म को प्रधानता दी गई है।
- कर्मों के कारण जीव आबद्ध रहता है।
- कर्मफल भोगने के लिए ही पुनर्जन्म होता है। अतः कर्मफल से मुक्त होना ही निर्वाण प्राप्त करना है।
- निर्वाण ही मोक्ष है जो कर्मफल की समाप्ति से ही संभव है।
- जैन धर्म में भी वेदांत के ही समान अज्ञान को बंधन का कारण माना गया है। इसके कारण कर्म जीव की ओर आकर्षित होने लगता है, इसे आस्रव कहते हैं।
- कर्म का जीव के साथ संयुक्त हो जाना बंधन है।
- मोक्ष के लिए महावीर ने तीन साधन आवश्यक बताए, जिसे त्रिरत्न कहा गया है।
  - सम्यक् दर्शन
  - सम्यक् ज्ञान
  - सम्यक् चरित्र (Trick to learn Triratna – KFC (**K**nowledge , **F**aith, **C**onduct)
- **सम्यक् दर्शन**
  - जैन तीर्थकरों एवं उनके उपदेशों में दृढ़ विश्वास ही सम्यक् दर्शन या श्रद्धा है।
  - जैन धर्म में तत्व ज्ञान को पृथक-पृथक दृष्टिकोण से देखा जाता है क्योंकि प्रत्येक काल में या प्रत्येक दशा में जीव का ज्ञान एक नहीं हो सकता, वह भिन्न-भिन्न होता है।
  - जैन धर्म में इस दर्शन को **स्यादवाद** या **अनेकांतवाद** (सप्तभंगीन्याय) कहा गया है, जो ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है यानि सांसारिक वस्तुओं के विषय में हमारे सभी निर्णय सापेक्ष्य तथा सीमित होते हैं।
  - इस संसार का कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं होता। सभी पदार्थ शाश्वत हैं।
  - नष्ट प्रतीत होने का कारण यह है कि कभी-कभी उनके रूप परिवर्तित हो जाते हैं किंतु उनका मूलतः विनाश नहीं होता। विनाश केवल परिवर्तन है।
  - जैन सिद्धांत स्यादवाद के सात निर्दिष्ट हैं - 1) है 2) नहीं है 3) है और नहीं है 4) कहा नहीं जा सकता 5) है किंतु कहा नहीं जा सकता 6) नहीं है और कहा नहीं जा सकता 7) है, नहीं है और कहा नहीं जा सकता।
- **सम्यक् ज्ञान :** जैन धर्म एवं उसके सिद्धांतों का ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।
  - इसके पाँच प्रकार बताए गए हैं।
    - **मति -** इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान
    - **श्रुति -** सुनकर प्राप्त किया गया ज्ञान
    - **अवधि -** दिव्य अथवा अलौकिक ज्ञान
    - **मनःपर्याय -** अन्य व्यक्तियों के मन की बातें जान लेने का ज्ञान
    - **कैवल्य -** पूर्ण ज्ञान, जो केवल तीर्थंकरों को प्राप्त है। जैन दर्शन में कैवल्य प्राप्ति हेतु यति जीवन आवश्यक माना गया है।
- **सम्यक् चरित्र :** जो कुछ भी जाना जा चुका है और सही माना जा चुका है उसे कार्यरूप में परिणत करना ही सम्यक् चरित्र है। इसके अंतर्गत भिक्षुओं के लिए पाँच महाव्रत तथा गृहस्थों के लिए पाँच अणुव्रत बताए गए हैं।
  - **पाँच महाव्रत :-** जैन मत के अनुसार भिक्षुओ के लिए पाँच महाव्रतों का पालन आवश्यक बताया गया है। जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य हैं। ब्रह्मचर्य को महावीर स्वामी ने जोड़ा था।

- **अणुव्रत -** ये गृहस्थ जीवन के संबंध में है, इनमें अतिवादिता एवं कठोरता का अभाव है। अणुव्रत उपनिषद् के विपरीत जैन धर्म की मान्यता है कि आत्मा की शुद्धि लंबे समय तक उपवास, अहिंसा और इंद्रियनिग्रह द्वारा संभव है। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म के विपरीत जैन धर्म में सिर्फ संघ के सदस्यों के लिए कैवल्य का विधान है, सामान्य गृहस्थों के लिए नहीं ।

- जैन धर्म में अधिक आराम और सुखी जीवन बिताने को अनुचित बताया गया है। पापों से मुक्त होने पर जीव समभाव में आता है तथा निर्वाण मार्ग की ओर अग्रसर होता है। **आचरांग सूत्र** में जैन साधुओं के लिए कठोर नियम बताए गए हैं।
- त्रिरत्नों का अनुसरण करने से कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाता है जिसे **संवर** कहते हैं। इसके बाद पहले से जीव में व्याप्त कर्म समाप्त होने लगते हैं, इस अवस्था को **निर्जरा** कहा गया है। जब जीव से कर्म का अवशेष बिल्कुल समाप्त हो जाता है तब वह **मोक्ष** की प्राप्ति कर लेता है। महावीर ने मोक्ष के लिए कठोर तपश्चर्या एवं कायाक्लेश पर बल दिया। मोक्ष के पश्चात् जीव आवागमन के चक्र से छुटकारा पा जाता है तथा वह **अनंत चतुष्टय** (अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य तथा अनंत सुख) की प्राप्ति कर लेता है लेकिन जैन धर्म में सर्वोच्च अवस्था की प्राप्ति सिर्फ भिक्षुओं को हो सकती है, अणुव्रतियों को नहीं।
- बुद्ध के समान महावीर ने भी वेदों की अपौरूषेयता को स्वीकार नहीं किया।
- जैन धर्म जाति व्यवस्था पर बहुत कठोर आक्रमण नहीं करता है। इसी तरह दास व्यवस्था पर भी आक्रमण नहीं, किंतु दासों के प्रति नरम व्यवहार अपनाने का आग्रह किया।
- कैवल्य की प्राप्ति सभी जाति के व्यक्ति कर सकते हैं।
- जैन धर्म में काया क्लेश के अंतर्गत उपवास द्वारा शरीर के अंत का भी विधान है। इसे श्वेतांबर 'संथारा' व दिगंबर 'सल्लेखना' कहते हैं।
- महावीर के अनुसार मनुष्य के तीन प्रकार हैं।

- **अव्रती -** सांसारिक मोह-माया में पूर्णतः लिप्त रहने वाले ।
- **अणुव्रती -** आंशिक रूप से दुष्कर्मों से अलग रहने वाले।
- **सर्वव्रती -** जो पूर्णतः अनासक्त भाव से रहते हुए सच्चरित्रता और सत्य कर्म का अनुपालन करते हैं।

❑ जैन सम्मेलन

- जैन आगमों को सुव्यवस्थित करने के लिए जैन श्रवणों द्वारा तीन सम्मेलनों का अयोजन किया गया।

जैन संगीतियां			
समय/ सम्मेलन	स्थान	अध्यक्ष	परिणाम
प्रथम सम्मेलन /चतुर्थ सदी ई.पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	इसमें 12 अंगों का संकलन किया गया। इसे पाटलिपुत्र वाचना कहा जाता है। इस सम्मेलन में भद्रबाहु के अनुयायियों ने भाग नहीं लिया। यहाँ जैन धर्म का विभाजन श्वेताम्बर व दिगंबर में हो गया।
द्वितीय सम्मेलन / चौथी सदी में	मथुरा	आर्य स्कंदिल	यह श्वेताम्बर भिक्षुओं की सभा थी। इसे मथुरावाचना के नाम से जाना जाता है।
तृतीय सम्मेलन /512 ई.	वल्लभी	देवर्धि क्षमाश्रमण	इसमें सभी आगम साहित्य को लिपिबद्ध किया गया।

❑ जैन संप्रदाय

- चंद्रगुप्त मौर्य के समय मगध में अकाल पड़ा।
- भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण मैसूर के पुण्णाट प्रदेश में बस गये। जबकि स्थूलभद्र पाटलिपुत्र में ही रहे।
- अकाल समाप्ति के बाद भद्रबाहु पाटलिपुत्र लौट आये, किंतु जैन संघ के नियमों को लेकर दोनों गुटों में मतवैभिन्य हो गया।
- स्थूलभद्र ने अपने अनुयायियों को सफेद वस्त्र धारण करने के निर्देश दिए, जबकि भद्रबाहु ने निर्वस्त्र रहने की शिक्षा अपने अनुयायियों को दी।
- इस प्रकार दो संप्रदाय विकसित हो गये - श्वेताम्बर और दिगम्बर।

श्वेतांबर-दिगंबर मुख्य अंतर	
श्वेतांबर	**दिगंबर**
इस संप्रदाय के लोग श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।	पूर्णतः नग्न रहते हैं।
स्त्री के लिए मोक्ष प्राप्ति संभव है।	इसके अनुसार, स्त्री हेतु मोक्ष संभव नहीं है।
इस संप्रदाय के लोग ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भोजन ग्रहण करने के पक्षधर हैं।	यह मत इसके विरुद्ध है।
इसके अनुसार महावीर स्वामी विवाहित थे।	इनके अनुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे।
इसके अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे।	दिगंबर मतानुसार मल्लिनाथ पुरुष थे।
श्वेतांबर जैनियों को यति, आचार्य एवं साधु कहा गया।	दिगंबर जैनियों को झुल्लक, ऐल्लक और निग्रंथ की संज्ञा दी गई।
श्वेतांबरों का प्रमुख केंद्र गिरनार था।	दिगंबरों का केंद्र पुण्ड्रवर्धन (बंगाल) था।
श्वेताम्बर प्राचीन जैन ग्रंथों (आगमों) को मानते हैं	दिगम्बर जैन ग्रंथों (आगमों) को स्वीकार नहीं करते।
श्वेतांबर उपवास द्वारा शरीर के अंत के विधान को 'संथारा' कहते हैं	दिगंबर इसे 'सल्लेखना' कहते हैं।

Note:-

- **जैन** अनुश्रुतियों के अनुसार, मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त ने मैसूर के श्रवणबेलगोला नामक स्थान पर 'सल्लेखना' विधि से प्राणोत्सर्ग किए थे। राष्ट्रकूट शासक इंद्र चतुर्थ ने भी इसी विधि से कार्योत्सर्ग किया।

❑ **जैन दर्शन में प्रयुक्त प्रमुख शब्द**

जैन दर्शन में प्रयुक्त प्रमुख शब्द	
संल्लेखना	उपवास द्वारा शरीर त्याग करना (आत्महत्या)
मति	इंद्रिय जनित ज्ञान।
श्रुति	श्रवण ज्ञान
अवधि	दिव्य ज्ञान।
मनःपर्याय	अन्य व्यक्ति के मन की बात जान लेना।
बसदि	कर्नाटक स्थित जैन मठ।
परिवह	कड़ाई(Sufferings)
साप्त	विश्वास योग्य पुरुषों का वाक्य।
साज	भोजनालय
मूल गुण	मुनियों तथा आर्यिकाओं के लिए कठोर नियम
अष्टमंगल	8 शुभ चिह्न
समोहा	जैन विहार
स्थानक या उपासरे	जैन मुनियों के वर्षावास का आश्रय।
निसिधी	जैन अनुयायियों की मृत्यु संबंधी कर्मकांड तथा पद्धतियां।

❑ **जैन धर्म का कला में योगदान**

- ओडिशा में उदयगिरि व खंडगिरि में खारवेल द्वारा निर्मित कराई गई गुफाएं प्राचीनतम जैन स्थापत्य है।
- एलोरा में इंद्रसभा गुफा, राजगीर में सोन भंडार एवं कौशांबी के पास प्रभोसा गुफाएं जैन धर्म से संबंधित हैं।
- जैन चित्रकला का प्राचीनतम उदाहरण सितान्वासल गुफा से प्राप्त होता है।
- प्रतिमाशास्त्र में कायोत्सर्ग मुद्रा जैन धर्म की देन है।
- मथुरा से प्राचीनतम जैन स्तूप तथा जैन मूर्ति के साक्ष्य मिलते हैं
- एहोल का नेघुटी मंदिर, खजुराहो के जैन मंदिर एवं माउंट आबू में दिलवाड़ा का जैन मंदिर आदि जैन मंदिर स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण है।
- चाहुबली की गोमतेश्वर प्रतिमा इसी कायोत्सर्ग मुद्रा में है।

❑ **जैन तीर्थंकरो का निर्वाण स्थल**

- जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकरों ने सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया था।

- **तीर्थकर - निर्वाण स्थल**
- ऋषभनाथ - अष्टापद
- बासुपूज्य - चंपापुरी
- नेमिनाथ - उर्जयन्त /गिरिपद
- महावीर - पावापुरी

इस्लाम धर्म

- इस्लाम का उदय अरब के कबीलाई समाज में हुआ।
- समाज की स्थिति में सुधार के लिये पैगंबर हज़रत मुहम्मद साहब (570 ई.-632 ई.) ने जिन नए जीवन मूल्यों को सामने रखा, इस्लाम उन्हीं नियमों की देन है।
- भारत में इस्लाम का आगमन अरब व्यापारियों के मजहब के रूप में केरल में हुआ।
- भारत में पहली मस्जिद केरल स्थित चेरामन जुमा मस्जिद को माना गया है, जिसका निर्माण 629 ई.पू. में मलिक बिन दीनार ने करवाया था।

❑ **इस्लाम धर्म की विशेषताएं -**

- प्रत्येक मुसलमान को पवित्र ग्रंथ 'कुरान' में भरोसा रखना चाहिये।
- इस्लाम में एकेश्वरवाद का समर्थन तथा अनेकेश्वरवाद एवं मूर्तिपूजा का स्पष्ट तौर पर विरोध किया गया है।
- इस्लाम के अनुयायी, रमजान , ईद-उल-फितर , ईद-उल-जुहा (बकरीद),चेहल्लुम मनाते हैं।

❑ **इस्लाम धर्म के प्रमुख संप्रदाय**

- **शिया**
- **सुन्नी**

- सुन्नी शाखा के अनुसार पैगंबर साहब के बाद चार खलीफाओं-सर्वश्री अबू बक्र, उमर, उस्मान और अली ने मुसलमानों की कमान संभाली।
- इन चारों को राशीदी/राशिदून खलीफा यानी सही मार्ग दिखाने वाला भी कहा जाता है।
- शिया शाखा शुरुआती तीन को ज़्यादा मान्यता नहीं देकर चौथे खलीफा अली को ही पैगंबर साहब का असली वारिस मानती है।
- भारत में करीब दो-तिहाई मुसलमान सुन्नी शाखा को मानते हैं।
- सुन्नी शाखा की उपशाखा - हनफी, शाफई, हंबली, मालिकी

- शिया शाखा की उपशाखा - इस्माइली, जाफरी और जैदी

यहूदी धर्म

- यहूदी धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर मूसा हैं।
- यहूदी धर्म के आधारभूत एवं शिक्षा "तोराह" पर आधारित हैं।

❑ **यहूदी धर्म की विशेषताएं -**

- यह एकेश्वरवादी धर्म है जिसमें एक ही ईश्वर 'जाहवे' या 'यहोवा' को स्वीकार किया गया है।
- इसमें ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण माना गया है अर्थात् उसकी व्याख्या नैतिक गुणों द्वारा की गई है।
- यहूदियों का धर्मग्रंथ ओल्ड टेस्टामेंट है जो बाइबिल का शुरुआती अंश है।
- यहूदी धर्म में संन्यासवादी मानसिकता का निषेध किया गया है। अर्थात यह धर्म मनुष्य को जीवन से पलायन करने की नहीं, बल्कि संघर्षों से जूझने तथा जीवन को भरपूर जीने की प्रेरणा देता है।
- इस धर्म में पशु-बलि का जोरदार समर्थन किया गया है। ऐसा माना गया है कि पशु-बलि से जाहवे के क्रोध को शांत किया जा सकता है।
- यहूदी प्रार्थना स्थल के रूप में सिनेगॉग का उपयोग करते हैं। यह एक विशाल गृह होता है, जिसमें अध्ययन-अध्यापन के साथ सामाजिक कार्यों को भी पूरा किया जाता है। जेरुशलम (इजरायल) का ग्रेट बेथ मिद्राश गुर विश्व का सबसे बड़ा सिनेगॉग है।

ईसाई धर्म

- ईसाई धर्म, यहूदी धर्म से हो निकला हुआ धर्म है।
- इसके प्रवर्तक श्रेय ईसा मसीह को है।

❑ **ईसा मसीह**

- **जन्म -** बेथलेहेम
- **माँ का नाम -** मरियम
- **पिता का नाम -** जोसफ
- **मृत्यु -** ईसा ने यहूदी धर्म की कुछ मान्यताओं में संशोधन किया जिसके कारण यहूदियों ने नाराज होकर उन्हें मृत्युदंड दे दिया।

❑ **ईसाई धर्म की प्रमुख विशेषताएं -**

- यह धर्म एकेश्वरवादी है तथा गॉड को एकमात्र ईश्वर और ईसा मसीह को 'ईश्वर-पुत्र' मानता है।
- ईसाइयों का ईश्वर यहूदियों के ईश्वर से भिन्न है। 'जाहवे' जहाँ अत्यंत क्रोधी प्रवृत्ति के है, वहीं 'गॉड' अत्यंत दयालु तथा पिता के समान है।
- ईसाई धर्म का धर्मग्रंथ 'न्यू टेस्टामेंट' है जो बाइबिल का ही अंतिम खंड है।
- ईसाई धर्म के अनुसार पृथ्वी पर मनुष्यों का प्रवास वस्तुतः मूल पाप का दंड ही है।
- **ईसाई धर्म आगे चलकर दो हिस्सों में बँट गया-** कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेंट।

पारसी धर्म

- पारसी धर्म की शुरुआत ईरान से हुई।
- इस धर्म के प्रवर्तक का नाम 'जरथुस्ट्र' या 'ज़ोरोस्टर' है, इसलिये इसे 'जोरास्टरवाद' भी कहा जाता है।

❑ **पारसी धर्म की विशेषताएँ-**

- यह विश्व का सबसे महत्त्वपूर्ण द्विश्वरवादी धर्म है यानी इसमें दो परम शक्तियों को स्वीकार किया गया है।
- पारसी धर्म में अनेकेश्वरवाद का खंडन किया गया है।
- इस धर्म में मनुष्य के शव की अंत्येष्टि एक विशेष प्रकार से की जाती है। शव को खुले आसमान में काफी ऊँचाई पर रख दिया जाता है ताकि चील-गिद्ध उसे खा जाएँ। मान्यता है कि ऐसा करने से पृथ्वी, जल व अग्नि की शुद्धता बची रहती है।
- पारसी धर्म का मूल आधार 'अवेस्ता' है।
- अग्नि को पवित्र मानने के कारण पारसी पूजाघरों में अग्नि निरंतर प्रज्वलित रखी जाती है।

दर्शन

- भारतीय दर्शन अध्यात्म केंद्रित है। भारतीय दर्शन मनुष्य को आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रोत्साहित करते हैं। भारतीय दर्शन उस सत्य को जानने का प्रयास है जो मनुष्य को उसके दुःखों से मुक्त कर दे।

- भारतीय दर्शन बाहरी ज्ञान को उतना महत्त्व नहीं देता, जितना अंतः ज्ञान को।
- भारतीय दर्शन का आधार परंपराओं से ही आता है और बाद में किसी ने भी उसमें कोई बुनियादी उलट-फेर या बदलाव नहीं किया है।
- भारतीय दर्शन खंडन-मंडन की प्रक्रिया से विकसित हुआ है।
- इसमें तार्किकता की गूढ़ता का भी समावेश हुआ है।
- भारतीय दार्शनिक कर्म के तीन प्रकार स्वीकार करते हैं -संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म , संचीयमान या क्रियमाण कर्म
- संचित कर्म - ये ऐसे पूर्वकृत कर्म हैं जिनका फल अभी सामने नहीं आया है।
- प्रारब्ध कर्म - ये भी पूर्वकृत कर्म हैं, लेकिन इनका फल मिलना प्रारंभ हो गया है।
- संचीयमान या क्रियमाण कर्म - यह इस जीवन और वर्तमान काल में होने वाला कर्म है जिसका भविष्य में फल मिलेगा।
- सभी भारतीय दार्शनिक अज्ञान को ही सांसारिक बंधन का कारण मानते है।
- भारतीय दर्शन में जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष है।

❑ **चार्वाक दर्शन**

- चार्वाक संप्रदाय दार्शनिक संप्रदायों में सबसे भिन्न है।
- लोक में प्रिय होने के कारण इसे 'लोकायत दर्शन' भी कहते हैं।
- चार्वाक दर्शन वेदों और ईश्वर का खंडनकरता हैं जिसके कारण इसे 'नास्तिक दर्शन' या 'नास्तिक शिरोमणि दर्शन' भी कहते हैं।
- **चार्वाक दर्शन की विशेषताएं -**
  - इसक दर्शन का मूल आधार 'भौतिकवादी' दृष्टिकोण है।
  - यह आत्मा और ईश्वर को पराभौतिक मानता हैं, इसलिये उन्हें स्वीकार नहीं करता हैं। यह संसार को चार महाभूतों- अग्नि, जल, वायु और पृथ्वी से उत्पन्न मानता है। इसमें ईश्वर की कोई भूमिका को स्वीकार नहीं करता है।
  - चार्वाक दर्शन आत्मा को स्थायी नहीं मानता हैं।
  - आत्मा को अस्वीकार करने के कारण धर्म, मोक्ष, स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म आदि मान्यताओं का खंडन करते हुए चार्वाक कहता है कि इहलोक से परे कुछ भी सत्य नहीं है।
  - चार पुरुषार्थों- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से चार्वाक काम को ज्यादा महत्त्व देता है। काम का आशय है- सुखों की उपलब्धि से हैं।

❑ **सांख्य दर्शन**

- **प्रवर्तक** - कपिल मुनि
- **मूल ग्रंथ** - 'तत्त्व-समास' , 'सांख्यकारिका' (ईश्वरकृष्ण)
- **सांख्य दर्शन के प्रमुख सिद्धांत -**
  - यह पुनर्जन्म और आत्मा के आवागमन के सिद्धांत को स्वीकार करता है।
  - सत्कार्यवाद सांख्य दर्शन का कार्य-कारण सिद्धांत है। इसके अनुसार कोई भी कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व अपने कारण में सत् (Real) होता है।
  - जगत की उत्पत्ति ईश्वर से नहीं अपितु प्रकृति से हुई है।
  - सांख्य दर्शन विकासवादके सिद्धांत में विश्वाश करता हैं इसके अनुसार जगत का विकास प्रकृति और पुरुष के संयोग से हुआ है।
  - सांख्य दर्शन के अनुसार दुःखों से स्थायी मुक्ति के लिये मोक्ष या कैवल्य में ध्यान लगाना जरूरी है।
  - सांख्य की मान्यता है कि आत्म-ज्ञान ही मोक्ष की ओर ले जाता है न कि कोई बाह्य प्रभाव अथवा कारक।

❑ **योग-दर्शन**

- प्रवर्तक - पतंजलि
- मूल ग्रंथ - 'योगसूत्र'
- अन्य नाम - 'सेश्वर सांख्य' या 'ईश्वरवादी सांख्य'
- **योग दर्शन के प्रमुख सिद्धांत -**
  - योग दर्शन ईश्वर को एक विशिष्ट पुरुष मानता हैं। जो नक्लेश, कर्म परिणाम, संस्कार आदि से अप्रभावित रहता है।
  - योग शास्त्र में योग का अर्थ है- समाधि।
  - योग का उद्देश्य 'आत्मा के यथार्थ स्वरूप को प्राप्ति' है।
  - योग दर्शन में आष्टांगिक मार्ग के पालन करने पर जोर दिया गया है।
  - योग दर्शन में कैवल्य-प्राप्ति का साधन आष्टांगिक मार्ग बताया गया है। इससे अविद्या का नाश हो जाता है।
  - आष्टांगिक मार्ग के निम्नलिखित आठ अंग हैं-
    - यम- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
    - नियम- शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्राणिधान।

- आसन- पद्मासन, वीरासन, भद्रासन आदि।
- प्राणायाम- श्वासादि की गति के नियंत्रण को प्राणायाम कहा गया है।
- प्रत्याहार- इंद्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर मन को वश में रखना प्रत्याहार है।
- धारणा बाह्य या आंतरिक किसी भी विषय में चित्त को बांध देना धारणा है।
- ध्यान- चित्त की एकाग्रता ही ध्यान है।
- समाधि- यह आष्टांगिक मार्ग की अंतिम अवस्था है। इस अवस्था में पुरुष की चित्तवृत्तियों का पूर्ण निरोध हो जाता है।

❑ **न्याय दर्शन**

- **प्रवर्तक-** महर्षि गौतम
- **मूल ग्रंथ-** 'न्यायसूत्र'
- **अन्य नाम -** 'प्रमाणशास्त्र'
- **न्याय दर्शन के प्रमुख सिद्धांत -**

○ न्याय दर्शन में तर्क का अत्यधिक महत्त्व है।
○ न्याय दर्शन ईश्वर को तर्क के माध्यम से सिद्ध करता है। उसके अनुसार ईश्वर प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द प्रमाण से सिद्ध होता है।
○ न्याय दर्शन के अनुसार व्यक्ति के कर्म और उसके फल के बीच को कड़ी 'अदृष्ट' है। अदृष्ट का संचालन ईश्वर करता है।
○ न्याय दर्शन के अनुसार, संसार एक कार्य है और इस कार्य का कर्ता ईश्वर है।
○ न्याय दर्शन में मोक्ष को अपवर्ग भी कहा जाता है। यह में ऐसी अवस्था है जहाँ दुःख पूर्णतया समाप्त हो जाते हैं। यह स्थिति 'तत्त्वज्ञान' से ही प्राप्त होती है।

❑ **वैशेषिक दर्शन**

- **प्रवर्तक-** महर्षि कणाद (उलूक ऋषि के पुत्र)
- **अन्य नाम -** 'कणाद दर्शन' या 'औलूक्य दर्शन'
- **वैशेषिक दर्शन के प्रमुख सिद्धांत -**

○ यह दर्शन ईश्वर, आत्मा, मोक्ष व कर्म के सिद्धांतों को स्वीकार करता है।
○ वैशेषिक दर्शन का परमाणुवाद सिद्धांत बहुत प्रसिद्ध है। इसके अनुसारसबसे छोटा पदार्थ परमाणु है। परमाणु का विभाजन संभव नहीं है। ये अविनाशी भी हैं। ये परमाणु ही जगत की सृष्टि एवं संहार का कारण बनते हैं।
○ ईश्वर की इच्छा से इन संयुक्त परमाणुओं से विश्व की रचना होती है।

❑ **मीमांसा दर्शन**

- **प्रवर्तक-** आचार्य जैमिनी
- **मूल ग्रन्थ -** 'मीमांसा सूत्र' या 'जैमिनी सूत्र'
- **मीमांसक -** शबर स्वामी, कुमारिल भट्ट एवं प्रभाकर
- **मीमांसा दर्शन के प्रमुख सिद्धांत -**

○ दर्शनों में मीमांसा का स्थान सर्वोपरि समझा जाता है क्योंकि इसमें वैदिक वाक्यों को पूर्णतः प्रमाण माना गया है।
○ मीमांसा दर्शन पूर्णयता वेदों पर आधारित हैं।
○ इसके अनुसार मुक्ति कर्म से संभव हैं और मोक्ष प्राप्ति के लिए वैदिक अनुष्ठान आवश्यक हैं।
○ मीमांसा का मुख्य विषय 'कर्म-सिद्धांत' है।
○ मीमांसकों का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत 'अपूर्व' का है। अपूर्व एक अदृश्य शक्ति है जिसके माध्यम से कर्मफल का निर्णय होता है। अपूर्व शक्ति कर्मों से उत्पन्न होती है। अतः कर्म और कर्मफल के बीच अपूर्व ही माध्यम है।

भारतीय साहित्य

लिपियों का आविष्कार मानव जीवन के विकास से ही जुड़ा है। किसी भी भाषा की लिखित अभिव्यक्ति और साहित्य निरूपण के माध्यम को लिपियों के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक संस्कृति से संबद्ध लोगों ने स्वयं अपनी भाषा का विकास किया तथा इसके द्वारा अपनी समृद्ध साहित्यिक विरासत को संगृहीत करने का प्रयास किया।

- भारतीय साहित्य को मुख्यता तीन भागो में बाट सकते हैं।
  - प्राचीन काल के साहित्य
  - मध्यकाल के साहित्य
  - आधुनिक काल के साहित्य

प्राचीन काल के साहित्य

संस्कृत साहित्य

- संस्कृत अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी है अर्थात् यह देश की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है।
- पाणिनी द्वारा लिखित 'अष्टाध्यायी' संस्कृत भाषा के व्याकरण का प्राचीनतम ग्रंथ है।
- प्राचीन काल में हिंदू धर्म से संबंधित लगभग सभी धर्म ग्रंथ इसी भाषा में लिखे गए।
- पुरोहितों की भाषा होने के कारण इसे समाज में उच्च स्थिति प्राप्त थी।
- उदाहरण - रामायण, महाभारत, नाट्यशास्त्र, काव्यालंकार, काव्यादर्श, काव्यालंकारसारसंग्रह, अर्थशास्त्र, वेद, उपनिषद, आगम.
- संस्कृत साहित्य की रचना, वाल्मीकि, वेदव्यास, भरत मुनि, कालिदास, दंडिन, बाणभट्ट, राजशेखर, मम्मट जैसे कई लोकप्रिय लेखकों ने की।
- संस्कृत साहित्य में कविता, महाकाव्य, नाटक, काव्यशास्त्र, धर्मग्रंथ, राजनीति, राजशास्त्र, वैज्ञानिक साहित्य आदि शामिल हैं।
- संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक काव्य के क्षेत्र में कल्हण और बिल्हण की रचनाएं प्रसिद्ध हैं।
- संस्कृत साहित्य में भर्तृहरि, अमरुका, बिल्हण, जयदेव, सोमदेव आदि गीत कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

- **व्याकरण साहित्य**
  - प्राचीन भारतीय लेखकों का ध्यान व्याकरण, शब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र, शब्दकोष शास्त्र, छन्द शास्त्र और अलंकार शास्त्र की ओर भी गया था। व्युत्पत्तिशास्त्रीय तथा ध्वनिशास्त्रीय प्राचीनतम ग्रंथ यास्क के नैचण्टुक और निरूक्त, जो अपनी वैदिक शब्दावली के लिए विख्यात हैं और ध्वनि संबंधी ग्रंथ हैं।
  - **अष्टाध्यायी-**
  - **लेखक -** पाणिनि
  - आठ अध्याय में बनी इस प्रख्यात व्याकरण ग्रन्थ ने अपने पूर्ववर्ती कई वैयाकरणों का उल्लेख किया है, जिनमें शाकटायन और शकल्य, गार्ग्य, और गालव भी हैं।
  - ऐसा माना जाता है कि पाणिनि को व्याकरण का ज्ञान 14 सूत्रों के रूप में स्वयं शिव ने दिया था।
  - इन चौदह सूत्रों को महेश्वरसूत्राणि कहा जाता है।
  - पाणिनि की अष्टाध्यायी में लगभग 4000 सूत्र हैं, जो केवल दो-दो या तीन-तीन शब्दों के ही हैं।
  - इस ग्रंथ में, जो एक प्रकार की आशुलिपि में लिखा गया करने के लिए एक एक अक्षर या शब्दांश का प्रयोग किया गया है।
  - पाणिनि द्वारा बनाए गए व्याकरण के नियम शिष्ट लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा पर लागू होते थे।
  - इनके ग्रंथ का रचना काल ईसा पूर्व की छठी और पांचवी शताब्दियों के बीच माना जाता है।

    - **वार्तिक**
  - **लेखक -** कात्यायन
  - इसमें पाणिनि के नियमों पर विमर्श और व्याख्या हैं।
  - इस प्रकार उसने पाणिनि के व्याकरण को श्रेण्य संस्कृत के अनुकूल बना दिया।
  - संस्कृत का लेखन उस समय शुरू हो चला था।
  - इस प्रकार पाणिनि के कुछ नियमों को कात्यायन ने अप्रचलित बना दिया।

    - **महाभाष्य**
  - **लेखक -** पंतजलि
  - तीन महान वैयाकरणों में से यह अंतिम था।
  - उसने ब्राह्मण पंडितों के लिए अपने ग्रंथ की रचना उस समय की, जिस समय व्याकरण में लोगों की रुचि घट रही थी और संस्कृत भाषा की शुद्धता नष्ट हो रही थी।
  - पतंजलि पुष्यमित्र शुंग (ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी) का समकालीन था और उसने अपने ग्रंथ में उसका कई बार उल्लेख भी किया है।
  - इस भाष्यकार ने व्याकरण के नियमों को स्पष्ट करने लिए जो वैयक्ति उदाहरण दिए हैं, उनसे उसके काल के भारत का चित्र भी उपस्थित हो जाता है

    - **वाक्यद्वीप**
  - **लेखक -** भर्तृहरि

- यह महाभाष्य पर टीका की।
- वाक्यपदीय पद्य में लिखा गया है और इसके तीन खंड हैं।

- **काशिकावृत्ति**

- **लेख़क -** जयादित्य और वामन
- यह अष्टाध्यायी की टीका थी ।

- **खगोल विज्ञान एवं चिकित्सा साहित्य**
- संस्कृत में भैषज्य, शल्य क्रिया, गणित, फलित ज्योतिष और गणित ज्योतिष (खगोल विज्ञान) जैसे वैज्ञानिक विषयों का साहित्य उतना ही समृद्ध है, जितना व्याकरण, व्युत्पत्ति शास्त्र, शब्दकोश शास्त्र, छंद शास्त्र, अलंकार शास्त्र, संगीत तथा स्थापत्य जैसी मानविकी विद्याओं का साहित्य।
- गणित विज्ञानों के क्षेत्र में भी अंकों तथा दशमलव पद्धति के आविष्कारकों के रूप में प्राचीन भारतीयों की उपलब्धि बहुत काफी थी सबसे पुराने इस समय विद्यमान गणितीय लेख वैदिक शुल्व सूत्र हैं, जो एक प्रकार की कर्मकांडीय ज्यामिति के सूचक है, जिसका प्रयोग वेदियों के निर्माण के लिए किया जाता था।
- इसमें समकोणों वर्गों तथा आयतों की रचना भी आ जाती है और पाइथागोरस का यह सिद्धांत भी, कि कर्ण का वर्ग अन्य दो रेखाओं के वर्ग के बराबर होता है।
- उत्तरकालीन गणितज्ञों ने ज्या पफलक (साइन टेबल) का आविष्कार करके त्रिकोणमिति में भी प्रगति की।
- **वराहमिहिर**
- यह अपने पंच सिद्धांतक, जो एक व्यावहारिक ज्योतिष ग्रंथ है और बहुल संहिता के कारण प्रसिद्ध है।
- **आर्यभट्ट**
- भारतीय ज्योतिष का संस्थापक आर्यभट्ट थे ,
- इन्होने सबसे पहले यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि पृथ्वी अपने अक्ष (धुरी) पर घूमती है।
- उसके ग्रंथ का नाम है : आर्यभट्टीम।
- **ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी)**
- अपना ब्रह्म स्फुटिक सिद्धांत लिखा और यह ज्योतिषियों की इस परंपरा में अंतिम थे , भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी)
- इन्होने सिद्धांत शिरोमणि अर्थात् सिद्धांत का शिरोमणि लिखा।
- **चरक संहिता और सुश्रुत संहिता**
- भैषज्य तथा शल्य शास्त्र पर लिखे गए ग्रंथों में चरक संहिता और सुश्रुत संहिता आती हैं, जिनके नाम उनके लेखकों के नाम पर पड़े हैं।
- इनमें से पहला भैषज्य का और दूसर शल्य शास्त्र का ग्रंथ है।
- ये दोनों ही ईसा की दूसरी शताब्दी के हैं।
- भैषज्य विज्ञान अर्थात् चिकित्सा की कला के उल्लेख अथर्ववेद में इस रूप में प्राप्त होते हैं कि उसमें अनेक रोगों की और साथ ही महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों की भी चर्चा है।

❑ **संस्कृत के मुख्य नाटककार और उनकी रचनाएँ -**

- **भास**
- यह संस्कृत के प्रथम नाटककार हैं।
- भास से पूर्व लिखे गये कोई नाटक उपलब्ध नहीं हैं।
- भास का समय ईसा पूर्व पाँचवीं चौथी सदी सिद्ध किया गया है।
- **स्वप्नवासवदत्ता** को भास का सर्वोत्कृष्ट नाटक माना गया है।

- **शूद्रक**
- इस कवि ने अत्यन्त रोचक और बहुरंगी प्रकरण **मृच्छकटिक** की रचना की।
- मृच्छकटिक में दस अंक हैं
- इसमें दरिद्र किन्तु अत्यन्त गुणी ब्राह्मण चारुदत्त और रूपवती गणिका वसन्तसेना का पारस्परिक प्रणय प्रमुख कथा के रूप में वर्णित है।
- इसी के भीतर शूद्रक ने राज्य क्रान्ति की कथा भी बड़ी कुशलतापूर्वक जोड़ दी है।
- मृच्छकटिक का अभिनय रूस, अमेरिका, फ्रांस आदि देशों में अनेक बार किया जा चुका है।

- **कालिदास**
- महाकवि कालिदास रचित तीन नाटक प्राप्त होते हैं- मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञानशाकुन्तल।
- नाट्य रचना के क्रम में **मालविकाग्निमित्र** कालिदास की प्रथम रचना जान पड़ती है।
- इसका कथानक ऐतिहासिक न होकर भी इसके पात्र ऐतिहासिक हैं क्योंकि इसका नायक अग्निमित्र शुंगवंशीय नरेश पुष्यमित्र (दूसरी शती ईसा पूर्व) का पुत्र है।
- कालिदास की दूसरी नाट्यरचना **विक्रमोर्वशीय** पाँच अंकों का त्रोटक है जिसमें अप्सरा उर्वशी पुरुरवा के पारस्परिक प्रणय की कथा है।
- इस कथा का मूल वैदिक आख्यान में तो प्राप्त होता ही है, साथ ही महाभारत, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण आदि में भी यह कथा प्राप्त होती है।
- कालिदास ने उस संक्षिप्त वैदिक आख्यान को अपनी कल्पना से सम्मिश्रित करके एक सुन्दर परिवर्तित रूप प्रदान किया है।
- **अभिज्ञानशाकुन्तल** कालिदास की सर्वश्रेष्ठ नाट्यति है।
- इसको विश्वसाहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है।
- यह सात अंकों का नाटक है जिसमें चन्द्रवंशी राजा दुष्यन्त तथा महर्षि कण्व की पालिता पुत्री शकुन्तला के मुग्ध प्रणय, गान्धर्व विवाह, वियोग तथा पुनर्मिलन की कथा अत्यन्त मार्मिक रूप में विभिन्न नाटकीय मोड़ों के साथ वर्णित है।

- **विशाखदत्त**
- इन्होंने मुद्राराक्षस नामक नाटक की, जो कथावस्तु की विशिष्टता और शैली की गंभीरता के कारण संस्कृत साहित्य में अद्वितीय है।
- विशाखदत्त का समय छठीं शती का अन्त माना जाता है।

- इसका कथानक - नन्दवंश का नाश करके चाणक्य द्वारा चंद्रगुप्त मौर्य को राजा बना देता है किन्तु इस राज्य को दृढ़ करने के लिए वह नन्द के स्वामिभक्त मंत्री राक्षस को अपने पक्ष में करना चाहता है।
- राक्षस अपनी स्वामिभक्ति से विचलित नहीं हो रहा।
- इसी बुद्धि संघर्ष में चाणक्य की कूटनीतिकुशलता ही नाटक का मूल मंत्र है।

- **हर्षवर्धन**

- संस्कृत साहित्य में हर्षवर्धन सुन्दर नाट्यों के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- हर्षवर्धन ने तीन नाटकों की रचना की थी प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानन्द
- रत्नावली चार अंकों की नाटक है
- इसमें राजा उदयन और रानी वासवदत्ता के अन्त:पुर में भाग्यवशात् दासी के रूप में रह रही
- सिंहल राजकन्या रत्नावली (सागरिका) का मुग्ध प्रणय चित्रित है।
- यह संस्कृत साहित्य की सर्वाधिक सरस नाटिका है जिसमें हर्ष की नाट्यकला का चरम विकास प्रस्फुटित हुआ है।

- **भवभूति**

- संस्कृत नाट्य के क्षेत्रा में महाकवि भवभूति का स्थान अन्यतम है।
- इन्होंने तीन नाटकों की रचना की थी- **महावीरचरित, मालतीमाधव तथा उत्तररामचरित**
- **महावीरचरित** में श्रीराम-सीता विवाह से लेकर रावणवध के उपरान्त अयोध्या में राज्याभिषेक तक की कथा है।
- भवभूति ने इस नाटक में नायक राम के चरित्र का उत्कर्ष करने के लिए मूल रामकथा में अनेक परिवर्तन कर दिये हैं।
- **मालतीमाधव** दस अंकों का प्रकरण है।
- इसका कथानक कवि की कल्पना से प्रसूत है जिसमें माधव और मालती तथा मकरन्द और मदयन्तिका की प्रणय कथा का विस्तार वर्णित है।
- **उत्तररामचरित** भवभूति का सर्वोत्कृष्ट नाटक है।
- इसकी कथा का स्रोत वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड है।
- कवि ने अपनी चमत्कारिणी मेध से उस प्रख्यात रामकथा में अनेक परिवर्तन करके उसे सुखान्त बना दिया है।
- इस कारण इस नाटक के अन्तिम अंक में सीता, राम, लब, कुश आदि सबका सुख पूर्वक मिलन हो जाता है।

- **हर्ष चरित**

- जीवनचरितों में सबसे प्रसिद्ध बाणभट्ट हर्षचरित है जिसमें उसने हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन किया है।
- बाणभट्ट का हर्षचरित यद्यपि हर्ष के काल की घटनाओं को जानने का महत्वपूर्ण स्रोत है लेकिन इसमें बाण ने हर्ष की उपलब्धि को अतिरंजना के साथ चित्रित किया है
- इस क्रम में बाण द्वारा उपलब्ध करायी जानकारी ऐतिहासिक तथ्यों के साथ कल्पना का मिश्रण हो जाती है।

- **राजशेखर**

- प्रबंधकोश, बाल रामायाण, बाल महाभारत, कर्पूरमंजरी, भुवनकोष आदि।

प्रमुख जीवन चरित्र		
कृति	राजा	लेखक
विक्रमांकदेव चरित्र	विक्रमादित्य	बिल्हड़
रामचरित	रामपाल	सन्ध्याकरनन्दिनी
कुमारपाल चरित	कुमारपाल	हेमचंद
द्वयाश्रय काव्य	कुमारपाल	हेमचंद
नव साहसांकचरित	सिंधुराज	पद्मगुप्त
पृथ्वीराज विजय	पृथ्वीराज चौहान	जयानक
पृथ्वीराज रासो	पृथ्वीराज तृतीय	चंदबरदाई
बीसलदेव रासो	विग्रहराज वीसलदेव	नरपति नाल्ह

❑ वैदिक साहित्य

- **वैदिक साहित्य**

- वैदिक साहित्य में वेद, ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद शामिल है।
- वेद शब्द विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना अर्थात् ज्ञान भारतीय मान्यता में वेद को **अपौरुषेय** कहा गया हैं।
- वैदिक साहित्य को 'श्रुति' भी कहा जाता है।
- श्रुति' का शाब्दिक अर्थ है सुना हुआ।
- भारतीय साहित्य में वेद सर्वाधिक प्राचीन हैं।
- वेद चार हैं-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' या 'त्रयी' कहा जाता है।
- प्रत्येक वेद के चार भाग होते हैं - संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद
- **ऋग्वेद**
- ऋग्वेद में कुल 10 मंडल तथा 1028 सूक्त और 10552 ऋचाएं हैं।

- ऋग्वेद के 2 से 7 तक के मंडल प्राचीन माने जाते हैं।
- ऋग्वैदिक काल का इतिहास पूर्णतया ऋग्वेद से ज्ञात होता है।
- ऋग्वेद में लोहे का उल्लेख नहीं है।
- ऋग्वेद के नदी सूक्त में 21 नदियों का वर्णन है, जिसमें सबसे पश्चिम में कुभा तथा सबसे पूर्व में गंगा है।
- ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार नदियों क्रम, कुभा, गोमती और सुवास्तु का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में सप्त सैंधव प्रदेश की सात नदियों का उल्लेख मिलता है। ये नदियां हैं-सरस्वती, विपासा, परुष्णी, वितस्ता, सिंधु, शुतुद्री तथा अस्किनी।

ऋग्वेद के मंडल एवं उसके रचयिता	
ऋग्वेद के मंडल	**रचयिता**
प्रथम मंडल	मधुच्छन्दा, मेधातिथि
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठम् मंडल	भारद्वाज
सप्तम् मंडल	वशिष्ठ
अष्टम् मंडल	कण्व एवं आंगिरस
नवम् मंडल	सोम देवता और अन्य ऋषि
दशम मंडल	विमदा, इंद्र, शची और अन्य

- ऋग्वेद के तृतीय मंडल में 'गायत्री मंत्र' का उल्लेख है। इसके रचनाकार विश्वामित्र हैं।
- यह सविता (सूर्य देवता) को समर्पित है।
- ऋग्वेद के नौवें मंडल के सभी 114 सूक्त 'सोम' को समर्पित हैं।
- प्रारंभ में हम तीन वर्णों का उल्लेख पाते हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य |
- 'शूद्र' शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में हुआ है।
- ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण करके यज्ञ संपन्न कराने वाले पुरोहित को 'होता' कहा जाता था।
- **ऐतरेय** तथा **कौषीतकि** ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रंथ है।
- ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं की रचना महिलाओं ने भी की है।
- ये हैं - लोपामुद्रा, घोषा, शची, पौलोमी, कक्षावृत्ति, श्रद्धा ,कामायनी ,रोमसा ,देवजायामः ,इन्द्रमारतः ,इन्द्राणी ,गोधारिषिका ,उर्वशी ,सूर्य सावित्री , अदितिः ,दाचायनी ,यमी ,सरमा ऋषिका शाशवती,सार्पराज्ञी ।।
- ऋग्वेद में दशराज युद्ध का वर्णन प्राप्त होता हैं। इस युद्ध में भरत कबीले के नेता सुदास (पुरोहित वशिष्ठ) ने रावी नदी के तट पर दस राजाओ के संघ (पुरोहित विश्वामित्र)को पराजित किया था।
- **यजुर्वेद :-**
- यजुष् का अर्थ है यज्ञ
- यजुर्वेद के दो भाग हैं। कृष्ण यजुर्वेद, शुक्ल यजुर्वेद
- कृष्ण यजुर्वेद इसमें मंत्र तथा गद्यात्मकं वाक्य हैं तथा शुक्ल यजुर्वेद इसमें केवल मंत्र है
- कृष्ण यजुर्वेद जो पद्य और गद्य दोनों में है और शुक्ल यजुर्वेद जो केवल पद्य में है।
- कृष्ण यजुर्वेद की मुख्य शाखाएं हैं- तैत्तिरीय, काठक, मैत्रायणी तथा कपिष्ठल।
- शुक्ल यजुर्वेद की मुख्य शाखाएँ हैं - माध्यन्दिन तथा काण्व।
- इसे वाजसनेयी भी कहा गया क्योंकि वाजसेनी के पुत्र याज्ञवल्क्य इनके द्रष्टा थे।
- यजुर्वेद में स्तोत्र एवं कर्मकांड वर्णित हैं।
- यजुर्वेद के कर्मकांडों को संपन्न कराने वाले पुरोहित को 'अध्वर्यु' कहा जाता था।
- यजुर्वेद का अंतिम भाग 'ईशोपनिषद' है, जिसका संबंध याज्ञिक अनुष्ठान से न होकर आध्यात्मिक चिंतन से है।
- शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ है।
- **सामवेद**
- साम का अर्थ है संगीत इसमें यज्ञों के अवसर पर गाने वाले मंत्रों का संग्रह है, जिसे उद्गाता गाता था।
- इसमें 75 सूक्त को छोड़कर शेष ऋग्वेद से लिए गए हैं।
- यह भारतीय संगीत शास्त्र पर प्राचीनतम् पुस्तक है।
- सामवेद में कुल 1875 ऋचाएं हैं
- सामवेद की प्रमुख शाखाएं हैं-कौथुमीय, राणायनीय एवं जैमिनीया।
- **अथर्ववेद**
- यह लौकिक फल देने वाली संहिता है।
- इसमें तंत्र-मंत्र संकलित हैं।
- इसमें औषधि एवं विज्ञान संबंधी जानकारी भी है।

- इसे अथर्वाङ्गिरस वेद भी कहा जाता है।
- इसकी कुछ ऋचायें ब्रह्मविद्या से संबंधित हैं, इसी कारण इसे ब्रह्मवेद भी कहा जाता है।
- इसमें मगध तथा अंग को दूरस्थ प्रदेश कहा गया है।
- इसमें कन्या के उपनयन की चर्चा, साथ ही ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर वेदाध्ययन करने का स्पष्ट उल्लेख है।
- अथर्ववेद में 20 कांड, 731 सूक्त तथा 5987 मंत्र है। इसमें 1200 मंत्र ऋग्वेद के हैं।
- अथर्ववेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाले पुरोहित को 'ब्रह्मा' कहा जाता था।
- इसने सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।
- अथर्वेद में **परीक्षित को कुरुओं का राजा** कहा गया हैं।

वेद	उपवेद	महत्वपूर्ण तथ्य
ऋगवेद	आयुर्वेद	यह चिकित्सा शास्त्र से सम्बंधित हैं
सामवेद	गंधर्ववेद	यह युद्ध कला से सम्बंधित हैं
यजुर्वेद	धनुर्वेद	यह कला , नृत्य , संगीत से सम्बंधित हैं ,
अथर्वेद	शिल्पविद	यह वास्तुकला / भवन निर्माण से सम्बंधित हैं

वेद	ब्राह्मण ग्रन्थ	पुरोहित	उपनिषद
ऋग्वेद	ऐतरेय , कौषीतकि	होता	ऐतरेय , कौषीतकि
यजुर्वेद	शतपथ , तैतरीय	अध्वर्यु	तैतरीय , कठ, श्वेताम्बर , त्रायणि (कृष्णा यजुर्वेद से , वृहदारण्यक , ईश शुक्ल यजुर्वेद)
सामवेद	पंचविश	उद्गाता	छान्दोग्य , केन
अथर्वेद	गोपथ	ब्रम्ह	मुण्डक , माण्डूक्य , प्रश्न

- **प्रमुख विदुषी महिलाएं-** गार्गी, मैत्रेयी
- अथर्ववेद में सिंचाई के साधन के रूप में वर्णाकूप एवं कुलमा (नहर) का उल्लेख है।
- इसमें वर्ष में दो फसल उपजाने तथा खाद के रूप में गोवर (शकृत और करिषु) के प्रयोग की बात है।
- सर्वप्रथम अथर्ववेद में रजत (चाँदी) का उल्लेख हुआ है।
- इसमें लोहे के लिए श्याम या कृष्ण अयस् शब्द प्रयुक्त किए गए।
- वाजसनेयी संहिता में श्याम (अयस) शब्द प्रयुक्त हुआ।
- **ब्राह्मण ग्रंथ**
- इनकी रचना यज्ञ के विधान तथा उसकी क्रिया को समझाने के लिए की गयी है।
- इनका प्रधान विषय यज्ञों का प्रतिपादन तथा उनके विधियों की व्याख्या करना है।
- ये अधिकांशतः गद्य में लिखे गए।
- शतपथ ब्राह्मण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- इसमें विदेथ माधव तथा उसके पुरोहित गौत्तम राहुगण द्वारा सदानीरा (गण्डक) तक आर्यीकरण करने का उल्लेख है।
- शतपथ ब्राह्मण में ही पहली बार पुनर्जन्म के सिद्धान्त का वर्णन इसी में है।
- ऐतरेय ब्राह्मण की रचना महिदास ऐतरेय द्वारा की गयी।
- इसमें उत्तर का राजा विराट, दक्षिण का भोज, पश्चिम का स्वराट, मध्यदेश का राजा तथा पूर्व का सम्राट कहा गया है।
- वैराज्य ऐसा क्षेत्र होता था जहाँ शासक नहीं था।
- **अरण्यक्**
- यह ब्राह्मणों का अंतिम भाग है।
- इसका पाठ एकांत एवं वन में भी संभव है।
- यह तप पर बल देता है।
- इनमें यज्ञों के स्थान पर ज्ञान एवं चिन्तन को प्रधानता दी गयी है।
- इन्हीं से कालांतर में उपनिषदों का विकास हुआ।
- अरण्यक ग्रंथ वानप्रस्थ आश्रम के यज्ञों, व्रतों तथा कार्यों का विवरण देते हैं।
- प्रमुख अरण्यक हैं - ऐतरेय, शंखायन, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक, जैमिनी तथा छन्दोग्य।
- **उपनिषद्**
- शाब्दिक अर्थ शास्त्र या विद्या जो गुरू के निकट बैठकर एकांत में सीखी जाती है।
- यह वैदिक साहित्य का अंतिम भाग माना जाता है इसीलिए इसे वेदांत भी कहते हैं।
- आरण्यकों में जिन दार्शनिक विचारों का सूत्रपात हुआ उनका विस्तृत एवं विकसित स्वरूप उपनिषदों में प्राप्त होता है।
- इनका प्रमुख विषय आत्म विद्या है।
- इनसे 800 ई.पू. से 500ई.पू. के मध्य के राजनीतिक इतिहास के , सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त होती है।
- उपनिषदों की रचना गंगा-घाटी में की गई थी।
- मुगल काल में दाराशिकोह ने काशी के कुछ पंडितों की सहायता से (52) उपनिषदों का फारसी में अनुवाद सिर्र-ए-अकबर (महान रहस्य) या सिर्रे असरार (रहस्यों का रहस्य) नाम से करवाया था।
- यह रहस्यात्मक ज्ञान एवं सिद्धांत का संकलन है।

- मुक्तिकोपनिषद् में 108 उपनिषदों का उल्लेख है।
- मल्लोपनिषद् की रचना अकबर के समय में हुयी।
- कठ, श्वेताश्वर, ईश तथा मुंडक उपनिषद् छंदोबद्ध है।
- केन् और प्रश्न उपनिषद् का कुछ भाग छंद एवं कुछ भाग गद्य है।
- उपनिषदों में ब्रह्म तथा आत्मा के बीच तादात्म्य स्थापित किया गया है।
- जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आत्म या ब्रह्म साक्षात्कार है।
- इसे प्राप्त करने का माध्यम उपनिषदों में बताया गया है।
- बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य गार्गी सम्वाद है जिसमें याज्ञवल्क्य गार्गी का वाद-विवाद के क्रम में सिर तोड़ने की धमकी देते हैं।
- सबसे बड़ा उपनिषद् वृहदारण्यक है और सबसे छोटा उपनिषद व माण्डूक्योपनिषद है।
- इसी में सर्वप्रथम ब्रह्म या परमात्मा के ज्ञान का निश्चित वर्णन है।
- छान्दोग्य उपनिषद में ब्रह्म ही सबकुछ है कहकर अद्वैतवाद की प्रतिष्ठा की गयी है।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों की तुलना मदिरा और पासा से की गयी है
- इसी में त्रिमूर्ति तथा चार आश्रमों के सिद्धान्त का वर्णन है।
- कठोपनिषद् में यम ने नचिकेता को आत्मज्ञान विषयक उपदेश दिया।
- सर्वप्रथम जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों की चर्चा हुई।
- सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है। इसी में यज्ञ की तुलना फूटी हुई नौका से की गयी है।

- **वेदांग**
- वेद के अर्थ को सरलता से समझने तथा वैदिक कर्मकांडों को प्रतिपादित करने में सहयोग देने के लिए एक नवीन साहित्य की रचना हुई, जिसे वेदांग कहा जाता है। ये छह हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद एवं ज्योतिष।

- **शिक्षा(नासिका)**
- वैदिक मंत्रों के शुद्ध-शुद्ध उच्चारण तथा शुद्ध स्वर क्रिया की विधियों के ज्ञान के निमित्त इसकी रचना हुयी। इसे वेद रूपी पुरुष की नाक कहा गया।

- **कल्प(हाथ)**
- वैदिक यज्ञों की व्यवस्था तथा गृहस्थाश्रम के लिए उपयोगी कर्मों के प्रतिपादन करने के निमित्त इसकी रचना हुयी, यानि इसमें धार्मिक अनुष्ठान का विधान है। सूत्र ग्रंथों को ही कल्प कहा जाता है।
- कल्पसूत्र मुख्यतः चार प्रकार के हैं - श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र एवं शुल्वसूत्र।
- श्रौतसूत्र में हमें वेदों में वर्णित यज्ञ भागों तथा यज्ञ सम्बन्धी विधि नियमों का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। गृह्यसूत्र में गृहस्थाश्रम से संबंधित धार्मिक अनुष्ठानों तथा कर्त्तव्यों का वर्णन है।
- धर्मसूत्र में चारों प्रमुख वर्णों की स्थितियों, व्यवसायों, कर्त्तव्यों, दायित्वों तथा विशेषाधिकारों में स्पष्ट विभेद दिखता है (सामाजिक नियमों तथा आचार-विचारों का विस्तारपूर्वक वर्णन)।
- शुल्वसूत्र में यज्ञीय वेदियों को नापने आदि का वर्णन है जो आर्यों के ज्यामितीय ज्ञान का परिचालक है।

- **व्याकरण(मुख)**
- शब्दों की मीमांसा करने वाले शास्त्र को व्याकरण कहा गया है। इसका संबंध भाषा संबंधी समस्त नियमों से है।
- व्याकरण की सर्वश्रेष्ठ रचना पाणिनी की अष्टाध्यायी है। बाद में पतंजलि ने महाभाष्य लिखे तथा कात्यायन ने 'वार्तिका' की रचना की।

- **निरुक्त(कान)**
- इसमें वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति दी गयी है।

- **छंद (पैर)**
- वैदिक मंत्र अधिकांशतः छंदों में बद्ध हैं।
- इसके सही उच्चारण हेतु छंदों का ज्ञान आवश्यक है।
- छंदशास्त्र पर पिंगलमुनि का छंद सूत्र सबसे प्रमुख ग्रंथ है। छंदों को वेदों का पैर कहा गया है।

- **ज्योतिष (नेत्र)**
- ग्रहों तथा नक्षत्रों की स्थिति के अध्ययन की आवश्यकता ने ज्योतिष वेदांग को जन्म दिया ताकि शुभ मुहूर्त में यज्ञ कार्य हो।
- ज्योतिष की सर्वप्राचीन रचना लगधमुनि कृत ज्योतिष वेदांग है।
- यही भारतीय ज्योतिष शास्त्र का मूलाधार है।

- **पुराण**
- यह वैदिक साहित्य में शामिल नहीं है।
- अथर्ववेद में कहा गया है कि चारों वेदों के बाद पुराण का स्थान है।
- पुराणों के आदि संकलनकर्त्ता, महर्षि लोमहर्ष तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा को माना जाता है।
- मुख्य पुराणों की संख्या 18 है।
- ये हैं -मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्म, वामन, वाराह, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड़, कुर्म तथा स्कंद।
- इन्हें सम्मिलित रूप से महापुराण कहा जाता है।

- **पुराण के पाँच भाग होते हैं-**
- सर्ग (सृष्टि),
- प्रतिसर्ग (प्रलय, पुनर्जन्म),

- वंश (देवता व ऋषि सूचियां),
- मन्वन्तर (चौदह मनु के काल),
- वंशानुचरित (सूर्य चन्द्रादि वंशीय चरित)

- पुराणों में प्राचीन राजकुलों का इतिहास है।
- परीक्षित से लेकर नंदवंश तक का इतिहास हमें मुख्यतया पुराणों से ही ज्ञात होता है।
- **मत्स्य पुराण**

- विष्णु के मत्स्यावतार से इसका प्रारम्भ होता है। इस पुराण का ऐतिहासिक महत्व है।
- आन्ध्र राजाओं की प्रामाणिक वंशावली इसमें प्राप्त होती है।
- भारत के दक्षिण अंचल की स्थापत्य, वास्तु मूर्ति आदि कलाओं का इसमें सुन्दर विवरण है।
- इसमें विष्णु एवं शिव दोनों के आख्यानों को प्रस्तुत किया गया है।

- **मार्कण्डेय पुराण**

- इस पुराण में अग्नि, इन्द्र, सूर्य तथा ब्रह्मा आदि देवताओं को प्रधान स्थान दिया गया है।
- इसी पुराण में 'देवी महात्म्य' है जिसमें आद्य शक्ति के रूप में देवी दुर्गा की स्तुति का गान है।

- **भागवत पुराण**

- यह सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय पुराण है। वैष्णव धर्म में इसे पंचम वेद ही माना जाता है।
- इस पुराण में बारह स्कन्ध तथा 12,000 श्लोक हैं जिसमें विष्णु के अवतारों का विस्तृत वर्णन है।
- इसके दसवें स्कन्ध में श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाएँ अंकित हैं।
- इस पुराण की शैली अत्यन्त प्रौढ़, दार्शनिक एवं परिष्कृत है।

- **विष्णु पुराण**

- प्राचीनता एवं प्रामाणिकता की दृष्टि से इस पुराण का प्रमुख स्थान है।
- विष्णु के विविध अवतारों के माध्यम से इसमें विष्णु की उपासना वर्णित है। मौर्य राजाओं की प्रामाणिक वंशावली भी इस पुराण में प्राप्त होती है।
- इस पुराण का ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक महत्व प्रसिद्ध है।
- भारतीय पर्वत, नदी (भूगोल दृष्टिकोण से मानव विकास), सांस्कृतिक अवधारणा की व्याख्या।

- **वायु पुराण**

- इसे शिव पुराण भी कहा जाता है। शिव की स्तुति प्रभुख होने के साथ-साथ इसमें विष्णु सम्बन्धी दो अध्याय भी हैं।
- इस पुराण का भी ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि इसमें गुप्त साम्र है।
- इसमें संगीत शास्त्र से भी सम्बद्ध एक अध्याय है।
- भारतीय भूगोल की आरंभिक चर्चा इस पुराण में ही मिलती है।

- **अग्नि पुराण**

- सबसे बाद का पुराण भारतीय स्थापत्य का वर्णन।

- **स्मृति ग्रंथ**

- भारतीय न्याय व्यवस्था के लिए प्रथम प्राप्त ग्रन्थ है। इन्हें धर्मशास्त्र भी कहा जाता है।
- स्मृतियाँ हिन्दू धर्म के कानूनी ग्रंथ हैं। ये पद्य में लिखी गयी हैं। परन्तु विष्णु स्मृति गद्य में लिखी गयी है। इनका संकलन विभिन्न कालों में हुआ। प्रमुख स्मृतियाँ निम्नलिखित हैं-

- **मनुस्मृति**

- मनु का धर्मशास्त्र हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में प्रमुख और सबसे अधिक प्रमाणिक ग्रन्थ है और हिन्दू समाज और सभ्यता के लोकमान्य स्वरूप को प्रकट करता है। मनु का नाम अत्यन्त प्राचीन काल से कई रूप में मिलता है।
- ये मानव जाति के आदिपुरुष, राजसंस्था के प्रथम कर्ता तथा धर्म के प्रथम व्यवस्थापक हैं।
- इस स्मृति की मूल रचना मौर्योत्तर युग में शुंग काल में हुई। मनु स्मृति का अंग्रेजी संस्करण Code of Zentoo Laws के नाम से जाना जाता है।

- **याज्ञवल्क्य स्मृति**

- याज्ञवल्क्य का धर्मशास्त्र मनु की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित एवं संक्षिप्त है।
- मनु ने ब्राह्मण को शूद्र कन्या के साथ विवाह की अनुमति दी है जब कि याज्ञवल्क्य ने इसका विरोध किया हैं।
- मनु ने नियोग की निन्दा की परन्तु याज्ञवल्क्य ने नहीं।
- मनु ने विधवाओ के अधिकार के विषय में कुछ नहीं कहा किंतु याज्ञवल्क्य ने विधवाओ को समस्त उत्तराधिकारियों में प्रथम स्थान दिया है।
- इसी स्मृति ने स्त्रियों को सर्वप्रथम सम्पत्ति का अधिकार प्रदान किया।

- **नारद स्मृति**

- गुप्त कालीन यह एक प्रमुख स्मृति है।
- इसमें विशेष प्रथा और स्त्रियों के पुनर्विवाह की अनुमति दी गई है।
- दासों की मुक्ति का विधान सर्वप्रथम इसी पुस्तक में मिलता है।
- इसमें भी राजकीय नियंत्रण में द्यूत की अनुमति दी गई है।
- नारद ने विधवाओं की सम्पत्ति राज्य द्वारा लेकर उनके भरण पोषण को राजा का कर्तव्य बताया है।
- नारद स्मृति में स्वर्ण मुद्राओं के लिए दीनार' शब्द का प्रयोग किया गया है।
- यह मुद्रा सर्वप्रथम रोम में प्रारम्भ हुई थी और भारत में इसे सर्वप्रथम कुषाण शासकों ने प्रारम्भ किया।

- **विष्णु स्मृति**

- यह स्मृति गद्य में लिखी गई है तथा गुप्तकालीन मानी जाती है।
- इस स्मृति में मुद्राओं का विवेचन मनु की अपेक्षा अधिक विकसित रूप में किया गया है।

- **देवल स्मृति**

- यह पूर्व मध्यकालीन स्मृति है।
- इसे मूलतः विधि विषयक नहीं माना जाता क्योंकि इसमें उन हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में शामिल करने का विधान मिलता था जिन्होंने मुस्लिम धर्म अपना लिया था।

NOTE	
प्राचीनतम दो स्मृतियों मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति पर विद्वानों ने परवर्ती काल में कई भाष्य लिखे।	
स्मृति	भाष्यकार
मनुस्मृति	मेद्यातिथि, कुल्लूक भट्ट, गोविन्द राज और भारुचि
याज्ञवल्क्य	विज्ञानेश्वर, विश्वरूप एवं अपरार्क

❑ **वैदिकोत्तर साहित्य** –

- **मिताक्षरा**

- **लेखक -** विज्ञानेश्वर
- यह कल्याणी के चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठ के दरबार में रहते थे।
- **मुख्य तथ्य -**
- इस ग्रंथ से पता चलता है कि पिता के जीवन काल में भी पुत्रों को सम्पत्ति का भाग मिल सकता है, जो आज बंगाल, असम तथा पूर्वी भारत के राज्यों को छोड़कर समस्त भारत में प्रचलित है।

- **दायभाग**

- **लेखक -** जीमूतवाहन
- **मुख्य तथ्य -**
- इससे पता चलता है कि पिता के जीवन काल में उसके पुत्र को सम्पत्ति का भाग नहीं मिल सकता, केवल मृत्यु के बाद ही मिल सकता है।
- बंगाल, असम तथा कुछ पूर्वी राज्यों में यह आज भी प्रचलित है।

- **महाकाव्य**

- इस काल से तात्पर्य रामायण और महाभारत के समय से है।
- ये दोनों आर्ष महाकाव्य माने जाते हैं।
- यद्यपि इनके सम विवाद है, परन्तु लगता है इन दोनों का अन्तिम संकलन गुप्तकाल में किया है।

- **रामायण**

- **लेखक -** महर्षि वाल्मीकि हैं।
- **मुख्य तथ्य**
- इसका अन्तिम संकलन 400 ई० के आसपास हुआ।
- इसे भारत का आदि महाकाव्य कहा जाता है जबकि वाल्मीकि को आदिकवि।
- प्रारम्भ में इसमें 6000 श्लोक थे परन्तु, बाद में इनकी संख्या बढ़कर 12000 और वर्तमान में 24000 हो गई।
- इसे चतुर्विंशति साहस्री संहिता भी कहा जाता है।
- **रामायण का अनुवाद**
  - भाषा - अनुवादक - अनुवादित कृति
  - तमिल - कवि कम्बन - रामायणम या रामावतारम (चोल शासक कुलोत्तुंग तृतीय के समय)
  - बांग्ला - कृत्तिवास - (बारबक शाह के समय)
  - तमिल - ई. वी. रामस्वामी नायकर उर्फ़ पेरियार - सच्ची रामायण -

- **महाभारत** –

- **लेखक -** महर्षि वेदव्यास
- **मुख्य तथ्य**
- यह अन्तिम रूप से 400 ई. के आसपास पूर्ण हुआ।
- इससे दसवीं सदी ई.पू. से चौथी सदी ईस्वी के बीच की जानकारी प्राप्त होती है।
- प्रारम्भ में इसमें केवल 8800 श्लोक थे, तब इसे जयसंहिता कहा गया, जिसका अर्थ है विजय सम्बन्धी संग्रह ग्रंथ ।
- बाद में श्लोकों की संख्या बढ़कर 24000 हो गई, तब इसे भारत कहा गया क्योंकि इसमें प्राचीनतम वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा है।
- अन्ततः इसमें एक लाख श्लोक हो गए और तदनुसार यह शतसाहस्री संहिता या महाभारत कहलाने लगा।
- यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।
- महाभारत में वेदव्यास ने लिखा है "जो इस ग्रंथ में है, वह अन्य जगह भी है, जो इसमें नहीं है, वह कहीं भी नहीं है।"
- महाभारत में कुल अठारह पर्व हैं।
- इसमें भीष्म पर्व (छठा पर्व) का भाग गीता है, जिसमें कर्म, भक्ति एवं ज्ञान का संगम मिलता है।
- इसमें कर्म को सर्वाधिक प्रधनता दी गई है।
- गीता में ही सर्वप्रथम अवतारवाद का उल्लेख मिलता है।

- **महाभारत का अनुवाद**
  - तमिल में सर्वप्रथम अनुवाद पेरून्देवनार ने किया, जो भारतम् नाम से जाना जाता है।
  - बंगला भाषा में अनुवाद अलाउद्दीन नुशरत शाह के समय में हुआ।

- **बुद्धचरित**
- **लेखक** - महाकवि अश्वघोष
- **मुख्य तथ्य**
- राजा कनिष्क (78 ईस्वी) के सभाकवि अश्वघोष जन्म से ब्राह्मण होने पर भी प्रकाण्ड बौद्ध दार्शनिक हुए
- इस महाकाव्य में तथागत बुद्ध के जन्म से लेकर बुद्धत्व प्राप्ति तक का सुन्दर वर्णन है।
- सौन्दरानन्द अश्वघोष का एक अन्य महाकाव्य है।

- **रघुवंश**
- **लेखक -** कालिदास
- **मुख्य तथ्य**
- रघुवंश को संस्कृत साहित्य का उत्कृष्ट रत्न स्वीकार किया गया है।
- इसमें उन्नीस सर्ग हैं
- जिनमें राजा दिलीप से लेकर अग्निमित्र तक सूर्यवंशी राजाओं की अनेक पीढ़ियों के राजाओं का चित्रण है।
- आकर्षक चरित्रचित्रण, विशद रुचिर वर्णन, प्रौढ़ प्रतिमा, सुन्दर रस व्यंजना तथा सरल अलंत शैली सभी का मणिकांचन संयोग इस महाकाव्य में द्रष्टव्य है।

- **कुमारसंभव**
- लेखक - कालिदास
- मुख्य तथ्य
- हिमालय की पुत्री पार्वती घोर तपस्या करके शिव को पति रूप में प्राप्त करती हैं।
- इसके मिलन से कुमार कार्तिकेय का जन्म होता है।
- कार्तिकेय देव सेनापति बन कर भयंकर तालकासुर का संहार करते हैं और सृष्टि का कल्याण करते हैं
- यही इस महाकाव्य की संक्षिप्त कथा है।

- **भट्टिकाव्य अथवा रावणवध**
- लेखक - महाकवि भट्टि
- मुख्य तथ्य
- राजा श्रीधरसेन के समय में वलभी नगरी में इस महाकाव्य की रचना की गयी।
- इसका समय छठीं शती का अन्त अथवा सातवीं शती ईस्वी का प्रारम्भ माना जाता है।
- इसकी कथा राम चरित्र पर आधारित है।

- **किरातार्जुनीय**
- **लेखक -** महाकवि भारवि
- **मुख्य तथ्य**
- लगभग सातवीं शती ईस्वी पूर्वार्ध में इसे लिखा गया है।
- यह एक संस्कृत महाकाव्य है
- यह महाभारत के वनपर्व की कथा पर आधारित है
- इस महाकाव्य में अर्जुन और किरात (पहाड़ पर रहने वाले शिकारी) के बीच युद्ध का वर्णन है

- **शिशुपाल वध**
- **लेखक -** महाकवि माघ
- **मुख्य तथ्य**
- इस महाकाव्य का समय सातवीं शती ईस्वी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।
- इसमे युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण के द्वारा चेदिराज शिशुपाल के वध की घटना मुख्य है।

- **हरविजय**
- **लेखक -** महाकवि रत्नाकर
- **मुख्य तथ्य**
- इस महाकाव्य का समय सातवीं शती ईस्वी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।
- इनमें शिव के द्वारा दैत्यराज अन्धकासुर के वध की कथा वर्णित है।

- **नैषधीयचरित**
- **लेखक -** महाकवि श्रीहर्ष
- **मुख्य तथ्य**
- ये कन्नौज के राजा जयचन्द्र के सभाकवि थे तथा इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्द्ध है।
- महाभारत का प्रसिद्ध नलोपाख्यान इस महाकाव्य की कथावस्तु का आधार है।

- **खण्डकाव्य**

- यह संस्कृत वाङमय का अत्यन्त सरस अंग है। महाकाव्य की अपेक्षा यह आकार प्रकार में लघुकाय होता है और इसमें जीवन के किसी एक पक्ष अथवा किसी एक घटना का चित्रण ही प्राप्त होता है।
- खण्डकाव्य को ही गीतिकाव्य कहा जाता है क्योंकि इसके पद्यों को गाया जा सकता है। इस साहित्य विधे के दो रूप हैं- प्रबन्ध एवं मुक्तक
- एक ही प्रकार के छन्दों में रची गयी, अल्प एवं परिमित कथावस्तु से सम्पन्न रचना खण्डकाव्य में प्रबन्ध रचना कहलाती है।
- मुक्तक का अर्थ है केवल एक पद्य, जो बाह्य संदर्भ से स्वतंत्र रहकर भी रस की पूर्ण अभिव्यक्ति करा देती है।
- गीतिकाव्य अथवा खण्डकाव्य के उद्गम की दृष्टि से ऋग्वेद में देवी उपस् के लिए ऋषि के जो हृदयोद्गार हैं गीतिकाव्य के सुन्दर उदाहरण है।
- महर्षि पाणिनि के नाम से प्राप्त अनेक सरस श्लोक गीतिकाव्य के अंतर्गत ही आते हैं। किन्तु संस्कृत साहित्य में गीतिकाव्य को एक स्वतंत्रा विधे के रूप में स्थापित करने का श्रेय महाकवि कालिदास को ही प्राप्त है।

- **ऋतुसंहार**
- **लेखक -** कालिदास
- **मुख्य तथ्य -**
- इस खण्ड काव्य में छह सर्ग हैं जिसके 144 पद्य एवं पूरे वर्ष की छह ऋतुओं का सुन्दर एवं शृंगारिक वर्णन है।
- इसमें कवि का रचनाकौशल पर्याप्त प्रौढ़ नहीं हैं किन्तु कवि ने इसमें ग्रीष्म ऋतु से प्रारम्भ करके यथाक्रम वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर तथा बसन्त ऋतुओं का प्रेमी मानव की दृष्टि से सरस वर्णन किया है।
- इस काव्य की भाषा सरल है और शब्द विन्यास अनुप्रासमय है।

- **मेघदूत**
- **लेखक -** महाकवि कालिदास
- **मुख्य तथ्य**
- यह खण्डकाव्य संस्कृत की एक अनुपम रचना है।
- इसके दो नाम हैं, पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ तथा दोनों में मिला कर कुल 121 पथ हैं जो मन्दाक्रान्ता छन्द में है।
- इसकी कथा अत्यन्त संक्षिप्त है।
- कुबेर के श्राप के कारण अलका नगरी से एक वर्ष के लिए निर्वासित कोई यक्ष रामगिरि पर्वत पर रहता है और वर्षा के प्रारम्भ में मेघ को देखकर अपनी प्रिया की स्मृति से व्याकुल होकर मेघ के द्वारा अपनी प्रिया पत्नी को संदेश भिजवाता है।
- काव्यकला एवं रस की अभिव्यंजना की दृष्टि से यह गीतिकाव्य अत्यन्त उत्कृष्ट रचना है।

- **घटकर्पर**
- लेखक - घटकर्पर
- मुख्य तथ्य
- इसमें केवल 22 पद्य हैं तथा इसका कथानक पात्रा की दृष्टि से मेघदूत से उल्टा है। अर्थात् वर्षा ऋतु के आ जाने पर एक नवविवाहिता विरहिणी मेघ द्वारा अपने पति के पास सन्देश भिजवाती है।
- इस पूरे काव्य में यमक अलंकार का बहुल प्रयोग है

- **भर्तृहरि के शतकत्राय**
- भर्तृहरि का व्यक्तित्व एवं स्थिति काल अत्यधिक विवादास्पद है।
- अधिकांश विद्वान भर्तृहरि का समय छठी शती का अन्त मानते हैं।
- **भर्तृहरि ने तीन शतकों की रचना की है -** नीति शतक, शृंगार शतक और वैराग्य शतक। शतकों के नाम के अनुरूप ही इनमें क्रमशः नीति, श्रृंगार और वैराग्य का सरस चित्रण है।
- इन शतकों में प्रायः सभी प्रचलित छन्दों का प्रयोग किया गया है।
- भर्तृहरि ने अपने विचारों की पुष्टि में प्रतिदिन के जीवन के अनुरूप उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। इसलिए भर्तृहरि के कथन सूक्ति बन कर लोक में पर्याप्त प्रचलित हो गये।

- **अमरूक शतक**
- **मुख्य तथ्य** –
- अमरूक अथवा अमरू नाम से विख्यात इस कवि के शतक में प्रणय और श्रृंगार कला ललित और मनोरम भंगियों के सर्वोत्तम चित्रा उपलब्ध होते हैं।
- रचना शैली के आधार पर इनका समय 700 ई. माना जाता है। साहित्यिक दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है।
- संस्कृत के काव्यशास्त्रीय आचार्यों के शास्त्र ग्रन्थ इस शतक के उदाहरणों से भरे पड़े हैं। अमरूक ने **'गागर में सागर'** की उक्ति चरितार्थ कर दी है, फिर भी ये सरल एवं सुबोध हैं।

- **चौर पंचाशिका**
- **लेखक -** कवि बिल्हण
- **मुख्य तथ्य**
- इस लघु गीतिकाव्य में 50 पद्य हैं। इसकी भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है।
- प्रत्येक पद्य 'अद्यापि' से प्रारम्भ होता है तथा सम्पूर्ण गीतिकाव्य में श्रृंगार रस चित्रित है।
- इन्होंने ऐतिहासिक महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित की रचना की थी।

- **गीतगोविन्द**
- **लेखक** - महाकवि जयदेव
- **मुख्य तथ्य**
- ये राजा लक्ष्मणसेन की सभा में थे।
- अतः इनका स्थितिकाल भी बारहवीं सदी ईस्वी है।
- जयदेव ने श्लोक, गद्य एवं गीत के मिश्रण से एक अद्भुत काव्यशैली का सूत्रापात किया।

- इस काव्य में नायक कृष्ण हैं तथा नायिका राधा।
- इन दोनों के पारस्परिक शृंगार की आशा, निराशा, ईर्ष्या, मान, कोप, मानभंग, विरह, मिलन आदि विभिन्न दशाओं का सरस चित्रण इस काव्य में है।
- गीतगोविन्द जैसा साहित्यिक सौन्दर्य एवं माधुर्य अन्य किसी काव्य में मिलना दुष्कर ही है।
- कोमलकान्त पदावली के साथ ललित अनुप्रास युक्त छन्दों ने इस काव्य में रमणीय गेयता उत्पन्न कर दी है।
- महाप्रभु चैतन्य ने गीतगोविन्द की काव्यमाधुरी के अनन्य उपासक रहे।
- आज भी वैष्णव समाज में जयदेव के पद्य बहुत प्रचलित हैं।

❑ **बौद्ध साहित्य**

- अधिकांश साहित्य पाली भाषा में बाद के साहित्य संस्कृत में भी हैं।
- बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक का महत्व सर्वाधिक है। ये हैं सुत्तपिटक (उपदेश), विनयपिटक (संघ के नियम), अभिधम्मपिटक (दर्शन)।
- **सुत्तपिटक :**
  - इसमें बुद्ध के उपदेश हैं। यह सर्वाधिक विस्तृत एवं प्रमुख है। इसका विभाजन पाँच निकायों में हुआ है।
  - दीर्घनिकाय में बुद्ध के शिक्षा और संवादों का संकलन है
  - खुद्दक निकाय में बोद्ध दर्शन से संबंधित 15 ग्रंथों का संकलन है।
  - इसमें धम्मपद, सुत्तनिपात, थेरीगाथा, थेरगाथा, जातक कथा शामिल है। बौद्ध धर्म में धम्मपद की तुलना गीता से की जाती है (चीनी त्रिपिटकों में इसके अनुवाद मिलते हैं)।
  - जातक कथा में बुद्ध के पूर्व जन्म की घटना का वर्णन है।
  - अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद का वर्णन हैं।
- **विनयपिटक :**
  - इसमें संघ से संबंधित नियम हैं। इसके चार भाग हैं- सुत्तविभंग, खंदक, पतिमुक्ख एवं परिवार पाठ।
- **अभिधम्मपिटक :**
  - इसमें बुद्ध की शिक्षा का दार्शनिक विवेचन है एवं आध्यात्मिक विचारों को समाविष्ट किया गया है।
  - इस पिटक से संबंधित सात ग्रंथ हैं जो प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गये हैं। जिनमें मोग्गलिपुत्त तिस्स रचित कथावत्थु सबसे महत्वपूर्ण है।
- **मिलिन्दपन्हों**
  - इसमें ग्रीक राजा मिनांडर एवं बौद्ध विद्वान नागसेन के बीच प्रश्नोत्तर है।
  - दीपवंश, महावंश
  - क्रमशः चौथी, पाँचवीं सदी ई. में रचित श्रीलंकाई बौद्ध महाकाव्य है।
- **आगम**
  - इसके सबसे बडे टीकाकार बुद्धघोष है। उन्होंने विशुद्धिमग्ग की रचना की जो बौद्ध सिद्धांतों पर आधारित प्रमाणिक दार्शनिक ग्रंथ है।
- **महायान साहित्य**
  - यह अधिकांशतः संस्कृत में लिखे गये हैं।
  - आरंभिक पुस्तक ललित विस्तार है जो बुद्ध की प्राचीनतम् जीवनी है, इसमें विभिन्न प्रकार के लिपियों का वर्णन है।
  - एड्विन अर्नोल्ड ने इसे 'द लाइट ऑफ एशिया' नाम से अनुदित किया।
  - महायान संप्रदाय का सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक पुस्तक प्रज्ञापारमिता है।
  - पारमिता का अर्थ उन गुणों की प्राप्ति है जो बुद्धत्व प्राप्ति के लिए आवश्यक है।
  - महायान साहित्य में दंतकथाओं का भी भंडार है, इन कथाओं को अवदान कहते हैं।
  - कुछ प्रमुख अवदान हैं :- अवदान शतक, दिव्यावदान, अवदान कल्पलता (क्षेमेन्द्र रचित)।
  - कुछ अन्य बौद्ध ग्रंथ :- नागार्जुन - सहस्रप्रज्ञापारमिता, आर्यदेव - चतुश्शतक, एवं वसुबंधु - अभिधम्मकोष।

❑ **जैन साहित्य**

- प्राचीनतम् जैन ग्रंथ पूर्व कहे जाते थे। कहा जाता है कि इसकी जानकारी सिर्फ भद्रबाहु को थी। उसके दक्षिण चले जाने पर स्थूलभद्र ने एक सभा आयोजित किया जिसमें 14 पूर्वी का स्थान 12 अंगों ने ले लिया।
- पूर्वो में महावीर द्वारा प्रचारित सिद्धांत संग्रहित थे जिसे स्वयं महावीर ने अर्धमागधी प्राकृत भाषा में अपने शिष्यों तक पहुँचाया था।
- श्वेताम्बर के आगमों में 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छंदसूत्र / भेदसूत्र, 4 मूलसूत्र एवं अनुयोगसूत्र हैं।
- प्रारंभिक जैन आचार्यों ने अर्द्धमागधी भाषा को अपनाया। आगे चलकर इसने उत्तर भारत में अपभ्रंश, गुजराती, राजस्थानी आदि के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दक्षिण भारत में तमिल, तेलगु, कन्नड़, मराठी के विकास में भी आचार्यों ने भूमिका निभाई।
- हेमचंद्र के लेखन के आधार पर जैन धर्म से संबंधित तिथियाँ स्पष्ट की जाती हैं। उसी ने अपभ्रंश भाषा को व्याकरणवद्ध किया।
- **कुछ अन्य जैन ग्रंथ**
  - भद्रबाहु : भद्रबाहुचरित, कल्पसूत्र
  - हेमचन्द्र : परिशिष्टपर्वन (कौटिल्य का जीवनवृत्त).
  - हरिभद्र सूरी : समारादित्यकथा, धर्मबिंदु अनेकांतविजय
  - उद्योत्तनसूरी : कुवलयमाला
  - नयचंदसूरी : हम्मीर रासो
  - अमोघवर्ष (राजा) : रत्नमालिका
  - जिनसेन : आदिपुराण, हरिवंशपुराण (883 ई.)
  - विमलसूरी (दिगम्बर) : पद्मचरितया या पद्मपुराण

❑ गद्य एवं कथा साहित्य

- **वासवदत्ता**
  - **रचनाकार -** सुबन्धु
  - **मुख्या तथ्य**
  - इस गद्यकाव्य के रचयिता सुबन्धु हे कुसुमपुर की राजपुत्री वासवदत्ता तथा एक राजकुमार कन्दर्पकेतु के पारस्परिक प्रणय की विघ्नयुक्त कथा का इस गद्यकाव्य में वर्णन है।
  - इसमें कथानक अत्यन्त संक्षिप्त है जिसे सुबन्धु ने पाण्डित्य युक्त लम्बे वर्णनों से अत्यन्त दीर्घ कर दिया है।
  - अलंकार बहुलता दीर्घ समास तथा श्लेष के आधिक्य के कारण यह रचना सरस की अपेक्षा दुरूह अधिक है।
- **हर्षचरित**
  - **रचनाकार -** बाणभट्ट
  - **मुख्य तथ्य**
  - इनका समय सातवीं सदी का पूर्वार्द्ध है।
  - हर्षचरित ऐतिहासिक काव्य माना जाता है।
  - इसमें हर्षवर्धन के वंश तथा जीवन चरित का वर्णन किया है।
  - अपने पूर्ववर्ती अनेक मान्य कवियों तथा सामान्य ग्रन्थों की भी इसमें प्रशंसा की है जिससे इन सबके समय निर्धारण में पर्याप्त सहायता मिलती है।
  - काव्यगत विशेषताओं की दृष्टि से भी हर्षचरित एक सुन्दर गद्यकाव्य हैं।
- **कादम्बरी**
  - **रचनाकार -** बाणभट्ट
  - **मुख्य तथ्य**
  - यह गद्यकाव्य है।
  - यह गद्यकाव्य युवक तथा युवती के उस अनुराग का चित्रण करता है जो जन्म जन्मांतर तक दृढ़ एवं भावस्थिर रहता है।
  - इसमें कवि ने चन्द्रापीड कादम्बरी तथा पुण्डरीक महाश्वेता के गूढ़ प्रणय का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।
- **दशकुमारचरित**
  - **रचनाकार -** महाकवि दण्डी
  - **मुख्य तथ्य**
  - इस गद्यकाव्य में तीन राजपुत्रों तथा सात मन्त्रीपुत्रों की कथा है।
  - ये दसों कुमार बड़े होने पर दिग्विजय पर निकलते हैं और रास्ते में बिछुड़ कर अलग स्थानों पर पहुचते हैं।
  - कुछ वर्षों के बाद सभी राजकुमार एक-एक करके मिलते जाते हैं और अपनी यात्राओं, पराक्रमों और विचित्रा लोकानुभवों को रोमांचक और मनोरंजक रूप में सुनाते हैं।
  - इन्हीं साहित्यिक विजयगाथाओं का संग्रह दशकुमार चरित है।
- **हितोपदेश**
  - **रचनाकार -** कवि नारायण पण्डित
  - **मुख्य तथ्य**
  - इस ग्रन्थ की प्राचीनतम हस्तलिखित प्रति 1373 ई. की प्राप्त होती है।
  - कई विद्वान इस ग्रन्थ को पंचतंत्र का ही लघु संस्करण मानते हैं।
  - इसमें कुल 43 कथाएँ हैं जिनमें से 25 कथाएँ पंचतंत्र से ही ग्रहण की गयी हैं।
  - इस ग्रन्थ में चार परिच्छेद हैं- मित्रलाभ, सुहृदभेद, सन्धि और विग्रह।
  - पंचतंत्र की अपेक्षा हितोपदेश में पद्य अधिक है।
  - संस्कृत के सुगम पठन-पाठन की दृष्टि से भारत में हितोपदेश का प्रचार ही अधिक रहा है।
- **बृहत्कथा**
  - **रचनाकार -** कवि गुणाढ्य
  - **मुख्य तथ्य**
  - यह लोककथाओं का सर्वाधिक प्राचीन तथा वृहत संग्रह है।
  - महाराजा हाल के सभाकवि गुणाढ्य ने इसकी रचना पैशाची प्राकृत में की थी तथा मूल रचना में एक लाख पद्य थे।
  - भारतीय परम्परा तथा जनश्रुति के अनुसार इसकी रचना विक्रम की प्रथम शताब्दी में हुई।
  - मूल वृहत्कथा आज उपलब्ध नहीं है किन्तु उसके तीन विभिन्न संस्कृत रूपान्तर प्राप्त होते हैं।
- **वृहत्कथा मंजरी**
  - **रचनाकार -** कवि क्षेमेन्द्र
  - **मुख्य तथ्य**
  - कश्मीर के राजा अनन्त के आश्रित कवि क्षेमेन्द्र ने 1037 ई. में इस ग्रन्थ की रचना की।
  - इसमें 18 लम्बक तथा 7500 श्लोक हैं।
  - कथानक की अस्पष्टता के कारण यह कहना कठिन है कि इसमें मूल कथानक की कितनी रक्षा हो सकी है
- **कथासरित्सागर**
  - **रचनाकार -** सोमदेव

- **मुख्य तथ्य**
- इसके रचयिता सोमदेव क्षेमेन्द्र के समसामयिक थे।
- वृहत्कथा के विभिन्न संस्कृत रूपान्तरों में यही सर्वाधिक प्रसिद्ध हुआ है।
- इसमें 124 तरंगे तथा 24000 श्लोक हैं।
- विश्व साहित्य का यह सबसे बड़ा संग्रह है।

- **शुकसप्तति**
- इसमें सत्तर रोचक कथाएँ संग्रहीत हैं।
- मदनसेना नामक युवक कार्यवशात् विदेश जाता है तथा उसका तोता प्रत्येक रात को एक-एक नवीन तथा रोचक कथा सुनाता है।
- इस ग्रन्थ की भी संक्षिप्त और विस्तृत दो वाचनिका प्राप्त होती हैं।

❑ **तमिल साहित्य (संगम कालीन साहित्य)**

- संगम साहित्य मुख्य रूप से तमिल भाषा में लिखे गए हैं।
- संगम साहित्य के ग्रंथ आज के समय में **"साउथ इण्डिया शैव सिद्धांत पब्लिशिंग सोसायटी तिन्नेवल्ली"** द्वारा प्रकाशित किए गए हैं।
- काव्य में आगम वर्ग की कविताएँ मुख्यतया प्रेम सम्बन्धी हैं। प्रमुख संगम ग्रंथ निम्नलिखित हैं-

- **कुरल**
- इस अष्टादश लघु उपदेश गीत का ग्यारहवाँ संग्रह कुरल है।
- इसके प्रणेता कवि तिरुवल्लुवर हैं।
- इसमें उनकी तथा उनकी पत्नी अव्वे की अनेक कहानियाँ मिलती हैं।
- तिरुवल्लुवर ने अपने ग्रंथ की रचना श्रीलंका के नृपति इलल जो इनका मित्र था अथवा उसके पुत्र को शिक्षित करने के लिये किया था।
- कुरल को तमिल साहित्य का आधार ग्रंथ माना जाता है।
- इसकी गणना साहित्यिक त्रिवर्ग में की गई है, क्योंकि इसमें धर्म, अर्थ तथा काम (अरम, पोरूल, तथा इनवम) का उल्लेख किया गया है।
- इसमें राजनीति एवं कला का भी वर्णन मिलता है। इसे तमिल साहित्य का बाइबिल अथवा पंचमवेद भी माना जाता है।

- **तोलकाप्पियम्**
- यह द्वितीय संगम का उपलब्ध एक मात्र प्राचीनतम ग्रंथ है।
- इसके लेखक **तोलकाप्पियर** हैं।
- यह एक व्याकरण ग्रंथ है।
- इसकी रचना सूत्र शैली में की गई है।
- व्याकरण के साथ-साथ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की नियमावली भी इस ग्रंथ में हैं।

- **एतुत्तौके अथवा अष्ट संग्रह**
- यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसमें तीसरे संगम के आठ ग्रन्थों का संग्रह है।
- इसके प्रमुख भाग हैं- नण्णिनै, कुरुन्थोकै, एनकुरुनूर, पदित्रप्पत्तु, परिपादल, कलिथौके, अहनानरु, पुरुनानरु.

- **परिपावल**
- यह तमिल साहित्य का प्रथम संगीत संग्रह है।
- इसमें विभिन्न देवताओं की प्रशंसा में छंद गाए गए हैं।
- इसी संग्रह में इन्द्र द्वारा गौतम ऋषि की पत्नी के साथ किए गए दुर्व्यवहार एवं भक्त प्रहलाद का वर्णन है।
- एक गीत में मयूर नृत्य का स्वाभाविक वर्णन मिलता है।

- **केलिथोके**
- इसकी रचना का श्रेय कपिलर तथा अन्य चार व्यक्तियों को दिया गया है।
- इसमें संगम युग के **विवाह की प्रथाओं** का उल्लेख है।

- **अहनानरू**
- मदुरा निवासी रुद्रशर्मन के पाण्ड्य शासक उपपेरूअणुदि के संरक्षण में इसका संग्रह किया गया था।
- इसकी विषय वस्तु भी प्रेम प्रसंग है।

- **पुरूनानरू**
- इसे पुरम् नाम से भी जाना जाता है।

- **पत्तुप्पातु अथवा दशगीत**
- तृतीय संगम का यह दूसरा संग्रह ग्रंथ है।
- ये चेर राजाओं की कहानी कहते हैं।

- **पत्तिनप्पाले**
- इसकी रचना भी रूदनकन्ननार ने की।
- इस ग्रंथ में प्रेमगीत संगृहीत हैं।
- इसमें चोल बन्दरगाह पुहार (कावेरीपत्तनम्) तथा तमिल क्षेत्रों के साथ विदेशी व्यापारिक सम्बन्धों का वर्णन है।
- इसमें कवि ने योद्धा के समरभूमि में जाने की इच्छा तथा प्रेयसी के आकर्षण के अंतद्वंद्व का अत्यन्त स्वाभाविक वर्णन किया है।
- इसकी कहानी अश्वघोष के बुद्धचरित से मिलती है।

- इस कृति से प्रभावित होकर चोल शासक करिकाल ने लेखक को 16 लाख स्वर्ण मुद्राएँ ईनाम में दीं।

❑ **संगम युग के महाकाव्य-**

- संगम युग में कुल पाँच काव्य हैं - शिलप्पादिकारम्, मणिमेखले, जीवकचिन्तामणि, वलयपति तथा कुण्डलकेशि।
- इनमें प्रथम तीन ही उपलब्ध हैं।
- यद्यपि ये ग्रन्थ संगम साहित्य के अन्तर्गत नहीं आते तथापि इनसे तत्कालीन जन-जीवन के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है।
- इन महाकाव्यों के रचनाकाल को तमिल साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।
- **शिलप्पादिकारम्**
  - इलांगोआदिगल की रचना है।
  - इसका लेखक जैन माना जाता है।
  - इसका नायक कोवलन एक व्यवसायी तथा नायिका कण्णगी एक व्यापारी की कन्या है।
  - इसकी कथा कावेरीपत्तनम से संबंधित है जिसमें नायक कोवलन बाद में माधवी नामक वेश्या से प्रेम करने लगता है।
  - बहुत उतार-चढ़ाव के बाद कोवलन को पाण्ड्य शासक डुजेलियन द्वारा फाँसी दे दी जाती है।
  - कण्णगी द्वारा अपने पति को निर्दोष सिद्ध कर देने के बाद पाण्ड्य शासक नेंडुजेलियन की आत्मग्लानि से राजसिंहासन पर ही मृत्यु हो गई।
  - तत्पश्चात् कण्णगी ने अपनी क्रोधाग्नि से मदुरा को जला डाला तथा चेर राज्य में चली गई।
  - वहीं पहाड़ी पर उसकी मृत्यु हो गई।
  - इस प्रकार इस महाकाव्य में कोवलन तथ्ता कण्णगी की दुर्भाग्यपूर्ण कथा का वर्णन है।
  - इस ग्रंथ को तमिल साहित्य का इलियड माना जाता है।
- **मणिमेखले (मणियों युक्त कंगन)**
  - सीतलेसत्तनार की रचना है।
  - इसे बौद्ध पुस्तक माना जाता है।
  - इसकी कथा वहाँ से प्रारम्भ होती है जहाँ शिलप्पादिकारम् की कथा समाप्त होती है।
  - इस महाकाव्य की नायिका मणिमेखले हे जो कोवलन की माधवी से उत्पन्न पुत्री है।
  - काफी उतार-चढ़ाव के बाद इसकी नायिका मणिमेखले बौद्ध भिक्षुणी बन जाती है।
  - इसे तमिल साहित्य का ओडिसी कहा जाता है।
- **जीवक चिन्तामणि**
  - कवि तिरुतक्कदेवर की रचना है।
  - इस पुस्तक को विग्रह की पुस्तक भी कहा जाता है क्योंकि इसका नायक जीवक अपने पराक्रम द्वारा आठ रानियों से विवाह कर आनन्दपूर्वक जीवन बिताता था, लेकिन बाद में जैन भिक्षु बन गया।
- **पेरूंगडाई**
  - इसका लेखक कॉगेलेवीर जैन है
  - इस महान काव्य में कौशाम्बी के प्रसिद्ध राजा उदयिन के पुत्र नखानदत्त के साहसिक कार्यों की कथा है।
- **शूलामणि**
  - इसका रचयिता जैन लेखक तोलामोली था।
  - इस काव्य की गणना तमिल साहित्य के पाँच लघु काव्यों में होती है।

मध्यकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

❑ **दिल्ली सल्तनत का काल साहित्यिक**

- दिल्ली सल्तनत का काल साहित्यिक दृष्टि से समृद्धि था। इस समय फारसी और संस्कृत भाषा के अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू और प्रायः सभी प्रान्तीय भाषाओं में ग्रन्थ लिखे गये।
- **संस्कृत साहित्य-**
  - संस्कृत साहित्य को हिन्दू शासकों मुख्यतया विजयनगर, वारंगल और गुजरात के शासकों से संरक्षण प्राप्त हुआ।
  - संस्कृत इस काल में उच्च वर्ग की भाषा रही। धार्मिक एवं धर्म निरपेक्ष रचनाओं का सृजन बड़ी मात्रा में हुआ।
  - इस युग के संस्कृत ग्रन्थों में मौलिकता का अभाव था। अधिकांश पुस्तकें प्राचीन ग्रन्थों की पुनरावृत्ति टीकाएं अथवा प्राचीन भाषाओं का आधार लेकर लिखी गयी।
  - रामानुज ने ब्रह्मसूत्र पर टीकाएं लिखी तथा पार्थसारथी ने काव्य मीमांसा पर ग्रन्थ लिखे।
  - जैनों ने भी संस्कृत के विकास में योगदान दिया, जिसमें हेमचन्द्र सूरि प्रमुख हैं।
  - प्रसिद्ध फारसी कवि जामी द्वारा लिखित युसुफ और जूलेखा की प्रेम-कहानी का फारसी से संस्कृत में अनुवाद किया गया।
  - मध्यकालीन संस्कृत साहित्य के कुछ उदाहरण
    - कालिदास की 'मेघदूत' और 'शकुंतला' जैसी कृतियां
    - शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे विद्वानों के वेदांत दर्शन में योगदान

- चक्रपाणि दत्ता की चिकित्सा संग्रह, आयुर्वेद दीपिका
- जयदेव की गीत गोविंदा
- विद्यानाथ आचार्य का प्रतापरुद्रयशोभूषण नामक काव्यशास्त्रीय ग्रंथ

- **फारसी साहित्य-**

- तुर्की सुल्तान फारसी साहित्य में रुचि रखते थे जबकि मुसलमानों का अधिकांश साहित्य अरबी में लिखा गया था, जो पैगम्बर की भाषा थी।
- फारसी विकास के लिए लाहौर पहला केन्द्र था।
- दिल्ली सुल्तानों ने इस भाषा के विकास के लिए अनेक शिक्षण संस्थाएँ खोली तथा पुस्तकालय स्थापित किये। सबसे महत्त्वपूर्ण राजकीय पुस्तकालय जलालुद्दीन द्वारा स्थापित कराया गया, जिसका अध्यक्ष अमीर खुसरो था।
- बलबन का पुत्र मुहम्मद तथा अलाउद्दीन ने अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो तथा मीर हसन देहलवी को संरक्षण प्रदान किया। मुहम्मद बिन तुगलक के समय में बदरुद्दीन मुहम्मद फारसी का श्रेष्ठ कवि था।
- अमीर खुसरो को फारसी कवियों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है।
- फिरोज तुगलक ने स्वयं की आत्मकथा लिखी तथा इतिहासकार बरनी और अफीक उसके संरक्षण में थे।
- लोदी शासक सिकन्दर लोदी, बहमनी शासक ताजुद्दीन फिरोजशाह तथा बहमनी वजीर महमूद गवाँ का नाम भी विद्वानों में माना जाता है।
- आयुर्वेद ग्रन्थ का फारसी अनुवाद 'फरहेंगे सिकन्दरी' तथा गान विद्या का एक श्रेष्ठ ग्रन्थ का अनुवाद 'लज्जत-ए-सिकन्दरी' सिकन्दर लोदी के शासन काल में हुआ।
- फिरोजशाह तुगलक के समय में चिकित्सा और संगीत शास्त्र पर संस्कृत की पुस्तकों का फारसी भाषा में अनुवाद हुआ।
- जिया नक्शवी पहला व्यक्ति था, जिसने संस्कृत कथाओं की एक श्रृंखला का फारसी में अनुवाद किया था, जो पुस्तक तूतीनामा के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी रचना मुहम्मद बिन तुगलक के समय में हुई।
- **मध्यकालीन फ़ारसी साहित्य के कुछ उदाहरण**
  - मिनहाज-ए-सिराज की "तबाक़त-ए-नासिरी"
  - फ़रिश्ता की "तारीख-ए-फ़रिश्ता"
  - अबुल फ़ज़ल की "अकबरनामा"
  - अमीर खुसरो की 'खमसा' और 'क़िरान-उस-सादेन'
  - सादी की किताब 'बुस्तान'
  - मीर ख्वांद की 'रौज़ात उस-सफ़ा'
  - अब्द अल-कादिर बदायुनी की मुंतखब उत-तवारीख
  - मोहसिन फ़ानी की पुस्तक दबिस्तान-ए मजाहि

- **हिन्दी, उर्दू और अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ**

- 1425 ई. में शर्फूद्दीन यजदी द्वारा लिखित 'जफरनामा' में हिन्दी शब्द का पहली बार उपयोग किया गया है।
- हिन्दी, उर्दू और अन्य प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य के निर्माण के आधार इस युग में बना।
- मलिक मुहम्मद जायसी ने हिन्दी में पद्मावत लिखा तथा मसनवी नामक फारसी रूप को काफी बढ़ावा दिया।
- कवि चन्दबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो' (हिन्दी का प्रथम महाकाव्य), सारगंधर का 'हम्मीर काव्य', जगनिक का 'आल्हाखण्ड' आदि ग्रन्थ हिन्दी में लिखे गये महान ग्रन्थ थे।
- उर्दू मूलतः तुर्की भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है- शाही शिविर या खेमा।
- मध्यकाल में उर्दू को हिन्दवी कहा जाता था। दक्षिण भारत में मिश्रित भाषा के रूप में जिस उर्दू का विकास हुआ उसे 'दक्कनी' कहा जाता था। इसे कैम्प भाषा भी कहा जाता है।
- 18वीं शताब्दी के मध्य तक उर्दू को 'हिन्दवी', 'हिन्दी', 'रेख्ता' (मिश्रित भाषा) अथवा 'दक्कनी' के रूप में पुकारा जाता रहा है और आम लोग उर्दू को हिन्दुस्तानी या दक्कनी ही पुकारते थे।
- तेलगू भाषा का विकास विजयनगर में तथा मराठी भाषा का बहमनी और बीजापुर राज्यों में हुआ।
- बंगाल के नुसरतशाह ने 'महाभारत' और 'रामायण' का बंगाली भाषा में अनुवाद करवाया। उसी के संरक्षण में 'मालधरबसु' ने श्रीकृष्ण विजय नाम से 'भागवत' का बंगला भाषा में अनुवाद किया।
- कृत्तिवास ने बंगला भाषा में 'रामायण' तथा 'काशी-रामदास' ने बंगला भाषा में 'महाभारत' का अनुवाद किया। कृत्तिवास के रामायण को 'बंगाल का बाइबिल' कहा गया है।

❑ मुगल कालीन साहित्य

- **बाबर**

- बाबर साहित्य में बहुत रुचि लेता था। उसने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा 'तुजुके-बाबरी' (बाबरनामा) लिखा।

- बाबरनामा का तीन बार फारसी अनुबाद हुआ। प्रथम शेख जेतुद्दीन ख्वाजा द्वारा किया गया था।
- बाबरनामा में भारत की तत्कालीन राजनीतिक दशा, भारतीयों के तत्कालीन जीवन-स्तर, फसलें तथा फूलों का विस्तृत वर्णन मिलता है।
- बाबर ने एक नई काव्य-शैली 'मुबड्यान' को प्रारम्भ किया।
- बाबर ने कविताओं का संग्रह 'दीवान' (तुर्की भाषा) नाम से करवाया, जो बहुत प्रिसद्ध हुआ।

हुमायूँ

- हुमायूँ के शासन काल में मिर्जा हैदर दोगलत (जो हुमायूँ की शाही फौज का कमाण्डर था) ने 'तारीखे रशीदी' नामक फारसी ग्रन्थ लिखा था, जिसमे मध्य एशिया के तुर्कों का इतिहास एवं हुमायूँ के काल का विस्तार से वर्णन मिलता है।
- हुमायूँनामा हुमायूँ की बहन 'गुलबदन बेगम' द्वारा लिखित इस ग्रन्थ के एक खण्ड में बाबर का इतिहास तथा दूसरे खण्ड में हुमाहूँ का इतिहास मिलता है।
- हुमायूँनामा की रचना अकबर के अनुरोध पर की गयी थी। इसी में बाबर की मौत जहर देने से हुई का भी उल्लेख है।
- ख्वांदमीर ने हुमायूँनामा या कानून-ए-हुमायूँ की रचना की थी, जिसमें उसके शासन प्रबंध का वर्णन किया है।
- हुमायूँ ने ख्वांदमीर को अमीर-ए-अख्वार की उपाधि प्रदान की थी।
- तजाकिरात-उल-वाकयात जौहर वाफतावची द्वारा लिखित इस अन्य में हुमायूँ के जीवन के उतार-चढ़ाव का वर्णन मिलता है।
- 'वाकयात-ए-मुश्ताकी' 'रिजकुत्ताह मुस्ताकी' द्वारा लिखित एक ऐसी पहली पुस्तक है, जिससे लोदी एवं सूरकाल के विषय में जानकारी मिलती है।

अकबर

- अबुल फजल अकबर के दरवार के 59 श्रेष्ठ कवियों का उल्लेख करता है, जिसमें फौजी, नजीरी, अब्दुर्रहीम खानखाना, उत्ची (उर्फी) गिजाली एवं अबुल फजल आदि प्रमुख थे।
- अकबर ने भारत में दरबारी इतिहास लेखन की परम्परा की शुरुआत की।
- अकबर कालीन साहित्य को सुविधानुसार तीन भागों में बाँटा जा सकता है-1. ऐतिहासिक पुस्तके, 2. अनुवाद 3. काव्य एवं पद्य।
- **ऐतिहासिक पुस्तके**
  - 'नफांइस-उल-मासिर' 'मीर अलाउद्दौला कजवीनी' द्वारा लिखित अकबर के समय की प्रथम ऐतिहासिक पुस्तक है, जिसमें 1565 ई. से 1575 ई. तक की घटनाओं का विवरण मिलता है।
  - अकबर के शासन काल की अन्य प्रमुख ऐतिहासिक पुस्तकें है- मुल्ला दाउद की 'तारीखे अल्फी', निजामुद्दीन अहमद का 'तबकाते-अकबरी' फैजी-सरहिन्दी का अकबरनामा तथा अब्दुल वाकी की मआसिरे रहीमी आदि।
  - अकबरनामा- अबुल फजल द्वारा 7 वर्षों में लिखी गयी (1591- 98 ई.) यह पुस्तक तीन जिल्दों में बेटी है। इसकी आखिरी जिल्द आइने अकबरी है। 'आइने अकबरी' पुनः 5 भागों में बेटी है। यह पुस्तक अकबर कालीन शासन प्रणाली तथा मुगल आर्थिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसके अन्तिम भाग में अबुल फजल की जीवनी वर्णित है।
  - मुन्तखाब-उल-तवारीख बदायूँनी द्वारा अकबर के शासनकाल में 1590 ई. में प्रारम्भ। इस पुस्तक को 'हिन्दुस्तान का आम इतिहास' माना जाता है। बदायूँनी अकबर की धार्मिक नीतियों का कट्टर विरोधी था। उसने अकबर की इस्लाम विरोधी नीतियों की एक लम्बी सूची तैयार की थी।
- **अकबर के शासनकाल में में अनुवादित पुस्तके**
  - **फैजी -** अकबर का राजकवि अपने समय का श्रेष्ठ कवि था। अकबर ने उसी के अधीन एक 'अनुवाद- विभाग' की स्थापना की थी।
  - अकबर के आदेश से महाभारत के विभिन्न भागों का फारसी में अनुवाद किया गया तथा उसका संकलन 'रज्मनामा' के नाम से किया गया।
  - **बदायूँनी -** 'रामायण'
  - **राजा टोडरमल -** 'भागवत पुराण'
  - **इब्राहीम सरहिन्दी -** 'अथर्ववेद'
  - **'फैजी' -** गणित की एक पुस्तक 'लीलावती'
  - **अब्दुर्रहीम खान- खाना -** 'तुजुके-बाबरी'
  - **मौलाना शाह मुहम्मद शाहावादी -** कश्मीर के इतिहास (राजतरंगिणी) का फारसी में अनुवाद 'बुरहानुल-मासिर- अस्मार' नाम से किया।
  - **बदायूँनी -** मालवा के शासक विक्रमाजीत सम्बन्धी 32 कथाओं का संग्रह सिंहासन बत्तीसी का अनुवाद 'नामा-ए-खिराद अफजा' नाम से किया है तथा 'पचतंत्र' का अनवार-ए- सुहेली नाम से फारसी भाषा में अनुवाद हुआ है।
  - **अबुल फजल -** 'कालिया-दामन' का 'अयार-ए-दानिश' नाम से अनुवाद किया गया।
  - अकबर के ही काल में संभवतः 'कुरान' का पहली बार अनुवाद हुआ।
- **काव्य का पद्य**
  - अकबर कालीन पद्यकारों में से सबसे विख्यात- 'गिजाली' थे। उसके बाद अबुल फजल का भाई फैजी था।

- अन्य प्रसिद्ध कवियों में निशापुर का मुहम्मद हुसैन 'नजीरी' था, जो बहुत अच्छी गजलें लिखता था, शीराज का 'सैय्यद जमालुद्दीन उर्फी' (उत्बी) था। यह अपने समय में 'कसीदों' का विख्यात लेखक था।

- **जहाँगीर**
  - जहाँगीर के शासन काल में विद्वानों की एक विस्तृत सूची 'मोतमिद काँ बक्शी' द्वारा लिखित 'इकबालनामा-ए-जहाँगीरी' में मिलता है।
  - जहाँगीर के शासनकाल में फारसी भाषा में लिखी गयी ऐतिहासिक पुस्तकों में जहाँगीर द्वारा लिखित स्वयं की आत्मकथा तुजुके जहाँगीरी, 'मौतमिद खाँ द्वारा लिखित 'इकबालनामा-ए- जहाँगीरी' तथा ख्वाजा कामगार द्वारा लिखित 'मआसिरे- जहाँगीरी' प्रमुख है।
  - तुजुके-जहाँगीरी (जहाँगीरी की आत्मकथा)- यद्यपि इसे जहाँगीर ने शुरू किया लेकिन अपने शासनकाल के 16 वर्षों तक कार्य करने के बाद बन्द कर दिया। तत्पश्चात् उसे मौतमिद खाँ ने शुरू किया, किन्तु अन्तिम रूप से इस पुस्तक को 'मुहम्मद हादी' ने पूरा किया।
  - उर्दू शायरी का जन्मदाता वली, दकनी था।
- **शाहजहाँ**
  - शाहजहाँ के समय में भी अनेक ऐतिहासिक पुस्तकें लिखी गयीं, जिसमें उसके दरबारी इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी का 'पादशाह नामा', 'मुहम्मद अमीन काजवीनी' का 'पादशाहनामा' इनायत खाँ का 'शाहजहाँनामा' तथा मुहम्मद सालेह का 'अमले- सालेह' प्रमुख है।
  - मुहम्मद अमीन काजवीनी शाहजहाँ के समय के प्रथम सरकारी इतिहासकार था। जिसने अपनी पुस्तक में शाहजहाँ के शासनकाल के प्रथम 10 वर्षों का जिक्र किया है।
- **दाराशिकोह**
  - दाराशिकोह ने अनेक ग्रन्थों 'भगवतगीता' एवं 'योग वशिष्ठ' का स्वयं अपनी देख-रेख में फारसी में अनुवाद कराया।
  - दारा का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य 'वेदों का संकलन' था, जिसे उसने ईश्वरीय कृति माना है। इसके अतिरिक्त उसने स्वयं काशी के पण्डितों की सहायता से 'बावन उपनिषदों', का 'सिर्र-ए-अकबर' नाम से फारसी में अनुवाद कराया।
- **औरंगजेब**
  - औरंगजेब अपने साम्राज्य में इतिहास लेखन के विरुद्ध था। इसीलिए 'खफी खाँ' को 'मुन्तखब-उल-लुबाब' (औरंगजेब के शासन काल का आलोचनात्मक वर्णन) की रचना गुप्त रूप से करना पड़ा।
  - यद्यपि औरंगजेब के समय में अनेक ऐतिहासिक पुस्तकें फारसी भाषा में लिखी गयीं। जिनमें खफी खाँ का 'मुन्तखब-उल- लुबाब' मिर्जा मुहम्मद काजिम का 'आलमगीरनामा', (औरंगजेब के शासन का सरकारी इतिहासकार था), मुहम्मद साकी का 'मआसिरे-आलमगीरी', सुजान राय का 'खुलासत-उल- तवारीख', ईश्वरदास का 'फुतूहाते-आलमगीरी', भीमसेन बुरहानपुरी का 'नुक्शा-ए-दिलकुशाँ' आदि प्रमुख है।
  - औरंगजेब के काल में मुहम्मद साकी द्वारा लिखी गयी- 'मआसिरे'- 'आलमगीरी' को डा. जदुनाथ सरकार ने मुगलराज्य का गजेटियर कहा है।
  - औरंगजेब ने अनेक अरबी ग्रन्थों की सहायता से फारसी में न्याय और कानून की पुस्तक 'फतवा-ए-आलमगीरी' का संकलन करवाया। इसे भारत में रचित 'मुस्लिम कानून का सबसे बड़ा डाइजेस्ट' (संक्षिप्त-पुस्तक) माना गया है।
- **मुग़ल काल में हिंदी साहित्य -**
  - मुगलकाल हिन्दी साहित्य का उत्कृष्ट काल था। जिसमें मलिक मुहम्मद जायसी, तुलसीदास, अब्दुर्रहीम खानाखाना तथा बीरबल, अकबर के काल के प्रसिद्ध कवि थे। अकबर ने बीरबल को 'कविप्रिय' (कविराज) की उपाधि प्रदान की तथा नरहरि चक्रवर्ती को 'महापात्र' की उपाधि दी थी।
  - अकबर के समय में तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' नामक ग्रन्थ की रचना की। रामचरित मानस को जार्ज ग्रियर्सन ने उचित ही 'हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों की एक मात्र बाइबिल' बताया है।
  - जहाँगीर के समय में सूरदास (अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ कवि) ने 'सूरसागर' की रचना की।
  - 'बूटा' या 'वृक्षराज' नामक हिन्दी कवि जहाँगीर का विशेष कृपापात्र था। जहाँगीर के समय के सर्वश्रेष्ठ कवि केशवदास थे।
  - आचार्य बिहारी को जयसिंह ने संरक्षण दिया था।
  - मुगल काल में गुजराती, मराठी तथा बंगला में भी कविताओं एवं ग्रन्थों की रचना हुई।
  - बंगला में 'कृष्णदास कविराज' ने 'चैतन्य चरितामृद' की रचना की जो वैष्णव सन्त 'चैतन्य' की जीवनी है।
  - बंगाली लेखक मुकुन्द राम चक्रवर्ती ने कवि कंकण-चण्डी नामक ग्रन्थ की रचना की, जिसे बंगाल में आज भी वैसी ही लोकप्रियता प्राप्त है. जैसी उत्तरी भारत में रामचरित मानस को इसी प्रकार 'प्रोफेसर क्रावेल' ने मुकुन्द राम चक्रवर्ती को बंगाल का क्रेब (Crabbe) कहा है।
  - अकबर के दरबार के प्रसिद्ध ग्रन्थकर्ताओं (जिसकी एक सूची आइने अकबरी में मिलती है) में सबसे प्रमुख कश्मीर का मुहम्मद हुसैन था, जिसे अकबर ने 'जरीकलम' की उपाधि दी थी।
- **उर्दू साहित्य**
  - उर्दू का जन्म सल्तनत काल में ही हो चुका था। प्रारम्भ में इसे 'जबान-ए-हिन्दवी' कहा जाता था।
  - अमीर खुसरो पहला विद्वान था, जिसने उर्दू को अपनी कविताओं का माध्यम बनाया था।
  - सर्वप्रथम दक्षिण के सुल्तानों ने इस भाषा को प्रोत्साहन दिया था।
  - मुगल बादशाहों में मुहम्मद शाह (1719-48 ई.) पहला बादशाह था, जिसने उर्दू को प्रश्रय दिया था और इसके प्रोत्साहन के लिए दक्षिण के कवि 'वली' को बुलाया था।

- कालान्तर में उर्दू को 'रेख्ता' भी कहा जाने लगा।
- आधुनिक उर्दू शायरी का जन्मदाता वली दक्कनी (शम्सुद्दीन) को माना जाता है।

आधुनिक भारतीय साहित्य

- **पुस्तक** - दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह
- **लेखक** - महात्मा गांधी
- **पुस्तक** - इंडिया विन्स फ्रीडम
- **लेखक** - मौलाना अबुल कलाम आजाद (आत्मकथा)
- **पुस्तक** - एनल्स एंड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान
- **लेखक** - कर्नल जेम्स टॉड (राजस्थान की सामंतवादी व्यवस्था के बारे में)
- **पुस्तक** - गीतांजलि, गोरा, साधना
- **लेखक** - रबींद्रनाथ टैगोर
- **अन्य तथ्य** - गीतांजलि का मूल बांग्ला संस्करण 14 अगस्त, 1910 को प्रकाशित हुआ। गीतांजलि का अंग्रेजी संस्करण नवंबर, 1912 में पहली बार प्रकाशित हुआ। रबींद्रनाथ टैगोर को वर्ष 1913 में नोबेल पुरस्कार (साहित्य) प्रदान किया गया था। यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले वे पहले भारतीय थे।
- **पुस्तक** - हिंद स्वराज (इसमें ब्रिटिश पार्लियामेंट को 'बांझ और वेश्या' कहा था)
- **लेखक** - महात्मा गांधी (1909, गुजराती भाषा); लंदन से दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन के लिए वापसी यात्रा के दौरान
- **पुस्तक** - गोखले माई पॉलिटिकल गुरु, माई एक्सपेरिमेंट विद टूथ
- **लेखक** - एम.के. गांधी
- **अन्य तथ्य** – महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा 'मेरे सत्य के साथ प्रयोग' (My Experiment with Truth) मूलतः गुजराती भाषा में लिखी थी।
- **पुस्तक** - बहुविवाह तथा बाल्य विवाहेर दोस
- **लेखक** - ईश्वरचंद्र विद्यासागर (1820-1891), विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856
- **पुस्तक** - दास कैपिटल
- **लेखक** - कार्ल मार्क्स (1867 में प्रकाशित); कुछ भाग का संपादन फ्रेडरिक एंजेल्स ने किया
- **पुस्तक** - आनंदमठ (बंगाली देशभक्ति की बाइबिल), दुर्गेश नंदिनी
- **लेखक** - बंकिमचंद्र चटर्जी
- **अन्य तथ्य** – बंकिमचंद्र चटर्जी का उपन्यास 'आनंदमठ' बंगाली देशभक्ति की बाइबिल माना जाता है। इस पुस्तक का कथानक संन्यासी विद्रोह (1763-1800) पर आधृत है। हमारा राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' इसी ग्रंथ में संकलित है।
- **पुस्तक** - चेतावनी-रा-चुंगढ्या (1903)
- **लेखक** - केसरी सिंह बारहठ (राजस्थान के कवि तथा स्वतंत्रता सेनानी)
- **पुस्तक** - भारत भारती, पंचवटी, साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध
- **लेखक** - राष्ट्रकवि की उपाधि से विभूषित मैथिलीशरण गुप्त
- **पुस्तक** - लैंडमार्क्स इन इंडियन कॉन्स्टीट्यूशनल एंड नेशनल डेवलपमेंट
- **लेखक** - गुरुमुख निहाल सिंह
- **पुस्तक** - डिस्कवरी ऑफ इंडिया
- **लेखक** - पं. जवाहरलाल नेहरू (1942-1945 में अपने कारावास के दौरान अहमदनगर फोर्ट जेल में)
- **पुस्तक** - भारत की दूसरी स्वतंत्रता (India's Second Freedom); यह पुस्तक जयप्रकाश नारायण पर लिखी गई
- **लेखक** - एम.जी. देवासहायाम
- **पुस्तक** - जर्नी थ्रू दी किंगडम ऑफ अवध इन दी ईयर 1849-50
- **लेखक** - स्लीमैन की रिपोर्ट
- **पुस्तक** - दि अनटोल्ड स्टोरी (The Untold Story)
- **लेखक** - जनरल ब्रजमोहन कौल
- **पुस्तक** - चिदंबरा, लोकायतन, वीणा, युगवाणी, पल्लव, भारतमाता ग्रामवासिनी तथा कला और बूढ़ा चांद
- **लेखक** – सुमित्रानंदन पंत
- **पुस्तक** - मृगनयनी, झांसी की रानी, भुवन विक्रम, संगम, लगन, अहिल्याबाई
- **लेखक** - वृंदावन लाल वर्मा
- **पुस्तक** - बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र
- **लेखक** - सुभद्रा कुमारी चौहान
- **पुस्तक** - कामायनी, आंसू, लहर, अजातशत्रु, तितली और कंकाल

- **लेखक -** जयशंकर प्रसाद
- **पुस्तक -** इग्नाइटेड माइंड्स, अग्नि की उड़ान
- **लेखक -** भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति एवं प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (मिसाइल मैन)
- **पुस्तक -** द लाइफ डिवाइन, द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी, एस्सेज ऑन द गीता, द फाउंडेशन ऑफ इंडियन कल्चर, कलेक्टेड पोयम्स एंड प्लेज, द सिंथेसिस ऑफ योगा, सावित्री ए लीजेंड एंड ए सिंबल, द सीक्रेट ऑफ द वेदा एवं 'द मदर'
- **लेखक -** अरिंबद घोष (1908 में अलीपुर के षड्यंत्र केश में जेल); वर्ष 1910 के पश्चात अरिंबद घोष राजनीति से संन्यास लेकर पांडिचेरी में रहने लगे।
- **पुस्तक -** अनहैप्पी इंडिया, द स्टोरी ऑफ़ माय डिपोर्टेशन, ऑटोबायोग्राफिकल राइंटेग्ज (आत्म-चरितात्मक रचनाएं)
- **लेखक -** लाला लाजपत राय (पंजाब केसरी की उपाधि)
- **पुस्तक -** पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया
- **लेखक -** दादाभाई नौरोजी
- **पुस्तक -** दी मैन हू डिवाइडेड इंडिया
- **लेखक -** डॉ. रफीक जकारिया
- **पुस्तक -** इंडिया फ्रॉम कर्जन टू नेहरू एंड आफ्टर
- **लेखक -** दुर्गा दास
- **पुस्तक -** फ्रीडम एट मिडनाइट
- **लेखक -** लैरी कॉलिंस एंड डोमिनिक लेपियर
- **पुस्तक -** ए नेशन इन द मेकिंग
- **लेखक -** सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
- **पुस्तक -** द इंडियन स्ट्रगल
- **लेखक -** सुभाष चंद्र बोस
- **पुस्तक -** दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह
- **लेखक -** महात्मा गांधी
- **पुस्तक -** हिंदुत्व
- **लेखक -** वी.डी. सावरकर
- **पुस्तक -** 'इंडियन अनरेस्ट'
- **लेखक -** वैलेंटाइन शिरोल ने
- **पुस्तक -** मदर इंडिया
- **लेखक -** लेडी कैथरीन
- **पुस्तक -** ए पैसेज टू इंडिया
- **लेखक -** ई.एम. फोर्स्टर
- **पुस्तक -** इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस' (भारत का स्वतंत्रता संघर्ष), इंडियन नेशनल मूवमेंट : दि लॉन्ग टर्म डाइनेमिक्स, 'दि राइज एंड ग्रोथ ऑफ इकोनॉमिक नेशनलिज्म इन इंडिया : इकोनॉमिक पॉलिसीज ऑफ इंडियन नेशनल लीडरशिप, 1880-1905'
- **लेखक -** बिपिन चंद्र

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

प्राचीन कालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

प्राचीन भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई। खगोलविद्या में इसलिए प्रगति हुई, क्योंकि ग्रह देवता माने जाने लगे थे। ग्रहों का सम्बन्ध ऋतुओं और मौसमों के परिवर्तनों से था तथा इन परिवर्तनों का सम्बन्ध खेती से था। व्याकरण और भाषा विज्ञान का उद्भव इसलिए हुआ, क्योंकि ब्राह्मण व पुरोहित वेद की ऋचाओं और मन्त्रों के उच्चारण की शुद्धता को बहुत अधिक महत्त्व देते थे।

❑ गणित

- ईसा पूर्व तीसरी सदी में आकर गणित, खगोलविद्या और आयुर्विज्ञान तीनों का विकास अलग-अलग आरम्भ हुआ। गणित के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों ने तीन विशिष्ट योगदान दिए - अंकन पद्धति, दाशमिक पद्धति और शून्य।
- दाशमिक पद्धति का प्रयोग सर्वप्रथम ईसा की पाँचवीं सदी में आरम्भ हुआ। अंकमाला का प्रयोग ई. पू. तीसरी सदी के अशोक के अभिलेख से प्राप्त होता है।
- शून्य का आविष्कार भारतीयों ने ईसा पूर्व दूसरी सदी में किया। उल्लेखनीय है कि वैदिक साक्ष्यों में 1 के आगे 12 बार शून्य लगाने को पदार्द्ध कहा गया है। बीजगणित में भारतीयों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हड़प्पा में बनी ईंट की इमारतों से प्रकट होता है कि पश्चिमोत्तर भारत में लोगों को मापन और ज्यामिति का अच्छा ज्ञान था। शुल्व सूत्र में भी इसके साक्ष्य है। यज्ञ वेदी बनाने के लिए आपस्तम्ब ने व्यावहारिक ज्यामिति की रचना की। इसमें न्यूनकोण, अधिककोण और समकोण का वर्णन किया गया है।
- रेखागणित सम्बन्धी सिद्धान्तों के प्रतिपादन तथा विकास का प्रधान श्रेय बौधायन को ही दिया जा सकता है, जिसने वृत्त को वर्ग तथा वर्ग को वृत्त में बदलने का नियम प्रस्तुत किया।
- बौधायन के सूत्रों में सर्वप्रथम पाई (π) के मान का परिकलन किया गया, जिसका शुद्धतम मान आर्यभट्ट ने ज्ञात किया। आर्यभट्ट ने त्रिभुज का क्षेत्रफल ज्ञात करने का नियम निकाला, जिसके फलस्वरूप त्रिकोणमिति का जन्म हुआ। कोण के ज्या का सिद्धान्त आर्यभट्ट के सूर्य सिद्धान्त में वर्णित है।
- आर्यभट्ट के पश्चात् ब्रह्मगुप्त (लगभग सातवीं सदी) का नाम आता है। उनकी प्रसिद्ध कृति ब्रह्मस्फूट सिद्धान्त में वृत्तीय चतुर्भुजों, चक्रीय चतुर्भुजों, वर्गों, आयतों आदि की परिभाषा एवं व्याख्या के सूत्र दिए गए हैं।
- गणितज्ञ भास्कर का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणि है, जिसके चार भाग हैं-लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित तथा गोला। भास्कर ने अनिर्णीत वर्ग समीकरण के हल की जो विधि दी है, उसे चक्रवाल विधि (Cyclic Method) की संज्ञा दी गई है। भास्कराचार्य ने ही न्यूटन से पूर्व गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त दिया था। शून्य को उन्होंने अविभाजित बताया।

❑ खगोलशास्त्र

- इसके प्रसिद्ध विद्वान् आर्यभट्ट पाँचवीं सदी में हुए। आर्यभट्ट ने बेबिलोनियाई विधि से ग्रह-स्थिति की गणना की. उन्होंने चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण के कारण का पता लगाया, उन्होंने अनुमान के आधार पर पृथ्वी की परिधि का मान निकाला। जो आज भी शुद्ध माना जाता है।
- उन्होंने बताया कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी घूमती है। आर्यभट्ट के शिष्यों निःशंक, पाण्डुरंगस्वामी तथा लाटदेव ने उनके सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। जबकि लाटदेव को सर्वसिद्धान्त गुरु श्र कहा जाता है।

❑ ज्योतिष विद्या

- छठी सदी के विद्वान् वाराहमिहिर फलित ज्योतिष के प्रणेता के रूप में स्मरणीय हैं, उन्होंने पंचसिद्धान्तिका, वृहत् जातक, वृहत् संहिता तथा लघु जातक की रचना की। वृहत् संहिता में यवनों को ज्योतिष का जन्मदाता होने के कारण ऋषियों के समान पूज्य बताया गया है।
- भारतीय ग्रन्थों में ज्योतिष के पाँच सिद्धान्तों- पैतामाह, वशिष्ठ, सूर्य, पोलिश तथा रोमक का उल्लेख है।
  - **पैतामाह** - सूर्य और चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन।
  - **वशिष्ठ** - राशि और लग्नों से सम्बन्धी।
  - **पोलिश** - सूर्य और चन्द्रग्रहण सम्बन्धी।
  - **सूर्य** - ज्योतिष से सम्बन्धी विभिन्न नियम व ग्रहण।
  - **रोमक** - यूनानी सिद्धातों की गणना।
- वृहत् जातक तथा वृहत् संहिता में ज्योतिष, भौतिक भूगोल, नक्षत्र विद्या, वनस्पति विज्ञान, प्राणिशास्त्र आदि का विश्लेषण किया गया है। इनमें से रोमक तथा पोलिश यूनानियों की देन है।

❑ भौतिक शास्त्र

- आधुनिक भौतिकी का सर्वप्रमुख सिद्धान्त परमाणुवाद (Atom Theory) है। बुद्ध के समकालीन पकुधकच्चायन ने बताया कि सृष्टि का निर्माण सात तत्त्वों-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सुख, दुःख तथा जीव से मिलकर हुआ है।
- भारत में परमाणुवाद के संस्थापक वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद् (ई. पू. छठी सदी) को माना जाता है, जिन्होंने भारत में भौतिकशास्त्र का आरम्भ किया।

❑ रसायनशास्त्र

- प्राचीन रसायनशास्त्र को रसविद्या अथवा रसशास्त्र के नाम से जाना जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में रसविद्या को पराविद्या कहा गया है।

- बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन को रसायन का नियामक माना गया है। पारा (Mercury) की खोज उनका सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार था। प्रौद्योगिकी विज्ञान के क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण प्रगति इस्पात निर्माण के क्षेत्र में हुई है।
- भारत में इस्पात की सबसे अच्छी तलवारों का निर्माण होता था। इस्पात को उट्ज भी कहा जाता था।

❑ चिकित्सा शास्त्र

- औषधियों का उल्लेख सर्वप्रथम अथर्ववेद में मिलता है। अथर्ववेद में आयुर्वेद के सिद्धान्त तथा व्यवहार सम्बन्धी बातें मिलती हैं।
- विषस्य विषमौधम अर्थात् विष की दवा विष ही होती है, का सिद्धान्त भी अथर्ववेद के एक मन्त्र में मिलता है। इसी पद्धति पर आधुनिक होम्योपैथी चिकित्सा आधारित है, जिसका मूल सिद्धान्त सम-से-सम की चिकित्सा है। प्रसिद्ध विश्वविद्यालय तक्षशिला में चिकित्सा के ख्याति प्राप्त विद्वान् थे। मुनि आत्रेय की आत्रेय संहिता आयुर्वेद की प्रसिद्ध रचना है, जिसमें जल चिकित्सा का वर्णन है। ईसा की दूसरी सदी में आयुर्वेद के दो महान विद्वान् हुए-सुश्रुत और चरक सुश्रुत संहिता में उपदेष्टा धन्वन्तरि है तथा सम्पूर्ण संहिता सुश्रुत को सम्बोधित करके कही गई है। सुश्रुत संहिता में सुश्रुत ने मोतियाबिन्द, पथरी तथा कई अन्य रोगों का शल्योपचार बताया है।
- उन्होंने शल्य क्रिया के 121 उपकरणों का उल्लेख किया है। लोगों के उपचार के लिए उन्होंने आहार और सफाई पर बल दिया है।
- चरक की चरक संहिता भारतीय चिकित्साशास्त्र का विश्वकोश है। चरक संहिता, काय चिकित्सा का प्राचीनतम ग्रन्थ है, जो महर्षि आत्रेय के उपदेशों पर आधारित है।

सल्तनत कालीन विज्ञान एवं प्रद्योगिकी

❑ उद्योग व्यापार

- तुर्कों ने भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया। उनके द्वारा की गई प्रशासनिक तथा आर्थिक व्यवस्था ने नगरीकरण में सकारात्मक परिवर्तन किया। प्रो. हबीब इसे नगरीय क्रान्ति मानते हैं।
- तुर्कों की नवीन प्रौद्योगिकी ने उत्पादन में अधिक वृद्धि की थी।
- सल्तनत काल में कृषि के विकास, व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के कारण स्वाभाविक रूप से नगरों का विकास हुआ, जिससे ग्रामीण जनसंख्या शहरों की ओर आकर्षित हुई।
- सल्तनत काल में अनेक प्रकार के शिल्प उद्योगों का विकास हुआ। इस समय वस्त्र उद्योग, धातु उद्योग एवं चर्म उद्योग के अतिरिक्त कागज, चीनी, शीशा एवं काष्ठ उद्योग का विकास हुआ। इस्पात से मजबूत तलवारें बनाई जाती थीं। अन्य प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, बर्तन एवं आभूषण विभिन्न धातुओं से बनाए गए।
- 13वीं-14वीं शताब्दी में कागज के निर्माण के कारण बहुत से संस्कृत ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद हुआ था, जिसने जिल्दसाजी की प्रौद्योगिकी के विकास को प्रोत्साहन दिया।
- तुर्कों के आगमन के साथ चटखा व धुनकी का प्रवेश भी भारत में हुआ, जिसमें तकली का प्रयोग वस्त्र उत्पादन में किया जाता था। इस समय नदाफ शब्द का प्रयोग बुनकर के लिए किया जाता था।
- इस समय आसवन विधि का प्रयोग मदिरा तथा इत्र के लिए किया जाता था। कलई विधि का प्रयोग धातु शिल्प के अन्तर्गत किया जाता था, जिसमें जस्ते का प्रयोग भी होता था।
- कश्मीर से प्राप्त दमिश्की इस्पात सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध थी। इस काल में गारे-चूने के कारण स्थापत्य के अन्तर्गत भवन निर्माण सम्भव हुआ। दीवान-ए-इमारतखाना की स्थापना फिरोजशाह तुगलक द्वारा की गई थी।
- गैरकृषि उत्पाद आधारित उद्योगों में चमड़ा, धातुएँ, पत्थर, नमक व तेल उद्योग प्रमुख थे। सल्तनत काल में विलासी वस्तुओं के लिए शाही कारखानों की स्थापना की गई। फिरोजशाह तुगलक के समय इस प्रकार के 36 शाही कारखानों का निर्माण हुआ। मुतसर्रिफ इन कारखानों का निरीक्षण करता था।

❑ तकनीकी विकास

- यद्यपि मुगलकाल में तकनीकी और विज्ञान का अत्यधिक विकास नहीं हुआ।
- भारत में आग्नेय अस्त्रों का उपयोग उत्तर में मुगलों द्वारा तथा दक्षिण में पुर्तगालियों द्वारा किया गया था।
- दानिशमन्द खाँ को विलियम हार्वे तथा पैगुएट के रक्त परिसंचरण की खोज के बारे में फ्रांसासी चिकित्सक वर्नियर द्वारा बताया गया था।
- इस काल में लकड़ी के कोयले द्वारा लोहे को गलाया जाता था, जिसने युद्ध शस्त्रों; जैसे-तोपों और बन्दूकों को बनाने की तकनीक का विकास किया था।
- भारत में जस्ता सम्बन्धी धातु शोधन की तकनीकी काफी पहले से ही ज्ञात थी। अबुल फजल जस्ता उत्पादन के लिए राजस्थान के जाबर क्षेत्र का वर्णन करता है।
- राजस्थान के खेतड़ी में ताँबे की खान थी। टिन का उत्पादन न के बराबर होता था, अतः टिन पश्चिम एशिया से आयात किया जाता था।
- भारत के दक्षिण राज्य आन्ध्र प्रदेश में वुद्ध पद्धति द्वारा लोहे बनाने का कार्य किया जाता था, जिसे लोहा बनाने की अति प्राचीन विधि माना गया है।
- भारत में पीतल और काँसे का निर्माण सीमित मात्रा में होता था, इसलिए इसे आयात भी किया जाता था।
- पुर्तगाली के छपाई खाने में भारतीय व्यापारी भीमजी पारिख ने रुचि (इच्छा) दिखाई, जो पुर्तगालियों द्वारा गोवा में स्थानान्तरित किया गया था। इस काल में भारत में पवन चक्की तथा आसवन विधि प्रचलन में थी। 16वीं एवं 17वीं शताब्दी के दौरान भारत के शहरों में समय पता करने के लिए जलघड़ी का प्रयोग किया जाता था। इसे फारसी में तास और सम्पूर्ण यान्त्रिकी को ताप घड़ियाल कहा जाता था। यूरोपवासी भारत में यान्त्रिक घड़ी लेकर आए। सर टॉमस रो ने जहाँगीर को एक यान्त्रिक घड़ी भी भेंट में दी थी।

- मुगलकाल में भवन का नक्शा बनाने की प्रथा चल पड़ी, जिसे फारसी में खाका कहते थे। जहाँगीर के समय नूरजहाँ की माँ असमत बेगम ने गुलाबजल से इत्र बनाने का आविष्कार किया था।

आधुनिक भारत में विज्ञान एवं प्रद्योगिकी

- भारत ने स्वतन्त्रता के बाद परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग को प्राथमिकता दी तथा इस उद्देश्य से वर्ष 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की गई। परमाणु ऊर्जा आयोग के पहले अध्यक्ष होमी जहाँगीर भाभा थे।
- वर्ष 1954 में परमाणु ऊर्जा विभाग की स्थापना की गई। भाभा ने वर्ष 1954 में विचारकीय दीर्घकालीन नाभिकीय ऊर्जा का कार्यक्रम बनाया। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य यूरेनियम एवं थोरियम के प्राकृतिक संसाधनों का शान्तिपूर्ण कार्यों के लिए उपयोग करना था। भारत ने नाभिकीय ऊर्जा के अनुसन्धान हेतु देश का पहला परमाणु अनुसन्धान रिएक्टर अप्सरा 4 अगस्त, 1956 को बम्बई में स्थापित किया।
- वर्ष 1960 में कनाडा के सहयोग से साइरस नामक अनुसन्धान रिएक्टर की स्थापना की गई तथा वर्ष 1962 में नांगल (पंजाब) में प्रथम गुरु जल संयन्त्र की स्थापना की गई।
- वर्ष 1963 में तिरुवनन्तपुरम के समीप थुम्बा में प्रथम साउण्डिग रॉकेट का प्रक्षेपण किया गया।
- वर्ष 1969 में भारतीय राष्ट्रीय अन्तरिम अनुसन्धान समिति का पुनर्गठन करके भारतीय अन्तरिम अनुसन्धान संगठन (इसरो) की स्थापना की गई।
- उद्योग भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का सर्वप्रथम और सर्वाधिक प्रभाव औद्योगिक क्षेत्र में ही दिखाई देता है। भारत सरकार द्वारा लगातार इस दिशा में आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग को बल दिया जा रहा है।

❑ राजकीय संस्थाएँ

- वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR)
- रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)
  - ये दोनों संस्थान इस दिशा में विभिन्न अनुसंधान कार्यों को संपन्न कराने तथा उद्योग के क्षेत्र में विभिन्न रसायनों, मशीनों, औषधियों, कोटनाशकों, खाद्य तकनीकी आदि के निर्माण में सहायक भूमिका निभा रहे हैं। यहाँ तक कि अंतरिक्ष में छोड़ी जाने वाली मिसाइलों का निर्माण कार्य भी इन्हीं संस्थानों के माध्यम से किया जा रहा है।
- कृषि कृषि के क्षेत्र को लें, तो आज भी भारत की आधी से ज्यादा आबादी कृषि क्षेत्र से जुड़ी है। बीसवीं शताब्दी के छठे दशक को भारतीय कृषि क्षेत्र के इतिहास में 'मील का पत्थर' कहा जाता है। डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन, डॉ. बी.पी. पाल और डॉ. नॉर्मन बोरलॉग के प्रयासों से 'हरित क्रांति' ने देश को अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया।
- दिल्ली में स्थित 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्' भारत में बागवानी, मत्स्यन और पशु विज्ञान सहित कृषि के क्षेत्र में समन्वय, मार्गदर्शन और अनुसंधान प्रबंधन व शिक्षा के लिये सर्वोच्च निकाय है। यह एक स्वायत्तशासी संस्था है। इस संस्था ने हरित क्रांति लाने और कृषि क्षेत्र में अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के प्रयासों के फलस्वरूप ही 1951 से 2016 तक खाद्यान्न का उत्पादन लगभग 5 गुना बागवानी फसलों का लगभग 9.5 गुना, मत्स्य उत्पादन 125 गुना दुग्ध उत्पादन लगभग 7.8 गुना तथा अडा उत्पादन लगभग 38 गुना बढ़ा है। राष्ट्रीय खाद्य एवं सुरक्षा पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। उपरोक्त उपलब्धियों के बावजूद आज भी कृषि क्षेत्र में कुछ प्रमुख चुनौतियाँ, जैसेः चावल उत्पादन, दाल व तेल के बोगों तथा कुछ अन्य नकदी फसलों के उत्पादन में वृद्धि तथा उर्वरकों से संबंधित चुनौतियाँ बनी हुई है, जिसके निदान के लिये लगातार प्रयास किये जा रहे हैं।
- नाभिकीय ऊर्जा 1948 में नेहरू ने कहा था कि भविष्य उनका है. जो परमाणु ऊर्जा से युक्त होंगे।" अतः यह कथन परमाणु ऊर्जा की महत्ता को स्वयं हो स्पष्ट कर देता है। इसी क्रम में डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के अधक प्रयासों के फलस्वरूप 1948 में 'परमाणु ऊर्जा आयोग' का गठन हुआ। आरंभ से ही भारत का उद्देश्य परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण कार्यों के लिये उपयोग करना था।
- नाभिकीय अनुसंधान के क्षेत्र में सबसे अग्रणी संस्थान मुंबई में स्थित 'भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र' है। इस संस्था के अनुसंधानों के फलस्वरूप ही भारत परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बन पाया।

भारत में त्यौहार एवं मेले

- भारत, जिसे त्योहारों की भूमि कहा जाता है, विविध परंपराओं, संस्कृतियों और धर्मों से भरा देश है।
- भारत में त्योहारों का महत्व और विविधता देश की समृद्ध सांस्कृतिक का प्रमाण है, जहां प्रत्येक त्योहार जीवन, विरासत और एकता का उत्सव है।
- उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक, हर राज्य और समुदाय के अपने अनोखे त्यौहार हैं जो लोगों के जीवन का अभिन्न अंग हैं।
- ये त्यौहार राष्ट्र की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हुए अत्यधिक उत्साह, उमंग और खुशी के साथ मनाए जाते हैं।

❑ **भारत में त्यौहारों की सूची**

- भारत विविध संस्कृतियों और धर्मों का देश है, जिसके कारण यहां साल भर बहुत सारे त्यौहार मनाए जाते हैं।
- प्रमुख त्योहार - दिवाली, होली , ईद, क्रिसमस, नवरात्रि, दुर्गा पूजा और मकर संक्रांति शामिल हैं।
- ये त्यौहार भारत की समृद्ध विरासत और जीवंत परंपराओं को दर्शाते हैं।

भारतीय त्यौहार

❑ **भारत के त्यौहार निम्नवत हैं -**

- राष्ट्रीय त्यौहार
- धार्मिक त्यौहार
  - हिन्दू त्यौहार
  - मुस्लिम त्यौहार
  - ईसाई त्यौहार
  - सिक्ख त्यौहार
- क्षेत्रीय त्यौहार

❑ **राष्ट्रीय पर्व**

- ये राष्ट्रीय त्यौहार पूरे देश में बड़े उत्साह के साथ मनाये जाते हैं और इन्हें सार्वजनिक अवकाश माना जाता है।
- वे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे देश के लोकतांत्रिक सिद्धांतों, स्वतंत्रता के लिए इसके संघर्ष को दर्शाते हैं।

नाम	तारीख	महत्त्व
गणतंत्र दिवस	26 जनवरी	1950 में भारतीय संविधान को अपनाने का जश्न मनाता है, जो एक गणतंत्र में परिवर्तन का प्रतीक है।
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त	1947 में ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी का जश्न मनाता है।
गांधी जयंती	2 अक्टूबर	भारत के अहिंसक स्वतंत्रता आंदोलन के नेता महात्मा गांधी की जयंती मनाई जाती है।

- **गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)**
  - गणतंत्र दिवस, हर साल 26 जनवरी को मनाया जाता है, वह दिन है जब डॉ. बीआर अंबेडकर द्वारा तैयार किया गया भारत का संविधान 1950 में लागू हुआ था।
  - यह भारत के एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य में परिवर्तन का प्रतीक था।
  - मुख्य कार्यक्रम- नई दिल्ली के राजपथ पर आयोजित भारत की रक्षा क्षमता और सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करने वाली एक भव्य परेड है।
- **स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)**
  - स्वतंत्रता दिवस, हर साल 15 अगस्त को मनाया जाता है, जो 1947 में ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी की याद दिलाता है।
  - नई दिल्ली में लाल किले से प्रधान मंत्री का भाषण प्रमुख आकर्षण है।
- **गांधी जयंती (2 अक्टूबर)**
  - प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को मनाई जाने वाली गांधी जयंती, "राष्ट्रपिता" महात्मा गांधी की जयंती है।
  - गांधीजी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - इस दिन उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को याद किया जाता है और उनका सम्मान किया जाता है।
  - राष्ट्रव्यापी, शांति और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए प्रार्थनाएँ, स्मारक समारोह और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

❑ **हिन्दू धार्मिक त्योहार**

- भारत, एक धर्मनिरपेक्ष देश होने के नाते, विभिन्न धार्मिक विश्वासों के लोगों का घर है, जिसके परिणामस्वरूप असंख्य जीवंत और विस्मयकारी धार्मिक त्योहार अत्यधिक भक्ति और उत्साह के साथ मनाए जाते हैं।
- इनमें से प्रत्येक त्यौहार सांस्कृतिक मानदंडों और स्थानीय रीति-रिवाजों के आधार पर अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है, लेकिन सभी एकता की भावना प्रदान करते हैं जो भारत का मूल है।

- **दिवाली:** सबसे लोकप्रिय हिंदू त्योहारों में से एक है, दिवाली या दीपावली, अंधेरे पर प्रकाश और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, जो 14 साल के वनवास के बाद भगवान राम की अयोध्या वापसी की याद दिलाता है।
- इस 'रोशनी के त्योहार' के दौरान, घरों को तेल के लैंप या 'दीयों' और रंगीन रंगोली कलाकृतियों से सजाया जाता है। आतिशबाजी का प्रदर्शन एक आम दृश्य है।
- **होली:**
- 'रंगों के त्योहार' के रूप में जाना जाने वाला, होली वसंत के आगमन का एक उल्लासपूर्ण उत्सव है।
- लोग एक-दूसरे को चमकीले रंग लगाते हैं, नृत्य करते हैं और पारंपरिक भोजन का आनंद लेते हैं।
- होली से एक रात पहले, राक्षसी होलिका के विनाश के प्रतीक के रूप में अलाव जलाए जाते हैं, जो प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु की कथा की याद दिलाता है।
- **नवरात्रि**
  - नौ रातों का यह त्योहार दिव्य स्त्रीत्व का जश्न मनाता है और दशहरा में समाप्त होता है, जो रावण पर भगवान राम की जीत या राक्षस महिषासुर पर देवी दुर्गा की जीत का प्रतीक है।
  - **नवरात्री को सरस्वती पूजा के रूप में मनाने की प्रक्रिया केरल में होती हैं।**
- **'गंगा दशहरा'**
  - हिन्दू पंचांग के अनुसार **ज्येष्ठ शुक्ल माह की दशमी में** मनाया जाता है।
  - गंगा दशहरा हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को दशहरा कहते हैं।
  - इसमें स्नान, दान, रूपात्मक व्रत होता है। स्कन्दपुराण के अनुसार, गंगा दशहरे के दिन व्यक्ति को किसी भी पवित्र नदी पर जाकर स्नान, ध्यान तथा दान करना चाहिए।
  - इससे वह अपने सभी पापों से मुक्ति पाता है। यदि कोई मनुष्य पवित्र नदी तक नहीं जा पाता, तब उसे अपने घर के पास की किसी नदी में स्नान करना चाहिए।
  - यह दशहरा भागीरथ की तपस्या और गंगा के पृथ्वी पर आने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है
- **रथ यात्रा**
  - 'रथ यात्रा' महोत्सव का आयोजन **ओडिशा के जगन्नाथ पुरी** में होता है।
  - पुरी ओडिशा राज्य में स्थित एक प्रमुख हिन्दू तीर्थस्थल है। यहाँ पर प्रतिवर्ष भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा का उत्सव पारम्परिक रीति के साथ बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है।
  - जगन्नाथ रथ उत्सव आषाढ़ शुक्ल पक्ष की द्वितीया से आरम्भ होकर शुक्ल एकादशी तक चलता है। इस रथयात्रा में भगवान श्री कृष्ण, भाई बलराम और बहन सुभद्रा की रथयात्रा निकाली जाती है।
- **'वांग्ला उत्सव'**
  - **'वांग्ला उत्सव' मिजोरम में मनाया जाता है।** इसके अतिरिक्त यह उत्सव मेघालय तथा नागालैण्ड में भी मनाया जाता है।
  - फसल कटाई के पश्चात् अच्छी फसल होने के उपलक्ष्य में सूर्यदेवता को धन्यवाद अर्पित करने हेतु इस त्योहार का आयोजन किया जाता है।
  - सितम्बर से दिसम्बर महीने के मध्य में यह उत्सव मनाया जाता है।
  - इस उत्सव के दौरान लोग परम्परागत पोशाकों में होते हैं तथा हाथों में बाँसुरी, ड्रम तथा अन्य वाद्य यन्त्र लेकर चलते हैं।
- **रक्षाबन्धन**
  - भारतीय धर्म संस्कृति के अनुसार रक्षाबन्धन का त्योहार श्रावण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
  - यह त्योहार भाई-बहन को स्नेह की डोर में बांधता है।
  - इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर रक्षा का बन्धन बांधती है, जिसे राखी कहते हैं।
  - रक्षा-बंधन के त्योहार को 'स्वदेशी आंदोलन' के समय गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्वतंत्रता के धागे में पिरोया।
  - आज भी रक्षा बंधन के दिन स्कूल की बच्चियाँ देश के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को रक्षा-सूत्र बांधने जाती हैं।
  - मेवाड़ की रानी कर्मवती ने मुगल शासक हुमायूँ को रक्षा-सूत्र भेजा था।
  - इस प्रकार रक्षा के नजरिये से देखें तो राखी का यह त्योहार पर्यावरण की रक्षा, देश की रक्षा तथा लोगों की सुरक्षा की कामना करने वाला महापर्व है।
- **कजरी तीज**
  - भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित एक हिंदू त्योहार है
  - इसे बूढ़ी तीज, कजली तीज, और सातूड़ी तीज भी कहते हैं
- यह त्योहार हर साल भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है
- **गणगौर व्रत**

- गणगौर व्रत महिलाएँ पति की लम्बी आयु के लिए रखती हैं।
- यह चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है।

❑ **मुस्लिम त्यौहार**

▪ **ईद-उल-फितर:**

- उपवास के इस्लामी पवित्र महीने रमजान के अंत में मनाया जाने वाला, ईद-उल-फितर खुशी का जश्न मनाने, दावत देने, देने और आभार व्यक्त करने का समय है।

▪ **ईद-उल-अधा (बकर-ईद):**

- इब्राहिम (अब्राहम) की अपने बेटे को भगवान के सामने बलिदान करने की इच्छा की याद में, इस 'बलिदान के त्योहार' में मुसलमान एक मेमने या किसी अन्य जानवर का वध करते हैं और मांस को रिश्तेदारों, दोस्तों और वंचितों में वितरित करते हैं।

▪ **इज्तिमा त्योहार (मेला)**

- यह भोपाल (मध्य प्रदेश) में मनाया जाता है। यह एक मुस्लिम त्योहार है।
- यह तब्लीगी समाज का एक वार्षिक त्योहार है और आध्यात्मिक सन्देश देने वाली यह सभा विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक सभाओं में से एक मानी जाती है।

❑ **ईसाई त्यौहार**

▪ **क्रिसमस:**

- यह त्योहार हर साल 25 दिसंबर को ईसा मसीह के जन्म का जश्न मनाता है।
- यह पारिवारिक समारोहों, उपहार बांटने और सद्भावना के कार्यों का समय है।

▪ **ईस्टर:**

- वसंत विषुव के बाद पहली पूर्णिमा के बाद रविवार को मनाया जाने वाला ईस्टर ईसा मसीह के मृतकों में से पुनर्जीवित होने का प्रतीक है।
- इसमें चर्च सेवाएं, उत्सवपूर्ण पारिवारिक भोजन और, पश्चिमी ईसाई धर्म में, ईस्टर अंडे साझा करना शामिल है।

❑ **सिख धर्म के त्यौहार**

▪ **गुरु नानक जयंती:**

- यह सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी की जयंती का उत्सव है।
- इसमें गुरुद्वारों (सिख मंदिरों) में प्रार्थना, भजन और सामुदायिक भोजन शामिल है।

▪ **बैसाखी:**

- बैसाखी के नाम से भी जाना जाने वाला यह फसल उत्सव सिखों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह 1699 में 10वें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह द्वारा खालसा के गठन का प्रतीक है।
- बैसाखी पर्व पंजाब में बसन्त ऋतु के आगमन की खुशी में मनाया जाता है।
- बैसाखी रबी की फसल के पकने की खुशी का प्रतीक है।

▪ **गुरु गोविंद सिंह जयंती**

- सिख समुदाय के दसवें गुरु गोविंद सिंह का जन्म पटना में 22 दिसंबर, 1666 को हुआ था।
- उनके जन्मोत्सव को सिख समुदाय हर्षोल्लास के साथ मनाता है।
- इस दिन गुरुद्वारों में भव्य सजावट के साथ गुरुवाणी का पाठ किया जाता है और लंगर का आयोजन किया जाता है।

क्षेत्रीय त्यौहार

▪ राष्ट्रीय त्योहारों के अलावा, भारत स्थानीय संस्कृतियों का जश्न मनाने वाले असंख्य क्षेत्रीय त्योहारों का पोषण करता है, जो क्षेत्रीय विविधता को प्रदर्शित करते हैं जो भारत को 'विविधता में एकता' का प्रतीक बनाता है।

❑ **पोंगल**

- **महीना** - जनवरी
- **स्थान** - तमिलनाडु
- **महत्त्व** - फसलों का त्यौहार; प्रकृति और सूर्य देव को धन्यवाद
- पोंगल पर्व के दौरान कुछ स्थानों पर जल्लीकट्टू नामक बैल-दौड़ का भी आयोजन किया जाता था।

❑ **ओणम**

- **महीना** - अगस्त, सितम्बर
- **स्थान** - केरल
- **महत्त्व** - फसलों का त्यौहार; राजा महाबली का स्वागत.
- 'अताप्' ओणम त्योहार से सम्बन्धित है।
- यह एक विशेष प्रकार की रंगोली होती है, जिसे केरल में ओणम पर्व के दौरान लोगों द्वारा घरों के बाहर विभिन्न फूलों से बनाया जाता है।

❑ **लोहड़ी**

- **महीना** - जनवरी
- **स्थान** - पंजाब
- **महत्त्व** - सर्दी के अंत का जश्न मनाता है.

❑ **बिहु**

- **महीना** - जनवरी, अप्रैल, अक्टूबर
- **स्थान -असम**
- **महत्त्व** - असमिया नव वर्ष; वर्ष में तीन बार मनाया जाता है।

❑ **नुआखाई**

- **महीना** –अगस्त, सितम्बर
- **स्थान** - ओडिशा
- **महत्त्व** - फसलों का त्यौहार।

❑ **लोसांग**

- **महीना** - फ़रवरी, मार्च
- **स्थान** - सिक्किम
- **महत्त्व** –
- यह **सिक्किम में** निवास करने वाली भूटिया और लेप्चा जनजातियों द्वारा दिसम्बर माह में सिक्किमो नववर्ष के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
- इसे नामसोंग भी कहा जाता है।
- यह पर्व अच्छी कृषि उपज के लिए प्रकृति का आभार व्यक्त करने के लिए भी मनाया जाता है।

❑ **चपचार कूट त्योहार**

- **महीना** - मार्च
- **स्थान** - मिजोरम
- **महत्त्व** –
- यह कृषि से सम्बन्धित पर्व है।
- चपचार कूट **मिजोरम में** कृषि के फसल चक्र से जुड़े तीन प्रमुख त्योहारों में से एक है, फसल चक्र से जुड़े अन्य त्योहार हैं-मिम कूट और पावल कूट।
- इस दौरान किए जाने वाले प्रमुख नृत्य-चेराव, खुल्लम व सरलमकई हैं।

❑ **त्यागराज आराधना त्योहार**

- **स्थान** - तमिलनाडु
- **महत्त्व** –
- **तमिलनाडु के तंजावुर** जिले के थिरुवैयारू गाँव में गीतकार श्री त्यागराज के सम्मान में नियमित रूप से त्यागराज आराधना त्योहार मनाया जाता है।
- यह संगीतकार त्यागराज की एक वार्षिक आराधना है
- इसी दिन सन्त त्यागराज को समाधि की प्राप्ति हुई थी।

भारत में सांस्कृतिक उत्सव

❑ **गोवा कार्निवल (गोवा)**

- गोवा कार्निवल, एक औपनिवेशिक पुर्तगाली परंपरा है जो औपनिवेशिक युग के बाद भी कायम है, गोवा में सबसे प्रतीक्षित घटनाओं में से एक है और इस राज्य के लिए अद्वितीय है।
- लेंट की कठोर अवधि शुरू होने से पहले फरवरी में आयोजित, यह त्योहार जीवंत परेड, रंगीन झांकियां, जीवंत संगीत, भव्य दावतें और सौहार्दपूर्ण मौज-मस्ती का एक सामान्य माहौल दिखाता है।

❑ **पुष्कर ऊँट मेला (राजस्थान)**

- पुष्कर ऊँट मेला राजस्थान के पुष्कर शहर में आयोजित होने वाला वार्षिक पाँच दिवसीय ऊँट और पशुधन मेला है।
- यह दुनिया के सबसे बड़े ऊंट मेलों में से एक है, जो हजारों पर्यटकों, फोटोग्राफरों और व्यापारियों को आकर्षित करता है।
- ऊँट दौड़, "सर्वश्रेष्ठ सजे हुए ऊँट" प्रतियोगिता और पशुधन के व्यापार जैसे रीति-रिवाज इसे एक जीवंत सांस्कृतिक तमाशा बनाते हैं।

❑ **जयपुर साहित्य महोत्सव (राजस्थान)**

- जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल, दुनिया का सबसे बड़ा मुफ़्त साहित्यिक उत्सव, दक्षिण एशिया और दुनिया भर से कुछ महान विचारकों और लेखकों को एक साथ लाता है।
- यह साहित्य का उत्सव है और संवाद और विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।

❑ **कोणार्क नृत्य महोत्सव (ओडिशा)**

- दिसंबर में आयोजित सप्ताह भर चलने वाला कोणार्क नृत्य महोत्सव शास्त्रीय नृत्य प्रेमियों के लिए एक आकर्षण है।
- कोणार्क में सूर्य मंदिर की आश्चर्यजनक पृष्ठभूमि के सामने स्थापित, यह सांस्कृतिक उत्सव भारत के शास्त्रीय नृत्य रूपों, जैसे ओडिसी, भरतनाट्यम, कथक और कई अन्य को प्रदर्शित करता है।

❑ **हॉर्नबिल महोत्सव (नागालैंड)**

- 'त्योहारों के त्योहार' के रूप में जाना जाने वाला हॉर्नबिल महोत्सव नागा जनजातियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाता है।
- इसमें पारंपरिक कलाएं, नृत्य, लोक गीत और खेल शामिल हैं, जो इसे स्वदेशी संस्कृति का एक जीवंत दृश्य बनाते हैं।

भारतीय मेले

❑ **गंगासागर मेला**

- गंगासागर मेला, देशभर में होने वाले सबसे बड़े मेलों में से एक है।
- **इस मेले का आयोजन पश्चिम बंगाल मे** हुगली नदी के तट पर ठीक उस स्थान पर किया जाता है, जहाँ गंगा नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है। इसलिये इस मेले का नाम गंगासागर मेला है।

❑ **तरनेतर मेला**

- सुरेंद्रनगर (गुजरात) में आयोजित होने वाला यह जनजातीय मेला अत्यंत रंगारंग और पर्यटकों के मध्य आकर्षण का केंद्र है।
- यह एक प्रकार का 'मैरिज मार्ट' भी है, जहाँ नवयुवक व नवयुवतियाँ भावी जीवन साथी का चुनाव करते हैं।
- यह मेला त्रिनेत्रेश्वर महादेव मंदिर के पास - आयोजित किया जाता है, जहाँ अर्जुन और द्रौपदी के विवाह की याद में उत्सव मनाया जाता है।

❑ **पुष्कर मेला**

- अक्टूबर-नवंबर के महीने में अजमेर के पुष्कर में लगने वाला यह राजस्थान ही नहीं, विश्व के सबसे बड़े पशु मेलों में से एक है।
- यह मेला कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से शुरू होता है और पूर्णिमा तक चलता है।
- पारंपरिक रूप से मेला पुष्कर सरोवर में पवित्र स्नान व ऊँटों के लिये प्रसिद्ध था, परंतु वर्तमान में विदेशी सैलानियों की बढ़ती भागीदारी ने इसकी लोकप्रियता को वैश्विक बना दिया है।
- इस दौरान स्थानीय निवासियों और सैलानियों के मध्य रंगारंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

❑ **सूरजकुंड मेला**

- सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला हरियाणा पर्यटन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष 1 से 15 फरवरी के बीच फरीदाबाद में आयोजित किया जाता है।
- यह मेला भारत के हस्तशिल्पों, हथकरघों और सांस्कृतिक धरोहर की विविधता को दर्शाता है।

❑ **कुंभ मेला**

- कुंभ मेला हिंदुओं का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है।
- ऐसी मान्यता है कि इंद्र के बेटे जयंत के द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश लेकर भागते समय **नासिक, उज्जैन, प्रयाग तथा हरिद्वार** में कुछ बूँदों के गिरने से ये स्थान पवित्र हो गये।
- उपर्युक्त चारों स्थानों पर इस अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु पवित्र नदियों में स्नान के लिये एकत्रित होते हैं।

- इनमें से प्रत्येक स्थान पर बारहवें वर्ष में इस पर्व का आयोजन होता है।
- भारतीय पंचांग के अनुसार यह मेला मकर संक्राति के दिन प्रारंभ होता है और पूरे एक माह तक चलता है।
- इस दौरान श्रद्धालुओं की भारी संख्या को देखते हुए निवास के लिये नदियों के किनारे अस्थायी आवासों का निर्माण किया जाता है, जिनमें श्रद्धालु पूरे एक मास 'कल्पवास' करते हैं।

❑ **महाकुंभ मेला 2025**

- यह मेला 13 जनवरी से 26 फ़रवरी, 2025 तक प्रयागराज में आयोजित किया गया
- यह दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक था
- इस मेले में करीब 45 करोड़ श्रद्धालु आए थे

❑ **महाकुंभ और कुंभ मेले में अंतर**

- महाकुंभ 144 साल में एक बार लगता है, जबकि कुंभ मेला हर 12 साल में लगता है
- महाकुंभ सिर्फ़ प्रयागराज में लगता है, जबकि कुंभ मेला हरिद्वार, उज्जैन, नासिक, और प्रयागराज में लगता है
- महाकुंभ को सभी कुंभ मेलों में सबसे पवित्र माना जाता है
- महाकुंभ को 'भव्य कुंभ' भी कहा जाता है

❑ **पौष मेला**

- इसका आयोजन शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल में किया जाता है।
- यह कृषकों से संबंधित मेला है, जिसमें ग्रामीण बंगाली जनजीवन की झाँकियाँ देखने को मिलती हैं।
- इस दौरान गाए जाने वाले बांग्ला लोक संगीत विशेष रूप से 'बाउल संगीत' की प्रस्तुतियाँ संगीत प्रेमियों के बीच बड़ी लोकप्रिय हैं।

❑ **सोनपुर मेला**

- एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला सोनपुर (बिहार) में लगता है।
- यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन लगता है।

❑ **खीर भवानी मेला**

- जम्मू और कश्मीर के गांदरबल ज़िले में खीर भवानी मंदिर में ज्येष्ठ अष्टमी के वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जाता है।
- यह त्योहार कश्मीरी पंडितों का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है।
- खीर भवानी/क्षीर भवानी एक पवित्र झरने पर निर्मित देवी खीर भवानी को समर्पित है। पारंपरिक रूप से वसंत ऋतु में इस मंदिर में खीर चढ़ाई जाती थी, इसलिये इसका नाम खीर भवानी पड़ा।

भारत में हस्तशिल्प एवं वेशभूषा

हस्तशिल्प विभिन्न प्रकार के कार्यों में से एक है जहां **उपयोगी और सजावटी वस्तुएं पूरी तरह से हाथ से या केवल सरल उपकरणों का उपयोग करके बनाई जाती हैं**। यह शिल्प का एक पारंपरिक मुख्य क्षेत्र है, और रचनात्मक और डिजाइन गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला पर लागू होता है जो किसी के हाथों और कौशल से चीजें बनाने से संबंधित हैं, जिसमें कपड़ा , कागज, पौधे के फाइबर आदि के साथ काम शामिल है। सामूहिक **शब्द हस्तशिल्प के लिए कारीगरी, हस्तशिल्प, क्राफ्टिंग और हस्तशिल्प कौशल शामिल हैं।**

भारत सबसे उत्तम हस्तशिल्प का एक आभासी खजाना है। **दैनिक जीवन की साधारण वस्तुओं को नाजुक डिजाइन** के साथ तैयार किया गया है जो भारतीय कारीगरों की **रचनात्मकता को अभिव्यक्ति देता है।** भारतीय हस्तशिल्प का इतिहास अब से लगभग 5000 वर्ष पुराना है। **सिंधु घाटी सभ्यता** के हस्तशिल्प के कई उदाहरण हैं।

भारत में हस्तशिल्प

भारत में हस्तशिल्प एक अत्यंत महत्वपूर्ण और समृद्ध परंपरा है, जो सदियों से भारत की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा रही है। भारतीय हस्तशिल्प में विभिन्न प्रकार की कला, शिल्प और कारीगरी शामिल हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और जातियों द्वारा अनूठे तरीके से बनाई जाती हैं।

❑ **भारत में प्रमुख हस्तशिल्प के प्रकार निम्नलिखित हैं:**

- **काष्ठ शिल्प**
  - इसमें लकड़ी की नक्काशी, फर्नीचर बनाना, और सजावटी वस्तुएं बनाना शामिल हैं।
  - काष्ठ शिल्प भारत के विभिन्न हिस्सों में बहुत प्रसिद्ध है - कर्नाटक, राजस्थान और उत्तर प्रदेश
- **कांच शिल्प**
  - भारत की कांच की कलाकृतियाँ बहुत प्रसिद्ध है।
  - राजस्थान और गुजरात में कांच से बने हुए चमकीले और रंगीन गहनों और सजावटी सामानों का काम बहुत प्रसिद्ध है।
- **जरी और ज़रदोज़ी**
  - यह एक प्रकार का कढ़ाई कार्य है जिसमें सुनहरे और चांदी के तारों से काम किया जाता है।
  - यह खासकर भारतीय साड़ियों और शेरवानी जैसी वस्त्रों पर किया जाता है।
- **कुम्हार शिल्प**
  - कुम्हार शिल्प भारत में प्राचीन समय से चला आ रहा है।
  - मिट्टी के बर्तन, दीयों, मूर्तियां और अन्य सजावटी वस्तुएं भारत के विभिन्न हिस्सों में बनाई जाती हैं।
- **कढ़ाई और ऊनी कपड़े**
  - भारत के विभिन्न हिस्सों में कढ़ाई (जैसे कश्मीरी कढ़ाई, चंबा कढ़ाई) और ऊनी वस्त्र (जैसे कश्मीरी शॉल और पुलोवर्स) बहुत प्रसिद्ध हैं।
- **चाँदी और पीतल शिल्प**
  - राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में चाँदी और पीतल से बने हुए सिक्के, गहने, थालियां और अन्य वस्त्र प्रसिद्ध हैं।
- **पटचित्र**
  - यह चित्र मुख्य रूप से कपड़े और लकड़ी पर बनाए जाते हैं।
  - ओडिशा और पश्चिम बंगाल में बने पटचित्र चित्रकला प्रसिद्ध है, जिसमें धार्मिक कथाओं को चित्रित किया जाता है।
- **बांस और रतन शिल्प**
  - असम, त्रिपुरा, और पश्चिम बंगाल जैसे क्षेत्रों में बांस और रतन से बने सामान, जैसे बास्केट, टोकरियाँ, और फर्नीचर आमतौर पर बनाए जाते हैं।
- **लोक कला**
  - भारत में विभिन्न लोक कला शैलियाँ हैं, जैसे मध्य प्रदेश की "गोंड कला", राजस्थान की "मीणा कला", और महाराष्ट्र की " वर्ली‌कला", जो दीवारों पर चित्रकला के रूप में होती है।
- **पत्थर शिल्प**
  - भारत के कई क्षेत्रों में पत्थर की नक्काशी की परंपरा है, जो ऐतिहासिक इमारतों, मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों में दिखाई देती है।
- **बुनी हुई वस्त्र**
  - भारतीय कश्मीरी शॉल, साड़ी (सिल्क, कॉटन, ऊन) की बुनाई का काम प्रसिद्ध है।
  - बुनाई में कांची और इक्का जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
- **धातु शिल्प**
  - धातु के बने बर्तन, मूर्तियाँ, और सजावटी सामान कई राज्यों में बनाए जाते हैं, जिनमें तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र प्रमुख हैं।
- **मिट्टी और कागज शिल्प**

- कागज और मिट्टी से बने शिल्प की कला विशेष रूप से बंगाल और उत्तर प्रदेश में होती है, जिसमें पारंपरिक मूर्तियाँ, सजावटी सामान और कागज से बने खिलौने शामिल हैं।
- भारत के हस्तशिल्प की विशेषता यह है कि प्रत्येक क्षेत्र में इन शिल्पों का एक विशिष्ट रूप होता है और इन्हें बनाने के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग किया जाता है।

❑ **भारतीय हस्तशिल्प के विकास -**

- **प्राचीन काल**

- प्राचीनकालीन हस्तशिल्प सिंधु घाटी हस्तशिल्प सैधव सभ्यता के अनेक स्थलों की खुदाई से प्राप्त होने वाले पुरातात्विक साक्ष्य इस बात को प्रमाणित करते हैं कि सिंधु सभ्यता के लोग शिल्प तकनीक एवं वस्त्र निर्माण कला से परिचित थे।
- सिधु सभ्यता में सबसे लोकप्रिय धातु कांस्य थी। इस सभ्यता से जुड़े स्थलों में धात्विक शिल्पकला के तौर पर तांबे एवं काँसे के बर्तनों के साक्ष्य मिलते हैं।
- चन्हुदड़ो इस काल में शिल्प उत्पादन का प्रसिद्ध केंद्र था। यहाँ मोती निर्माण, सीपी काटने, मुहरों का निर्माण, धातु कार्य आदि किये जाते थे।
- मोहनजोदड़ो से एक पुरोहित की मूर्ति प्राप्त हुई है, जो तिपतिया अलंकरण से युक्त है।

Note :-

- **तिपतिया अलंकरण** वस्तुतः वस्त्रों पर कढ़ाई करने की एक कला थी।
- इससे स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता के लोग वस्त्रों पर कढ़ाई करने की कला से भी परिचित थे।

- इसके अतिरिक्त यहाँ विभिन्न स्थलों की खुदाई में प्राप्त कताई-बुनाई के विभिन्न उपकरणों, जैसे तकली, सुई आदि से भी स्पष्ट होता है कि यहाँ वस्त्र निर्माण केंद्र था।
- इस सभ्यता की विभिन्न आकृतियों एवं डिजाइनों के बने मिट्टी के पात्र शिल्पकारों की दक्षता की ओर इशारा करते हैं।
- वेदों और उपनिषदों के काल में भारतीय समाज कृषि और पशुपालन में संलग्न था। इस दौरान हस्तशिल्प की परंपरा बहुत अधिक व्यवस्थित नहीं थी, लेकिन लकड़ी, बांस, और धातु की वस्तुएं बनाने की कला अवश्य मौजूद थी।
- उस समय मुख्य रूप से काष्ठ शिल्प, धातु शिल्प और मिट्टी के बर्तन बनाए जाते थे।

- **महाजनपद और मौर्य काल**

- मौर्य काल में व्यापार, संस्कृति, और प्रशासन का काफी विकास हुआ।
- मौर्य काल में काष्ठ शिल्प के विकास के पर्याप्त प्रमाण मिले हैं, जिसके साक्ष्य के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य के राजप्रासाद का नाम लिया जा सकता है।
- इस समय में **पत्थर शिल्प** (जैसे अशोक स्तंभ) और **सिक्कों की मुद्रण कला** का महत्वपूर्ण योगदान था। इसके अलावा **धातु शिल्प** और **मिट्टी के बर्तन** भी बनाए जाते थे। काठमांडू के प्रसिद्ध **हस्ताक्षर** और **मुद्राएं** इस युग के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- मेगस्थनीज ने अनेक प्रकार की धातुओं, जैसे-सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि की खदानों का जिक्र किया है। इन धातुओं का उपयोग आभूषण, बर्तन, युद्ध के हथियार, सिक्के आदि बनाने में किया जाता था।
- काशी एवं पुंडू में रेशमी कपड़े बनते थे तथा बंग का मलमल विश्व प्रसिद्ध था। इस समय 'दुकूल' जो श्वेत व चिकना वस्त्र था तथा 'क्षौम' जो एक प्रकार का रेशमी वस्त्र था, का उल्लेख मिलता है।
- इन उद्योगों के अतिरिक्त हाथी दाँत पर काम करने वाले, मिट्टी के बर्तन निर्मित करने वाले तथा चर्मकारों की उपस्थिति का भी प्रमाण मिला है।

- **संगमकालीन हस्तशिल्प**

- इस काल में आंतरिक एवं बाह्य व्यापार उन्नत अवस्था में था जिसके कारण अनेक व्यापारिक संस्थाएँ एवं श्रेणियाँ शिल्पकला के विकास में अपना योगदान दे रही थीं।
- संगम काल में वस्त्र की बुनाई से संबंधित कार्य प्रमुख रूप से किये जाते थे।
- उरैयूर एवं मदुरई वस्त्र-निर्माण के प्रमुख केंद्र के रूप में प्रसिद्ध थे।

- **गुप्त काल**

- गुप्त काल को भारतीय इतिहास का "स्वर्णिम युग" माना जाता है। इस समय कला और साहित्य में अभूतपूर्व विकास हुआ, और हस्तशिल्प भी इसका हिस्सा था।
- गुप्त काल में **चांदी और सोने के सिक्के**, **मूर्ति कला**, और **काष्ठ शिल्प** का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। इस समय **वास्तुकला**, **पत्थर की मूर्तियों** और **मंदिरों** के निर्माण में भी जबरदस्त वृद्धि हुई।
- इस काल में वस्त्र-निर्माण काफी उन्नत अवस्था में मौजूद था। लोग रंगाई, बुनाई, कढ़ाई की कला से परिचित थे।
- वस्त्र-निर्माण कला के साथ ही हाथी दाँत, मूर्तिकला एवं चित्रकला इस काल में प्रचलित मुख्य शिल्प थे।
- इस काल में धातु कर्म से संबंधित कार्य प्रचुर मात्रा में किये जाते थे। धातु से कई तरह की वस्तुओं का निर्माण करने वाले कारीगरों द्वारा विभिन्न प्रकार के पात्रों, टेराकोटा मूर्तियों, मुद्राओं आदि का निर्माण किया जाता था।

- **मध्यकाल**

- मुस्लिम शासकों के आगमन के बाद भारत में कला और हस्तशिल्प में एक नया मोड़ आया। तुर्क, अफगान, और मुग़ल शासकों ने भारतीय हस्तशिल्प में अपनी शैलियाँ जोड़ दीं।
- इस काल में **जारदोजी कढ़ाई**, **कांच का काम** (मुग़ल काल में इंटीरियर्स में कांच की सजावट), और **कागज कला** (जैसे कागज के फूल और सजावट) का विकास हुआ। इसके अलावा **पत्थर की मूर्तियां** और **धातु शिल्प** (जैसे चांदी और कांस्य से बने आइटम्स) की प्रसिद्धता थी।

- इस समय एक विशेष प्रकार के सूती वस्त्र 'छींट' का उत्पादन किया जाता था तथा महीन कपड़े व मलमल बंगाल के सिलहट, ढाका तथा दक्कन के देवगिरि में बनाए जाते थे।

- **मुगलकालीन हस्तशिल्प**
- मुगल काल में शासकों का प्रोत्साहन पाकर विभिन्न कलाओं, जैसे- वस्त्र निर्माण, धातु कर्म, चित्रकारी, कागज निर्माण, चमड़ा उत्पादन आदि शिल्पों के विकास में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई।
- मुगल काल में कागज़ एवं सूती वस्त्र उद्योग काफी उन्नत अवस्था में थे। कागज़ की उपलब्धता के कारण चित्रकारों के लिये अभ्यास करना आसान हुआ और उनकी कला में निखार आया।
- सूती वस्त्रों के निर्माण के महत्त्वपूर्ण केंद्र थे- आगरा, बनारस, बुरहानपुर, पाटन, जौनपुर, बंगाल, मालवा आदि।
- रंगसाजी का कार्य भी खूब प्रचलित था। इसके केंद्रों के रूप में फैज़ाबाद एवं खानदेश प्रसिद्ध थे।
- इसके साथ ही लाहौर, गुजरात, आगरा आदि रेशमी एवं मलमल के कपड़ों के लिये तथा अमृतसर ऊनी वस्त्रों के निर्माण-केंद्र के रूप में प्रसिद्ध थे।
- मुगल काल के दौरान अस्मत बेगम द्वारा इत्र का निर्माण (आविष्कार) किया गया, जिसके पश्चात् इत्र निर्माण को बढ़ावा मिला। इस समय कन्नौज इत्र निर्माण के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था।

- **राजपूत और मराठा काल**
- राजपूत और मराठा शासक भारत में कला और शिल्प को संरक्षण देते थे। इस समय में विशेष रूप से वस्त्र कला और सजावटी शिल्प का महत्व बढ़ा।
- राजपूतों द्वारा **काष्ठ शिल्प**, **किलेन शिल्प** (किलों में शिल्पकला), **नकली सोने की कढ़ाई** (कांजीवरम, बंधेज) और **नकली चांदी की वस्तुएं** प्रचलित थीं। **मराठा काल में लोहे और कांस्य का काम** भी उत्कृष्ट था।

- **ब्रिटिश काल**
- ब्रिटिश शासन ने भारतीय हस्तशिल्प उद्योग को काफी प्रभावित किया। कई हस्तशिल्प उद्योगों को बंद कर दिया गया, लेकिन कुछ विशेष शिल्प परंपराएं बची रहीं।
- इस दौरान **साड़ी बुनाई**, **जरी कढ़ाई**, **कांच का काम**, **हथकरघा** और **कुम्हार शिल्प** परंपराएं जीवित रहीं। इसके अलावा, **चांदी और कांस्य के बर्तन** बनाने की परंपरा भी महत्वपूर्ण रही। 19वीं सदी में **भारतीय पेंटिंग** और **मिनिएचर कला** भी विकसित हुई, जो हस्तशिल्प का हिस्सा मानी जाती है।

- **स्वतंत्रता के बाद**
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारतीय हस्तशिल्प को एक नया जीवन मिला। नए भारत में यह कला अपनी पहचान और संस्कृति को पुनः प्रकट करने का एक माध्यम बनी।
- स्वतंत्रता के बाद हस्तशिल्प में **राष्ट्रीय पहचान** की भावना बढ़ी, और **खादी** और **हथकरघा** जैसे पारंपरिक शिल्पों को बढ़ावा दिया गया। इसके अलावा, **कांचीवरम साड़ी**, **विक्टोरियन शिल्प**, और **पारंपरिक मूर्तिकला** जैसे उद्योगों को भी बढ़ावा मिला।

- **वर्तमान युग**
- आजकल भारतीय हस्तशिल्प अपनी पारंपरिक छवि के साथ-साथ आधुनिक डिजाइनों के साथ मिश्रित हो रहा है। डिजिटल और तकनीकी प्रगति ने हस्तशिल्प को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है, जबकि पुरानी कला शैलियाँ अब भी जीवित हैं।
- वर्तमान समय में **कला और डिजाइन** के नए प्रयोग हो रहे हैं, जैसे **सार्वजनिक कला**, **वस्त्र शिल्प**, **इको-फ्रेंडली वस्त्र** और **लोक कला** का पुनः अस्तित्व। इसके साथ ही भारत में **स्मार्ट हैंडिक्राफ्ट्स** और **सस्टेनेबल डिज़ाइन** भी उभर रहे हैं।

भारत में काष्ठ शिल्प

भारत में **काष्ठ शिल्प** का एक लंबा और समृद्ध इतिहास है, जो विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों द्वारा विकसित किया गया है। काष्ठ शिल्प का उपयोग फर्नीचर, सजावटी वस्तुएं, धार्मिक मूर्तियाँ, और कई अन्य सामान बनाने के लिए किया जाता है। काष्ठ शिल्प की पारंपरिक शैलियाँ आज भी भारत के कई हिस्सों में जीवित हैं। यहां कुछ प्रमुख काष्ठ शिल्प के उदाहरण दिए गए हैं:

❑ राजस्थानी काष्ठ शिल्प

- राजस्थान में काष्ठ शिल्प की विशेष परंपरा है, जिसमें लकड़ी की नक्काशी और सजावट की जाती है। यहाँ पर फर्नीचर, लकड़ी के दरवाजे, खिड़कियाँ, और अन्य सजावटी सामान बनाए जाते हैं।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
- **जयपुर लकड़ी की नक्काशी**: जयपुर की लकड़ी की नक्काशी में पारंपरिक भारतीय डिज़ाइन और फूलों की रूपांकन की जाती है।
- **बीकानेरी लकड़ी की नक्काशी**: बीकानेर में विभिन्न प्रकार की नक्काशी और लकड़ी के बने सामान, जैसे डोल, बक्से, और दरवाजे प्रसिद्ध हैं।

❑ केरल काष्ठ शिल्प

- केरल में लकड़ी की नक्काशी का लंबा इतिहास है, और यहां की शिल्प कला में धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व की मूर्तियाँ, पैनल, और फर्नीचर बनाए जाते हैं।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
- **भित्ति चित्र लकड़ी की नक्काशी**: केरल की दीवारों पर लकड़ी से बने अद्भुत चित्रकला और दृश्य होते हैं, जो सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकों को दर्शाते हैं।
- **मंदिर की लकड़ी पर नक्काशी**: केरल के मंदिरों में लकड़ी से बनी मूर्तियाँ और डिजाइन बहुत प्रसिद्ध हैं, खासकर देवताओं की मूर्तियाँ और मंडपों की नक्काशी।

❑ उत्तर प्रदेश काष्ठ शिल्प

- यहाँ के कारीगर लकड़ी से खूबसूरत फर्नीचर और सजावटी सामान बनाते हैं।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
  - **लकड़ी पर लखनऊ चिकन करी**: लखनऊ में लकड़ी पर चिकनकारी के डिज़ाइन किए जाते हैं।
  - **मिर्ज़ापुर काष्ठ शिल्प**: मिर्जापुर में लकड़ी की नक्काशी की परंपरा बहुत पुरानी है, जिसमें लकड़ी के बने बक्से, थाल, और अन्य घरेलू सामान शामिल होते हैं।

❑ **कर्नाटक काष्ठ शिल्प**

- यहाँ लकड़ी की नक्काशी की कला बहुत प्रचलित है। यहां की शिल्प कला में विशेष रूप से मंदिरों और धार्मिक मूर्तियों की नक्काशी होती है।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
  - **चन्नारायपटना लकड़ी की नक्काशी**: चन्नारायपट्टन में लकड़ी पर की गई नक्काशी बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ और सजावटी सामान बनाए जाते हैं।
  - **मैसूर वुड इनले**: मैसूर की लकड़ी की इनले कला में लकड़ी के भीतर पत्थर और धातु की नक्काशी की जाती है।

❑ **मणिपुरी काष्ठ शिल्प**

- यहाँ के कारीगर विशेष रूप से धार्मिक मूर्तियाँ और सजावटी सामान बनाते हैं।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
  - **मणिपुर लकड़ी के मुखौटे**: मणिपुर के कारीगर लकड़ी से पारंपरिक नृत्य मास्क बनाते हैं, जो लोककला और नृत्य में उपयोग होते हैं।
  - **नक्काशीदार लकड़ी के खंभे**: मणिपुर के मंदिरों और घरों में लकड़ी के स्तंभों पर बारीक नक्काशी की जाती है।

❑ **बंगाल काष्ठ शिल्प**

- बंगाल में काष्ठ शिल्प की बहुत पुरानी परंपरा है, जिसमें विभिन्न प्रकार के लकड़ी के बर्तन, मूर्तियाँ, और सजावटी सामान बनाए जाते हैं।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
  - **शांतिनिकेतन से लकड़ी के खिलौने**: पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन में लकड़ी के खिलौने बनाए जाते हैं, जो बहुत प्रसिद्ध हैं।
  - **बंगाल लकड़ी की नक्काशी**: बंगाल की लकड़ी की नक्काशी में धार्मिक, सांस्कृतिक और पारंपरिक डिज़ाइन होते हैं।

❑ **हिमाचल प्रदेश काष्ठ शिल्प**

- हिमाचल प्रदेश में काष्ठ शिल्प की कला विशेष रूप से लोक कला और मंदिरों में देखने को मिलती है। यहां लकड़ी की नक्काशी में प्रकृति और देवी-देवताओं के चित्र होते हैं।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
  - **चंबा लकड़ी की नक्काशी**: चंबा की लकड़ी की नक्काशी में विशेष रूप से मंदिरों में उपयोग होने वाले लकड़ी के पैनल और मूर्तियाँ बनती हैं।

❑ **असम काष्ठ शिल्प**

- असम में भी काष्ठ शिल्प की एक समृद्ध परंपरा है, जहाँ मुख्य रूप से बांस और लकड़ी से विभिन्न सामान बनाए जाते हैं।
- **प्रसिद्ध उदाहरण**:
  - **लकड़ी के मुखौटे और आकृतियाँ**: असम में लकड़ी से धार्मिक मास्क और आकृतियाँ बनाना एक पारंपरिक कला है।

कांच के बने पदार्थ

- कांच बनाने का पहला उल्लेख भारतीय महाकाव्य महाभारत में मिलता है। हालाँकि, भौतिक साक्ष्य प्रारंभिक हड़प्पा सभ्यता में कांच के मोतियों का कोई संकेत नहीं देते हैं।
- पहला भौतिक साक्ष्य गंगा घाटी (1000 ईसा पूर्व) की चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति से सुंदर कांच के मोतियों के रूप में मिला था। शतपथ ब्राह्मण नामक वैदिक पाठ में कांच के लिए प्रयुक्त शब्द कांच या काका था।
- भारत के दक्षिणी भाग में, मस्की में कांच के पुरातात्विक साक्ष्य पाए गए हैं , जो दक्कन में एक ताम्रपाषाण स्थल है। जिन अन्य स्थलों से कांच के प्रमाण मिले हैं वे हैं अहार (राजस्थान), हस्तिनापुर और अहिच्छत्र (उत्तर प्रदेश), एरण और उज्जैन (मध्य प्रदेश) आदि।
- मध्ययुगीन काल के दौरान, मुगलों ने कांच के बर्तनों की कला को संरक्षण दिया और इसे शीश महल जैसे अपने स्मारकों में सजावट के रूप में उपयोग किया। अन्य कांच की वस्तुएं जो मुगलों के लिए प्रसिद्ध रूप से निर्मित की गई थीं, वे कांच के हुक्का, इत्र के बक्से या इटार्डन और उत्कीर्ण गिलास थे।
- वर्तमान में, कांच उद्योग के कई पहलू हैं लेकिन सबसे प्रसिद्ध कांच की चूड़ियों का है । सबसे उत्तम हैदराबाद में बनाए जाते हैं और उन्हें ' चूड़ी का जोड़ा ' कहा जाता है। इसके अलावा फिरोजाबाद कांच के झूमरों और अन्य सजावटी वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है । उत्तर प्रदेश में कांच का एक अन्य केंद्र सहारनपुर शहर है जो बच्चों के लिए 'पंचकोरा' या कांच के खिलौने का उत्पादन करता है।
- इसी प्रकार, पटना (बिहार) में भी एक विशेष प्रकार के सजावटी कांच के मोतियों का उत्पादन होता है, जिन्हें 'टिकुली' कहा जाता है । औद्योगीकरण के गलियारों में यह शिल्प लगभग लुप्त हो गया है। हालाँकि, यह अभी भी बिहार की संथाल जनजातियों द्वारा पहना जाता है।
- बिहार की टिकुली कला वर्तमान में समकालीन और आधुनिक संदर्भ में कला के रूप को पुनर्जीवित करने के लिए चमकदार हार्डबोर्ड पर भी बनाई जाती है।

कपड़ा परंपरा

भारत की कपड़ा परंपरा विविध और समृद्ध है। भारत में वस्त्रों की एक पुरानी परंपरा है और इसकी जड़ें सिंधु घाटी सभ्यता से मिलती हैं।

❑ **जामदानी**

- जामदानी बंगाल के बेहतरीन मलमल वस्त्रों में से एक है।
- जामदानी के ऐतिहासिक उत्पादन को मुगल सम्राटों के द्वारा संरक्षण दिया गया था। यह हथकरघा बुनाई के सबसे अधिक समय और श्रम-गहन रूपों में से एक है।
- जामदानी की जड़ें बांग्लादेश के ढाका में हैं। यह एक हाथ से बुना हुआ, बढ़िया सूती कपड़ा है।
- जामदानी पारंपरिक रूप से मिल सूती धागे, रेशम धागे, मुगा रेशम और टसर रेशम धागे का उपयोग करके बनाई जाती थी। यह एक विशेष बुनाई शैली है, जहां पैटर्न को कपड़े में बुना जाता है।

❑ **इकत (इक्कत)**

- इकत, या इक्कत, एक **रंगाई तकनीक** है जिसका उपयोग वस्त्रों के पैटर्न बनाने के लिए किया जाता है, जिसमें कपड़े की रंगाई और बुनाई से पहले धागों पर प्रतिरोधी रंगाई का प्रयोग किया जाता है।
- इकत में प्रतिरोध अलग-अलग धागों या धागों के बंडलों को वांछित पैटर्न में कसकर लपेटकर बनाया जाता है। इसके बाद धागों को रंगा जाता है। फिर एक नया पैटर्न बनाने के लिए बाइंडिंग को बदला जा सकता है और धागों को फिर से दूसरे रंग से रंगा जा सकता है। विस्तृत, बहुरंगी पैटर्न बनाने के लिए इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया जा सकता है।
- इकत में कपड़े के दोनों चेहरों को पैटर्न दिया जाता है।
- गुजरात के पाटन में बनी बेहतरीन डबल इकत सबसे जटिल है, जिसे पाटन पटोला के नाम से भी जाना जाता है।
- ओडिशा में इकत तकनीक को बंध के नाम से जाना जाता है। इकत की ओडिशा शैली में बहने वाले डिजाइनों की एक अनूठी शैली है।
- आंध्र प्रदेश के इकत को चिटकी के नाम से जाना जाता है। तेलिया रुमाल (चौकोर आकार का कपड़ा) एक बहुत ही श्रमसाध्य डबल-लकैट बुनाई उत्पाद है। सूत को तेल से उपचारित करके बांधा जाता है और रंगा जाता है।

❑ **वस्त्रों की सतह की सजावट**

- इसमें प्रिंटिंग, चित्रकारी, टाई एंड डाई और कढ़ाई शामिल हैं।
- **कपड़ा छपाई**
  - कपड़ों की मुद्रण तकनीकों में लोकप्रिय प्रत्यक्ष मुद्रण शामिल है जहां लकड़ी के नक्काशीदार ब्लॉकों का उपयोग प्रक्षालित कपास या रेशम को मुद्रित करने के लिए किया जाता हैं।
- **बाँधना और रंगना**
  - टाई और डाई भारत में कपड़ा सतह की सजावट के सबसे व्यापक रूप से प्रचलित और पारंपरिक तरीकों में से एक है।
  - बंधनी या बंधेज की कला , एक अत्यधिक कुशल प्रक्रिया है जिसमें कई बिंदुओं पर धागे से कसकर बंधे कपड़े को रंगना शामिल है, इस प्रकार कपड़े को बांधने के तरीके के आधार पर विभिन्न प्रकार के पैटर्न तैयार किए जाते हैं।
  - कपड़े को कीलों, मोतियों या अनाज की मदद से जटिल पैटर्न में बांधा जाता है। यह रंगाई के दौरान बंधे हुए क्षेत्रों में रंग के रिसाव को रोकने का काम करता है
  - इसे अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है:
    - **बंधिनी (लहरिया पैटर्न): राजस्थान**
    - **बंधेज: गुजरात**
    - **चुंगिडी: तमिलनाडु**

Note:-

- एक विशेष प्रकार की टाई और डाई जिससे कपड़े में तरंग या तरंग जैसे पैटर्न बनते हैं, **लहरिया कहलाती है।** यह आमतौर पर **जयपुर और जोधपुर में बनाया जाता है**
- एक अन्य प्रकार की टाई और डाई को **'इकात' कहा जाता है,** जिसे **'रेज़िस्टेंट डाइंग'** विधि के रूप में भी जाना जाता है। इस विधि में कपड़ा बुनने से पहले सूत पर रेजिस्ट डाइंग को बार-बार लगाया जाता है। इस कार्य के प्रमुख केंद्र **तेलंगाना, ओडिशा, गुजरात और आंध्र प्रदेश हैं।**
- प्राचीन काल की अन्य प्रक्रियाएं जो अभी भी उपयोग की जा रही हैं, वे **कलमकारी हैं,** जो **गहरे रंगों के वनस्पति रंगों का उपयोग करके कपड़ों पर हाथ से चित्रकारी करने की कला का उपयोग करती हैं**। यह आमतौर पर **आंध्र प्रदेश में प्रचलित है।**
- कपड़े की सजावट की एक और खूबसूरत तकनीक को **बाटिक कला कहा जाता है,** जिसमें **कपड़े के एक सिरे को पिघले हुए मोम से लपेटा जाता है और फिर ठंडे मोम में रंगकर बाटिक साड़ियाँ और दुपट्टे तैयार किए जाते हैं जो बहुरंगी होते हैं**। **बाटिक कला मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल** में प्रसिद्ध है। बाटिक कला की उत्पत्ति इंडोनेशिया से हुई है।

❑ **कलमकारी**

- कलमकारी एक प्रकार का हाथ से पेंट किया हुआ या ब्लॉकप्रिंट वाला सूती कपड़ा है, जो भारत और ईरान के कुछ हिस्सों में उत्पादित किया जाता है।
- इसका नाम क़लम (कलम) और कारी (शिल्पकौशल) शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है कलम से चित्र बनाना।
- भारत में कलमकारी कला की दो विशिष्ट शैलियाँ हैं – श्रीकालाहस्ती शैली और मछलीपट्टनम शैली। दोनों केंद्र आंध्र प्रदेश में हैं।
- कलमकारी की श्रीकालाहस्ती शैली, जिसमें "कलाम" या कलम का उपयोग विषय को मुक्त हस्त से चित्रित करने और रंग भरने के लिए किया जाता है, पूरी तरह से हाथ से बनाई गई है।

ऐपलिक या पिपली का काम

- पिपली बनाना एक सजावटी कार्य है जिसमें कपड़े को कपड़े के टुकड़े, कांच के टुकड़े, धातु, लकड़ी या धातु के तारों से सिला जाता है। इस शिल्प का अभ्यास भारत के कई क्षेत्रों में किया जाता है, लेकिन ओडिशा, पंजाब, गुजरात और राजस्थान के केंद्र प्रसिद्ध हैं।

- ओडिशा में पिपली का काम मंदिर परंपरा का एक अविभाज्य हिस्सा है , और इसके उत्पादन का मुख्य केंद्र भुवनेश्वर के पास एक छोटे शहर पिपली और उसके आसपास है।
- राजस्थान के जैसलमेर में बनाई जाने वाली एप्लिक रजाई को **रैली के** नाम से जाना जाता है ।
- राजस्थान में पिपली गोटा और किनारी (सोने और चांदी की धारियां) का काम भी होता है
- पंजाब में पिपली के काम को कढ़ाई के साथ जोड़ा जाता है। कपड़ों के छोटे-छोटे अलग-अलग टुकड़ों पर कढ़ाई की जाती है और फिर उन्हें बड़े कपड़े के आधार पर सिल दिया जाता है।

टाई और डाई/कपड़े की पेंटिंग	राज्य	विवरण
पागदु बंधु टाई और डाई	आंध्र प्रदेश	इसे एक इंडोनेशियाई नाम इकत से भी जाना जाता है। इस टाई-डाई प्रक्रिया में, पहले कपड़े को बुना जाता है, फिर कपड़े पर रेजिस्ट बाइंडिंग लगाई जाती है जिसे बाद में रंगा जाता है।
तेलिया रुमाल (रंगे वस्त्रों का विरोध)	चिराला, आंध्र प्रदेश	इसका शाब्दिक अर्थ है ' **तैलीया रूमाल** ' जहां कपड़े को तैलीय बनाने के लिए एलिज़ारिन रंगों का उपयोग किया जाता है।
अजरख छपाई	गुजरात	यह एक ब्लॉक-मुद्रित कपड़ा है जिसे इंडिगो और मैडर सहित प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके प्रतिरोधी रंगा जाता है। यह मुख्य रूप से कच्छ क्षेत्र में खत्री समुदाय द्वारा किया जाता है।
थिगमा – टाई प्रतिरोधी रंगाई	जम्मू और कश्मीर	ऊनी कपड़ों को रंगने के लिए प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है जैसे भूरे रंग के लिए सेब के छिलकों और प्याज के छिलकों का उपयोग किया जाता है।
पिछवाई पेंटिंग	राजस्थान	पोर्ट्रेट पेंटिंग मुख्य रूप से कपड़े या कागज पर भगवान कृष्ण की थीम पर आधारित होती है।
मुथांगी	तमिलनाडु	इस प्रकार की पोशाक मुख्य रूप से मूर्तियों के लिए बनाई जाती है।
सुंगडी	तमिलनाडु	सुंगुडी पारंपरिक टाई और डाई तकनीक है।
कानी शॉल (GI)	जम्मू और कश्मीर	यह जंगली तिब्बती और लद्दाख पहाड़ी बकरियों के पेट से एकत्रित नाजुक पश्मीना ऊन से बना है।
कोटपैड हैंडलूम फैब्रिक (GI)	ओडिशा	इसके डिज़ाइन बत्तख, हाथ का पंखा, फूल, पालकी, मछली, जानवर आदि के ज्यामितीय पैटर्न से लिए गए हैं।
टाँगलिया शॉल (GI)	गुजरात	यह एक बिंदीदार हाथ से बुना हुआ कपड़ा है।
कच्छ शॉल (GI)	गुजरात	यह शॉल मुख्य रूप से कच्छ क्षेत्र में वंकार और मेघवल समुदाय द्वारा बनाई जाती है। एक्रिलिक ऊन से बनी शॉल को आद्योपांत एक ठोस चमकीले रंग से रंगा जाता है।
कुल्लू शॉल (GI)	हिमांचल प्रदेश	मुख्य रूप से कुल्लू घाटी में उत्पादित ऊनी कपड़ा है। इस की शॉल पर मुख्य रूप से ज्यामितीय डिजाइन मिलती है।
चक्षेसांग शॉल (GI)	नागालैंड	यह शॉल कपास और बिछुआ, दक्कन जूट और देब्रेज पेड़ की छाल जैसे प्राकृतिक रेशों से बनाई जाती है। इसका नाम चक्षेसांग जनजाति के नाम पर रखा जाता है।
पारंपरिक क्षेत्रीय साड़ियाँ	**राज्य**	**विवरण**
पोचमपल्ली (GI)	आंध्र प्रदेश	जटिल रूपांकनों और रंगाई की ज्यामितीय इकत शैली के साथ रेशम और सूती साड़ी। एयर इंडिया एयरलाइंस का क्रू इस साड़ी को पहनता है।
पटोला (GI)	पाटन, गुजरात	समृद्ध हथकरघा साड़ियाँ।
बालूचारी (GI)	मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल	इसके बॉर्डर और पल्लू पर प्राचीन कहानियों को दर्शाया गया है। रेशम के धागों का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है।
तंचोई जरी का काम	वाराणसी	एक प्रकार की बनारसी साड़ी जिसमें बुनाई की तकनीक में रेशम के कपड़े पर एक या दो ताने और बाने पर दो से पांच रंग शामिल होते हैं।
चँदेरी (GI)	मध्य प्रदेश	रेशम, ज़री और कपास को एक साथ मिलाकर एक ऐसा कपड़ा बनाया जाता है जो पंख से भी हल्का होता है। यह पारदर्शी साड़ी है।
इलकल (GI)	Karnataka	आम रूपांकनों के रूप में रथ और हाथी के साथ कसुती कढ़ाई का उपयोग।
बोमकाई (GI)	ओडिशा	इकत, कढ़ाई और जटिल धागे के काम वाली रेशम और सूती साड़ी।
पैठाणी (GI)	महाराष्ट्र	रेशम की साड़ी पर सुनहरे रंग के धागे से कढ़ाई की गई है और आकृति के रूप में तोते का उपयोग किया गया है।
कलमकारी (GI)	आंध्र प्रदेश	पेंटिंग डिज़ाइन के लिए पेन का उपयोग।
उप्पादा जामदानी साड़ी (GI)	आंध्र प्रदेश	शुद्ध ज़री के साथ बेहतरीन रेशम का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है। जामदानी साड़ी एक फ़ारसी शब्दावली है, जिसमें जाम का अर्थ फूल और दानी का अर्थ फूलदान है।
वेंकटगिरी साड़ी (GI)	आंध्र प्रदेश	साड़ी को पल्लो और बॉर्डर में ज़री से सजाया गया है। जैक्वार्ड का उपयोग अतिरिक्त बाने के डिज़ाइन बुनने के लिए किया जाता है। आमतौर पर साड़ी में सॉफ्ट और पेस्टल रंगों का इस्तेमाल किया जाता है।
कोटपाड़ साड़ी (GI)	ओडिशा	सूती धागे की रंगाई में प्राकृतिक मदार का उपयोग कोटपाड उत्पादों की यूएसपी है। यह डिज़ाइन मुख्य रूप से आसपास के परिवेश जैसे बत्तख, हाथ का पंखा, फूल, पालकी, मछली, जानवर आदि से प्रेरित है।

भारत की कढ़ाई

❑ फुलकारी

- फुलकारी पंजाब क्षेत्र की एक कढ़ाई तकनीक है।
- शाब्दिक रूप से, इसका मतलब फूलों का काम है , जो एक समय में कढ़ाई के लिए शब्द के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन समय के साथ "फुलकारी" शब्द कढ़ाई वाले शॉल और सिर के स्कार्फ तक ही सीमित हो गया।

❑ जरदोजी

- जरदोजी कढ़ाई खूबसूरत धातु की कढ़ाई है , जो एक समय भारत में राजाओं और राजघरानों की पोशाक को सुशोभित करती थी।
- इसका उपयोग शाही तंबू की दीवारों, म्यान, दीवार पर लटकने वाले सामान और शाही हाथियों और घोड़ों के सामान को सजाने के लिए भी किया जाता था।
- जरदोजी कढ़ाई के काम में सोने और चांदी के धागों का उपयोग करके विस्तृत डिजाइन बनाना शामिल है। जड़े हुए मोती और कीमती पत्थर काम की भव्यता को और बढ़ाते हैं। आज, कारीगर तांबे के तार, सुनहरे या चांदी की पॉलिश और रेशम के धागे के संयोजन का उपयोग करते हैं।
- जरदोजी कढ़ाई का काम मुख्य रूप से लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, दिल्ली, आगरा, कश्मीर, मुंबई, अजमेर और चेन्नई की विशेषता है।

❑ बंजारा कढ़ाई

- आंध्र प्रदेश की लंबाडा जिप्सी जनजातियों की कढ़ाई , बंजारा दर्पण और मनके के साथ पिपली का मिश्रण है।
- चमकीले लाल, पीले, काले और सफेद रंग के कपड़े को बैंड में बिछाया जाता है और एक सफेद क्रिसक्रॉस सिलाई के साथ जोड़ा जाता है।

❑ चिकनकारी

- लखनऊ के चिकन कार्य में विभिन्न प्रकार के कपड़ों पर सफेद धागे से की गई नाजुक और सूक्ष्म कढ़ाई शामिल है।
- इसकी उत्पत्ति का श्रेय नूरजहाँ को जाता है।
- सरलता, नियमितता और टांके की एकरूपता, बहुत महीन धागों की गांठे चिकन के काम की मुख्य विशेषताएं हैं।

❑ क्रूवेल

- कश्मीर को ऊनी गलीचे के लिए जाना जाता है, जिसमें हर्षित रंगों में बड़े फूलों की कढ़ाई होती है।
- क्रूवेल कढ़ाई चेन सिलाई के समान है और आमतौर पर एक अवल (छेद बनाने के लिए एक छोटा नुकीला उपकरण) के साथ किया जाता है और ऊपर के बजाय कपड़े के नीचे से काम किया जाता है।

❑ गोटा

- जयपुर की सोने की कढ़ाई, जिसे गोटा-वर्क के रूप में जाना जाता है, अद्भुत समृद्धि के पैटर्न के साथ पिपली का एक जटिल रूप है, जिसे बारीक सोने के धागे से सूक्ष्म विवरण में तैयार किया गया है।
- सोने की ज़री के काम का प्रभाव पैदा करने के लिए कपड़े के किनारों पर समान लंबाई के चौड़े सुनहरे रिबन सिले जाते हैं।
- गोटा पद्धति का प्रयोग आमतौर पर महिलाओं की औपचारिक वेशभूषा के लिए किया जाता है।

❑ कांथा

- कांथा एक प्रकार की पैचवर्क कढ़ाई है, जो बिहार और पश्चिम बंगाल की विशिष्ट है, जिसमें जमीन पर सफेद सूती साड़ियों के अवशेष होते हैं, जबकि कढ़ाई के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले धागे पुरानी सामग्री से चुने जाते हैं।
- कपास और रेशम दोनों पर कढ़ाई किए गए पुष्प, पशु और पक्षी रूपांकन बेहद लोकप्रिय हैं।

❑ कारचोबी

- **यह राजस्थान की** उभरी हुई ज़री धात्विक धागे की कढ़ाई का एक रूप है जो कपास की गद्दी पर सपाट टांके लगाकर बनाई जाती है।
- इस तकनीक का उपयोग आमतौर पर दुल्हन और औपचारिक वेशभूषा के साथ-साथ मखमली आवरण, तम्बू के पर्दे, पर्दों और पशु गाड़ियों और मंदिर के रथों के आवरण के लिए किया जाता है।

❑ काशीदाकारी

- काशीदाकारी, जिसे आमतौर पर कश्मीरी कढ़ाई के नाम से जाना जाता है , फारसी और मुगल शासकों के संरक्षण में विकसित हुई।
- कश्मीर के सुंदर स्थानों से प्रेरित, काशीदाकारी राज्य की वनस्पतियों से बहुत आकर्षित है। काशीदाकारी की एक अनूठी विशेषता कश्मीरी चाय का बर्तन है और यह अपनी सरल चेन टांके के लिए जाना जाता है।

❑ कसूति

- यह कर्नाटक के धारवाड़ क्षेत्र की खासियत है।
- कसुति हथकरघा साड़ियों पर की जाने वाली नाजुक एकल धागे की कढ़ाई है।
- यह गवंती और मुर्गी नामक दो शैलियों में किया जाता है और इसमें साड़ी में फैले हुए मंदिरों, मोरों, हाथियों, फूलों के पेड़ों और ज्यामितीय आकृतियों से युक्त रूपांकनों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है।

❑ काठी (रबारी कला)

- गुजरात की इस ग्रामीण कला का श्रेय कच्छ क्षेत्र की खानाबदोश रबारी जनजातियों को दिया जाता है।
- यह काम एक बहुत ही असामान्य तकनीक से अलग है जिसमें चेन सिलाई कढ़ाई को पिपली के काम के साथ जोड़ा जाता है और छोटे दर्पण जैसे सम्मिलन द्वारा बढ़ाया जाता है।

- कढ़ाई वाले रूपांकन आम तौर पर ऊंट, शाही पंखे, हाथी, बिच्छू और पानी ले जाने वाली महिलाएं हैं।

❑ **पट्टी का काम**

- यह उत्तर प्रदेश के अलीगढ की उत्कृष्ट कढ़ाई का काम है।

❑ **पिछवाई**

- ये राजस्थान के नाथद्वारा की विशिष्ट रंगीन कढ़ाई वाले कपड़े-लटकन हैं।

❑ **शामिलामी**

- यह बुनाई और कढ़ाई का एक संयोजन है और एक समय यह मणिपुर में एक उच्च दर्जे का प्रतीक था।

❑ **टोडा कढ़ाई**

- टोडा कढ़ाई की उत्पत्ति तमिलनाडु में हुई है।
- टोडू समुदाय द्वारा बसाई गई नीलगिरि पहाड़ियों की अपनी शैली है जिसे पुगुर कहा जाता है, जिसका अर्थ है फूल।
- कांथा की तरह यह कढ़ाई भी महिलाओं द्वारा की जाती है।

कढ़ाई का नाम	**राज्य**	**विवरण**
कसूति (GI)	कर्नाटक	कसुति एक ही धागे से की जाती है और इसमें कपड़े पर प्रत्येक धागे की गिनती शामिल होती है। पैटर्न गांठों के बिना सिले जाते हैं, ताकि कपड़े के दोनों किनारे एक जैसे दिखें।
टोडा (GI)	तमिलनाडु की टोडा जनजातियाँ	कांथा कार्य के समान।
खटवा एप्लिक वर्क (GI)	बिहार	यह पिपली और पैचवर्क आम तौर पर दीवार पर लटकने वाले पर्दे, शामियाने, साड़ी, दुपट्टे, कुशन कवर आदि में पाया जाता है।
लम्बानी (GI)	कर्नाटक	यह महिलाओं द्वारा बनाया गया एक अनोखा सुई शिल्प है।
सोज़नी (या सुज़ानी) (GI)	जम्मू और कश्मीर	इस प्रकार की कढ़ाई को दोरुखा भी कहा जाता है। रूपांकनों को साटन सिलाई से बनाया गया है और दोनों तरफ समान रूप से काम किया गया है लेकिन रंग अलग-अलग हैं।
सुजनी (GI)	बिहार	उपयोग किया जाने वाला आधार कपड़ा आम तौर पर लाल या सफेद होता है। मुख्य रूपांकन की रूपरेखा को मोटी चेन सिलाई के साथ उजागर किया गया है।
बुनाई का नाम	**राज्य**	**विवरण**
वांगखेई फी (पारंपरिक बुनाई) (GI)	मणिपुर	इसके लिए बहुत महीन सफेद कपास का उपयोग किया जाता है। यह कपड़ा डिज़ाइन और पैटर्न के साथ पारदर्शी है।
शैफ़ी लैनफ़ी बुनाई (GI)	मणिपुर	इस पारंपरिक कपड़ा कपड़े को शॉल के रूप में बुना जाता है। इस प्रकार की शॉल बनाने में आमतौर पर मैतेई महिलाएं शामिल होती हैं।

ड्यूरी (फर्श चटाई) बुनाई	**(राज्य) से संबंधित है**
मुसल्ला गलीचा	आंध्र प्रदेश
नमदा झुकी ऊन का गलीचा	गुजरात
कालीन : नॉटेड कालीन	जम्मू और कश्मीर
ख़ाबदान : ढेर सारे कालीन	जम्मू और कश्मीर
नवलगुंड दरी	कर्नाटक
पंजा दरी	पंजाब, राजस्थान
जमकालम (भवानी दरी)	तमिलनाडु

आइवरी क्राफ्टिंग

- हाथी दांत पर नक्काशी की प्रथा भारत में **वैदिक काल** से ही प्रचलित रही है, जहां इसे 'दंता' के रूप में संदर्भित किया जाता था, जो संभवतः हाथी के दांत का प्रतीक था जो हाथी दांत का स्रोत था।
- हाल की खुदाई से पता चला है कि **हड़प्पा काल** के दौरान , हाथी दांत और हाथी दांत से बनी वस्तुएं जैसे हाथी दांत के पासे आदि भारत से अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और फारस की खाड़ी के कुछ हिस्सों में निर्यात किए जाते थे।
- आइवरी क्राफ्ट लगभग पूरे भारत में फैला हुआ है और प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्टता है। **जयपुर, बंगाल और दिल्ली के हाथी दांत के कारीगर ' अंबारी हाथी'** या जुलूस हाथी, बैलगाड़ी, सैंडल, ताबूत और पालकी के उत्कीर्ण मॉडल के लिए जाने जाते हैं।
- **ओडिशा:** पुरी के जगन्नाथ मंदिर में हाथी दांत जड़ित फर्नीचर चढ़ाने की ओडिशा शैली।
- **जोधपुर:** हाथी दांत से बनी चूड़ियाँ।
- **जयपुर:** घरों और छोटी कला वस्तुओं में उपयोग की जाने वाली जाली के काम के लिए प्रसिद्ध।
- **केरल:** हाथीदांत पर चित्रकारी में अपनी उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध।

लकड़ी के शिल्प

❑ लकड़ी पर नक्काशी

- यह लकड़ी की वस्तुओं को विविध उपयोगी और सजावटी हस्तशिल्प वस्तुओं में आकार देने और सजाने की कलात्मक प्रथा है।
- इस शिल्प के लिए उपयोग की जाने वाली लकड़ी की सबसे आम किस्में सागौन, साल, ओक, आबनूस, आम, शीशम आदि हैं।
- सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) अपनी लकड़ी की नक्काशी के लिए विश्व प्रसिद्ध है और इसे भारत के "शीशम वुड विलेज" या "वुड सिटी" के रूप में जाना जाता है।
- कश्मीर अखरोट की लकड़ी की नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है।

❑ लकड़ी जड़ना

- वुड इनले/मार्क्वेट्री लकड़ी की सतह को हाथीदांत (पारंपरिक रूप से), हड्डी, प्लास्टिक, खोल या विभिन्न रंगों की लकड़ी जैसी सामग्री के टुकड़ों में सेट करके सजाने की प्रक्रिया है।
- जड़ाऊ उत्पादों में दरवाजे, आभूषण बक्से, प्लेटें, बक्से, कटोरे, हाथियों की आकृतियाँ शामिल हैं। यह शिल्प शैली 18वीं शताब्दी में फारस से भारत लाई गई थी।
- लकड़ी की टर्निंग में खराद का उपयोग शामिल होता है जिस पर सिलेंडर गोले या शंकु बनाने के लिए लकड़ी के तेजी से घूमने वाले टुकड़े को छेनी से आकार दिया जाता है।
- इस शिल्प की सुंदरता लकड़ी की चिकनी आकृतियों को चित्रित करने में निहित है। आमतौर पर, मुड़े हुए टुकड़े को रंगीन लाह से लेपित किया जाता है।
- आंध्र प्रदेश में एटिकोप्पका लाह के बर्तनों का गृहनगर है। चेन्नापटना खिलौने एक और प्रसिद्ध लाह हैं और इन्हें GI टैग प्राप्त हुआ है।

लकड़ी के शिल्प	स्थान	विवरण
खतमबंद वुडक्राफ्ट (GI)	जम्मू और कश्मीर	लकड़ी के टुकड़ों को तीन अलग-अलग प्रकार के जोड़ों की मदद से जोड़ा जाता है जो खतमबंद की मूल तकनीक बनती है। इस प्रयुक्त डिज़ाइन की उत्पत्ति इस्लामी परंपरा के ज्यामितीय टेसेलेटिंग पैटर्न से हुई है।
संखेड़ा फर्नीचर (GI)	गुजरात	यह 100 प्रतिशत अनुभवी सागौन की लकड़ी से बना है। लकड़ी के फर्नीचर पर सोने, चांदी, मैरून, हरे, सिन्दूरी और भूरे रंग के चमकीले रंगों के साथ अमूर्त डिजाइन और पुष्प चित्र बनाए जाते हैं।
अखरोट की लकड़ी पर नक्काशी (GI)	जम्मू और कश्मीर	इस पारंपरिक नक्काशी तकनीक की विशेषता उच्च राहत और विस्तृत डिजाइनों की नक्काशी की अंडरकट शैली है। सबसे अच्छी गुणवत्ता वाली अखरोट की लकड़ी शोपियां और अनंतनाग से प्राप्त की जाती है।
पेठापुर छपाई ब्लॉक (GI)	गुजरात	इस शिल्प को प्रजापति और गज्जर परिवारों के कारीगरों द्वारा संरक्षित किया गया है। इन ब्लॉकों का उपयोग निर्माताओं द्वारा कपड़ों पर छपाई के लिए किया जाता है।
चन्नापटना खिलौने (GI)	कर्नाटक	परंपरागत रूप से हाथी दांत की लकड़ी से बनाया जाता है।
कोंडापल्ली बोम्मलु खिलौने (GI)	आंध्र प्रदेश	इसे नरम लकड़ी का उपयोग करके बनाया जाता है। लकड़ी के टुकड़े को नमी रहित बनाने के लिए गर्म किया जाता है। इसके बाद, खिलौने के अलग-अलग हिस्सों को अलग-अलग तराशा जाता है और फिर एक साथ चिपका दिया जाता है। उदाहरण – अम्बारी हाथी
किन्हल या किन्नल खिलौने (GI)	कर्नाटक	यह अद्वितीय लकड़ी शिल्प विजयनगर साम्राज्य के शाही संरक्षण में विकसित हुआ।

धातु शिल्प

विभिन्न प्रकार की **धातु ढलाई होती हैं जिन्हें लोहा, तांबा, बेल धातु आदि** में प्राप्त किया जा सकता है। उत्कीर्णन, एम्बॉसिंग और डेमस्किंग जैसी तकनीकों का उपयोग करके धातु पर अलंकरण बनाना इन शिल्पों को अद्वितीय बनाता है। डिज़ाइन को उभरे हुए रूप में उभारकर उभारने का काम या रिपॉज़ किया जाता है। किसी धातु पर रेखाएं काटकर या खरोंचकर उत्कीर्णन किया जाता है। प्रसिद्ध कृतियाँ हैं:

- **मरोड़ी:** राजस्थान का मरोड़ी काम आधार धातु पर नक्काशी बनाने और रिक्त स्थान को राल से भरने के लिए धातु का उपयोग करता है।
- **बदला बर्तन:** ये राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र के जस्ता बर्तन हैं। बैडला आमतौर पर गोल, अर्ध-गोलाकार या आयताकार होते हैं, कभी-कभी बर्फ कक्षों और नलों से सुसज्जित होते हैं।
- **नकाशी:** मुरादाबाद नकाशी शैली में की गई खुदाई या धातु उत्कीर्णन कार्य के लिए प्रसिद्ध हो गया है। वे बारिक कम नामक एक अच्छा और नाजुक काम तैयार करते हैं।
- **कोफ्तागिरी:** कोफ्तागिरी या दमिश्निंग एक गहरे रंग की धातु पर हल्की धातु जड़ने की एक और तकनीक है। तलवारें, खंजर और ढालें बनाने के लिए इसका प्रचलन अधिकतर अलवर और जयपुर में है।
- **मीनाकारी:** मीनाकारी सोने पर मीनाकारी का काम है। दिल्ली और जयपुर इसके लिए प्रसिद्ध हैं। महाराजा मान सिंह प्रथम ने राजस्थान में खूबसूरत मीनाकारी का काम शुरू किया।
- **तारकशी:** धातु या लकड़ी की सतह में बारीक पीतल या तांबे के तार को सावधानी से गढ़े हुए खांचे में बिछाने की आकर्षक तकनीक को तारकशी कहा जाता है।
- **बिदरी कार्य (बिदरीवेयर):** बिदरी कार्य जिसमें गहरे धातु की पृष्ठभूमि पर चांदी की जड़ाई का काम किया जाता है, कर्नाटक के बीदर में प्रचलित है।
- **मोहरा:** हिमाचल का एक अद्वितीय धातु शिल्प मोहरा है। किसी देवता का प्रतिनिधित्व करने वाली मोहरा या धातु की पट्टियाँ कुल्लू और चंबा में आम हैं।

❑ कांस्य शिल्प

- प्राचीन भारत में धातुओं का उपयोग कला से अधिक भाले और तीरों के लिए किया जाता था। फिर भी, धातु की ढलाई 5000 वर्षों से भी अधिक समय से शिल्प कौशल के लिए उपयोगी रही है। **सबसे पुराने कला रूपों में से एक कांस्य कार्य है, जैसा कि मोहनजो-दारो की** एक नृत्य करती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा से पता चलता है , जो लगभग 3500-3000 ईसा पूर्व की है।
- हम जानते हैं कि मनुष्य द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रारंभिक अलौह धातुएँ तांबा और टिन थीं और इन दोनों को मिश्रित करके कांस्य बनाया गया था। कांस्य ढलाई की विभिन्न विधियों के बारे में सबसे पहला साहित्यिक साक्ष्य **मत्स्य पुराण** में पाया जा सकता है। बाद के ग्रंथों, **रसरत्नाकर** में भी धातु की शुद्धता और जस्ता के आसवन का उल्लेख किया गया है।
- कांस्य शिल्प उत्पादक क्षेत्रों में, उत्तर प्रदेश को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि इसमें इटावा, सीतापुर, वाराणसी और मोरादाबाद जैसे प्रमुख केंद्र हैं। वे फूलों के बर्तन, देवी-देवताओं की तस्वीरें जैसी सजावटी वस्तुएं बनाते हैं। **वे ताम्रपत्र, कांचंतल और पंचपात्र** जैसी अनुष्ठानिक वस्तुओं के उत्पादन के लिए भी प्रसिद्ध हैं।
- दूसरा प्रमुख केंद्र तमिलनाडु है, जो पल्लव, चोल, पांडियन और नायक काल की कला रूपों से मिलती-जुलती सुंदर प्राचीन मूर्तियों के निर्माण पर केंद्रित है।
- वर्तमान में, भारत भर में पीतल के काम के महत्वपूर्ण केंद्र हैं:

गज तांडव	शिव तांडव मुद्रा में नृत्य कर रहे हैं।	केरल
दुर्लभ जैन छवियाँ और चिह्न	कर्नाटक में प्राचीन जैन तीर्थ केंद्रों की आवश्यकता को दर्शाता है।	कर्नाटक
बस्तर डोकरा (GI)	पीतल से बने आभूषणों के लिए उपयोग किया जाता है।	ओडिशा और पश्चिम बंगाल
पहलदार लैंप	विभिन्न शैलियों और आकारों में तांबे और पीतल के लैंप।	जयपुर और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से।
पेम्बर्थी शिल्प (GI)	रथों और मंदिरों को सजाने के लिए उत्तम शीट धातु (पीतल) कला।	तेलंगाना

धातु शिल्प का नाम	राज्य	विवरण
बिदरी शिल्प (GI)	कर्नाटक	हुक्का, फूलदान, झुमके, शोपीस आइटम आदि जैसी वस्तुएं बनाने के लिए जस्ता और तांबे की काली मिश्र धातु को चांदी की पतली चादरों में डाला जाता है, जिसका एक अच्छा निर्यात बाजार भी है।
अरनमुला कन्नडी (Metal Mirror) (GI)	केरल	शिल्प का एक दुर्लभ नमूना होने के कारण, यह एक हस्तनिर्मित धातु-मिश्र धातु दर्पण है, जो केरल के एक छोटे से शहर अरनमुला में बनाया गया है। दर्पण की परावर्तक सतह प्राप्त करने के लिए मिश्रधातु को कई दिनों तक पॉलिश किया जाता है। मिश्र धातु की संरचना इसमें शामिल परिवारों का एक व्यापार रहस्य है।
स्वामीमलाई कांस्य प्रतीक (GI)	तमिलनाडु	स्वामीमलाई एक पारंपरिक स्थल है जहां चोल काल से इस शिल्प का अभ्यास किया जाता रहा है। धार्मिक उद्देश्यों के लिए कांस्य और "पंचलोहा" (तांबा, पीतल, सीसा चांदी और सोना) की मूर्तियाँ बनाई जाती हैं।

भारत में अन्य प्रसिद्ध हस्तशिल्प		
हस्तशिल्प का नाम	**राज्य**	**विवरण**
पैपियर गाशे (कागज की लुगदी) (GI)	जम्मू-कश्मीर और बिहार	यह शिल्प कागज के गूदे को मोटे जाल से बनाया जाता है और इसमें कॉपर सल्फेट और चावल का आटा मिलाया जाता है और फिर वांछित आकार में ढाला जाता है।
मोलेला क्ले सिरेमिक्स (GI)	राजस्थान	यह एक प्रकार की टेराकोटा टाइलें और भित्ति चित्र हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है "पकी हुई धरती"।
थेवा कला कार्य (GI)	राजस्थान	यह नथुनी सोनेवाला का आविष्कार था। इसका उपयोग कंघी, हेयरबैंड, कोट बटन, फोटो फ्रेम और आभूषण जैसी वस्तुएं बनाने में किया जाता था।
गंजिफ़ा कार्ड (GI)	कर्नाटक (मैसूर)	यह एक कार्ड गेम है जो फारस से आया है। मुगल काल में यह बहुत लोकप्रिय था।

भारतीय मिट्टी के बर्तन

- भारतीय उपमहाद्वीप में मिट्टी के बर्तनों का एक लंबा इतिहास रहा है और यह भारतीय कला के सबसे स्पष्ट और प्रतिष्ठित भागों में से एक है। मिट्टी के बर्तनों की खोज शुरुआती लहुरादेवा कस्बों और बाद में सिंधु घाटी सभ्यता में की गई है। यह एक सांस्कृतिक कला है जो आज भी भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक रूप से प्रचलित है। भारत में, मिट्टी के बर्तन अभी भी एक लोकप्रिय कला है।

- **मेहरगढ़** के प्रारंभिक गांवों में सिंधु घाटी सभ्यता (3300 ईसा पूर्व-1500 ईसा पूर्व) के समय के मिट्टी के बर्तन पाए गए हैं।
- यह एक सांस्कृतिक कला है जो आज भी भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है। मिट्टी के बर्तन संस्कृति के अध्ययन और अतीत के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण हैं।
- मिट्टी के बर्तनों की शैली समय के साथ अलग-अलग संस्कृतियों के अनुसार विकसित हुई है। यह उन सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनमें सभ्यताएँ फली-फूलीं, पुरातत्वविदों और इतिहासकारों को हमारे इतिहास को समझने में मदद करती हैं।
- यह उन संस्कृतियों को समझने के लिए उपयोगी है जहां कोई लिपि नहीं है या जहां लिपि को अभी तक समझा नहीं जा सका है।

❑ भारत में मिट्टी के बर्तनों का विकास

- **नवपाषाण युग (10000 ईसा पूर्व)**

  - यह इस काल में मिट्टी के बर्तनों का पहला उल्लेख है। यह **हाथ से बने बर्तन** हैं , लेकिन बाद के काल में पैर के पहिये का भी इस्तेमाल किया जाने लगा।

- **ताम्रपाषाण युग (4500-2000 ईसा पूर्व)**

  - विभिन्न सिरेमिक संस्कृतियों की व्यापकता इसे अलग बनाती है।
  - काले और लाल बर्तन, लाल पर काले बर्तन, और गेरू रंग के बर्तन अन्य उदाहरण हैं।

- **सिंधु घाटी सभ्यता (3300 ईसा पूर्व- 1500 ईसा पूर्व)**

  - पॉलिश किये हुए बर्तन उस काल में प्रचलित मिट्टी के बर्तनों की परम्पराओं में से एक थे।
  - खुरदरी सतह वाले मिट्टी के बर्तन, हड़प्पा शव-पात्र, गेरू रंग के बर्तन (ओसीपी), काले-ग्रे चमकीले बर्तन, काले-पर-लाल बर्तन, ग्रे-बर्तन और चित्रित ग्रे-बर्तन सभी खुरदरी सतह वाले मिट्टी के बर्तनों के उदाहरण हैं।

- **वैदिक युग (1500- 500 ईसा पूर्व)**

  - केरल में उत्खनन से प्राप्त चित्रित ग्रे-वेयर (पीजीडब्ल्यू), उत्तरी काले पॉलिश वाले बर्तन (एनबीपीडब्ल्यू) और मेगालिथिक मिट्टी के बर्तन उस काल में विद्यमान मिट्टी के बर्तन बनाने की परम्परा के उदाहरण हैं।

- **मौर्य काल (321 ईसा पूर्व- 185 ईसा पूर्व)**

  - मिट्टी के बर्तन बनाने के पहिये का व्यापक रूप से उपयोग होने लगा।
  - मौर्य काल से जुड़े कई अलग-अलग प्रकार के मिट्टी के बर्तन हैं। हालाँकि, सबसे उन्नत तकनीक मिट्टी के बर्तनों के एक रूप में देखी जा सकती है जिसे मौर्य काल से जोड़ा जाता है।
  - उत्तरी काले पॉलिश बर्तन (एनबीपी) पूर्ववर्ती और प्रारंभिक मौर्य युग के दौरान लोकप्रिय थे।

- **कुषाण काल (पहली से चौथी शताब्दी ई.)**

  - बंगाल और उत्तर भारत में कुषाण सांस्कृतिक चरण ने चीनी मिट्टी की वस्तुओं के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात किया।
  - मुद्रांकित डिजाइन के साथ विशिष्ट लाल पॉलिश वाले बर्तन , साथ ही साथ बड़ी संख्या में फीके या मजबूत लाल बर्तन, इस चरण के बर्तनों की विशेषता है।

- **गुप्त काल (चौथी और पांचवीं शताब्दी ई.)**

  - अहिच्छत्र, राजगढ़, हस्तिनापुर और बशर में पाए गए गुप्तकालीन मिट्टी के बर्तनों के अवशेष चीनी मिट्टी की विशेषज्ञता के असाधारण साक्ष्य प्रदान करते हैं।
  - रेडवेयर इस समय अवधि का सबसे विशिष्ट प्रकार का मिट्टी का बर्तन है।

- **तुर्क-मुगल और राजपूत काल (12वीं शताब्दी ई.पू.)**

  - 13वीं शताब्दी ई. में, तुर्की राजाओं ने फारस, मध्य एशिया और विश्व के अन्य भागों से कुम्हारों को वर्तमान उत्तरी भारत में बसने के लिए प्रोत्साहित किया।
  - गुजरात और महाराष्ट्र में सल्तनत काल से फारसी मॉडल और भारतीय रूपांकनों वाले चमकीले चीनी मिट्टी के बर्तन मौजूद हैं।
  - जयपुर की आधुनिक ब्लू पॉटरी को आमतौर पर क्लासिक जयपुर कौशल माना जाता है।

मिट्टी के बर्तन संस्कृति के अध्ययन और अतीत के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण हैं। मिट्टी के बर्तनों की शैली समय के साथ अलग-अलग संस्कृतियों के अनुसार विकसित हुई है। यह उन सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनमें सभ्यता फली-फूली, पुरातत्वविदों और इतिहासकारों को हमारे इतिहास को समझने में मदद करती है।

भारतीय सिनेमा

❑ भारतीय सिनेमा का इतिहास

- लुमियर बन्धु जो सिनेमैटोग्राफ के आविष्कारक के रूप में प्रसिद्ध हैं , भारत में मोशन पिक्चर्स की अवधारणा लेकर आए। उन्होंने 1896 में बंबई में छह ध्वनि रहित लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया , जो दर्शकों का मनोरंजन करने में सफल रहीं। 1897 में एक अज्ञात फोटोग्राफर द्वारा शूट की गई पहली फिल्म का नाम कोकोनट फेयर एंड अवर इंडियन एम्पायर था।
- किसी भारतीय द्वारा पहला मोशन वेंचर हरिश्चंद्र भटवडेकर का था, जो सेव दादा के नाम से मशहूर थे। उन्होंने 1899 में दो लघु फिल्में बनाईं और उन्हें दर्शकों के सामने प्रदर्शित किया।
- 1900 के दशक में, बहुत कम भारतीय फिल्म निर्माता थे, लेकिन उनमें से उल्लेखनीय थे एफबी थानावाला , जिन्होंने टैबूट प्रोसेशन और स्प्लेंडिड न्यू व्यूज़ ऑफ बॉम्बे बनाई। उनके अलावा हीरालाल सेन 1903 में बनी अपनी तस्वीर इंडियन लाइफ एंड सीन्स के लिए काफी मशहूर थे।
- धीरे-धीरे, इन चित्रों का बाज़ार बढ़ता गया और चूँकि ये अस्थायी प्रदर्शनियाँ थीं, इसलिए एक सिनेमा घर की तत्काल आवश्यकता पैदा हो गई। इस आवश्यकता को मेजर वारविक ने पूरा किया, जिन्होंने 1900 में मद्रास (अब चेन्नई) में पहला सिनेमा घर स्थापित किया।
- बाद में एक धनी भारतीय व्यवसायी, जमशेदजी मदान ने 1907 में कलकत्ता (अब कोलकाता) में एलफिंस्टन पिक्चर हाउस की स्थापना की। उभरते भारतीय बाजार में मुनाफे को देखते हुए, यूनिवर्सल स्टूडियो ने 1916 में भारत में पहली हॉलीवुड आधारित एजेंसी की स्थापना की।

❑ मूक फ़िल्मों का युग(1910 से 1920)

- यह फ़िल्में पूरी तरह से मूक नहीं थीं और संगीत और नृत्य के साथ थीं। यहां तक कि जब उन्हें सिनेमाघरों में प्रदर्शित किया जा रहा था, तब भी उनके साथ सारंगी, तबला, हारमोनियम और वायलिन जैसे जीवंत संगीत वाद्ययंत्र बज रहे थे।
- मूक फिल्म बनाने के लिए पहला भारत-ब्रिटिश सहयोग 1912 में **एनजी चित्रे** और **आरजी टोर्नी** द्वारा किया गया था। उनकी फिल्म का नाम पुंडलिक था।
- **दादा साहब फाल्के** , जिन्होंने 1913 में **राजा हरिश्चंद्र** नामक फिल्म का निर्माण किया, ने पहली स्वदेशी भारतीय मूक फिल्म बनाई। उन्हें भारतीय सिनेमा के पितामह के रूप में जाना जाता है और उन्हें मोहिनी भस्मासुर और सत्यवान सावित्री जैसी फिल्मों का श्रेय दिया जाता है। उन्हें 1917 में लंका दहन नामक पहली बॉक्स ऑफिस हिट बनाने का श्रेय भी दिया जाता है।
- 1918 में दो फिल्म कंपनियों, यानी कोहिनूर फिल्म कंपनी और दादा साहब फाल्के की हिंदुस्तान सिनेमा फिल्म्स कंपनी, के खुलने से फिल्म निर्माण की प्रक्रिया को गति मिली। जब फ़िल्में अच्छी खासी कमाई करने लगीं, तो सरकार ने 1922 में कलकत्ता में और अगले वर्ष बंबई में 'मनोरंजन कर' लगा दिया। फिल्म कंपनियों ने **बाबूराव पेंटर, सुचेत सिंह** और **वी. शांताराम** जैसे कई फिल्म निर्माताओं को मौका दिया।
- कुछ लेखकों और निर्देशकों ने भी सामाजिक मुद्दों को उठाया जैसे वी. शांताराम जिन्होंने महिलाओं की मुक्ति के बारे में एक फिल्म अमर ज्योति बनाई। इस अवधि के दौरान बहुत कम उल्लेखनीय महिला फिल्म निर्माता थीं।
- **फातमा बेगम** पहली भारतीय महिला थीं जिन्होंने 1926 में बुलबुल-ए-परिस्तान नाम से अपनी खुद की फिल्म का निर्माण और निर्देशन किया था।
- सेंसरशिप को लेकर पहला फिल्म विवाद भक्त विदुर फिल्म को लेकर था , जिसे 1921 में मद्रास में प्रतिबंधित कर दिया गया था।

❑ अमूक (बोलती) और रंगीन फ़िल्मों का युग

- पहली बोलती फिल्म **आलम आरा थी,** जिसे 1931 में **अर्देशिर ईरानी** ने निर्देशित किया था। इस फिल्म में डब्लूएम खान के कुछ यादगार गाने थे , जो भारत के पहले गायक थे और उनका गाना दे दे खुदा के नाम पर भारतीय सिनेमाई इतिहास का पहला रिकॉर्ड किया गया गाना था।
- 1930 के दशक के अंत में बॉम्बे टॉकीज़, न्यू थिएटर्स और प्रभात जैसे कई बड़े बैनर उभरे और वे स्टूडियो सिस्टम के आगमन के लिए भी जिम्मेदार थे।
- 1935 में स्टूडियो प्रणाली का उपयोग करने वाली पहली फिल्म पीसी बरुआ की देवदास थी। प्रोडक्शन हाउस ने फिल्मों की सामग्री और निर्माण शैलियों के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया।
- इस प्रयोग के परिणामस्वरूप 1933 में प्रभात द्वारा बनाई गई सैरंध्री जैसी रंगीन फ़िल्में आईं , जो पहली भारतीय रंगीन फ़िल्म है, लेकिन इसे जर्मनी में संसाधित और मुद्रित किया गया था। किसान कन्या जैसी फ़िल्में पहली स्वदेशी रूप से निर्मित रंगीन फ़िल्म होने के कारण उल्लेख के योग्य हैं और इसका निर्माण **अर्देशिर ईरानी** ने किया था।

Note :-

- पहली बोलती फिल्म **आलम आरा** का निर्माण 1931 में इंपीरियल फिल्म कंपनी द्वारा किया गया था और इसका निर्देशन **अर्देशिर ईरानी** ने किया था।
- भारत की पहली स्वदेशी फीचर फिल्म **राजा हरिचंद्र** (1913) के निर्माता दादा साहब फाल्के को भारतीय सिनेमा का जनक माना जाता है।
- भारत की पहली सिनेमास्कोप फिल्म कागज का फूल (1959) गुरु दत्त की है।
- भारतीय फिल्म जगत का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार दादा साहेब फाल्के पुरस्कार है।
- दादा साहेब पुरस्कार की पहली विजेता देविका रानी रोरर्च (1969) थीं। उन्हें लेडी ऑफ इंडियन फिल्म के नाम से जाना जाता है।
- स्वर्ण कमल भारत सरकार द्वारा वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म को दिये जाने वाले पुरस्कार का नाम है।

- जीवी अय्यर द्वारा निर्देशित आदि शंकरा भारत की पहली संस्कृत फिल्म है।
- पद्मश्री पुरस्कार जीतने वाली भारतीय सिनेमा की पहली अभिनेत्री नरगिस दत्त थीं।
- शिवाजी गणेशन फ्रांसीसी सरकार द्वारा स्थापित शेवेलियर पुरस्कार जीतने वाले पहले भारतीय थे।
- एमजी रामचन्द्रन किसी भारतीय राज्य के मुख्यमंत्री बनने वाले पहले फिल्म स्टार थे।
- भारत का पहला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 1952 में आयोजित किया गया था।
- पहली भारतीय 3-डी पिक्चर मलयालम सिनेमा **माई डियर कुट्टीचथन** है।

❑ **युद्ध रंजित 1940 का दशक**

- चालीस का दशक भारतीय राजनीति में उथल-पुथल का दौर था और उस दौर में बनी फिल्मों में इसकी झलक देखने को मिली।
- धरती के लाल, दो आंखें बारह हाथ आदि फिल्मों में आजादी का जोश दिखाया गया।
- दुखद प्रेम कहानियों और काल्पनिक ऐतिहासिक कहानियों जैसे **चंद्रलेखा, लैला मजनू, सिकंदर, चित्रलेखा आदि** पर कई फिल्में बनाई गईं।
- भले ही भारत आजादी के बाद की परेशानियों से जूझ रहा था, लेकिन फिल्म उद्योग तेजी से बढ़ रहा था।

❑ **नये युग का उदय – 1950 का दशक**

- भारतीय सिनेमा 1950 के दशक में केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की स्थापना के साथ अस्तित्व में आया , जिसकी स्थापना बड़ी संख्या में फिल्मों की सामग्री को विनियमित करने के लिए की गई थी, जो उत्तर और दक्षिण भारत में बनाई जा रही थीं।
- **इस अवधि में 'फिल्मी सितारों** ' का उदय हुआ जो घरेलू नाम बन गए और अभूतपूर्व स्तर की प्रसिद्धि हासिल की। हिंदी सिनेमा की ' त्रिमूर्ति'- **दिलीप कुमार, देव आनंद और राज कपूर** , इसी अवधि के दौरान उभरे।
- पहली तकनीकी रंगीन फिल्म 1953 में **सोहराब मोदी** द्वारा बनाई गई थी, जिसका नाम था **झाँसी की रानी।**
- यही वह दौर था जब अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों ने एक गंतव्य के रूप में भारत की ओर रुख किया। भारत का पहला **अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (IFFI)** 1952 में बॉम्बे में आयोजित किया गया था। इससे अधिक भारतीय फिल्मों के लिए विदेशों में पहचान हासिल करने के दरवाजे भी खुल गए।
- **बिमल रॉय की दो बीघा ज़मीन कान्स** फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय फिल्म थी।
- कान्स पुरस्कार जीतने वाली एक और प्रसिद्ध फिल्म **सत्यजीत रे की पाथेर पांचाली थी।**
- **मदर इंडिया को 1957 में ऑस्कर पुरस्कार** के लिए सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म श्रेणी में नामांकित किया गया था।
- अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य से प्रेरणा लेते हुए, भारत सरकार ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की स्थापना की, जो सबसे पहले **श्यामची आई नामक फीचर** फिल्म को दिया गया था।
- सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार **जगत मुरारी** द्वारा निर्मित **महाबलीपुरम** को दिया गया।
- राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली फिल्म **1954 में सोहराब मोदी** द्वारा बनाई गई थी, जिसका नाम **मिर्ज़ा ग़ालिब** था।

❑ **स्वर्ण युग – 1960 का दशक**

- 1960 के दशक में संगीत **उद्योग फिल्म बिरादरी का एक अभिन्न अंग बन गया** । कई फिल्मों ने संगीत को अपने अद्वितीय विक्रय बिंदु (यूएसपी) के रूप में उपयोग करना शुरू कर दिया।
- इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं **राज कपूर** अभिनीत **'जिस देश में गंगा बहती है',** देव आनंद की 'गाइड', यश चोपड़ा की 'वक्त ' आदि। इस अवधि में 1962 और 1965 के दो युद्ध भी हुए, जो कई राष्ट्रवादी फिल्मों का विषय बने। इस शैली में उल्लेखनीय थीं **चेतन आनंद की हकीकत, शक्ति सामंत की राजेश खन्ना अभिनीत आराधना और राज कपूर अभिनीत संगम।** इन सभी फिल्मों ने कल्ट स्टेटस हासिल किया।
- फिल्म उद्योग की सुदृढ़ स्थापना के साथ, जटिल फिल्म प्रक्रिया में शामिल विभिन्न लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए एक संस्था की आवश्यकता थी।
- इसने सरकार को **1960 में पुणे में भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान की** स्थापना के लिए प्रेरित किया । इस संस्थान ने लेखकों, निर्देशकों और अभिनेताओं को उनकी कला में प्रशिक्षित किया।
- 1969 में भारतीय सिनेमा और थिएटर के पुरोधा **दादा साहब फाल्के का** निधन हो गया और उनके सम्मान में लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए दादा साहब फाल्के पुरस्कार की स्थापना की गई।

❑ **बदलते भारतीय सिनेमा में महिलाओं की भूमिका**

- फिल्मों में दिखाई जाने वाली महिलाओं की छवि में बदलते समय के साथ बदलाव आया है। मूक फिल्मों के दौर में निर्देशकों का ध्यान महिला के जीवन पर लगे प्रतिबंधों पर केंद्रित था।
- 1920-40 की अवधि के दौरान, वी. शांताराम, धीरेन गांगुली और बाबूराव पेंटर जैसे अधिकांश निर्देशकों ने ऐसी फिल्में बनाईं जो महिला मुक्ति के मुद्दों जैसे बाल विवाह पर प्रतिबंध, सती प्रथा का उन्मूलन आदि को छूती थीं।
- धीरे-धीरे सिनेमाई दृष्टिकोण बदला और उन्होंने विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा और कार्यक्षेत्र में महिलाओं को समानता के अधिकार का भी समर्थन किया।
- 1960-80 के दौरान स्त्री के प्रति सिनेमाई दृष्टिकोण बेहद रूढ़िवादी था। नायिका या 'आदर्श महिला' को दिखाते समय, उन्होंने महिलाओं के बीच मातृत्व, निष्ठा और अपने परिवार के लिए बेतुके बलिदान देने का महिमामंडन किया।
- यह केवल समानांतर सिनेमा में ही है कि महिला मुक्ति को आगे बढ़ाने की तीव्र आवश्यकता वाले फिल्म निर्माताओं ने हमें एक भारतीय महिला का जीवन दिखाया है। इस शैली के उल्लेखनीय निर्देशक सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, गुरु दत्त, श्याम बंगाल आदि हैं।
- सिनेमा का वर्तमान युग भी एक 'आधुनिक' महिला की छवि के साथ प्रयोग कर रहा है जो आजीविका के लिए काम करती है, उसके पास एक बच्चा है और संतुलन के लिए एक करियर है और अभी भी अपना खुद का पैर जमाने की कोशिश कर रही है।

❑ **दक्षिण भारतीय सिनेमा**

- दक्षिण भारत के सिनेमा का उपयोग दक्षिण भारत के पांच फिल्म उद्योगों- तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और तुलु (तटीय कर्नाटक) फिल्म उद्योगों को एक इकाई के रूप में सामूहिक रूप से संदर्भित करने के लिए किया जा सकता है।
- इनमें तेलुगु और तमिल फिल्म उद्योग सबसे बड़े हैं। तेलुगु सिनेमा ने पौराणिक विषयों पर आधारित कई फिल्मों का निर्माण किया। आंध्र प्रदेश में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कहानियाँ बहुत लोकप्रिय हैं।
- एन.टी.रामा राव मुख्य रूप से कृष्ण, राम, शिव, अर्जुन और भीम के चरित्रों के चित्रण से प्रसिद्ध थे।
- कन्नड़ और तमिल फिल्मों में भी पौराणिक कहानियों का चित्रण किया जाता है। हालाँकि, सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर आधारित फ़िल्में दक्षिण भारतीय सिनेमा का एक प्रमुख घटक हैं।
- इसमें शामिल कथानक : भ्रष्टाचार, असममित सत्ता संरचनाएं, प्रचलित सामाजिक संरचनाएं और इसकी समस्याएं जैसे बेरोजगारी, दहेज, पुनर्विवाह, महिलाओं पर हिंसा आदि ने इन समस्याओं को कोठरी से बाहर लाया और लोगों को अपने विचारों पर फिर से विचार करने के लिए चुनौती दी।
- उल्लेखनीय महानायकों की उदाहरणात्मक सूची में एम.जी.रामचंद्रन, एन.टी. शामिल हैं।
- **उल्लेखनीय दक्षिण भारतीय अभिनेत्रियों** में सावित्री, जयासुधा, लक्ष्मी, सुहासिनी, श्रीदेवी आदि शामिल हैं।

❑ **भारतीय चलचित्र अधिनियम, 1952**

- भारत सरकार ने फिल्मों को प्रमाणित करने के लिए भारतीय सिनेमैटोग्राफ अधिनियम, 1952 की स्थापना की। अधिनियम का प्रमुख कार्य केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी), या 'भारतीय सेंसर बोर्ड' के संविधान और कामकाज को बेहतर बनाना था।
- अधिनियम में सेंसर बोर्ड के एक अध्यक्ष की नियुक्ति और केंद्र सरकार द्वारा अध्यक्ष को उसके कामकाज में मदद करने के लिए लोगों की एक टीम की नियुक्ति का प्रावधान है।
- बोर्ड को फिल्म की जांच करनी होगी और यह तय करना होगा कि क्या फिल्म को किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र, आयु समूह, धार्मिक संप्रदाय या राजनीतिक समूह के अपराध के आधार पर प्रदर्शित नहीं किया जाना चाहिए।

श्रेणी	प्रमाणीकरण
यू (U)	सार्वभौमिक प्रदर्शनी. फ़िल्में अप्रतिबंधित सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए उपयुक्त मानी गईं।
ए (A)	केवल वयस्क दर्शकों तक ही सीमित।
यूए (U/A)	12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए माता-पिता के मार्गदर्शन के अधीन अप्रतिबंधित सार्वजनिक प्रदर्शनी।
एस (S)	सार्वजनिक प्रदर्शनी डॉक्टरों, इंजीनियरों आदि जैसे विशिष्ट दर्शकों तक सीमित है।

❑ **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड (एनएफडीसी)**

- राष्ट्रीय **फिल्म विकास निगम लिमिटेड की स्थापना 1975 में की गई थी।**
- **इसका गठन भारत सरकार द्वारा भारतीय फिल्म उद्योग के संगठित, कुशल और एकीकृत विकास की योजना बनाने और** उसे बढ़ावा देने के प्राथमिक उद्देश्य से किया गया था।
- एनएफडीसी को वर्ष 1980 में फिल्म फाइनेंस कॉरपोरेशन (एफएफसी) और इंडियन मोशन पिक्चर एक्सपोर्ट कॉरपोरेशन (आईएमपीईसी) को एनएफडीसी के साथ विलय करके पुन: निगमित किया गया था।

❑ **फिल्म समारोह निदेशालय**

- **अच्छे सिनेमा को बढ़ावा देने** के मुख्य उद्देश्य से **1973 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के तहत** फिल्म समारोह निदेशालय की स्थापना की गई थी।
- फिल्म महोत्सव निदेशालय की गतिविधियों में शामिल हैं

(ए) भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव

(बी) राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और दादा साहब फाल्के पुरस्कार

(सी) सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और विदेश में मिशन के माध्यम से भारतीय फिल्मों की स्क्रीनिंग का आयोजन।

(डी) भारतीय पैनोरमा का चयन।

(ई) विदेश में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भागीदारी।

(एफ) भारत सरकार की ओर से विशेष फिल्म प्रदर्शनी

(छ) प्रिंट संग्रह और दस्तावेज़ीकरण। ये गतिविधियाँ सिनेमा के क्षेत्र में भारत और अन्य देशों के बीच विचारों, संस्कृति और अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करती हैं।

❑ **भारत का राष्ट्रीय फिल्म पुरालेख**

- भारतीय राष्ट्रीय फिल्म पुरालेख की **स्थापना फरवरी 1964 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के तहत एक स्वतंत्र मीडिया इकाई के रूप में** निम्नलिखित लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ की गई थी।
- राष्ट्रीय सिनेमा की विरासत का पता लगाना, प्राप्त करना और भविष्य के लिए संरक्षित करना और विश्व सिनेमा का एक प्रतिनिधि संग्रह तैयार करना।
- फिल्म से संबंधित डेटा को वर्गीकृत और दस्तावेजीकरण करना, सिनेमा पर शोध को प्रोत्साहित करना और उन्हें प्रकाशित और वितरित करना; और
- देश में फिल्म संस्कृति के प्रसार के लिए एक केंद्र के रूप में कार्य करना और विदेशों में भारतीय सिनेमा की सांस्कृतिक उपस्थिति सुनिश्चित करना।

❑ **चिल्ड्रन फिल्म सोसाइटी, भारत (सीएफएसआई)**

भारत में मार्शल आर्ट (युद्ध कला)

- मार्शल आर्ट युद्ध प्रथाओं की संहिताबद्ध प्रणालियाँ और परंपराएँ हैं , जिनका अभ्यास कई कारणों से किया जाता है – आत्मरक्षा, प्रतिस्पर्धा, शारीरिक स्वास्थ्य और फिटनेस, मनोरंजन, साथ ही मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास।
- मार्शल आर्ट का शाब्दिक अर्थ है 'युद्ध छेड़ने से जुड़ी कलाएँ'। देश में मार्शल आर्ट की कई विधाएं नृत्य, योग और प्रदर्शन कलाओं से निकटता से जुड़ी हुई हैं।
- भारत, विविध संस्कृति और जातियों की भूमि, प्राचीन काल से विकसित अपनी विविध प्रकार की मार्शल आर्ट के लिए जाना जाता है। पहले युद्ध के लिए उपयोग किए जाने वाले इन कला रूपों का उपयोग आज आम तौर पर प्रदर्शन के लिए, अनुष्ठान के एक भाग के रूप में , शारीरिक फिटनेस प्राप्त करने या आत्मरक्षा के साधन के रूप में किया जाता है।
- ब्रिटिश शासन के दौरान कलारीपयट्टु और सिलंबम सहित कुछ कला रूपों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था , लेकिन स्वतंत्रता के बाद वे फिर से सामने आए और लोकप्रियता हासिल की।

भारत के प्रमुख मार्शल आर्ट

❑ कलारीपयट्टू

- कलारीपयट्टू एक मार्शल आर्ट है जिसकी उत्पत्ति 13वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान केरल में एक शैली के रूप में हुई थी। यह भारत के केरल का एक प्राचीन पारंपरिक मार्शल आर्ट रूप है।
- कलारी शब्द पहली बार संगम साहित्य में युद्धक्षेत्र का वर्णन करने के लिए आता है।
- कलारी, एक मलयालम शब्द, एक विशिष्ट प्रकार के स्कूल/व्यायामशाला/प्रशिक्षण हॉल को संदर्भित करता है जहां मार्शल आर्ट सिखाया जाता है।
- कलारी टैट शब्द एक मार्शल करतब को दर्शाता है , जबकि कलारी कोझाई का मतलब युद्ध में कायर होता है
- इसे अस्तित्व में सबसे पुरानी युद्ध प्रणालियों में से एक माना जाता है।
- यह अब केरल, तमिलनाडु के निकटवर्ती भागों में प्रचलित है।

- यह मूल रूप से केरल के उत्तरी और मध्य भागों और कर्नाटक के तुलुनाडु क्षेत्र में प्रचलित था।
- कराटे, कुंगफू जैसे सभी मार्शल आर्ट रूपों का आधार मूल रूप से कलारीपयट्टू से विकसित हुआ था।
- इस कला रूप में नकली द्वंद्व (सशस्त्र और निहत्थे युद्ध) और शारीरिक व्यायाम शामिल हैं।
- किसी ढोल या गाने के साथ नहीं , सबसे महत्वपूर्ण पहलू लड़ाई की शैली है।
- कलारीपयट्टू की सबसे महत्वपूर्ण कुंजी फुटवर्क है; इसमें किक, स्ट्राइक और हथियार आधारित अभ्यास भी शामिल है। महिलाएं भी इस कला का अभ्यास करती हैं।
- कलारीपयट्टू अभी भी पारंपरिक अनुष्ठानों और समारोहों में निहित है।

❑ सिलंबम

- सिलंबम, एक प्रकार की स्टाफ़ बाड़ लगाना , तमिलनाडु की एक आधुनिक और वैज्ञानिक मार्शल आर्ट है।
- "सिलमबल" एक शब्द है जिसका उपयोग आम तौर पर तेजी से बहने वाले झरने, पत्तियों की बड़बड़ाहट, पक्षियों की चहचहाहट आदि से उत्पन्न ध्वनि को दर्शाने के लिए किया जाता है।
- भगवान मुरुगा (भगवान शिव के पुत्र, जिन्हें कार्तिकेय के नाम से भी जाना जाता है) और ऋषि अगस्त्य ने इस मार्शल आर्ट शैली का निर्माण किया।

- पांड्यों, चोलों और चेरों ने अपने शासनकाल के दौरान इसे बढ़ावा दिया। विदेशी व्यापारियों को सिलंबम की छड़ें, मोती, तलवारें और कवच की बिक्री का संदर्भ तमिल साहित्य सिलप्पदिकारम में पाया जा सकता है।
- ऐसा माना जाता है कि यह कला अपने मूल राज्य से मलेशिया पहुंची , जहां यह आत्मरक्षा का एक साधन होने के अलावा एक प्रसिद्ध खेल है।
- लंबे डंडों का उपयोग नकली लड़ाई और आत्मरक्षा दोनों के लिए किया जाता था।
- सिलंबम का अभ्यास मूल रूप से बांस की छड़ियों से और बाद में स्टील की तलवारों और ढालों से किया जाता था।
- सिलंबम में विभिन्न प्रकार की तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिनमें पैर की तेज गति, दोनों हाथों का इस्तेमाल कर छड़ी चलाना, जोर लगाना, काटना और स्वीप करना शामिल है।
- खिलाड़ी को साँप के प्रहार, बंदर के प्रहार, बाज़ के प्रहार जैसे स्ट्रोक का उपयोग करके एक बेकाबू भीड़ को तितर-बितर करने और उनके द्वारा फेंके गए पत्थरों को भी हटाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

❑ थांग-ता और सरित सरक

- भारत की लोकप्रिय मार्शल आर्ट थांग-ता की उत्पत्ति मणिपुर से हुई है।
- मणिपुर के मैतेई लोगों द्वारा निर्मित , थांग-ता एक सशस्त्र मार्शल आर्ट है जिसका उल्लेख सबसे घातक युद्ध रूपों में से एक के रूप में किया जाता है।

- दूसरी ओर, सरित सारक एक निहत्था कला रूप है जो हाथ से हाथ की लड़ाई का उपयोग करता है।
- उनका इतिहास 17वीं शताब्दी में खोजा जा सकता है जब मणिपुरी राजाओं द्वारा अंग्रेजों से लड़ने के लिए इसका सफलतापूर्वक उपयोग किया गया था। अंग्रेजों द्वारा इस क्षेत्र पर कब्ज़ा करने के बाद इन कला रूपों पर प्रतिबंध लग गया, हालाँकि आज़ादी के बाद इसका पुनरुत्थान हुआ।
- थांग एक 'तलवार' को संदर्भित करता है, जबकि ता एक 'भाले' को संदर्भित करता है , इस प्रकार तलवार और भाला थांग-ता के दो मुख्य तत्व हैं।
- दो घटकों थांग-ता **और सरित साराक को एक साथ हुयेन लैंगलोन कहा जाता है**।

❑ चेइबी गद-गा

- मणिपुर की सबसे प्राचीन मार्शल आर्ट में से एक , चेइबी गाड-गा में तलवार और ढाल का उपयोग करके लड़ना शामिल है।
- अब इसे तलवार और चमड़े की ढाल के स्थान पर मुलायम चमड़े से बनी छड़ी में बदल दिया गया है।
- प्रतियोगिता एक सपाट सतह पर 7 मीटर व्यास के घेरे में होती है।
- इस प्रतियोगिता में जीत द्वंद्वयुद्ध के दौरान अर्जित अंकों के अनुसार हासिल की जाती है। अंक **कौशल और पाशविक बल के आधार पर दिए जाते हैं**।

❑ परी-खंडा

- परी-खंडा, राजपूतों द्वारा निर्मित, बिहार की मार्शल आर्ट का एक रूप है।
- इसमें तलवार और ढाल का उपयोग करके लड़ना शामिल है।
- इस मार्शल आर्ट का नाम दो शब्दों से मिलकर बना है, ' परी' का अर्थ है ढाल जबकि ' खंडा' का अर्थ तलवार है , इसलिए इस कला में तलवार और ढाल दोनों का उपयोग किया जाता है।

❑ थोडा

- हिमाचल प्रदेश से उत्पन्न , थोडा मार्शल आर्ट, खेल और संस्कृति का मिश्रण है।
- यह हर साल अप्रैल में बैसाखी त्योहार के दौरान होता है। प्रमुख देवताओं, देवी माशू और दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कई सामुदायिक प्रार्थनाएँ की जाती हैं।
- थोडा का इतिहास महाभारत काल का माना जा सकता है, वह समय जब कुल्लू और मनाली की घाटियों में महाकाव्य युद्ध में धनुष और तीर का उपयोग किया जाता था।
- खेल में, लगभग 500 लोगों के दो समूह होते हैं। इनमें से अधिकांश तीरंदाज नहीं बल्कि नर्तक हैं जो अपनी-अपनी टीमों का मनोबल बढ़ाने के लिए आते हैं।
- खेल को एक चिन्हित कोर्ट में खेला जाता है ताकि कुछ हद तक अनुशासन सुनिश्चित किया जा सके। दोनों टीमों को पाशी और साथी कहा जाता है , जिन्हें महाभारत के पांडवों और कौरवों के वंशज माना जाता है।
- तीरंदाज घुटने के नीचे, पैर पर निशाना साधते हैं, क्योंकि शरीर के किसी अन्य हिस्से पर प्रहार करने के लिए नकारात्मक बिंदु होते हैं।

❑ गटका

- गतका एक हथियार आधारित मार्शल आर्ट है , जो पंजाब के सिखों द्वारा किया जाता है।
- 'गतका' नाम उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसकी स्वतंत्रता अनुग्रह से संबंधित है।
- गतका में लाठी, कृपाण, तलवार और कटार सहित हथियारों का कुशल उपयोग होता है।
- इस कला में आक्रमण और बचाव **हाथों और पैरों की विभिन्न स्थितियों** और इस्तेमाल किए गए **हथियार की प्रकृति से निर्धारित होता है।**
- इसे राज्य में मेलों सहित कई समारोहों में प्रदर्शित किया जाता है।

❑ मर्दानी खेल

- यह एक पारंपरिक महाराष्ट्रीयन सशस्त्र मार्शल आर्ट है, जो कोल्हापुर जिले में व्यापक रूप से प्रचलित है।
- मर्दानी खेल मुख्य रूप से हथियार कौशल , विशेष रूप से तलवार, तेज़ चाल और कम रुख के उपयोग पर केंद्रित है जो इसके मूल स्थान, पहाड़ी श्रृंखलाओं के लिए उपयुक्त है।
- यह अद्वितीय भारतीय पट्टा (तलवार) और वीटा (रस्सीदार भाला) के उपयोग के लिए जाना जाता है।

❑ लाठी (लाठी खेला)

- लाठी देश का एक प्राचीन सशस्त्र मार्शल आर्ट रूप है, लाठी मार्शल आर्ट में इस्तेमाल होने वाले दुनिया के सबसे पुराने हथियारों में से एक है।
- लाठी का तात्पर्य 'छड़ी ' (आमतौर पर बेंत की छड़ें) से है, जो आम तौर पर 6 से 8 फीट लंबी होती है और कभी-कभी धातु की नोक वाली होती है।
- भारतीय पुलिस को भीड़ को नियंत्रित करने के लिए ऐसी लाठियों का इस्तेमाल करते हुए देखा जा सकता है।
- यह मुख्य रूप से पंजाब और बंगाल में प्रचलित है , फिर भी यह गांवों में लोकप्रिय खेलों में से एक है।

❑ इन्बुआन कुश्ती

- मिजोरम की एक मूल मार्शल आर्ट , इनबुआन कुश्ती की उत्पत्ति 1750 ईस्वी में मानी जाती है।
- बर्मा से लुशाई हिल्स में "मिज़ो" लोगों के प्रवास के बाद इसे एक खेल के रूप में मान्यता दी गई ।
- इसमें बहुत सख्त नियम हैं जो घेरे से बाहर निकलने , लात मारने और घुटने मोड़ने पर रोक लगाते हैं।
- इसे जीतने का तरीका नियमों का सख्ती से पालन करते हुए प्रतिद्वंद्वी को खड़ा करना है।
- इसमें पहलवानों द्वारा बेल्ट (अपनी कमर के चारों ओर पहनी जाने वाली) को पकड़ना भी शामिल है।

❑ कुट्टू वरिसाई (खाली हाथ सिलंबम)

- पहली बार संगम साहित्य (पहली या दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) में उल्लेख किया गया है, कुट्टू वरिसाई का अनुवाद ' खाली हाथ युद्ध' है।
- कुट्टू वरिसाई मुख्य रूप से तमिलनाडु में प्रचलित है , हालांकि यह श्रीलंका और मलेशिया के उत्तर-पूर्वी हिस्से में काफी लोकप्रिय है।
- एक निहत्थे द्रविड़ मार्शल आर्ट, इसका उपयोग स्टार्चिंग, योग, जिमनास्टिक और श्वास अभ्यास के माध्यम से एथलेटिकिज्म और फुटवर्क को आगे बढ़ाने के लिए किया जाता है।
- इस कला में उपयोग की जाने वाली प्रमुख तकनीकों में हाथापाई, प्रहार करना और ताला लगाना शामिल हैं। इसमें साँप, चील, बाघ, हाथी और बंदर सहित पशु आधारित सेटों का भी उपयोग किया जाता है।
- इसे सिलंबम का एक निहत्था घटक माना जाता है।

❑ मुष्टि युद्ध

- सबसे पुराने शहर वाराणसी में उत्पन्न , मुस्टी युद्ध मुक्केबाजी से मिलता -जुलता एक निहत्था मार्शल आर्ट रूप है।
- इसमें किक, घूंसे, घुटने और कोहनी से प्रहार जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। हालाँकि अब यह बहुत कम दिखाई देती है, लेकिन 1960 के दशक के दौरान यह काफी लोकप्रिय कला थी।
- मुस्ति युद्ध में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों पहलुओं का विकास शामिल था।
- इस कला में लड़ाइयों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है और उन हिंदू देवताओं के अनुसार नाम दिए गए हैं जो उस विशेष प्रकार की कला में उत्कृष्ट हैं। पहले को जम्बुवंती कहा जाता है जिसका अर्थ है प्रतिद्वंद्वी को लॉकिंग और होल्डिंग के माध्यम से अधीन होने के लिए मजबूर करना। दूसरा है हनुमंती , जो तकनीकी श्रेष्ठता के लिए है। तीसरा भीमसेनी को संदर्भित करता है, जो सरासर ताकत पर ध्यान केंद्रित करता है जबकि अंतिम को जरासंधि कहा जाता है जो अंग और जोड़ तोड़ने पर ध्यान केंद्रित करता है।

❑ काठी सामु

- काथी सामू प्राचीन मार्शल आर्ट में से एक है जिसकी उत्पत्ति आंध्र प्रदेश में हुई थी , और शाही सेनाओं द्वारा इसका अभ्यास किया जाता है।

- काथी का अर्थ है तलवार, और काथी सामू एक मार्शल आर्ट है जिसमें तलवारों से लड़ना शामिल है।
- इस प्रतिष्ठित मार्शल आर्ट में विभिन्न प्रकार की तलवारों का उपयोग किया जाता है।
- जिस स्थान पर काथी सामू का प्रदर्शन किया जाता है उसे 'गारिडी' के नाम से जाना जाता है।
- कोठी सामू में, 'वैरी' के नाम से जानी जाने वाली छड़ी की लड़ाई वास्तविक तलवार की लड़ाई के अग्रदूत के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- तलवार कौशल के अन्य आवश्यक घटकों में 'गरेजा ' शामिल है, जिसमें एक व्यक्ति चार तलवारें रखता है, प्रत्येक हाथ में दो।
- ऐतिहासिक रूप से, इस तकनीक को विजयनगरम और कर्वेतिनगरम साम्राज्य द्वारा संरक्षण दिया गया था।

❑ **स्कवे (कश्मीर)**

- स्क्वे एक मार्शल आर्ट है जो कश्मीर से संबंधित है।
- यह एक प्रकार की तलवारबाजी है।
- सशस्त्र दस्ते द्वारा घुमावदार एकधारी तलवार और ढाल का उपयोग किया जाता है ।
- सशस्त्र सैनिक प्रत्येक हाथ में एक तलवार का उपयोग कर सकते हैं।
- लात, घूसे, ताले और काट निहत्थे रणनीति के उदाहरण हैं।

❑ **पाइक अखाड़ा (ओडिशा)**

- पाइखा अखाड़ा, जिसे पाइका अखाड़ा भी कहा जाता है, "योद्धा स्कूल" के लिए एक ओडिया नाम है।
- इसका उपयोग ओडिशा में किसान मिलिशिया प्रशिक्षण स्कूल के रूप में किया जाता था।
- इसका उपयोग पारंपरिक शारीरिक गतिविधियों को करने के लिए किया जाता है।
- इस प्रदर्शन कला में लयबद्ध इशारों और ढोल की थाप के साथ तालमेल बिठाने वाले हथियारों का उपयोग किया जाता है।

❑ **मल्ल युद्ध**

- एक पारंपरिक भारतीय खेल जिसमें एक जिमनास्ट हवाई योग मुद्राएँ करता है।
- मल्लखंब शब्द का तात्पर्य खेल में प्रयुक्त डंडे से है।
- मल्लखंब के तीन लोकप्रिय संस्करणों का अभ्यास शीशम के डंडे, बेंत या रस्सी का उपयोग करके किया जाता है।
- मल्लखंभ नाम की उत्पत्ति मल्ल शब्द से हुई है जिसका अर्थ है पहलवान, और खंब जिसका अर्थ है खंभा।
- 9 अप्रैल, 2013 को भारतीय राज्य मध्य प्रदेश ने मल्लखंभ को राज्य खेल घोषित किया।

WALL OF FAME

UTKARSHA NISHAD
UPSC RANK - 18

SURABHI DWIVEDI
UPSC RANK - 55

SATEESH PATEL
UPSC RANK - 163

SATWIK SRIVASTAVA
SDM RANK-3

DEEPAK SINGH
SDM RANK-20

ALOK MISHRA
DEPUTY JAILOR RANK-11

SHIPRA SAXENA
GIC PRINCIPAL (PCS-2021)

SALTANAT PARWEEN
SDM (PCS-2022)

KM. NEHA
SUB REGISTRAR (PCS-2021)

SUNIL KUMAR
MAGISTRATE (PCS-2021)

ROSHANI SINGH
DIET (PCS-2020)

AVISHANK S. CHAUHAN
ASST. COMMISSIONER
SUGARCANE (PCS-2018)

SANDEEP K. SATYARTHI
CTO (PCS-2018)

MANISH KUMAR
DIET (PCS-2018)

AFTAB ALAM
PCS OFFICER

ASHUTOSH TIWARI
SDM (PCS-2022)

CHANDAN SHARMA
Magistrate
Roll no. 301349

YOU CAN BE THE NEXT....

8009803231 / 8354021661

D 22&23, PURNIYA CHAURAHA, NEAR MAHALAXMI SWEET HOUSE, SECTOR H, SECTOR E, ALIGANJ, LUCKNOW, UTTAR PRADESH 226024

MRP:- ₹200